फोटो पत्रकारिता

एक चुनौतीपूर्ण कला

डॉ तरुणा नरूला

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Taruna Narula 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-863-3

Cover Design: Aman Sharma
Typesetting: Pooja Sharma

First Edition: November 2025

प्रस्तावना

फोटो पत्रकारिता केवल एक तस्वीर लेने की कला नहीं है, यह समाज, सत्य और समय की दस्तावेज़ी अभिव्यक्ति है. जब शब्द कम पड़ जाते हैं, तब एक तस्वीर बोलती है- कभी विरोध में, कभी संवेदना में, और कभी बदलाव की उम्मीद के रूप में. इस पुस्तक में फोटो जर्नलिज़्म के इन्हीं मूल भावों को सरल भाषा और व्यावहारिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है.

पत्रकारिता और जनसंचार के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक एक बेहतर मार्गदर्शन प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगी. इसमें कैमरे की बुनियादी समझ से लेकर दृश्य संरचना (कंपोजीशन), प्रकाश का महत्व, तथा फील्ड में काम करते समय अपनाई जाने वाली नैतिक ज़िम्मेदारियों तक-हर विषय को सहज और सुलभ भाषा में समझाया गया है.

आज के डिजिटल युग में, जहां हर हाथ में कैमरा है, यह पुस्तक याद दिलाती है कि फोटो जर्नलिज़्म केवल एक बटन दबाने से नहीं बनता- इसके पीछे होती है दृष्टि, संवेदना और सामाजिक ज़िम्मेदारी. यह पुस्तक न केवल छात्रों को तकनीकी ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि उन्हें एक संवेदनशील और जिम्मेदार फोटो पत्रकार बनने के लिए प्रेरित भी करती है.

लेखिका डॉ.तरुणा नरूला को इस ज्ञानवर्धक और प्रासंगिक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई. यह पुस्तक निस्संदेह पत्रकारिता की नई पीढ़ी को मार्गदर्शन और प्रेरणा देगी.

-- डॉ. संजय शिशौदिया, समाचार संपादक, अमर उजाला, दक्षिण हरियाणा .

पुस्तक परिचय

आप पत्रकारिता के क्षेत्र में नई मंज़िलों की तलाश कर रहे युवा फोटोग्राफर हों या फिर इस कला के मंजे हुए अनुभवी खिलाड़ी — **डॉ. तरुणा नरूला** की यह किताब आपके बहुत काम आएगी. जैसा कि लेखिका ने किताब के शीर्षक से ही स्पष्ट कर दिया है, फोटोग्राफी एक कला है, लेकिन साथ ही इसमें चुनौतियाँ भी हैं. और अगर आप इस कला में माहिर होना चाहते हैं, तो फोटोग्राफी की बारीकियों को समझना बेहद ज़रूरी है.

इन सभी बारीकियों को डॉ. नरूला ने अपनी इस किताब *"फोटोपत्रकारिता: एक चुनौतीपूर्ण कला"* में बहुत बेहतरीन तरीक़े से समझाया है. जैसे कि उनकी सलाह: अच्छा फोटोग्राफर बनने के लिए निरंतर अभ्यास करें और विषय पर फोकस करें.

आज के अति गतिशील सोशल मीडिया के दौर में, जहाँ हर तरफ़ भागमभाग का माहौल है, वहाँ फोटोग्राफी में संयम बरतना और अपने काम में ठहराव लाना बेहद ज़रूरी है. लेखिका ने इस महत्वपूर्ण बिंदु को अच्छे से समझाया है.

पत्रकारिता में फोटोग्राफी की भूमिका हमेशा से रही है. रघु राय जैसे नामी फोटोग्राफर ने तो कई साल *इंडियन एक्सप्रेस* अख़बार में काम किया. लेकिन अब पत्रकारिता का दायरा काफ़ी बढ़ गया है. अख़बारों और पत्रिकाओं के अलावा अब तेजी से मज़बूत होते जा रहे ऑनलाइन मीडिया में भी फोटोग्राफर्स के लिए काफ़ी मौक़े निकलकर आ रहे हैं. फोटोपत्रकारिता के क्षेत्र में कैसे कदम बढ़ाए जाएँ, किस तरह के कोर्स कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में उपलब्ध हैं इन सबके बारे में डॉ. तरुणा ने विस्तार से बताया है.

अच्छी फोटोग्राफी करना एक कला है, लेकिन इसमें निपुण होने से पहले ज़रूरी है कि कैमरे की सही तकनीकी जानकारी हासिल की जाए. इस पहलू को इस किताब में सलीके से समझाया गया है. ये जानकारियाँ — जैसे कि शटर स्पीड, एपर्चर और मैनुअल फोकस क्या हैं, और अच्छा ट्राइपॉड क्यों ज़रूरी है — उनके लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होंगी जिन्होंने पहली बार कैमरा पकड़ा है और नए सिरे से फोटोग्राफी सीखना चाहते हैं.

आज मोबाइल फोटोग्राफी काफ़ी आगे निकल चुकी है और बहुत से युवाओं की तो यह पहली पसंद बनती जा रही है. ऑनलाइन मीडिया में तो मोबाइल फोटोग्राफी को काफ़ी तवज्जो दी जाती है. इस पहलू पर भी **डॉ. तरुणा** ने अच्छे से रोशनी डाली है, जो कि सराहनीय है. मेरा मानना है कि इस किताब की मदद से आप **फोटोपत्रकारिता** के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छू सकते हैं.

श्री अजय सूरी

यह *पुस्तक परिचय* **वरिष्ठ पत्रकार** एवं **'रामनाथ गोयनका पुरस्कार'** से सम्मानित **श्री अजय सूरी** जी द्वारा लिखा गया है.

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में जिन लोगों का प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग रहा, मैं उन सभी के प्रति अपनी हृदय से कृतज्ञता प्रकट करती हूँ.

सबसे पहले, मैं अपने माता-पिता और परिवार का धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने हमेशा मुझे प्रेरित किया और मेरे आत्मविश्वास को बनाए रखा. उनके विश्वास और सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता.

मैं जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद के सभी सहयोगियों और विद्यार्थियों की आभारी हूँ, जिनसे निरंतर संवाद और शिक्षण ने इस पुस्तक को आकार देने में मदद की.

फोटोग्राफी की तकनीकी और कलात्मक दृष्टि को विकसित करने में कैमरा आर्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली का योगदान अमूल्य रहा. वहाँ से प्राप्त प्रशिक्षण ने विषय को गहराई से समझने और सिखाने की क्षमता दी.

मैं विशेष रूप से प्रो. राजीव कुमार (कुलपति), प्रो. दिनेश कुमार (कुलपति) , प्रो. पवन सिंह मलिक(विभागाध्यक्ष सीएमटी), श्री राजेंद्र चुघ (सेवानिवृत्त समाचार वाचक, आकाशवाणी), श्री दुष्यंत त्यागी (वरिष्ठ फोटो पत्रकार), डॉ. शिल्पा सेठी, डॉ. गगन गेरा, सुश्री कविता सिंह, श्री पंकज सैनी,एवं छात्र ओम सेठी का आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन, सहयोग और प्रोत्साहन ने मुझे इस पुस्तक को पूर्णता तक पहुँचाने में प्रेरित किया. मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ **श्री अजय सूरी** जी का, जो न केवल एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, बल्कि **'रामनाथ गोयनका सम्मान'** से भी अलंकृत हैं. उन्होंने मेरी पुस्तक *"फोटोपत्रकारिता: एक चुनौतीपूर्ण कला"* के लिए जो पुस्तक परिचय लिखा है, वह मेरे लिए एक प्रेरणा है. उनकी लेखनी ने पुस्तक के मूल भाव को बेहद प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है.

साथ ही, मैं उन सभी पाठकों, साथियों और शुभचिंतकों की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे कार्य को सराहा और आगे बढ़ने की शक्ति दी.

डॉ. तरुणा नरूला

सहायक प्राध्यापक

संचार, मीडिया और प्रौद्योगिकी विभाग

जेसी बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद

अनुक्रमणिका

1. फोटो-पत्रकारिता एक नज़र में 1

2. मुद्दों पर आधारित पत्रकारिता तथा फोटो पत्रकारिता.. 6

3. समाचार और फीचर फोटोग्राफी 13

4. वर्तमान समय में 'मोबाइल फोटोग्राफी' : एक तकनीकी-रचनात्मक विमर्श........................ 20

5. डी एस एल आर कैमरे का परिचय 28

6. कैमरा ऑपरेट करने की विधि 35

7 - कैमरे के सहायक उपकरण (एक्सेसरीज) -.. 38

8. कैमरे के प्रकार.. 40

9. ट्राइपॉड 47

10. एसएलआर बनाम डीएसएलआर: टेक्नोलॉजी और परफॉर्मेंस की तुलना........................ 52

11. कैमरा शॉट्स तथा एंगल के प्रकार.. 54

12. एक्सपोज़र - बेहतरीन तस्वीरों की कुंजी.. 62

13. डीएसएलआर शूटिंग मोड 69

14. प्रोग्राम मोड: ऑटोमैटिक और मैन्युअल का बेहतरीन संयोजन........................ 81

15. मैन्युअल मोड.. 85

16. अपर्चर प्रायोरिटी मोड 97

17. शटर प्रायोरिटी मोड 105

18. फोटोग्राफी में लाइट यानि प्रकाश का महत्व..110

19.कम रोशनी में फोटोग्राफी करने के तरीके..120

20. थ्री पॉइंट लाइटिंग और फोटो पत्रकारिता..124

21. लेंस के प्रकार एवं उपयोगिता..128

22. सेंसर साइज एवं क्रॉप फैक्टर..147

23. फ्लैश तकनीक - पॉप अप और बाहरी फ्लैश का उपयोग 152

24. रिफ्लेक्टर का उपयोग 170

25. फोटोग्राफी में वाइट बैलेंस क्या है..178

26. फोटो संरचना, कंपोजिशन - 184

26. फोटो पत्रकारिता के मुख्य आयाम..204

28. फोटो पत्रकारिता: जुनून और कला का संगम..223

29. सफलता के तीन महत्वपूर्ण पहलू: उपकरण, विषय और रचनात्मकता...................................228

30. सोशल मीडिया और फोटोग्राफी...234

31. फोटोजर्नलिस्ट्स एजेंसियों से कैसे कमाएं ? 238

32. फोटो संपादन (एडिटिंग इन फोटोशाप) 240

33. फोटोग्राफी लाइब्रेरी का महत्व 246

34. फोटो प्रदर्शनी और टूर एंड ट्रैवलिंग फोटोग्राफी तथा फोटो प्रतियोगिता.................................257

1. फोटो-पत्रकारिता एक नज़र में

फोटो पत्रकारिता का मतलब केवल तस्वीरें खींचना नहीं है, यह एक जिम्मेदारी है. हर फ्रेम के साथ आप सच को दुनिया के सामने लाते हैं. फोटो पत्रकार का काम तथ्यों को संवेदनशीलता और कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करना है, ताकि तस्वीरें बोलें और अपने आप में एक कहानी कहें. फोटोजर्नलिज्म का मुख्य उद्देश्य किसी कहानी को संप्रेषित करना और दर्शकों को शिक्षित करना है. फोटो पत्रकारिता में तकनीकी ज्ञान जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही आवश्यक है घटनाओं को सही दृष्टिकोण से देखना और समझना. एक अच्छा फोटो पत्रकार कैमरे का उपयोग करते हुए अपने सामाजिक दायित्व का भी ध्यान रखता है. वह समाज के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से देखता है और अपनी तस्वीरों के माध्यम से समाज की सच्चाई दर्शाने का काम करता है.

फोटोग्राफी सीखने से अधिक जरूरी है इसमें रुचि और गहरी समझ होना. यह काम जितना आकर्षक लगता है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी है. सफलता की तीन शर्तें हैं – मेहनत-लगन, जागरूकता-सजगता और कल्पनाशीलता-रचनात्मकता. सक्रिय सृजनशीलता, तीव्र सोच और तुरंत निर्णय लेने की क्षमता ही फोटोग्राफी है. इससे फोटो पत्रकार

की रचनात्मकता निरंतर निखरती है. उसकी सोचने की क्षमता लगातार विकसित होती है. इसी समझ की बदौलत वह हर दिन एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में सफल होता है.

कैमरा सिर्फ़ एक उपकरण है जो फोटो खींचने का काम करता है, लेकिन फोटो किस प्रकार ली जाए, यह हमारी सोच और समझ पर निर्भर करता है. जिस परिप्रेक्ष्य से फोटो ली जाती है, वही उसकी गुणवत्ता तय करता है. कैमरा कोई भी हो, उसका ब्रांड और प्रकार महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि विचार की स्पष्टता, फोटो खींचने की शैली अहम है. क्या हुआ, क्यों हुआ, कब हुआ , कहाँ हुआ, कैसे हुआ और किस ने किया (पत्रकारिता के 5 W और 1 H) जैसे प्रश्न और इन के साथ आपका नज़रिया बहुत महत्वपूर्ण है.

सृष्टि के प्रारंभ से ही क्रिया-प्रतिक्रिया निरंतर होती आई हैं. एक ओर प्रकृति है - नदियाँ, पर्वत, ज्वालामुखी, झरने, मैदान, जंगल, जीव-जंतु, मरुस्थल और समुद्र की गोद और अन्तरिक्ष के असीम विस्तार के मनोहारी दृश्य; दूसरी ओर मनुष्य है – यूरोपीय, अफ़्रीकी, एशियाई, मंगोल, स्त्री-पुरुष, बच्चे, वृद्ध, और जवान; उन का समाज है - गाँव,-शहर तीज-त्योहार, शादी-विवाह, रीति-रिवाज, घटनाएँ, दुर्घटनाएँ, सुख-दुख, रहन-सहन, परिवहन, सिनेमा, नाटक, नृत्य, चित्र, अनेक संचार माध्यम; इस समाज की विभिन्न गतिविधियाँ हैं -धरने ,-प्रदर्शन, अनशन, हड़ताल, शिक्षा, चिकित्सा, अपराध, खेल, खेत-खलिहान, मकान-दुकान, कारोबार और निर्माण; और इतिहास की विशाल धरोहर. यह घटनाक्रम वर्षों से जारी है. एक फोटो पत्रकार के लिए विषयों की कभी कोई कमी नहीं होती.

आवश्यक है कि शुरू से ही इन बिंदुओं पर ध्यान दें :

1.फोटो खींचते समय आप का व्यक्तिगत नज़रिया - हर बार एक नए नज़रिये के साथ फोटोग्राफी करें. मौलिकता बनाए रखते हुए, फोटो पर एक नए एंगल और दृष्टिकोण से काम करें ताकि आप अन्य फोटो पत्रकारों से अलग दिखें और सफल हो सकें.

2. **प्रकाश को समझें** - फोटोग्राफी में लाइट की भूमिका महत्वपूर्ण है. विषय से संबंधित सही लाइटिंग की समझ विकसित होने पर, फोटोग्राफी की भी बेहतर समझ आ जाती है. इसकी विस्तृत चर्चा आगे की गयी है.

3.**सब्जेक्ट एवं ऑब्जेक्ट में अंतर -** सब्जेक्ट है जिस पर आप फोकस करते हैं. ऑब्जेक्ट उसके आसपास का दृश्य होता है. जब ऑब्जेक्ट, सब्जेक्ट से अलग और प्रभावशाली होता है, तब चित्र श्रेष्ठ बनता है.

उपरोक्त फोटो में सब्जेक्ट मशीन है और ऑब्जेक्ट है प्रशिक्षक.(विस्तृत चर्चा आगे की गयी है)

4. **सब्जेक्ट पर फोकस करें -** फोटोग्राफर को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि फोटो में वह जो दिखाना चाहता है वही सब्जेक्ट फोकस में हो. देखने वाले का ध्यान भी वहीं जाना चाहिए. पहली ही नज़र में समझ आना चाहिए कि चित्र के माध्यम से फोटाग्राफर उस फोटो में क्या दिखाना चाहता है.

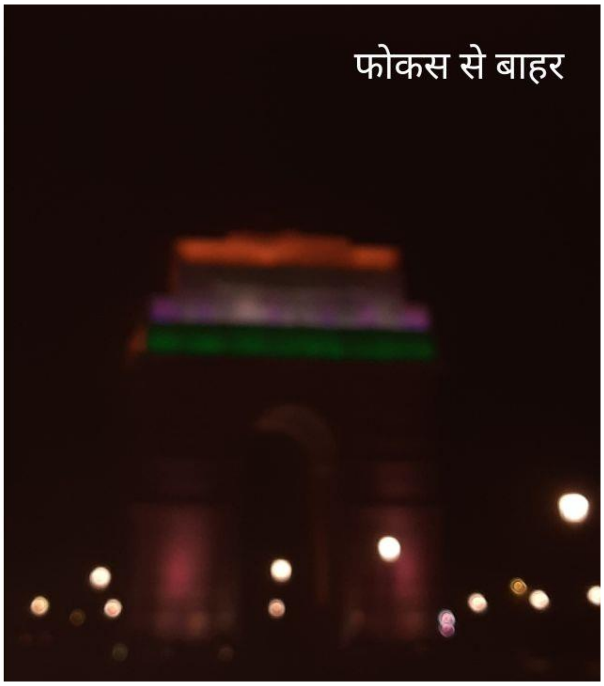

ऊपर के दोनों फोटो ध्यान से देखें. स्पष्ट दिखता है कि किस फोटो में सब्जेक्ट फोकस में है और किस में सब्जेक्ट ऑउट ऑफ़ फोकस है.

5. **विचारशीलता** - फोटोग्राफी के माध्यम से समाज को जागरूक किया जा सकता है. फोटोग्राफर को ऐसी तस्वीरें लेनी चाहिए जो लोगों को प्रभावित करें और उन्हें सोचने पर मजबूर करें. उदाहरण के लिए, सीरिया के गृहयुद्ध के बाद, यूरोप की तरफ प्रवास कर रहे लोगों की नाव-दुर्घटना की एक फोटो ने दुनियाभर का ध्यान उन की दुर्दशा की ओर खींचा. समुद्र किनारे सिर के बल पड़ा एक बच्चे का शव और उसके पास लौटती लहरों की तस्वीर ने सीरिया के शरणार्थियों की दयनीय स्थिति को दर्शाया. इस तस्वीर को 'फोटो ऑफ द वर्ल्ड' का अवार्ड मिला था

अयलान कुर्दी का बेजान शरीर 2 सितंबर 2015 को तुर्की के समुद्र तट पर बहकर आया. तस्वीर/नीलुफ़र डेमीर/एएफपी, डोगन न्यूज़ एजेंसी.

6. **निरंतर अभ्यास -** किसी भी कार्य में सफलता के लिए निरंतर अभ्यास आवश्यक है. नियमित और समर्पित प्रयासों से ही किसी क्षेत्र में महारत हासिल होती है. सफलता एक दिन या महीने की मेहनत का परिणाम नहीं, बल्कि वर्षों के कठोर परिश्रम से मिलती है. रहीम जी के दोहे "करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान" का यही संदेश है कि अभ्यास से ही व्यक्ति सक्षम होता है.

फोटो पत्रकारिता में सफलता के लिए निरंतर प्रयास, कड़ी मेहनत, सतर्कता और संवेदनशीलता जैसे गुण महत्वपूर्ण हैं. इस क्षेत्र में तकनीकी कौशल के साथ-साथ रचनात्मकता, संवेदनशीलता, और सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों की गहरी समझ की भी आवश्यकता होती है. इन गुणों का संगम फोटो-पत्रकार को नए दृष्टिकोण खोजने और महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने के योग्य बनाता है.

प्रैक्टिस करती हुई शिक्षार्थी - आई एस ओ-100 , शटर स्पीड -1/160 सेकंड और अपर्चर -5.6 .

सारांश ; फोटोजर्नलिज्म, पत्रकारिता और दृश्य-कथा कहने का एक अनूठा मिश्रण है, जो न केवल तकनीकी दक्षता बल्कि रचनात्मकता, संवेदना और सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ की समझ की भी मांग करता है. इस कौशल और इन विशेषताओं के संयोजन से फोटोजर्नलिस्ट, दुनिया को देखने और समझने के नए तौर- तरीके खोज कर महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित कर सकते हैं.

2. मुद्दों पर आधारित पत्रकारिता तथा फोटो पत्रकारिता

हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण द्वारा कुछ क्षेत्रों का रखरखाव नगर निगम को सौंपे जाने के बाद "बेरोजगार" हो गए लगभग 160 सफाई कर्मचारी अपनी नौकरी की बहाली की मांग को लेकर अर्धनग्न अवस्था में प्रदर्शन करते हुए.

फोटो पत्रकारिता एक ऐसा क्षेत्र है, जो न केवल सूचनाओं का प्रसार करता है, बल्कि समाज को जागरूक और जिम्मेदार बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इसमें सफलता पाने के लिए विषय की गहन समझ आवश्यक है. बिना उचित जानकारी के प्रशिक्षु पत्रकार इस प्रतिस्पर्धात्मक क्षेत्र में पिछड़ सकता है. इस अध्याय में, 5-स के सिद्धांतों पर आधारित उन प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करेंगे, जो पत्रकारिता के केंद्र में होते हैं. मुख्यत: मुद्दे पांच प्रकार के होते हैं-:

1 शिक्षा

2 स्वास्थ्य

3 संचार

4 संसाधन

5 समाज

इन विषयों से संबंधित कोई भी घटनाक्रम मीडिया के लिए ख़बर बनता है. आइए इन्हें समझते हैं :

शिक्षा: दैनिक जागरण के वरिष्ठ फोटो पत्रकार ओम प्रकाश पांचाल के अनुसार, भारत में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है. शिक्षा में असमानता, संसाधनों की कमी, और नीतिगत चुनौतियों को उजागर करने के लिए फोटो पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. उदाहरणतया, बुनियादी सुविधायों की कमी वाले किसी ग्रामीण क्षेत्र के स्कूल की तस्वीरें, या शहरी क्षेत्रों में छात्रों के बीच भेदभाव उजागर करने वाली तस्वीरें, दर्शकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं.

एक फोटो पत्रकार जब शिक्षा के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है, तो वह न केवल वास्तविकता को चित्रित करता है, बल्कि एक बदलाव की दिशा में सोचने के लिए भी प्रेरित करता है.

इस तरह की फोटोग्राफी में सब्जेक्ट के करीब से ली गई फोकस्ड तस्वीरें समाज का ध्यान महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित कर सकती हैं. सकारात्मक फोटोग्राफी से समाज में बदलाव लाने का भी प्रयास किया जा सकता है, क्योंकि यह किसी समस्या के शिकार लोगों के पक्ष में कार्रवाई का एक तरीका है. दृश्य-कथा अर्थात फोटो स्टोरी लोगों को यह समझने में मदद करती है कि वास्तविकता क्या है. जब शिक्षा का क्षेत्र विभिन्न वर्गों को प्रभावित करेगा, तो यह जन संचार माध्यमों के लिए ख़बर बनेगा.

शिक्षा से संबंधित सभी तरह की गतिविधियों को समझने के लिए हमें इसका वर्गीकरण करना होगा. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली को निम्नलिखित वर्गीकरण में बाँटा जा सकता है:

1. विद्यालयी शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 संरचना अपनाई है:

1. **बुनियादी स्तर (Foundational Stage) – 5 वर्ष**

- आयु: 3-8 वर्ष
- कक्षा: प्री-प्राइमरी (आँगनवाड़ी) + कक्षा 1 और 2
- जिसमें खेल-आधारित और गतिविधि-आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है.

2. **प्राथमिक स्तर – 3 वर्ष**

- आयु: 8-11 वर्ष
- कक्षा: 3 से 5
- इस अवस्था में भाषा और गणितीय कौशल, खोजपरक और संवादात्मक शिक्षा पर फोकस किया है.

3. **माध्यमिक स्तर – 3 वर्ष**

- आयु: 11-14 वर्ष
- कक्षा: 6 से 8
- इस स्तर पर विषय-आधारित पढ़ाई, कोडिंग, कला-एकीकृत शिक्षा पर ज़ोर दिया है.

4. उच्च माध्यमिक स्तर – 04 वर्ष

- आयु: 14-18 वर्ष
- कक्षा: 9 से 12
- इस श्रेणी में बहु-विषयक पढ़ाई, लचीला पाठ्यक्रम, व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया है.

2. उच्च शिक्षा

1. स्नातक शिक्षा

- 3 या 4 वर्ष की डिग्री (Multiple Entry-Exit सिस्टम) अपनाया है.
- इस श्रेणी में अंतरविषयक (Multidisciplinary) शिक्षा पर जोर देने के अलावा शिक्षा में डिजिटल तकनीकों का समावेश किया है.

2. स्नातकोत्तर शिक्षा

- 1 या 2 वर्ष का मास्टर्स प्रोग्राम
- अनुसंधान आधारित शिक्षा पर ध्यान

3. डॉक्टरेट (Ph.D)

- मास्टर्स के बाद Ph.D आवश्यक करके, MPhil समाप्त कर दी गई है. इन के अतिरिक्त सरकारी या प्राईवेट शिक्षा संस्थान में किसी भी तरह की गतिविधि एवं शोध कार्य समाचार माध्यमों के लिए सदैव ख़बर बनती हैं.

हरियाणा के गाँव ददसिया में ग्रामीणों द्वारा प्राथमिक विद्यालय पर ताला जड़े जाने के बाद नारे लगाते विद्यार्थी.

स्वास्थ्य - वरिष्ठ पत्रकार मनोज भल्ला के अनुसार, स्वास्थ्य बीट कवर करना हमेशा से चुनौतीपूर्ण रहा है, लेकिन कोरोना महामारी के दौरान यह चुनौती और बढ़ गई. अस्पतालों और मरीजों की फोटोग्राफी करना, युद्ध के मैदान में उतरने जैसा था. युद्ध में दुश्मन को घर नहीं लाया जाता, लेकिन इस महामारी में फोटोग्राफी करने का मतलब था कि खुद और अपने परिवार को जानलेवा संक्रमण के खतरे में डालना. इस दौरान फोटोग्राफी करना नैतिक रूप से भी कठिन था, क्योंकि ज्यादातर लोग पीड़ा झेल रहे थे, जिससे यह कार्य भारी महसूस होता था.

चिकित्सा - शिक्षा के बाद चिकित्सा दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो जनसाधारण को प्रभावित करता है. नवोदित फोटो-पत्रकार को बीट कवर करने से पहले इसका वर्गीकरण समझ लेना चाहिए.

स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की गतिविधि, योजना और परियोजना मीडिया के लिए ख़बर बनती है. सरकारी और निजी स्वास्थ्य व्यवस्था को निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है:

सामान्य अस्पताल -ज़िला स्तर पर सरकारी अस्पताल, जहां जनसाधारण को स्वास्थ्य संबंधित सेवाएं उपलब्ध होती हैं. अस्पताल में किसी भी तरह की अव्यवस्था, दवाइयों, चिकित्सकों, नर्सों, दवा देने वालों या फिर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों तथा अन्य स्टॉफ की कमी, उनका अनुचित व्यवहार या मरीज़ के इलाज में देरी हमेशा ख़बर बनते हैं.

दिल्ली के एम्स अस्पताल के बाहर इलाज की इंतज़ार में लेटा मरीज़. फोटो :- भव्य नरेश, वरिष्ठ फोटो पत्रकार,अमर उजाला.

अस्पताल का पुराना भवन, पुराने उपकरण, नया सामान, नया भवन, नई योजना-परियोजना, कोई बड़ा और विशेष ऑपरेशन, चिकित्सा क्षेत्र में नई मुहिम यह तमाम जानकारी समाचार बनती हैं. कुछ अन्य विभागों में भी यह गतिविधियां दिखाई दें तो ख़बर बनेगी.

स्वास्थ्य विभाग -जनमानस के स्वास्थ्य से संबंधित की गई कार्रवाई समाचार बनती है.

ईएसआई अस्पताल - बीमा कर्मचारियों का इलाज, दवाइयां एवं अन्य चिकित्सा सुविधाएँ समय पर मिल रही हैं या नहीं.

डिसपेंसरी - डिसपेंसरी में कौन - कौन सी सुविधा नहीं है, या कौन-कौन सी नई सुविधा शुरू होगी.

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र - सभी प्राइमरी हेल्थ सेंटर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अंदर आते हैं. ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा संबंधित सभी तरह की सूचना जो आमजन को प्रभावित करें.

प्राइमरी हेल्थ सेंटर – किसी गाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में उपलब्ध सुविधाओं का स्तर क्या है.

स्वास्थ्य उप-केंद्र - एक स्वास्थ्य उप-केंद्र कितने गांवों के लिए है, वहां क्या - क्या सुविधा- असुविधा है.

आंगनवाड़ी केंद्र - केंद्र के भवन की स्थिति क्या है , बच्चों के लिए झूला या खेल-कूद का अन्य सामान है या नहीं, केंद्र समय से खुलता है या नहीं, बच्चों या **गर्भवती** को पौष्टिक आहार समय पर मिलता है या नहीं.

व्यायामशाला - व्यायामशाला से संबंधित सारा सामान है; सही या खराब है, समय से खुलती और बंद होती है या नहीं.

खेल- खिलाड़ी (स्टेडियम और खेल के मैदान) - खिलाड़ियों को डाइट पर्याप्त व समय पर मिलती है या नहीं, स्टेडियम का पुराना या नया भवन, उसकी हालत, उपकरण, प्रेक्टिस की समय सारणी, कोच, रैफरियों, ज़िला खेल अधिकारी की स्थिति, कमी या खेल की कोई नई उपलब्धि, खंड स्तर, ज़िला स्तर, प्रदेश स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन, उनकी तैयारी से सम्बन्धित समाचार बनती है.

संचार- संचार के साधनों में समाज को प्रभावित करने वाले किसी भी तरह के बदलाव में मीडिया की तुरंत रूचि पैदा होती है. लैंड लाईन, इंटरनेट, मोबाईल फोन, डाक एवं कूरियर व्यवस्था, समाचार पत्र-पत्रिका, प्रिंट, सोशल एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, टेलीविजन, फिल्म, सीरियल, नाटक, स्वांग -नौटंकी, इत्यादि किसी भी प्रकार की हलचल फ़ौरन न्यूज़ बनती है.

संसाधन - पेंशन-वेतन या राशन, इन दोनों की बढ़ोतरी, कटौती और मिलने में देरी नियुक्ति, रिटायरमेंट, बेरोजगारी, भर्ती प्रक्रिया, अतिरिक्त कार्यभार, सामाजिक-धार्मिक संगठन, आरडब्लूए, भविष्यनिधि, इंश्योरेंस कंपनी व नीतियां, नए आविष्कार, नई नीतियां, नई तकनीक, नये उत्पाद और ज्ञान-विज्ञान संबंधित जानकारी हमेशा न्यूज़ बनती है.

नीचे दी गई तस्वीर से ज़ाहिर होता है कि डिजीटाइज़ेशन (digitisation) के बाद भी राशन के लिए लम्बी कतारें लगी हैं. कड़ाके की सर्दी में भी गरीब परिवार लाइन में लगने को मजबूर हैं.

कड़ाके की सर्दी में भी राशन के लिए लंबी कतार में लगे गरीब परिवार . फोटो -दुष्यंत त्यागी . आई एस ओ -100, शटर स्पीड -1/160 सेकंड ,f/5.6 .

समाज - समाचार जगत के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण एवं विस्तृत क्षेत्र है. इसके अंतर्गत घर-परिवार, गांव-शहर, स्लम बस्तियां, नगर, तीज-त्यौहार, सुख-दुख, अपराध, कोर्ट-कचहरी, ज़िला प्रशासन, सरकारी और निजी विभाग,

आयोजन-प्रायोजन, कार्यक्रम, धार्मिक स्थल मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, चर्च इन सभी में किसी भी तरह की हलचल, घटनाक्रम अख़बार के लिए समाचार बनता है.

इसी तरह के एक इवेंट जल महोत्सव का चित्र, जिसमें पर्यटक जल क्रीड़ा कर रहे हैं. फोटो - राजीव त्यागी

जल महोत्सव मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित एक वार्षिक कार्यक्रम है. इसका उद्देश्य राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देना है. इस आयोजन में जल क्रीड़ाएँ और गतिविधियाँ होती हैं.

सारांश ; एक फोटो जर्नलिस्ट की शिक्षा प्रणाली और संचार माध्यमों की समझ उसे बौद्धिक रूप से मज़बूत बनाती है , जिससे वह प्रभावोत्पादक फोटो ले सकता है. इसके अलावा सामाजिक ,सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों की जानकारी होने से इस तरह के कार्यक्रमों की सटीक फोटोग्राफी की जा सकती है. यानि शिक्षा, संचार, संसाधनों, समाज और स्वास्थ्य के बारे में फोटो-पत्रकारों की बहुआयामी समझ श्रेष्ठ फोटोग्राफी करने की उनकी क्षमता का आधार बनती है. ऐसे चित्र न केवल जानकारी देते हैं बल्कि सहानुभूति और परिवर्तन को भी प्रेरित करते हैं.

3. समाचार और फीचर फोटोग्राफी

हरियाणा में तीन कृषि कानूनों के विरोध में 26 जनवरी 2020 को किसानों की ट्रैक्टर रैली

समाचार फोटोग्राफी और फीचर फोटोग्राफी दोनों पत्रकारिता का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन इन दोनों के उद्देश्य और शैली में स्पष्ट अंतर है. समाचार पत्रकारिता तत्काल और तात्कालिक घटनाओं की जानकारी देने का माध्यम है. इसका मुख्य उद्देश्य किसी घटना को यथासंभव स्पष्ट और सटीक रूप में दर्शकों के सामने प्रस्तुत करना है. जैसे. किसी राजनीतिक रैली, दुर्घटना या खेल प्रतियोगिता की तस्वीरें. समाचार फोटोग्राफी में समय और वास्तविकता का महत्व होता है. दूसरी ओर, फीचर फोटोग्राफी किसी घटना या विषय को गहराई से समझाने का प्रयास करती हैं. इसमें समय की इतनी पाबंदी नहीं होती. इसमें तस्वीरें खुद आकर्षक तरीके से कहानी बयान करती हैं .

समाचार फोटोग्राफी का सामान्य परिचय - समाचार फोटोग्राफी का उद्देश्य किसी घटना को तात्कालिकता और सच्चाई के साथ प्रस्तुत करना है. फोटोग्राफर को घटनास्थल पर समय से पहुंचकर सभी कठिनाइयों और खतरों का सामना करते हुए सही पल कैमरे में कैद करने होते हैं. कार्योन्मुखी तस्वीरें अधिक प्रभावशाली होती हैं. उदाहरण के लिये उपरोक्त तस्वीरें आंदोलन की उग्रता को दर्शाती हैं और बिना किसी व्याख्या के घटना का पूरा परिदृश्य प्रस्तुत कर रही हैं.

फरीदाबाद में तीन कृषि कानूनों के विरोध में 26 जनवरी 2020 को किसानों की ट्रैक्टर रैली को कवर करने वाले वरिष्ठ फोटो-पत्रकार सुभाष शर्मा बताते हैं कि कैसे पुलिस और किसानों की झड़प के बीच वे बडी कठिनाई से फोटो ले पाए. भीड़, हिंसा ,पुलिस की कार्रवाई, और अनिश्चितता की स्थिति ने सब कुछ जटिल बना दिया था. ऐसे माहौल में न केवल खुद की सुरक्षा का ध्यान रखना पड़ा, बल्कि प्रासंगिक और संवेदनशील पल को पकड़ने के लिए तेजी से काम करना पड़ा. आंदोलन के दौरान हर क्षण महत्वपूर्ण होता है, और घटना की सही समझ के बिना फोटो में उसका वास्तविक प्रभाव नहीं दिखाया जा सकता.

समाचार क्या है? कैसे करें पहचान? - किसी घटना की रिपोर्ट समाचार है जो व्यक्ति, समाज एवं देश दुनिया को प्रभावित करती है. घटना का समाचार से सीधा संबंध होता है. पत्रकारिता के छात्रों के लिए यह समझना चुनौतीपूर्ण हो सकता है कि कोई ख़बर कैसे बनती है. आमतौर पर, जब कोई व्यक्ति, स्थान, या वस्तु अपनी सामान्य गतिविधियों से अलग, कुछ असामान्य या विपरीत काम करते हैं, तो वह ख़बर बनती है. उदाहरण के लिए, यदि कोई पुलिसकर्मी अपने सुरक्षा कर्तव्यों को छोड़कर किसी अन्य कार्य में लिप्त मिलता है, तो यह समाचार बनता है. इसी तरह, धार्मिक स्थल पर अगर कोई अन्य गतिविधि होती है या शैक्षणिक संस्थानों में विद्यार्थी पढ़ाई के अलावा अन्य कार्यों में शामिल होते हैं, तो यह भी न्यूज़ बनती है. प्रसिद्ध व्यक्ति जैसे नेता, अभिनेता, खिलाड़ी आदि यदि अपने सामान्य आचरण के विपरीत व्यवहार करते हैं, तो वह भी ख़बर बन जाती है. इसके अलावा, वेतन-पेंशन में वृद्धि, सेवानिवृत्ति, नियुक्ति, और बड़ी उपलब्धियां भी समाचार का हिस्सा बनती हैं.

समाचार फोटोग्राफी कैसे करें ?

फोटो पत्रकार को न केवल कैमरे के साथ बल्कि मानसिक रूप से भी हर समय तैयार रहना पड़ता है. इसमें सिर्फ तस्वीर खींचने का काम नहीं होता, बल्कि एक ऐसी छवि बनाने की चुनौती होती है जो पूरे समाचार को प्रभावी ढंग से संप्रेषित कर सके. पाठक या दर्शक को घटनास्थल पर होने का एहसास हो सके.

समाचार फोटोग्राफी के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का ध्यान रखना ज़रूरी है :

ख़बर की समझ - छायाकार केवल घटना को ही नहीं, बल्कि उसके बाद की स्थितियों को भी कवर करता है. अक्सर, धरने, प्रदर्शन या रैली के बाद ऐसी दिलचस्प तस्वीरें मिलती हैं, जो अखबारों में छपती हैं. दिल्ली के वरिष्ठ फोटो पत्रकार राजीव त्यागी का कहना है कि इन घटनाओं को कवर करने में अनुभव बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. कुछ समय पहले दिल्ली - एन सी आर के खोरी गांव में एक बड़ा घटनाक्रम हुआ. जब पुलिस अवैध अतिक्रमण हटाने पहुंची तो स्थानीय लोगों और पुलिस के बीच तनाव की स्थिति बन गई. पायनियर के अनुभवी फोटो पत्रकार राजेश पुंजानी ने इस स्थिति को समझते हुए, समय रहते ही पास के एक घर की छत पर जाकर तस्वीरें लीं, ताकि घटना का सजीव चित्रण हो सके. समाचार के चित्र लेते समय, एक फोटो-पत्रकार पहले पत्रकार होता है, बाद में छायाकार . एक फोटो-पत्रकार में ख़बर की समझ होना उसकी सबसे बड़ी योग्यता है.

दिल्ली एन सी आर के खोरी गांव में अवैध अतिक्रमण हटाते समय स्थानीय लोगों और पुलिसकर्मियों के बीच संघर्ष की तस्वीर. फोटो - राजेश पुंजानी

फोटो के माध्यम से भावनाएं व्यक्त करें - अमर उजाला के समाचार संपादक संजय सिसोदिया का कहना है कि फोटोग्राफी के दौरान घटना के मुख्य बिंदुओं के साथ-साथ उसकी भावनाओं को भी गहराई से पकड़ना बेहद जरूरी होता है. कई तस्वीरें इस तरह ली जाती हैं कि वे घटना या दुर्घटना के समय की भावनाओं को पूरी तरह से बयान कर देती हैं, जिससे शब्दों की जरूरत ही नहीं पड़ती. जब शब्द कम हो जाएं, तब तस्वीर बोलती है. निम्न तस्वीर इस बात का सजीव प्रमाण है कि छवियां शब्दों से कहीं अधिक गहरी भावनाओं को व्यक्त कर सकती हैं. इस फोटो में शहीद के सम्मान में पत्नी की आँखों में दर्द, गर्व और कर्तव्य का मिश्रण साफ़ देखा जा सकता है. यह दृश्य पूरी घटना की गहराई को एक फ्रेम में समेटे हुए है.

शहीद के पार्थिव शरीर पर रोते -रोते सलाम करते हुए का अकल्पनीय दृश्य. फोटो - राजेश पुंजानी

जोखिम उठाने की क्षमता - फोटो-जर्नलिस्ट का काम यह होता है कि जब भी फर्ज़ बुलाए, चाहे वह युद्ध हो, शांति हो या फिर विरोध प्रदर्शन, उसे वहां मौजूद रहना जरूरी है. जोखिम भरी स्थितियों में खींची गई तस्वीरें अक्सर ऐतिहासिक बन जाती हैं और सच्चाई का प्रमाण देती हैं कोरोना वायरस के कारण लगे लॉकडाउन में, जब सभी लोग अपने घरों में रहकर अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख रहे थे, तब फोटो पत्रकार ने एक भी दिन घर पर नहीं बिताया और संक्रमण के जोखिम के बावजूद अस्पतालों में कोरोना मरीजों के इलाज की तस्वीरें कैद करता रहा. जहाँ एक पत्रकार दूर रहकर भी ख़बर लिख सकता है, फोटो जर्नलिस्ट को हमेशा घटना स्थल पर जाकर, जोखिम उठाकर, पास से तस्वीरें लेनी पड़ती हैं. वरिष्ठ पत्रकार दुष्यंत त्यागी मानते हैं कि ग्राउंड रिपोर्टिंग का ही पर्याय है फोटो जर्नलिज्म.

कोविड -19 काल की फोटो - सौजन्य - दुष्यंत त्यागी

सब्जेक्ट के प्रति संवेदनशील रहें - दैनिक हिंदुस्तान के फोटो पत्रकार सुभाष शर्मा बताते हैं कि "अंतिम संस्कार या दुर्घटना या प्रदर्शन जैसी संवेदनशील स्थिति नहीं है तब भी, फोटोग्राफर को अपने सब्जेक्ट के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए. कई बार फोटोग्राफर चर्चित व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन में दखलअंदाज़ी करते हैं. यह कोई भी लम्हा हो सकता है, किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के किसी उद्घाटन समारोह पर आने के दौरान का हो सकता है, या एक विख्यात व्यक्ति अस्पताल से घर जा रहा है, या कोई भी परिस्थिति हो सकती है. कुछ ख़ास परिस्थितियों के अलावा हर स्थिति में फोटो पत्रकार को अपने सब्जेक्ट की निजता का ध्यान रखना होता है. सुभाष शर्मा बताते हैं कि "फोटो पत्रकार को अपने सब्जेक्ट के प्रति विनम्र और संवेदनशील रहना चाहिए. हो सकता है वो अपने जीवन के सबसे अहम पल सांझा कर रहे हों जो उन्होंने किसी और से सांझा ना किए हों". समाचार-परक फोटोग्राफी करना सरल नहीं होता. कई बार फोटो पत्रकारों को ऐसी परिस्थितियों में काम करना पड़ता है, जहां इच्छा न होने पर भी फोटोग्राफी करनी होती है. बम धमाके या गंभीर सड़क दुर्घटनाओं के दौरान भला कौन खून-खराबे के चित्र लेना चाहेगा. ऐसी कवरेज मानसिक तनाव का कारण बनती है. अच्छी तस्वीरें लेने का दबाव झेलना पड़ता है. यह फोटो पत्रकारों के लिए चुनौतीपूर्ण समय होता है, जब उन्हें मृतकों के रिश्तेदारों और घायलों के प्रति संवेदनशील रहना होता है. इसके अलावा, यौन शोषण के मामलों में प्रदर्शन करते समय, पीड़ित की पहचान छुपाना जरूरी होता है, और उनकी तस्वीरें समाचार पत्रों या एजेंसियों में प्रकाशित नहीं होनी चाहिये .

उत्सुक और जागरूक होना - दैनिक जागरण के अनुभवी फोटो-पत्रकार ओमप्रकाश पांचाल के अनुसार, समाचार फोटोग्राफी करते समय फोटो-पत्रकार का उत्सुक और जागरूक होना बेहद जरूरी है. अगर वह घटना को समझने और जानने की रुचि के बिना काम करेगा, तो वह प्रासंगिक फोटो नहीं खींच पाएगा. समाचारपरक फोटोग्राफी की पहली शर्त यही है कि छायाकार खुद से यह सवाल करे कि "इस घटना में सबसे महत्वपूर्ण और रुचिकर क्या है?" जब वह इस सवाल का ईमानदार जवाब खोजेगा, तभी बेहतर फोटो खींच पाएगा.

समाचार लेखन और फोटो भी - अमर उजाला अख़बार के समाचार संपादक संजय सिसोदिया बताते हैं कि ‘‘अनेक बार फोटो पत्रकार को फोटो लेने के साथ-साथ ख़बर लिखने के लिए भी संस्थान बोलता है. जहां पत्रकार नहीं पहुंच सकता वहां फोटो पत्रकार को घटना का पूर्ण विवरण देना होता है, यानि फोटो पत्रकार पर दोहरा दायित्व होता है, समाचार लेखन का भी और फोटो भी.

फीचर फोटो का महत्व- फीचर फोटोग्राफी किसी कहानी या विशेष विषय पर केंद्रित होती है. यह सिर्फ ख़बर की जानकारी देने तक सीमित नहीं होती, बल्कि किसी घटना, व्यक्ति, या विषय की गहराई और भावनात्मक पहलुओं को उजागर करने का प्रयास करती है. इसमें फोटोग्राफर के पास अधिक रचनात्मकता और कलात्मकता का प्रयोग करने की स्वतंत्रता होती है. उदाहरण के लिए कई बार समाचार पत्र के पहले पेज पर मानवीय दृष्टिकोण के फोटो देखने को मिलते हैं. इन तस्वीरों का भी बेहद महत्व होता है. यह हल्के - फुलके थीम के फोटो , पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं.

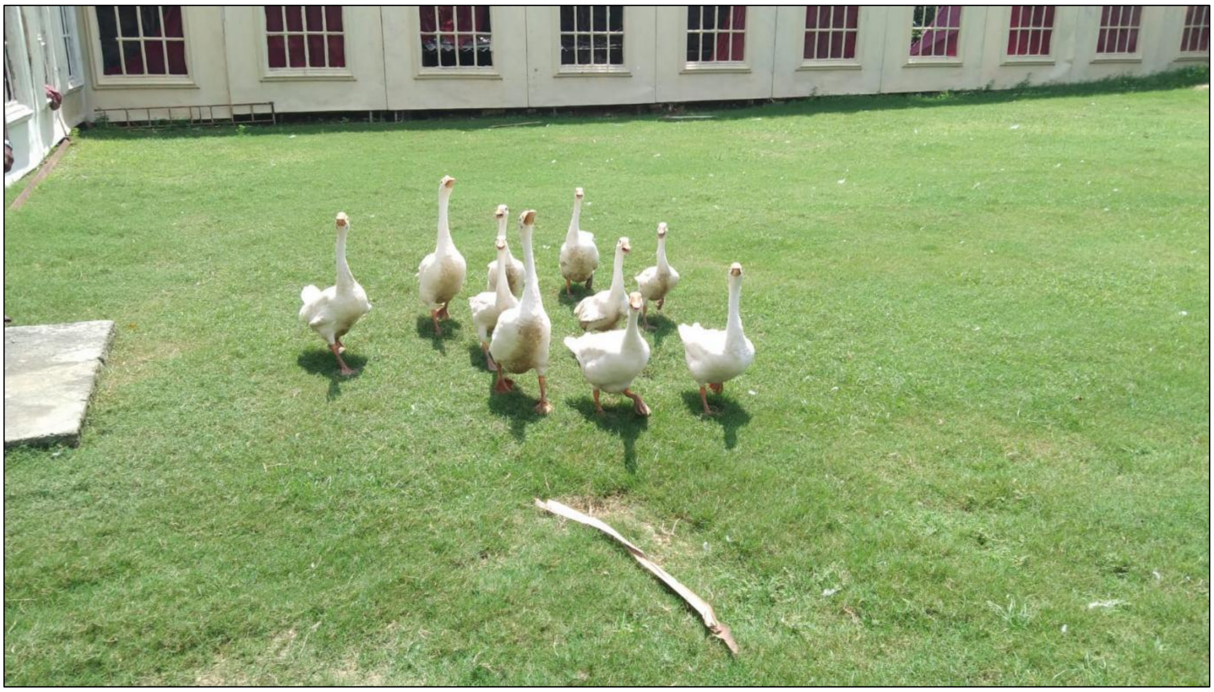

मौसम ज़रा सा बदलता है तो पक्षी भी मौज-मस्ती करने लगते हैं. फोटो - दुष्यंत त्यागी

सारांश ; फीचर और समाचार फोटोग्राफी, पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है . इन दोनों शैलियों में तकनीकी कौशल, रचनात्मक दृष्टिकोण और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है. एक सफल फोटो पत्रकार में न केवल तकनीकी दक्षता होनी चाहिए, बल्कि उसे घटनाओं की बारीकियों को समझने और उन्हें संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता भी होनी चाहिए.

अंत में, समाचार और फीचर फोटोग्राफी का उद्देश्य न केवल जानकारी देना है, बल्कि दर्शकों के मन में सोच और भावना जगाना भी है. एक अच्छी तस्वीर न केवल कहानी सुनाती है, बल्कि उसमें गहरी भावनाएं और संदेश भी होते हैं, जो समाज में जागरूकता फैलाते हैं.

4. वर्तमान समय में 'मोबाइल फोटोग्राफी' : एक तकनीकी-रचनात्मक विमर्श

मोबाइल फोटोग्राफी अब एक शब्द नहीं, एक एहसास है. हर वो पल जिसे हम खोना नहीं चाहते, उसे तुरंत कैद कर लेना चाहते हैं. बस मोबाइल निकाला और उस लम्हे को अमर कर लिया. अब तस्वीर खींचना केवल एक क्रिया नहीं, एक कहानी बन गई है. हर क्लिक में एक भाव होता है. हर फोटो में एक बात छुपी होती है. सभी आयु वर्ग में इसका प्रचलन दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है, खासकर तब जब इंस्टाग्राम, यूट्यूब, रील्स और शॉर्ट वीडियो जैसे प्लेटफॉर्म पर विज़ुअल कंटेंट की मांग सबसे ज़्यादा है. यह कहना गलत नहीं होगा कि आज मोबाइल फोटोग्राफी ने एक नई क्रांति को जन्म दिया है. जहां हर व्यक्ति अपनी जेब में एक कैमरा लेकर चलता है.

फोटोग्राफी का नया युग - बीते कुछ वर्षों में स्मार्टफोन कैमरों ने असाधारण प्रगति की है. ड्यूल, ट्रिपल और क्वाड कैमरा सेटअप अब सामान्य हो चुके हैं. एक ही मोबाइल में वाइड एंगल, मैक्रो और टेलीफोटो लेंस का समावेश कर दिया गया है. जिससे एक ही उपकरण से विविध प्रकार की तस्वीरें ली जा सकती हैं. आज के स्मार्टफोन कैमरों में न केवल हार्डवेयर बेहतर हुआ है, बल्कि सॉफ्टवेयर आधारित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तकनीक भी जुड़ गई है, जो सब्जेक्ट की पहचान करता है, लो-लाइट में फोटो सुधारता है, रंगों को बेहतर बनाता है और पृष्ठभूमि को स्वतः धुंधला कर देता है.

स्मार्टफोन कैमरों की पिक्सल क्वालिटी उन्हें डीएसएलआर कैमरों के समकक्ष बना रही है. पहले केवल पेशेवर फोटोग्राफर ही एडवांस्ड कैमरा सेटिंग्स का लाभ ले सकते थे, लेकिन अब एक सामान्य उपयोगकर्ता भी पोर्ट्रेट मोड, बोकेह इफेक्ट, नाइट मोड और रॉ फॉर्मेट जैसे फीचर्स का लाभ उठा रहा है. मोबाइल की उन्नत तकनीक को देखते हुए कई प्रोफेशनल भी डी एस एल आर की अपेक्षा मोबाइल फोटोग्राफी को तरजीह दे रहे हैं. इसके कई कारण हैं - मोबाइल पर न सिर्फ रॉ फॉर्मेट, मैन्युअल मोड में फोटो और वीडियो शूट किए जा सकते हैं, बल्कि उन्हें एडिट करने और विभिन्न फिल्टर्स लगाने की सुविधाएं भी आसानी से मिल जाती हैं.

साभार - गैजेट 360 डिग्री

मोबाइल कैमरे में प्रो मोड (Manual Mode) का उपयोग करके का तरीका -

मोबाइल कैमरे में प्रो मोड (मैन्युअल मोड) का उपयोग करके का तरीका - प्रो मोड का उपयोग करने के लिए सबसे पहले अपने मोबाइल कैमरा ऐप को खोलें और 'प्रो' या 'मैन्युअल' विकल्प को चुनें. यह विकल्प अधिकांश एंड्रॉइड स्मार्टफोनों में मौजूद होता है, जैसे सैमसंग, वीवो, वनप्लस, श्याओमी (Samsung, Vivo, OnePlus, Xiaomi) आदि में. आईफोन में यह मोड सीधे न होकर थर्ड पार्टी ऐप्स जैसे हैलाइड, प्रोकैमरा हैलिडे, प्रो कैमरा (Halide, Pro Camera) आदि के माध्यम से प्रयोग किया जा सकता है.

प्रो मोड में मुख्यतः निम्नलिखित सेटिंग्स होती हैं -

1. शटर स्पीड (Shutter Speed) - यह निर्धारित करता है कि कैमरा कितनी देर तक प्रकाश को ग्रहण करेगा. मोबाइल कैमरों में सामान्यतः शटर स्पीड की रेंज 1/8000 सेकंड (बहुत तेज़) से लेकर 30 सेकंड (बहुत धीमी) तक होती है. धीमी शटर स्पीड का उपयोग लो लाइट या नाइट फोटोग्राफी में होता है जबकि तेज़ शटर स्पीड तब काम आता है जब आप किसी तेज़ी से चलते व्यक्ति या चीज़ को किसी क्षण में कैद करना चाहते हैं; जैसे कि चलती गाड़ी या ग्राउंड में खेलता खिलाड़ी, जहाँ आप पर्याप्त प्रकाश में सभी विवरण देखना चाहते हैं. मोबाइल कैमरों में शटर स्पीड की सीमा मोड के अनुसार बदलती है. सामान्य कैमरा मोड में यह लगभग 1/4000 सेकंड से 1/10 सेकंड तक होती है, जबकि प्रो या मैनुअल मोड में यह 1/12000 सेकंड से लेकर 30 सेकंड तक सेट की जा सकती है. (विस्तृत विवरण अध्याय 17 में)

2.आई एस ओ - यह कैमरे की प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है. अधिकांश मोबाइल फोनों में आईएसओ की सीमा 50 से शुरू होकर 3200 या कुछ हाई-एंड मोबाइल में 6400 तक हो सकती है. यह रेंज आपके फोन और इस्तेमाल किए जा रहे कैमरा ऐप पर निर्भर करती है. कम आई एस ओ स्पष्ट (noise-free) छवियाँ देता है, जबकि

उच्च आईएसओ का प्रयोग कम रोशनी में किया जाता है परंतु इससे ग्रेन या नॉइज़ बढ़ सकता है. उदाहरण के लिए सोचिए आप किसी संगीत कार्यक्रम में हैं. मंच की रोशनी कम है, लेकिन कलाकारों के हाव-भाव को आप मिस नहीं करना चाहते. फ्लैश नहीं चला सकते — क्योंकि वह मूड बिगाड़ देगा. ऐसे में ISO बढ़ाकर 3200 तक ले जाइए — और बस क्लिक करिए! हाँ, थोड़ा नॉइज़ होगा, लेकिन वह पल कैप्चर हो जाएगा.

3. अपर्चर (Aperture) - मोबाइल कैमरों का अपर्चर आमतौर पर निर्धारित होता है, जैसे f/1.8, f/2.0, आदि. इसका मतलब यह है कि आप अपर्चर को डीएसएलआर की तरह नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन कुछ हाई-एंड डिवाइसेज़ (Samsung Galaxy S9+ या आई फ़ोन प्रो) में दो स्तर का अपर्चर विकल्प मौजूद होता है. (विस्तृत विवरण अध्याय 16 में)

"बोकेह" इफेक्ट - कम एफ-नंबर (f-number) ज़्यादा प्रकाश देता है और बैकग्राउंड ब्लर करने में मदद करता है. उदाहरणतया कल्पना कीजिए कि आप एक पुराने किले में घूम रहे हैं. सूरज ढल रहा है, रोशनी कम है लेकिन माहौल बेहद खूबसूरत है. आप चाहते हैं कि सामने खड़े आपके दोस्त की तस्वीर शानदार बैकग्राउंड ब्लर आए — यानि पीछे की दीवारें हल्की धुंधली हों और चेहरा पूरी तरह स्पष्ट. यहीं आता है अपर्चर का कमाल.

अपर्चर, किसी भी कैमरे की वो खिड़की होती है जिससे रोशनी अंदर आती है. कम f-number (जैसे f/1.8) का मतलब होता है – ज्यादा खुली खिड़की, ज्यादा रोशनी, और गहरा बैकग्राउंड ब्लर यानी "बोकेह" इफेक्ट.

छोटे अपर्चर का लाभ - इसी प्रकार छोटे अपर्चर के महत्व को समझते हैं. मान लीजिए आप एक संग्रहालय (museum) में गए हैं.सामने एक लंबा गलियारा है, जिसकी दीवारों पर ऐतिहासिक चित्र और मूर्तियाँ सजी हुई हैं. आप चाहते हैं कि तस्वीर में सिर्फ पास की मूर्ति नहीं, बल्कि पूरा गलियारा — अंत तक — हर विवरण के साथ कैद हो जाए. सामने की मूर्ति से लेकर दूर की पेंटिंग तक, सब कुछ साफ और एक जैसा फोकस में हो.यही है छोटे अपर्चर का लाभ.

जब आप अपने मोबाइल कैमरे में f/2.4 या उससे ज्यादा (कुछ कैमरा ऐप्स में सॉफ़्टवेयर आधारित) अपर्चर उपयोग करते हैं, तो कैमरा कम रौशनी में ही सही, लेकिन हर चीज़ को एक समान स्पष्टता से दिखाता है. इसे ही कहते हैं – हाई डेप्थ ऑफ़ फील्ड (High Depth of Field).

मोबाइल में इसका इस्तेमाल कब करें? जब आपको पूरी गहराई के साथ दृश्य चाहिए — जैसे कि गलियारा, बाग़, पुस्तकालय की शेल्फ़ या किसी इवेंट का चौड़ा दृश्य.

4. एक्सपोज़र वैल्यू (EV) - जब कभी मैन्युअल मोड में सेटिंग करने में दिक्कत आ रही हो तो ईवी (EV) मोड का प्रयोग किया जा सकता है. ईवी यानी एक्सपोज़र वैल्यू, जो मूल रूप से शटर स्पीड और f-स्टॉप (अपर्चर) के संयोजन

से बनती है. इसका उपयोग तब होता है जब कैमरा फ्रेम में हल्के और गहरे हिस्सों के बीच औसत ब्राइटनेस को सही से अनुमान नहीं लगा पाता. ऐसे में EV से ब्राइटनेस को मैन्युअली संतुलित किया जा सकता है.

डिजिटल कैमरों में ई वी को शटर स्पीड और अपर्चर (f-stop) के माध्यम से बदला जा सकता है, लेकिन स्मार्टफोन कैमरों में अपर्चर सामान्यतः फिक्स (स्थिर) होता है. इसलिए मोबाइल में ई वी को केवल शटर स्पीड और आई एस ओ बदलकर ही नियंत्रित किया जा सकता है. जब आप स्मार्टफोन के प्रो मोड में शटर स्पीड या आई एस ओ को समायोजित करते हैं, तो ई वी भी स्वतः सेट हो जाता है. यह ठीक उसी तरह काम करता है जैसे ऑटोमेटिक मोड में ब्राइटनेस कंट्रोल. यदि आप ज्यादा तकनीकी सेटिंग्स में नहीं पड़ना चाहते, तो ई वी को उसी तरह इस्तेमाल कर सकते हैं जैसे 'ब्राइटनेस' स्लाइडर को करते हैं.

ई वी को आप ‘सेमी-मैनुअल मोड’ की तरह समझ सकते हैं- जहाँ आप व्हाइट बैलेंस या फोकस को मैनुअली सेट करते हैं, लेकिन ब्राइटनेस (एक्सपोज़र) को आसानी से ई वी के माध्यम से समायोजित कर सकते हैं.

5. व्हाइट बैलेंस (White Balance) - कई बार इस टर्म का फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी में किया जाता है. यह प्रक्रिया उन रंगों को हटाने से जुड़ी होती है जो वास्तविक नहीं लगते, क्योंकि गलत प्रकाश व्यवस्था में खींची गई तस्वीरों में रंग अक्सर बदले हुए नजर आते हैं. कई स्मार्टफोन ब्रांड के मैन्युअल मोड में व्हाइट बैलेंस के लिए आइकॉन उपलब्ध होते हैं, जैसे – बादल वाला दिन (Cloudy), धूप वाला दिन (Sunny), फ्लोरोसेंट लाइट और गर्म प्रकाश (Warmer tones). ये संकेतक इस बात में मदद करते हैं कि किस प्रकार की रोशनी आपके फोटो के लिए सबसे उपयुक्त होगी.

आप विभिन्न केल्विन तापमान (Kelvin Temperature) चुनकर यह तय कर सकते हैं कि फोटो को गर्म (warm) टोन देना है या ठंडा (cool) टोन. केल्विन स्केल रोशनी के तापमान को मापता है, और उसके अनुसार फोटो के रंगों को नियंत्रित किया जा सकता है ताकि वह दृश्य के अनुकूल दिखे. (विस्तृत विवरण अध्याय 25 में)

6. मैन्युअल फोकस - शुरुआती मोबाइल फोटोग्राफरों के लिए यह सबसे आसान और उपयोगी सेटिंग है. यह आपको उस वस्तु पर फोकस करने में मदद करती है, जिसकी आप तस्वीर लेना चाहते हैं. जब फोकस सही होता है, तो उस वस्तु के चारों ओर एक हरी रेखा दिखाई देती है — ठीक वैसे ही जैसे डिजिटल कैमरों में ‘फोकस पीकिंग’ फीचर होता है.

मैन्युअल वीडियो मोड में फोकस MF (मैनुअल फोकस) -

यह फीचर मैन्युअल वीडियो मोड में भी उपलब्ध होता है और तब बेहद काम आता है जब कोई वस्तु वीडियो के भीतर लगातार मूव कर रही हो और आपको उस पर स्थिर फोकस बनाए रखना हो.

इसका उपयोग कब करना चाहिए? कई बार ऑटोमैटिक फोकस गलत वस्तु पर केंद्रित हो जाता है, या जब आप अग्रभूमि (foreground) की बजाय पृष्ठभूमि (background) की किसी चीज़ पर फोकस करना चाहते हैं, तब यह फीचर विशेष रूप से उपयोगी होता है. इसके अलावा, दस्तावेज़ों की फोटोग्राफी करते समय भी यह बहुत सहायक साबित होता है.

यह सेटिंग न केवल फोटोग्राफी को आसान बनाती है, बल्कि क्रिएटिव नियंत्रण भी देती है जिससे आपकी तस्वीरें ज्यादा स्पष्ट और पेशेवर नजर आती हैं.

ध्यान रहे - परन्तु यह भी ध्यान रखें कि हर हाई एन्ड मोबाइल में यह सेटिंग नहीं होती. केवल कुछ ही मोबाइल में ये फीचर होता है. इन मोबाइल फ़ोन में Pro/Manual Mode के भीतर Focus Slider होता है, जिससे आप ऑब्जेक्ट पर मैन्युअली फोकस कर सकते हैं. जब आप फोकस बदलते हैं, तो कई बार स्क्रीन पर फोकस पीकिंग (हाइलाइटेड एरिया) भी दिखाई देता है.

जिनमें यह नहीं होता - कई मिड-रेंज या बजट फोन में Pro Mode तो होता है, लेकिन उसमें फोकस कंट्रोल शामिल नहीं होता – केवल आई एस ओ, शटर स्पीड और वाइट बैलेंस तक सीमित होता है. कुछ कैमरा ऐप्स जैसे कि Google Camera (GCam) में यह नियंत्रण सीमित होता है.

विकल्प - अगर फोन के इनबिल्ट कैमरा ऐप में मैन्युअल फोकस नहीं है, तो आप थर्ड पार्टी कैमरा ऐप्स के द्वारा इन्हें इंस्टॉल कर सकते हैं, जिनमें फुल मैन्युअल कंट्रोल (Focus MF समेत) मिलता है – बशर्ते कि आपके फोन का हार्डवेयर इसे सपोर्ट करता हो.

फिल्टर्स का उपयोग -प्राकृतिक रोशनी कभी बहुत तेज़, कभी बहुत फीकी होती है. ऐसे में मोबाइल कैमरा फिल्टर्स हमारे हाथों में एक जादू जैसा काम करते हैं. ये फिल्टर्स रौशनी को मैनेज करने मैं हमरी मदद करते हैं.आज के स्मार्टफोन में भले ही सैकड़ों एडिटिंग टूल्स हों, लेकिन फिज़िकल फिल्टर्स का प्रभाव सबसे अलग होता है. ये आपको रियल टाइम में प्रकाश और रंगों को पकड़ने की आज़ादी देते हैं.

कुछ खास फिल्टर्स जैसे **ND (न्यूट्रल डेंसिटी) फिल्टर और CPL** (सर्कुलर पोलराइज़र) फिल्टर, आपके शॉट को एक नया जीवन दे सकते हैं. ND फिल्टर तेज रोशनी में कंट्रोल देता है, जबकि CPL फिल्टर रिफ्लेक्शन को कम करता है और रंगों को गहराई देता है.

इन फिल्टर्स का उपयोग करना मुश्किल नहीं है, लेकिन समझ और धैर्य ज़रूरी है. एक बार आप इनकी भूमिका समझ जाएं, तो आपकी तस्वीरें सिर्फ अच्छी नहीं, मन को छू लेने वाली हो जाएंगी.

फिल्टर कैसे लगाएँ (Attachment Methods) - दो तरीके हैं फ़िल्टर लगाने के. पहला क्लिप-ऑन तकनीक (Clip-on Method). यह सबसे आसान और पॉपुलर तरीका है. फिल्टर एक क्लिप के साथ आता है जो मोबाइल

कैमरे के ऊपर सीधे क्लिप होकर फिट हो जाता है. ND और CPL दोनों फिल्टर्स के लिए यह तरीका समान रूप से काम करता है.

साभार- Ubuy

लाभ -इंस्टॉलेशन आसान होता है और बिना किसी चिपकने वाली चीज़ के काम हो जाता है. ध्यान देने योग्य बात - क्लिप को ठीक से लगाना ज़रूरी है ताकि फिल्टर सेंसर के ठीक सामने हो.

दूसरा - मैग्नेटिक/मेटल रिंग प्रणाली (Magnetic Mount or Metal Ring System) - पहले कैमरे के चारों ओर एक पतली मेटल रिंग चिपकाई जाती है. फिर ND या CPL फिल्टर को मैग्नेटिकली उस रिंग पर अटैच किया जाता है. यह अधिक स्थिर और DSLR जैसे अनुभव देता है.

साभार- Internet

लाभ - बार-बार बदलने में आसानी. इसके अलावा बिना क्लिप के दिखने में प्रोफेशनल लुक देता है.

ध्यान देने योग्य बात - एक बार रिंग चिपक जाए, तो उसे बार-बार हटाना ठीक नहीं होता. साथ ही फिल्टर का साइज और मोबाइल कैमरे का साइज मेल खाना ज़रूरी है.

दोनों फिल्टर्स एक साथ भी लगाए जा सकते हैं. कुछ advanced kits में CPL और ND फिल्टर को stack (एक-दूसरे पर लगाना) भी किया जा सकता है.

परन्तु ध्यान रखें कि ऐसा करते समय फ़ोन कैमरा लेंस पर पूरा कवर होना चाहिए.

1. ND फिल्टर (Neutral Density Filter) -ND फिल्टर एक ऐसा पारदर्शी फिल्टर होता है जो कैमरे में आने वाली रोशनी की मात्रा को नियंत्रित करता है, बिना रंगों या डिटेल्स को बदले. इसे "धूप का चश्मा" भी कहा जा सकता है — लेकिन कैमरे के लिए.

क्यों ज़रूरी है? जब बहुत तेज़ रोशनी होती है (जैसे दोपहर 12 बजे की धूप), तो फोटो ओवरएक्सपोज़ हो सकती है — यानी बहुत सफेद, फीकी और डिटेल्स खो जाने वाली. ND फिल्टर इस रोशनी को सॉफ्ट कर देता है, जिससे आप स्लो शटर स्पीड में भी शूट कर सकते हैं. उदाहरणतया आपने कभी झरने की फोटो देखी है जिसमें पानी एक दूधिया रेखा जैसा बहता दिखता है? वो ND फिल्टर और धीमी शटर स्पीड ऐसा प्रभाव है.

इसी तरह अगर आप सड़क पर चलती कारों की लंबी रोशनी की लकीरें शूट करना चाहते हैं — ND फिल्टर से ऐसा संभव है.

लेकिन ध्यान रखें कि ND फिल्टर के साथ शूट करते समय ट्राइपॉड ज़रूरी होता है, ताकि कैमरा हिले नहीं और शॉट पूरी तरह साफ़ आए.

2. सी पी एल फिल्टर (Circular Polarizer Filter) - सी पी एल (CPL) फिल्टर एक खास प्रकार का फिल्टर होता है जो परावर्तित प्रकाश (reflected light) को कम करता है. यानी वो चमक जो पानी, शीशे या धातु की सतह से वापस आती है — उसे यह फिल्टर दबा देता है. क्यों ज़रूरी है? जब आप झील, तालाब, या खिड़की की फोटो लेते हैं तो उसमें अक्सर रिफ्लेक्शन आ जाता है. सी पी एल (CPL) फिल्टर उस रिफ्लेक्शन को हटाकर भीतर की चीज़ें दिखा सकता है. मान लीजिये आप एक पहाड़ी झील पर गए हैं. वहां पानी इतना साफ है कि अंदर की पत्थर की परतें दिख रही हैं, लेकिन कैमरे में सिर्फ चमक आ रही है तब सी पी एल (CPL) फिल्टर से आप उस चमक को हटा सकते हैं और झील की असली गहराई कैद कर सकते हैं.

लेकिन ध्यान रखें कि सी पी एल (CPL) फिल्टर को घुमा कर (rotate करके) आप यह तय करते हैं कि कितनी रिफ्लेक्शन हटानी है इससे तस्वीर और भी सुन्दर बनती है. इस फिल्टर के लिए ट्राइपॉड अनिवार्य नहीं है. लेकिन यदि आप सटीकता, स्थिरता, या लो लाइट में काम कर रहे हैं, तो ट्राइपॉड फ़ायदेमंद होता है.

एडिटिंग - मोबाइल फोटोग्राफी केवल क्लिक पर समाप्त नहीं होती, उसकी परिपूर्णता एडिटिंग के माध्यम से होती है. Snapseed, Lightroom Mobile और VSCO जैसे ऐप्स इस प्रक्रिया को आसान बनाते हैं. Snapseed एक गूगल आधारित फ्री ऐप है जिसमें selective editing, healing और curves जैसे एडवांस फीचर्स मिलते हैं. Adobe Lightroom मोबाइल पर प्रोफेशनल टूल्स की सुविधा देता है, जैसे HSL, tone curve और RAW सपोर्ट. Canva में फोटो टेम्पलेट्स के साथ ग्राफिक डिजाइनिंग भी की जा सकती है, जो इंस्टाग्राम या ब्लॉग पोस्ट के लिए उपयुक्त है. VSCO अपने शानदार फिल्टर्स और सहज इंटरफेस के कारण लोकप्रिय है.

सारांश; प्रो मोड के माध्यम से मोबाइल फोटोग्राफी केवल एक क्लिक नहीं, बल्कि कला और विज्ञान का संगम बन जाती है. यदि आप आईएसओ, शटर स्पीड और व्हाइट बैलेंस जैसी सेटिंग्स को समझकर इस्तेमाल करते हैं, तो आप साधारण कैमरे से भी असाधारण चित्र बना सकते हैं. एडिटिंग ऐप्स इन तस्वीरों को और परिष्कृत बनाते हैं. इस तरह, मोबाइल फोटोग्राफी आज एक लोकप्रिय कला रूप बन चुकी है जो तकनीक, रचनात्मकता और अभिव्यक्ति का अदभुत संगम है.

5. डी एस एल आर कैमरे का परिचय

प्रशिक्षु फोटो पत्रकार के लिए यह जानना ज़रूरी है कि पेशेवर फोटोग्राफर किन कैमरों का उपयोग करते हैं. वैसे तो सभी फोटोग्राफर अलग-अलग मॉडल का कैमरा इस्तेमाल करते हैं परंतु सभी फोटोग्राफर डीएसएलआर कैमरा उपयोग करते है चाहे वो पोर्ट्रेट फोटोग्राफर हो या लैंडस्केप फोटोग्राफर. इस कैमरे में बेहतर रेजोल्यूशन (resolution), शार्प और स्पष्ट फोटो देने के साथ -साथ लेंस बदलने की सुविधा भी मिलती है. अधिकतर फोटोग्राफर या तो निकोन (Nikon) या कैनन (Canon) का या फिर दोनों कैमरों का इस्तेमाल करते हैं.

डी एस एल आर कैमरा: डी एस एल आर यानि डिजिटल सिंगल लेंस रिफ्लेक्स. इस कैमरे का अपना स्वयं का एक ऑपरेटिंग सिस्टम होता है. यह सिस्टम एक सॉफ्टवेयर के माध्यम से कार्य करता है. सॉफ्टवेयर का काम है डाटा को एक जगह एकत्रित करना और किसी फोटो या इमेज को सेंसर के द्वारा इसकी मैमोरी तक भेजना. डीएसएलआर कैमरे के मोड बटन या फंक्शन की पूरी और सही जानकारी होनी चाहिए तभी आप बेहतर चित्र ले पाएंगे.

डीएसएलआर की संरचना व कार्यचालन - फोटो पत्रकारिता का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा कैमरा है. फोटो पत्रकार समाचार बताने के लिए कलम की बजाय कैमरे का उपयोग करता है. एक फोटो पत्रकार के लिए, समाचार की समझ जितनी ज़रूरी है, उपकरण को समझना भी उतना ही आवश्यक है. कैमरे को जितना समझ कर फोटोग्राफी करेंगे, परिणाम उतने ही अच्छे मिलेंगे.

हर कैमरे के दो भाग होते हैं - सामने का भाग जिसमे लेंस लगा होता है और पिछला भाग जिसमें एलसीडी स्क्रीन होती है.

(कैमरा बॉडी टॉप पर कण्ट्रोल दाएँ ओर से देखें)

एक्सपोज़र कंपंसेशन बटन - इसका उपयोग करने के लिए, कैमरा मोड में से एक में होना चाहिए जो कैमरा मीटर का उपयोग करता है, जैसे अपर्चर प्राथमिकता, शटर प्राथमिकता, प्रोग्राम मोड, या कोई अन्य "सीन मोड " जो स्वचालित एक्सपोज़र समायोजन करता है. जब तक फोटोग्राफर ने ऑटो आईएसओ ऑन नहीं किया है, एक्सपोज़र कंपंसेशन मैन्युअल मोड में बिल्कुल कुछ नहीं करेगा. एक बार उचित कैमरा मोड का चयन हो जाने पर, कैमरे की एक्सपोज़र कंपंसेशन सुविधा का उपयोग कर फोटो में लाइट के स्तर को समायोजित करना संभव होगा.

जबकि अधिकांश कैमरों में ऊपर या कैमरे के पीछे एक बटन होगा, कुछ कैमरों में यह सुविधा केवल डायल के माध्यम से उपलब्ध हो सकती है. सेटिंग को समायोजित करने के लिए कमांड डायल को घुमाते समय बटन को दबाए रखें.

ऑन -ऑफ स्विच / शटर रिलीज़ - इस बटन से कैमरे को ऑन ऑफ किया जाता है. इसे दबाने से ही फोटो खिंचती है.

मूवी रिकॉर्ड बटन -लाइव व्यू मोड में शिफ्ट होने के बाद, मूवी रिकॉर्ड करना शुरू करने के लिए इस बटन को दबाएं. रिकॉर्डिंग बंद करने के लिए इसे फिर से दबाएँ.

ए एफ-असिस्ट लाइट - कम रोशनी में, यह लाइट कैमरे को आपके फोकस का पता लगाने में मदद करने के लिए थोड़े समय के लिए ऑन होता है. जब आप रेड-आई रिडक्शन फ्लैश और सेल्फ-टाइमर शटर-रिलीज़ मोड का उपयोग करते हैं तो इसकी लाइट भी ऑन होती है.

माइक्रोफ़ोन - यदि बाहरी माइक्रोफ़ोन नहीं लगाते हैं, तो मूवी का ऑडियो कैमरे के अंतर्निर्मित माइक्रोफ़ोन से रिकॉर्ड हो जाता है.

कमांड डायल बटन - इस बटन से अपर्चर, स्पीड को चेंज किया जाता है. अलग-अलग कंपनियों के डी एस एल आर में यह थोड़ा अलग तरीके से होता है.

मोड डायल - इस डायल की मदद से, आप एक्सपोज़र मोड चुनते हैं, जो यह निर्धारित करता है कि आप किस तस्वीर की सेटिंग्स को नियंत्रित कर सकते हैं. इसमें कई ऑटोमैटिक और शुरुआती मोड के साथ-साथ चार मोड (P, S, A और M) शामिल होते हैं.

लाइव व्यू स्विच - लाइव व्यू को ऑन और ऑफ करने के लिए स्विच को घुमाएँ. लाइव व्यू ऑन होने पर व्यूफ़ाइंडर में से नहीं देख पाते. ऑन और ऑफ करने के लिए स्विच को घुमाएँ. लाइव व्यू और व्यू फाइंडर में से किसी एक में से देख पाते हैं. स्विच इसका उपयोग आमतौर पर वीडियो रिकॉर्डिंग के लिए किया जाता है.

फ्लैश हॉट शू - हॉट शू एक टर्मिनल है जिससे बाहरी फ्लैश कनेक्ट कर सकते हैं.

स्पीकर - जब कोई फिल्म चलाते हैं तो इन छिद्रों से आवाज़ निकलती है.

बैक बॉडी फंक्शन एवं कन्ट्रोल (कैमरा चित्र में दाएँ ओर से देखें)

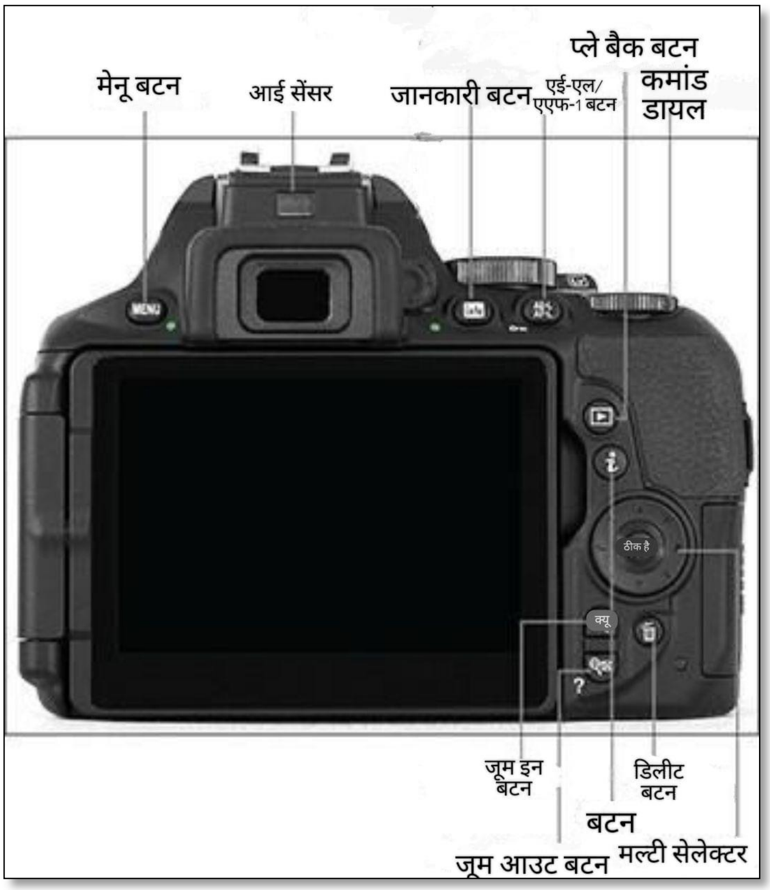

प्ले बैक बटन - इस बटन से कैमरे में ली गई तस्वीर को देखने और लेफ्ट या राइट दिशा में दबाने से क्लिक किए गए सभी फोटो आगे पीछे होने लगते हैं.

एईएल-एएफएल (AEL- AFL) - यह व्यू फाइंडर के पास एक बटन होता है. एईएल (ऑटो एक्सपोज़र लॉक) और एएफएल (ऑटो फोकस लॉक) डीएसएलआर कैमरों में दो महत्वपूर्ण फीचर्स हैं. एईएल (ऑटो एक्सपोज़र लॉक) का उद्देश्य है एक्सपोज़र सेटिंग्स (एपर्चर, शटर स्पीड, आईएसओ) को लॉक करना. यह बटन दबाने से एक्सपोज़र सेटिंग्स लॉक हो जाती हैं, जिससे आप शॉट को रिकंपोज़ कर सकते हैं बिना एक्सपोज़र सेटिंग्स बदले. इसका उपयोग बैकलिट विषयों के लिए, हाई-कॉन्ट्रास्ट दृश्यों में और एक्सपोज़र को स्थिर रखने के लिए किया जाता है.

एएफएल (ऑटो फोकस लॉक) का उद्देश्य है फोकस को लॉक करना. यह बटन दबाने से फोकस लॉक हो जाता है, जिससे कैमरा दूसरे विषयों पर फोकस नहीं बदलता. पोर्ट्रेट फोटोग्राफी, वाइल्डलाइफ और स्पोर्ट्स फोटोग्राफी, मैक्रो फोटोग्राफी में इसका अधिक उपयोग होता है.

जानकारी इंफो - कैमरे की की अंदरूनी सेटिंग्स देखने के लिए स्पीड, अपर्चर, आईएसओ कितना है इसकी इंफोरमेशन मिलती है.

मेन्यू बटन - इस बटन को दबाते ही कैमरे की इंटरनल सेटिंग का मेन्यू ऑपन हो जाता है. जिसमें फाइल का साइज कलर, व्हाइट बैलेंस आदि सेंटिंग बदली जा सकती है.

डिलीट बटन - फोटोग्राफ्स की समीक्षा करते समय या देखते हुए अवांछित चयनित फोटो को डिलीट करने के लिए डिलीट बटन दबाएँ.

मल्टी-सिलेक्टर/ओके बटन - शूटिंग के दौरान, मेनू नेविगेट करने और कैमरा सेटिंग्स का चयन करने के लिए बाहरी किनारों को ऊपर/नीचे/बाएँ/दाएँ दबाएँ.

उसके बाद अपनी पसंद की सेटिंग्स लॉक करने के लिए ओके दबाएं. इसके अलावा प्लेबैक के दौरान, प्लेबैक डिस्प्ले मोड को बदलने के लिए ऊपर/नीचे दबाएँ. प्लेबैक मोड में ही फोटो स्क्रॉल करने के लिए बाएँ/दाएँ दबाएँ.

ज़ूम इन बटन - लाइव व्यू शूटिंग और फोटो प्लेबैक के दौरान ज़ूम इन बटन का उपयोग डिस्प्ले को बड़ा करने के लिए करें.

ज़ूम आउट बटन - ऑन स्क्रीन ज़ूम आउट करने के लिए बटन दबाएँ.

कैमरा बॉडी कंट्रोल्स (कैमरा चित्र में दाएँ ओर से देखें) –

सहायक टर्मिनल - यह टर्मिनल कुछ सहायक उपकरण स्वीकार करता है जैसे रिमोट शटर-रिलीज़ केबल और वायरलेस रिमोट कंट्रोलर. इसकी विस्तृत जानकारी के लिए प्रत्येक डिवाइस के साथ आने वाला मैनुअल मददगार साबित हो सकता है.

माइक्रोफोन जैक - अगर आप आंतरिक माइक्रोफोन द्वारा प्रदान की गई ऑडियो गुणवत्ता से खुश नहीं हैं, तो बाहरी माइक्रोफोन प्लग इन कर सकते हैं.

यूएसबी पोर्ट - इस पोर्ट के माध्यम से फोटो डाउनलोड करने के लिए अपने कैमरे को यूएसबी कनेक्शन के माध्यम से कंप्यूटर से कनेक्ट कर सकते हैं.

एचडीएमआई पोर्ट - कैमरे को हाई-डेफिनिशन टीवी से कनेक्ट करने के लिए कैमरे के दाईं ओर दिए इस पोर्ट का उपयोग करते हैं. लेकिन इसके लिए एक एचडीएमआई केबल की ज़रूरत है.

एफएन (फ़ंक्शन) बटन - यह डिफ़ॉल्ट रूप से आईएसओ सेटिंग का शॉर्टकट है. इसे कस्टम सेटिंग मेनू के माध्यम से अन्य कार्य करने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है.

फ्लैश - इस बटन को दबाने से फ्लैश ऑन या ऑफ होती है.

फोकल लेंथ सूचक - किसी भी लेंस की फोकल लेंथ कितनी है ये लेंस पर लिखा होता है. लेंस की फोकल लंबाई हमें एंगल ऑफ़ व्यू बताती है - दृश्य का कितना हिस्सा कैप्चर किया जाएगा और फोटो के सभी तत्व कितने बड़े होंगे. फोकल लंबाई जितनी अधिक होगी, देखने का कोण उतना ही संकीर्ण होगा और फोटो में सब्जेक्ट बड़ा दिखाई देगा.

ज़ूम बैरल - ज़ूम लेंस पर मौजूद, ज़ूम रिंग को घुमाने से फोकल लंबाई बदल जाती है. ज़ूम लेंस पर अंकित संख्याओं से आमतौर पर फोकल लंबाई जानी जाती है और एंगल ऑफ़ व्यू को मापने में आपकी सहायता करती हैं. आप ज़ूम इन करने के लिए ज़ूम रिंग को एंटी-क्लॉकवाइज़ घुमाएँ.

मैन्युअल फ़ोकस रिंग – सभी लेंस, चाहे कोई भी मॉडल हो, में एक फ़ोकसिंग रिंग होती है, जिससे आप मैन्युअल फ़ोकस (एमएफ) कर सकतें हैं. फ़ोकसिंग रिंग को घुमाने पर लेंस के अंदर फ़ोकसिंग लेंस समूह की स्थिति बदल जाती है, जिससे फ़ोकस में परिवर्तन होता है.

लेंस रिलीज बटन - लेंस के लेफ्ट साइड में एक बटन होता है जिसे कैमरे से लेंस निकालने और दूसरा लेंस सेट करते समय दबाना होता है.

लेंस लॉक बटन - लेंस को उपयोग करने के लिए लेंस लॉक बटन को दबाना होगा जिससे लेंस अनलॉक हो जाएगा और आप फोटोग्राफी कर सकते हैं. कैमरा उपयोग करने के बाद फिर से जब पैक करने लगेंगे तब इसी बटन को दबाने पर लेंस बॉडी के अंदर चला जाएगा.

ध्यान रहे - कैमरे को हाथ में लेते ही उसकी बैटरी बैकअप, मेमोरी कार्ड को चैक करने के बाद कैमरे को ऑपरेट कर के देख लें. उससे संबंधित किट का पूरा सामान चैक करने के उपरांत ही फोटो लेने के लिए कैमरे के साथ बाहर निकलें.

सारांश ; फोटो पत्रकारिता में कैमरा एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. सफल फोटो पत्रकार बनने के लिए न केवल समाचार की गहरी समझ आवश्यक है, बल्कि उपकरण की तकनीकी जानकारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है. कैमरे और उसके उपयोग में कुशलता से ही फोटो पत्रकार सही ढंग से खबरों को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है.

6. कैमरा ऑपरेट करने की विधि

फोटो-पत्रकारिता सीखने का पहला कदम है कैमरे का सही ढंग से संचालन करना. यदि आप उपकरण का सही उपयोग नहीं करते हैं, तो आपकी तस्वीरें कभी अच्छी नहीं आएंगी, और महंगे उपकरण को भी नुकसान पहुंचने का खतरा रहता है. इसलिए, सबसे पहले अपने डीएसएलआर को संभालना सीखें, फिर फोटो की कंपोजिशन पर ध्यान दें. कैमरे को अपनी गर्दन के चारों ओर स्ट्रैप से लटकाना एक सुरक्षित तरीका है, जिससे यह गिरने से बचता है. इसके बाद, लेंस को बाएं हाथ से पकड़े रहें ताकि फोटो क्लिक करते समय लेंस स्थिर रहे और तस्वीरें स्पष्ट बने. अगला कदम फोटो की कंपोजिशन होगा, जिसका विवरण आगामी अध्याय में दिया जाएगा.

सी बेस्ड हैंडलिंग ऑफ कैमरा (C based handling of camera)

1.सी	**केयरफुली हैंडल द कैमरा -** (Carefully handle the Camera) सबसे पहले शिक्षार्थी कैमरा पकड़ना सीखे. कैमरे को साइड में दिखाए चित्र के अनुसार पकड़ना है .	
2.सी	**केयरफुली स्टार्ट द कैमरा -** चित्र के अनुसार केयरफुली कैमरा ऑन करें. बटन पर दबाव न डालें क्योंकि इससे बॉडी को नुकसान हो सकता है .	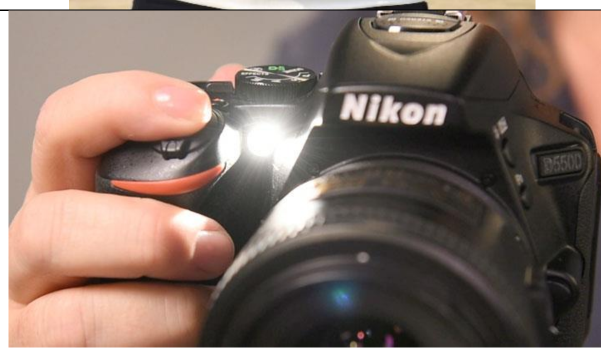

3.सी	**क्रिएशन ऑफ व्यू -**	
4.सी	**कंपोज एंड क्लीयर द सब्जेक्ट -** (Composition & Position) फोटो कंपोज़ करने के लिए सब्जेक्ट को व्यू फाइंडर से देखना चाहिए न कि एलसीडी स्क्रीन में से. कैमरा पकड़ने के सही और ग़लत दोनों तरीके फोटो के माध्यम से बताए गए हैं. (Composition & Position)	 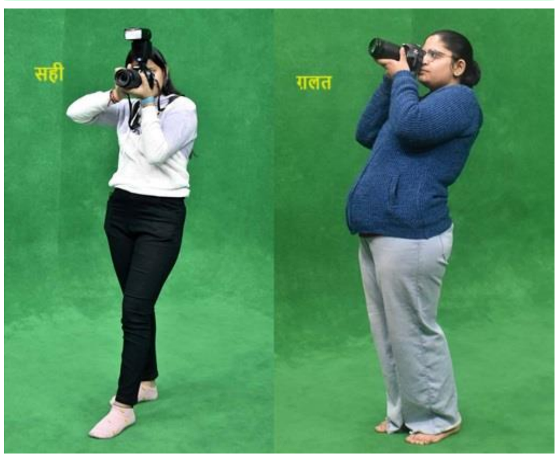

5.सी	**क्लिक द फोटो विद द हेल्प ऑफ रिलीज बटन** - सब्जेक्ट पर पूरा फोकस करने के बाद शटर रिलीज बटन से फोटो क्लिक करें.	
6. सी	 क्लोज द कैमरा	**क्लोज द कैमरा** -जब लम्बे समय तक कैमरा उपयोग नहीं करना हो तो उसकी बैटरी और लेंस निकाल देने चाहिए ताकि डी एस एल आर के इलैक्ट्रोनिक्स कॉन्टेक्ट्स ख़राब न हों.
7. सी	 कैप्शन राइटिंग - फोटो संबंधित जानकारी लिखना.	**फोटो कैप्शन यानि शीर्षक** - महत्वपूर्ण संदर्भ और जानकारी प्रदान कर सकते हैं, जिससे पाठकों को दृश्य, स्थान या विषय वस्तु को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है.

सारांश; फोटो-पत्रकारिता में सफलता के लिए कैमरे का सही संचालन और सावधानीपूर्वक उपयोग अनिवार्य है. एक फोटोग्राफर के लिए कैमरे की सुरक्षा और तस्वीरों की गुणवत्ता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है. दोनों हाथों से कैमरे को स्थिरता से पकड़ना और लेंस को सुरक्षित रखना स्पष्ट और गुणवत्तापूर्ण तस्वीरें लेने में मदद करता है. कैमरे को सुरक्षित रखने के साथ-साथ इसका सावधानीपूर्वक इस्तेमाल, बेहतर तस्वीरों की नींव रखता है.

7 - कैमरे के सहायक उपकरण (एक्सेसरीज) -

फोटोग्राफी में कैमरे के साथ-साथ उसके सहायक उपकरण (एक्सेसरीज) भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं. ये एक्सेसरीज फोटोग्राफी के अनुभव को बेहतर बनाते हैं और उचित परिणाम प्राप्त करने में सहायता करते हैं. इस पाठ में हम कैमरे के विभिन्न सहायक उपकरणों जैसे ट्राइपॉड, लेंस, फ्लैश, फिल्टर, और मेमोरी कार्ड आदि के बारे में जानेंगे.

1. कैमरा की लेंस किट	
2. लेंस फ़िल्टर / सेफ्टी कवर	
3. कैमरा बैटरी	

4 मैमोरी कार्ड: सीएफ-कार्ड, एसडी-कार्ड, माइक्रो-कार्ड.	
5. बैटरी चार्जर	
6. फ्लैश	
7. रिफ्लेक्टर	

सारांश ; कैमरे के सहायक उपकरण फोटोग्राफी को और प्रभावी तथा व्यावसायिक बनाते हैं. ट्राइपॉड, लेंस, फ्लैश, फिल्टर, और मेमोरी कार्ड जैसे उपकरणों का सही उपयोग फोटोग्राफर को उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें लेने में मदद करता है. इनके उपयोग से फोटोग्राफी का अनुभव न केवल बेहतर होता है बल्कि तकनीकी रूप से भी अधिक परिपूर्ण होता है.

***

8. कैमरे के प्रकार

कैमरा चित्र लेने वाला उपकरण कहलाता है. लेंस कैमरे का आवश्यक अंग होता है. यह दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं . पहले एस एल आर कैमरा हुआ करते थे. वर्तमान में डीएसएलआर कैमरा चलन में है.

कैमरे 8 प्रकार के होते हैं – एस एल आर कैमरा, डी एस एल आर कैमरा, ब्रिज कैमरा,पोलोराइड कैमरा, पॉकेट कैमरा, माईक्रो कैमरा, ड्रोन कैमरा और मोबाईल कैमरा. लेंस के छह प्रकार हैं - साधारण लेंस, स्टैंडर्स लेंस, वाईड लेंस, टेलीलेंस, टेलीस्कोप लेंस और फिश आई लेंस .

कैमरे की विशेषताएं - हर कैमरे की अपनी खासियत होती है. समय-समय पर नई तकनीक से लैस कैमरे बाजार में आते रहते हैं. प्रमुख कैमरा निर्माता कंपनियों में कैनन, निकोन, सोनी, पैनासोनिक, पेंटाक्स, ओलंपस, मिनोल्टा, फूजी फिल्म, और कोडक शामिल हैं. हर कैमरे की अपनी विशेषताएं हैं –

1.एसएलआर कैमरा - फोटोग्राफी के प्रारंभिक दौर में एस एल आर कैमरे आए. यह कैमरा सिंगल लेंस रिफ्लैक्स वाला होता है. यह मैन्युअली ऑपरेट होते थे जिसमें रोल (फिल्म) प्रयोग होता था.

पहले पीछे के इस खुले बॉक्स में कैमरा रोल डालते थे. ब्लैक एंड व्हाईट फोटोग्राफी होती थी जिसमें 120 नेगटिव का प्रयोग होता था. एक्सपोजिंग के उपरांत उसे डार्करूम में डेवलप किया जाता था. नेगेटिव पर ब्रश एवं पेंसिल से टचिंग कार्य करने के बाद फिर डार्करूप में इंलार्जर मशीन और कैमिकल्स द्वारा मैन्युअली ब्लैक एंड व्हाइट फोटो तैयार किए जाते थे. 1970 के दशक में रंगीन फिल्मों का दौर आया. 1985 में 35 एमएम की रंगीन फिल्मों का प्रयोग शुरू हुआ.

2. पोलेरॉइड कैमरा - वर्ष 1995 में इंसटेंट फोटोग्राफी के लिए पोलेरॉइड कैमरा बाजार में आए. इसमें फोटो क्लिक करते ही पासपोर्ट साईज के चार फोटो एक साथ बाहर आ जाते थे .

3.पॉकेट कैमरा/ पॉइंट एंड शूट कैमरा (Point and Shoot camera) - यह ऑटोमोड वाले डिजिटल छोटे आकार के कैमरे होते हैं. घूमने के शौक़ीन, इन्हें जेब में रखकर, आसानी से कहीं भी ले जा सकते हैं. कम बजट वाले इस कैमरे से पारिवारिक फोटोग्राफी बहुत आसान है .

पॉइंट-एंड-शूट कैमरे और डीएसएलआर में अंतर -

पॉइंट-एंड-शूट कैमरे और डीएसएलआर (डिजिटल सिंगल-लेंस रिफ्लेक्स) कैमरे दो अलग-अलग प्रकार के डिजिटल कैमरे हैं. इन्हें अलग-अलग उद्देश्य और उपयोग के लिए डिज़ाइन किया गया है. उनके बीच कुछ प्रमुख अंतर हैं:

विशेषता	**पॉइंट-एंड-शूट कैमरा**	**डीएसएलआर कैमरा**
आकार और वजन	छोटे, हल्के और कॉम्पैक्ट; जेब या छोटे बैग में ले जाना आसान	बड़े और भारी; अक्सर कैमरा बैग की आवश्यकता होती है
लेंस सिस्टम	फिक्स लेंस; फोकल लंबाई और अपर्चर पर सीमित नियंत्रण	इंटरचेंजेबल लेंस; विभिन्न लेंस चुनने की सुविधा
इमेज क्वालिटी	अच्छी क्वालिटी संभव, पर छोटे सेंसर; कम रोशनी में प्रदर्शन सीमित	बड़े सेंसर; बेहतर लो लाइट परफॉर्मेंस और रंगों की विस्तृत रेंज
मैन्युअल नियंत्रण	सीमित नियंत्रण; मुख्यतः ऑटो मोड के लिए डिज़ाइन किया गया	अपर्चर, शटर स्पीड, ISO जैसे मैन्युअल नियंत्रण के कई विकल्प उपलब्ध
ऑटोफोकस प्रणाली	सामान्य ऑटोफोकस; धीमा या कम सटीक हो सकता है	तेज़ और उन्नत ऑटोफोकस; गतिशील विषयों के लिए उपयुक्त
व्यूफ़ाइंडर / स्क्रीन	अधिकतर एलसीडी स्क्रीन पर निर्भर; कई में व्यूफ़ाइंडर नहीं होता	ऑप्टिकल व्यूफ़ाइंडर; लेंस के माध्यम से सीधे दृश्य देखना संभव

विशेषता	पॉइंट-एंड-शूट कैमरा	डीएसएलआर कैमरा
कीमत	आमतौर पर अधिक किफायती	महंगे; अतिरिक्त लेंस व एक्सेसरीज़ के कारण लागत और बढ़ सकती है
उपयुक्तता	शौकिया और गैर-पेशेवर फ़ोटोग्राफ़रों के लिए उपयुक्त	प्रोफेशनल्स और रचनात्मक नियंत्रण चाहने वालों के लिए उपयुक्त

अंततः पॉइंट-एंड-शूट और डीएसएलआर के बीच का चुनाव आपकी विशिष्ट फोटोग्राफी आवश्यकताओं, विशेषज्ञता के स्तर और बजट पर निर्भर करता है. पॉइंट-एंड-शूट कैमरे गैर - पेशेवर फ़ोटोग्राफ़रों के लिए उपयुक्त हैं. उन्हें उपयोग करना और साथ रखना आसान है. डीएसएलआर उन व्यावसायिक छायाकारों की पसंद हैं जो अधिक रचनात्मक नियंत्रण चाहते हैं.

4.डीएसएलआर कैमरा - वर्तमान डिजिटल युग की क्रांति में डीएसएलआर कैमरे की बड़ी भूमिका है. एसएलआर कैमरों के बाद आए डीएसएलआर कैमरा ने अपनी जगह बनाना शुरू की. इससे बेहतर क्वालिटी के फोटो कम समय में लोगों को मिलने लगे. प्रमुख कैमरा निर्माताओं ने 2010 के दशक की शुरुआत में अपने उत्पाद शृंखला को डीएसएलआर कैमरों से हटाकर मिररलेस इंटरचेंजेबल-लेंस कैमरों (एमआईएलसी) में बदलना शुरू कर दिया.

आजकल डीएसएलआर कैमरों से ही वीडियो रिकार्डिंग की जाती है. फिल्म, टीवी सीरियल, म्यूजिक वीडियो एलबम की शूटिंग भी डीएसएलआर कैमरों से की जा रही है. लो लाईट और लो वेट के इन कैमरों को लाने ले जाने में आसानी होती है.

5.माईक्रो कैमरा - इसे खुफिया कैमरा भी कहा जाता है. अधिकांश ऐसे कैमरे सबूत जमा करने के उद्देश्य से प्रयोग में लाए जाते हैं. माईक्रो कैमरे घड़ी, बटन, पेन, बिंदी के आकार के होते हैं. तहलका डॉटकॉम ने इन्हीं कैमरों के इस्तेमाल से देश में व्याप्त भ्रष्टाचार की पोल खोलकर वास्तव में तहलका मचा दिया था.

6. ड्रोन कैमरा - एरियल व्यू , सुरक्षा व्यवस्था, अलग-अलग सर्वे, शादी - विवाह, राजनीतिक रैलियों, एलबम-शूटिंग, इवेंट- कवरेज इत्यादि में आजकल ड्रोन कैमरों का खूब इस्तेमाल हो रहा है. केंद्र सरकार ने ड्रोन कैमरे के लिए रजिस्ट्रेशन और लाईसेंस अनिवार्य कर दिया है.

7. मोबाईल कैमरा - कैमरे वाला मोबाईल वर्तमान युग का सबसे ज़बरदस्त हथियार बन चुका है. प्रौद्योगिक संचार क्रांति में मोबाईल कैमरे को ब्रहमास्त्र कहा जा रहा है. इन दिनों मोबाईल बहुत से कामों के लिए इस्तेमाल हो रहे हैं. समाचार चैनल के लिए कवरेज भी मोबाईल कैमरों से ही की जा रही है. इससे वीडियो और फोटो शीघ्रता से ट्रांसफर

होते हैं. दुनिया की कोई भी बड़ी घटना-दुर्घटना मोबाईल के माध्यम से कुछ ही क्षणों में, इंटरनेट द्वारा सभी देशों में पहुंच जाती है.

8. ब्रिज कैमरा - ब्रिज कैमरा एक प्रकार का डिजिटल कैमरा है जो पॉइंट-एंड-शूट और डीएसएलआर कैमरों के बीच का मॉडल है. इसे पॉइंट-एंड-शूट कैमरों की तरह आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं. इस से बड़े ज़ूम लेंस और डीएसएलआर जैसी कुछ मैनुअल कंट्रोल की सुविधाएं भी मिलती हैं. ये कैमरे ज़्यादातर ट्रेवल फोटोग्राफी, वन्यजीव फोटोग्राफी और स्पोर्ट्स फोटोग्राफी के लिए अच्छे रहते हैं.

ब्रिज कैमरे और डीएसएलआर में अंतर -

विशेषता	**ब्रिज कैमरा**	**डीएसएलआर कैमरा**
ज़ूम लेंस	अधिक ज़ूम रेंज; दूर की वस्तुओं की तस्वीर लेने में बेहतर	आमतौर पर सीमित ज़ूम लेंस; लेकिन उच्च गुणवत्ता वाले एक्सचेंज लेंस विकल्प
सेंसर	अपेक्षाकृत छोटा सेंसर; कम रोशनी में सीमित प्रदर्शन	बड़ा सेंसर; कम रोशनी में बेहतर छवि गुणवत्ता
मैन्युअल कंट्रोल	कुछ मैन्युअल कंट्रोल उपलब्ध (जैसे अपर्चर, शटर स्पीड, ISO)	विस्तृत मैन्युअल कंट्रोल विकल्प; रचनात्मक नियंत्रण अधिक
लेंस बदलना	फिक्स लेंस; बदला नहीं जा सकता	इंटरचेंजेबल लेंस; विभिन्न प्रकार की फोटोग्राफी के लिए लेंस का चयन संभव
आकार और वज़न	छोटे और हल्के; यात्रा के लिए सुविधाजनक	बड़े और भारी; साथ में कैमरा बैग की आवश्यकता

आपके लिए कौन सा कैमरा बेहतर है?

यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस तरह की फोटोग्राफी करना चाहते हैं और आपका बजट क्या है. यदि आप एक आसान कैमरा चाहते हैं जो ज़्यादातर यात्रा और रोज़मर्रा की फोटोग्राफी के लिए अच्छा हो, तो ब्रिज कैमरा एक अच्छा विकल्प हो सकता है. लेकिन अगर आप बेहतर छवि गुणवत्ता चाहते हैं और विभिन्न प्रकार की फोटोग्राफी करना चाहते हैं, तो डीएसएलआर बेहतर विकल्प हो सकता है, लेकिन ज़्यादा सीखने और ज़्यादा खर्च करने के लिए तैयार रहना होगा.

सारांश ; विभिन्न कैमरा मॉडल जैसे डी एस एल आर, एस एल आर, पोलरॉइड, ब्रिज कैमरा और पॉइंट एंड शूट कैमरा की अपनी-अपनी विशेषताएं और उपयोग होते हैं. इन कैमरों के बीच अंतर को समझना फोटोग्राफी की आवश्यकताओं के अनुसार सही चयन करने में मदद करता है. हर कैमरा एक विशेष उद्देश्य और उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है, इसलिए सही कैमरा चुनना व्यक्ति की ज़रूरतों और प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है.

9. ट्राइपॉड

आपने अक्सर देखा होगा कि कैमरा को तिपाई यानी ट्राइपॉड पर सेट करके फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी की जाती है. इसकी आवश्यकता क्यों पड़ती है ? ट्राइपॉड होता क्या है ? इसको कैसे सेट करते हैं ? इसका उपयोग क्यों और कब करना चाहिए ? यह सब आप इस लेख में समझेंगे. ट्राइपॉड सभी प्रकार के फील्डवर्क और सामान्य फोटोग्राफी - वीडियोग्राफी के लिए उपयोग किया जाता है.

ट्राइपॉड के हिस्से - ट्राइपॉड के तीन पैर (पॉड) होते हैं. इन्हें पहाड़, ऊबड़-खाबड़ रास्ते , सीढियों या किसी भी अन्य असमतल जगह पर अलग- अलग ऊपर या नीचे किया जा सकता है ताकि कैमरा एक लेवल में रहे. इसके पैरों के निचले भाग में स्पाइक या रबर कैप लगा होता है जिससे ट्राइपॉड फिसलता नहीं है. तीन पॉड्स से एक हेड जुड़ा होता है.

ट्राइपॉड का हेड- ट्राइपॉड का हेड वह हिस्सा है जो कैमरे से बेस - प्लेट के माध्यम से जुड़ता है और कैमरे को मूवमेंट प्रदान करता है.

हेड की गुणवत्ता निर्धारित करती है कि फोटो /वीडियो कितना अच्छा होगा और कैमरा मूवमेंट्स कितने स्मूथ होंगें.

बेस प्लेट -बेस प्लेट ट्राइपॉड और डीएसएलआर को जोड़ने का माध्यम होती है. यह कैमरे को मजबूती से पकड़ती है और जल्दी से अटैच या डिटैच करने की सुविधा देती है. इससे कैमरा स्थिर रहता है और वाइब्रेशन कम होता है.

अधिकतर कैमरा हम अपने हाथों पर रख कर शूट करते हैं लेकिन लंबे समय तक किसी कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग करना हो तो ट्राइपॉड ही बेहतर रहता है. भारी कैमरों के लिए तो ट्राइपॉड उपयोग करना ही पड़ता है.

ट्राइपॉड की आवश्यकता क्यों है?

1.संचालन में सुविधा - एक ट्राइपॉड के साथ शूट करने पर आप लंबे समय तक कैमरे का संचालन करने में सक्षम होंगे क्योंकि कई बार हाथ से शूट करने पर थोड़े समय के बाद बेहद भारी लगने लगता है. ट्राइपॉड का उपयोग करने से अनचाहे मोमेंट्स (जो हाथ से हिलने या कहीं ठोकर लगने) से आ सकते हैं से बचाव होगा और आपके शॉट ज्यादा स्थिर और प्रभावी बनेंगे.

2. कैमरा मूवमेंट में आसानी - ट्राइपॉड के अधिकांश हेड फ्लूइड हेड होते हैं जो इंटरनल फ्लूइड या तरल पदार्थ का काम करते हैं जिससे हेड में चिकनाहट बनी रहती है और कैमरा मूवमेंट में आसानी होती है.

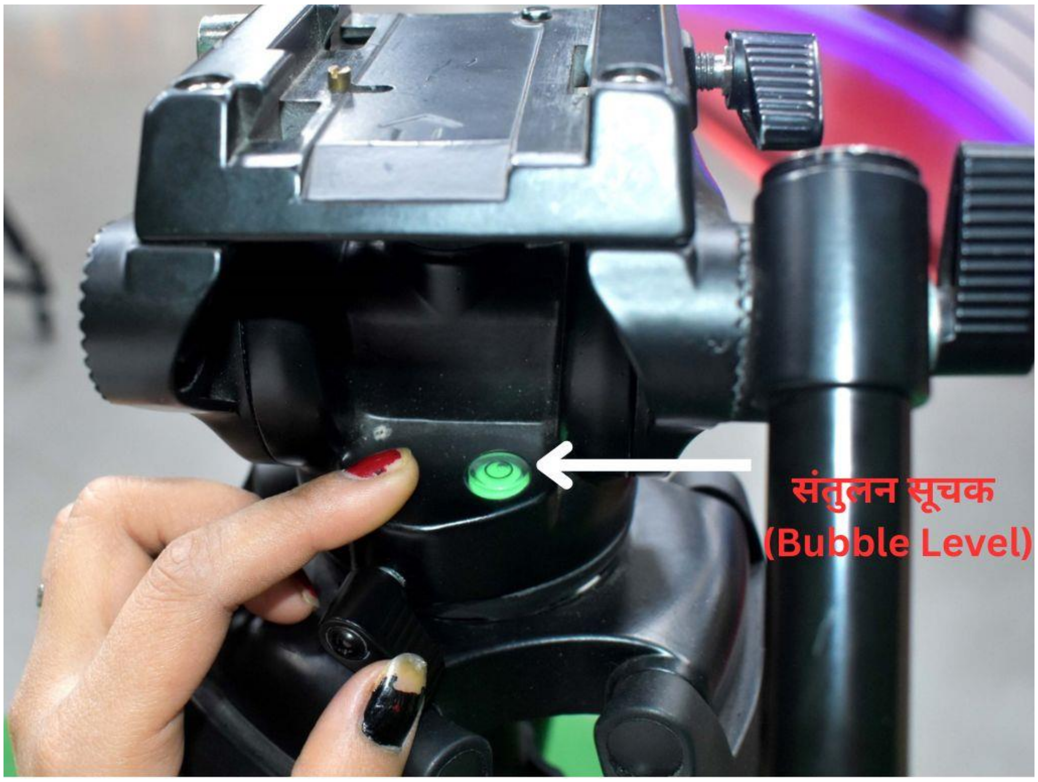

ध्यान रखें –

1. जब कैमरा मूवमेंट करें तो यह ध्यान रखें हेड का मूवमेंट भी आसानी से बिना किसी रुकावट के होना चाहिए. ट्राइपॉड में काउंटर बैलेंस होता है जो कैमरे को संतुलित रखने में मदद करता है. यदि आपके पास बड़ा या असंतुलित कैमरा हैं तो यह आपके कैमरे को आगे या पीछे करने के बेहतर विकल्प भी देता है जिससे शूटिंग के दौरान कैमरा का संतुलन बनाये रखने में भी मदद करता है.
2. ट्राइपॉड के लेग्स / पॉड्स स्पष्ट रूप से कैमरे के वजन को रखने के लिए पैरों को काफी मजबूत होना चाहिए. इसकी ऊंचाई रेंज और सबसे कम और सबसे ऊपर वाले पॉइंट की जांच करें, जहाँ ट्राइपॉड को निर्धारित

किया जा सकता है. एक ट्राइपॉड जो कम से कम अपने सामान्य आँख के स्तर से थोड़ा अधिक जा सकते हैं तो वह अच्छा है.

ट्राइपॉड पर कैमरा सेट करने का तरीका

स्टेप 1 - ट्राइपॉड के पैरों को खोलें और स्प्रेडर को एडजस्ट करें और पैरों पर लगे हुक को खोलकर इच्छित ऊंचाई तक लेके जाएँ.

यदि आप तेज हवाओं में काम कर रहे हैं, तो आप पैरों या स्प्रेडर पर रेत के बैग आदि डालकर ट्राइपॉड को स्थिर कर सकते हैं. यदि स्प्रेडर आपके सेटअप में बाधा डाल रहे हैं, तो आप उन्हें हटा भी सकते हैं. **स्टेप 2** - कैमरे और ट्राइपॉड हेड दोनों एक प्लेट के साथ आते हैं जिसे बेस प्लेट कहते हैं जो कैमरे के निचले भाग में लगती है. इस बेस प्लेट को ट्राइपॉड हेड पर जोड़ा जाता है, इस प्रकार कैमरे को ट्राइपॉड से जोड़ा जाता है.

स्टेप 3 - ट्राइपॉड के पैन टिल्ट नॉब को एडजस्ट भी करना होता है. ट्राइपॉड के हैंडल को आम तौर पर दाहिने हाथ से संचालित किया जाता है, जबकि बाएं हाथ कैमरे के फंक्शन (फ़ोकस, आईरिस, आदि) को संचालित किया जाता है.

अगर आप कैमरे में सहायक उपकरण जैसे रिमोट ज़ूम या फ़ोकस नियंत्रण को जोड़ना चाहते हैं तो यह जरुर सोचिये कि ट्राइपॉड कि पोजीशन कहाँ रखनी है क्योंकि ऐसा करने पर आप कैमरे को तुरंत रिलीज़ नहीं कर सकेंगे. ट्राइपॉड के हेड के नीचे एक नॉब होता है जिसको ढीला करने से हेड के स्तर को एडजस्ट कर सकते हैं.

मैन्युअल ट्राइपॉड - जब ट्राइपॉड न हो तो उस स्थिति में हाथ से भी मैन्युअल ट्राइपॉड बना सकते हैं. धीमी गति और रात्रि फोटोग्राफी करते हुए हुए ये उक्त मुद्राऐं काम आती है.

सारांश ; ट्राइपॉड फोटोग्राफी के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो न केवल स्थिरता प्रदान करता है बल्कि विभिन्न प्रकार के शॉट्स के लिए रचनात्मक संभावनाओं को भी बढ़ाता है. इसके विभिन्न हिस्सों और उनके उपयोग को समझना आवश्यक है ताकि इसे विभिन्न परिस्थितियों में कुशलता से इस्तेमाल किया जा सके. चाहे वह लंबे एक्सपोज़र शॉट्स हों या ज़ूम शॉट्स, ट्राइपॉड का सही उपयोग आपकी तस्वीरों और वीडियो को अधिक पेशेवर और स्थिर बना सकता है.

10. एसएलआर बनाम डीएसएलआर: टेक्नोलॉजी और परफॉर्मेंस की तुलना

डीएसएलआर (डिजिटल सिंगल-लेंस रिफ्लेक्स) और एसएलआर (सिंगल-लेंस रिफ्लेक्स) दोनों प्रकार के कैमरे छवियाँ कैप्चर करने के लिए लेंस और ऑप्टिकल व्यूफाइंडर सिस्टम का उपयोग करते हैं. हालाँकि, उनके बीच कुछ प्रमुख अंतर हैं, जो मुख्य रूप से फिल्म या डिजिटल टेक्नोलॉजी के उपयोग से संबंधित हैं

डीएसएलआर - ये कैमरे छवियों को कैप्चर करने के लिए डिजिटल सेंसर का उपयोग करते हैं. वे फोटोग्राफिक फिल्म का उपयोग करने के बजाय डिजिटल सेंसर (आमतौर पर सीएमओएस या सीसीडी सेंसर) पर इलेक्ट्रॉनिक रूप से तस्वीरें रिकॉर्ड करते हैं.

एसएलआर - इस प्रकार के कैमरे छवियों को कैप्चर करने के लिए फिल्म का उपयोग करते हैं. फ़ोटोग्राफ़िक फ़िल्म रोल से चित्र प्राप्त करने के लिए रोल को डेवलप करने की आवश्यकता होती है.

छवि देखना - डीएसएलआर कैमरे के पीछे एलसीडी स्क्रीन पर छवि का डिजिटल पूर्वावलोकन प्रदान करते हैं. फोटोग्राफर ऑप्टिकल व्यूफ़ाइंडर द्वारा छवियों की रचना और समीक्षा भी कर सकते हैं.

एसएलआर- कैमरे छवियों को बनाने और फ्रेम करने के लिए केवल एक ऑप्टिकल दृश्यदर्शी प्रदान करते हैं. एल इ डी नहीं होती तो आप फोटो कैप्चर करने के तुरंत बाद छवियों की समीक्षा नहीं कर सकते.

छवि की गुणवत्ता - डिजिटल सेंसर प्रौद्योगिकी में विकास के कारण **डीएसएलआर** आमतौर पर बेहतर छवि गुणवत्ता प्रदान करते हैं. इनसे उच्च-रिज़ॉल्यूशन छवियाँ प्राप्त होती हैं और आप कम रोशनी में बेहतर फोटो क्लिक कर सकते हैं. यानि कम रोशनी में भी इस प्रकार के कैमरे अच्छे परिणाम देते हैं.

एसएलआर - छवि की गुणवत्ता उपयोग की जा रही फिल्म के प्रकार और गुणवत्ता पर निर्भर करती है. उच्च गुणवत्ता वाली फिल्म ही उत्कृष्ट परिणाम दे सकती है, लेकिन डिजिटल सेंसर से बेहतर फोटो मिलते हैं .

त्वरित प्लेबैक - डीएसएलआर कैमरे आपको छवियों को कैप्चर करने के बाद एलसीडी स्क्रीन पर तुरंत उनकी समीक्षा करने और डिलीट करने की सुविधा देते हैं.

एसएलआर - ये कैमरे तत्काल छवि प्लेबैक की पेशकश नहीं करते क्योंकि इन में फिल्म का उपयोग होता हैं. नतीजे देखने के लिए आपको फिल्म विकसित होने तक इंतजार करना होगा.

रखरखाव लागत - कैमरा बॉडी और लेंस की खरीद के कारण **डीएसएलआर** की लागत अधिक होती है. हालाँकि, फिल्म और डेवलपमेंट के लिए कोई अन्य खर्च नहीं है.

एसएलआर - इनकी लागत कम होती है, लेकिन फिल्म और उसके प्रोसेस की लागत समय के साथ बढ़ सकती है.

आकार और वज़न – एलसीडी स्क्रीन और सेंसर सहित अन्य डिजिटल एलिमेंट्स के कारण **डीएसएलआर** आमतौर पर भारी होते हैं.

एसएलआर – ये आम तौर पर छोटे और हल्के होते हैं क्योंकि उनमें एलसीडी स्क्रीन सहित अन्य डिजिटल एलिमेंट्स नहीं होते लेकिन कॉम्पैक्ट डिजिटल कैमरों की तुलना में वे अपेक्षाकृत बड़े और भारी हो सकते हैं.

उपयोग में आसानी - डीएसएलआर विभिन्न शूटिंग मोड, ऑटोफोकस सिस्टम और एक्सपोज़र नियंत्रण प्रदान करते हैं, जो उन्हें नौसिखिया और पेशेवरों दोनों के उपयोग के अनुकूल बनाते हैं.

एसएलआर - इसका उपयोग करते हुए अधिक तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता हो सकती है, खासकर जब मैन्युअल एक्सपोज़र सेटिंग्स और फिल्म हैंडलिंग की बात आती है.

सारांश; डीएसएलआर में आधुनिक सुविधाएँ हैं , वे बेहतर छवि गुणवत्ता देते हैं और उपयोग में आसान हैं. **एसएलआर** अधिक पारंपरिक और व्यावहारिक फोटोग्राफी का अनुभव प्रदान कर सकते हैं. उनके बीच चयन आपकी प्राथमिकताओं, बजट और विशिष्ट आवश्यकताओं पर निर्भर करता है. ध्यान दें कि **डीएसएलआर** तकनीक हाल के वर्षों में अधिक प्रचलित और उन्नत हो गई है, जिससे वे अधिकांश फोटोग्राफरों के लिए अधिक लोकप्रिय विकल्प बन गए हैं.

11. कैमरा शॉट्स तथा एंगल के प्रकार

शॉट क्या है? एक कैमरा शॉट, फ्रेम की श्रृंखला से बना होता है, जो एक विशिष्ट क्षण में बिना रुके शूट किया जाता है. कैमरा शॉट को समझना आवश्यक है क्योंकि विभिन्न प्रकार के शॉट्स, कोण के माध्यम से प्रत्येक दृश्य के लिए विशिष्ट भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने में सक्षम होते हैं.

शॉट किसी भी सब्जेक्ट को फ्रेम के भीतर/ तुलना में छोटा या बड़ा बनाते हैं. शॉट आकार एक महत्वपूर्ण टूल है जो सब्जेक्ट की डिटेल्स को उजागर करता है, किसी भी सब्जेक्ट पर फोकस कर सकता है या देखने वालों को स्थान,संदर्भ व स्थिति का बोध करवा सकता है.

उदाहरण के लिए आप किसी कार दुर्घटना की फोटो का क्लोज-अप लेंगे ताकि अपने शॉट के माध्यम से दुर्घटना में हुए नुक्सान को दिखा सकें. विभिन्न कैमरा शॉट्स को समझने से फोटोग्राफर को फोटो कंपोज करने में मदद मिलेगी. यदि विषय कोई व्यक्ति है, तो क्लोज-अप कंधों से शुरू होता है और सिर के शीर्ष पर समाप्त होता है.

कैमरा शॉट के प्रकार -

1.फुल फ्रेम फोटो/लंबा शॉट - एक लंबा शॉट सब्जेक्ट को सिर से पैर तक दिखाता है. वह उस सब्जेक्ट का सन्दर्भ/ स्थान दिखाता है. इसे "फुल शॉट" भी कहा जाता है. लॉन्ग शॉट का उपयोग क्यों किया जाता है? चूंकि लॉन्ग शॉट एक दृश्य में अधिक पृष्ठभूमि को शामिल करता है. यह किसी घटना या स्थिति का पूरा माहौल और संदर्भ प्रस्तुत करने में सहायक होता है. इससे न केवल मुख्य विषय को बल्कि उसके आस-पास की परिस्थितियों, स्थान और लोगों को भी दिखाया जा सकता है, जिससे दर्शक को घटना की गहराई और व्यापकता समझने में आसानी होती है.

उदाहरण के तौर पर, किसी बड़े विरोध प्रदर्शन/ समारोह या प्राकृतिक आपदा की तस्वीरें खींचते समय लॉन्ग शॉट का उपयोग उस घटना के प्रभाव और उसके पैमाने को प्रभावी तरीके से दिखाने के लिए किया जाता है.

2. हाफ फ्रेम फोटो /मध्यम शॉट - मध्यम शॉट, जिसे मिड-शॉट या कमर शॉट भी कहा जाता है, विषय के कमर से सिर तक के हिस्से को कवर करता है. यह शॉट विषय और उनकी पृष्ठभूमि को समान महत्व देता है, जिससे चेहरे के हावभाव, वेशभूषा और अन्य महत्वपूर्ण विवरण स्पष्ट रूप से दिखाए जा सकते हैं. चित्र लेते समय विषय की दोनों दिशाओं से तस्वीरें लेकर बेहतर एंगल का चयन किया जाता है.

3.क्लोज-अप - एक ऐसा शॉट जो मुख्यतः अधिक विवरण दिखाने के उद्देश्य से, नजदीक से, किसी भी व्यक्ति या वस्तु का लिया जाता है. इसे फोटो पत्रकारिता में व्यक्ति की पहचान बताने में भी इस्तेमाल किया जाता है. इस शॉट का विषय यदि कोई व्यक्ति है, तो क्लोज-अप कंधों से शुरू होता है और सिर के शीर्ष पर समाप्त होता है. भावनाओं/ घटना/ सब्जेक्ट को हाइलाइट करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है. शॉट को सामने से लेने के उपरांत, लेफ्ट साइड, राईट साइड से क्लिक करें. उदाहरण के लिए पहला फोटो छत्तीसगढ़ के एक आदिवासी गांव में ग्रामीण गाय के गोबर, मूत्र और मिट्टी का उपयोग कर बीज बॉल या बीज बम बनाते हुए का है. दूसरी तस्वीर भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की है.

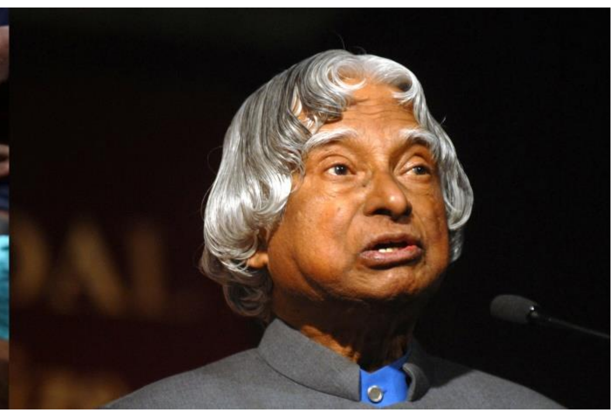

4. एक्सट्रीम क्लोज-अप - इस शॉट का उपयोग आमतौर पर स्पेशल इफेक्ट्स, जैसे होंठों की मूवमेंट , भौहों को मोड़ने जैसे भावों पर अधिक फोकस करने के लिए किया जाता है. . जहां एक क्लोज-अप एक व्यक्ति के चेहरे को

कैप्चर कर सकता है, एक एक्सट्रीम क्लोज-अप सब्जेक्ट के होंठ, उनके कान या किसी अन्य विवरण पर ध्यान केंद्रित करता है जो आपके द्वारा बनाए जा रहे दृश्य के तर्क के लिए महत्वपूर्ण है.

इस शॉट को फोटो पत्रकरिता के संदर्भ में निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है:

4. **एक्सट्रीम लॉन्ग शॉट -** यह शॉट पाठकों को उस स्थान या स्थिति के व्यापक परिप्रेक्ष्य को दिखाता है, जिसमें कोई व्यक्ति या वस्तु उपस्थित है. जैसे, एक शहर का दृश्य या प्राकृतिक दृश्य. फोटोपत्रकारिता में इस शॉट का उपयोग वहां किया जाता है जहाँ किसी बड़े विरोध प्रदर्शन के दृश्य दिखाने हों , या समारोह में उपस्थित जन सैलाब दिखाना हो जहां लोग दूर तक नज़र आयें. इन शॉट्स के माध्यम से दर्शक को उस स्थिति की विशालता/भव्यता का अनुभव होता है.

लद्दाख स्थित पांगोंग झील का मनोरम फोटो – चित्र सौजन्य: श्री अजय सूरी

कैमरा एंगल के प्रकार -

1. **लो-एंगल शॉट** - वह शॉट जिसमें कैमरा आंख के स्तर से नीचे, जमीन के पास रखा जाता है और सब्जेक्ट को कैप्चर करने के लिए ऊपर की ओर पॉइंटेड होता है. ये शॉट आम तौर पर लगभग 45 डिग्री पर लिए जाते हैं. चूँकि ये शॉट विभिन्न कोणों से लिए जातें हैं, इसलिए वे सब्जेक्ट को प्रभावशाली, बड़ा, चौड़ा, लंबा और करीब दिखाते हैं.

लो - एंगल शॉट

2. **टॉप एंगल** - हाई एंगल शॉट एक ऐसी तकनीक है जिसमें कैमरे से ऊपर से सब्जेक्ट को नीचे दिखाया जाता है. जब फोटोग्राफर किसी व्यक्ति या वस्तु को उच्च दृष्टिकोण से दिखाते हैं, तो यह शॉट सब्जेक्ट को छोटा प्रतीत कराता है. पूरा नज़ारा दर्शक को दिखाई देता है-जिस से अलग-अलग परिणाम सामने आ सकते हैं. फोटो पत्रकार, पूरी स्थिति से अवगत करवाने के लिए कई बार इस शॉट का उपयोग करते हैं, जैसे कि वे तूफ़ान या बाढ़ के समय प्रभावित क्षेत्र को दिखाने के लिए किसी सुरक्षित जगह से हाई एंगल शॉट लेते हैं.

3. **एरियल व्यू** - एरियल शॉट्स का उपयोग फोटोग्राफर्स द्वारा दर्शकों को जमीन पर हो रही गतिविधियों का हवाई दृश्य प्रदान करने के लिए किया जाता है. इन्हें कैप्चर करने के लिए ड्रोन या हेलीकॉप्टर का उपयोग किया जाता है. जबकि ड्रोन सस्ते और उपयोग में आसान होते हैं, हेलीकॉप्टर बेहतर हवाई फुटेज प्रदान करते हैं लेकिन महंगे होते हैं. किसी नेता, मुख्य मंत्री, राज्यपाल या प्रधान मंत्री द्वारा किसी बाढ़ग्रस्त क्षेत्र के दौरे के समय एरियल व्यू लिया जाता है.

हवाई तस्वीरों के कई फायदे हैं: ये ग्राउंड लेवल की तस्वीरों की तुलना में अधिक परिप्रेक्ष्य और विवरण दिखाती हैं. यह शॉट फोटोग्राफर को उन वस्तुओं के क्लोज़-अप शॉट लेने में सक्षम बनाता है जिन तक ऊंचे पुल या इमारत के बिना पहुंचना मुश्किल या असंभव होता है.

पुरी में भगवान जगन्नाथ की वार्षिक रथ यात्रा के दौरान भक्तों की भीड़. (पीटीआई फोटो)

3. **न्यूट्रल शॉट या आई-लेवल शॉट** - वह शॉट जिसमें कैमरा और विषय एक ही स्तर पर होते हैं, यानी कैमरा विषय की आंखों के स्तर पर सीधे उसे देखता है. इस शॉट का उद्देश्य सब्जेक्ट को वास्तविक और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना होता है, जिससे दर्शक और विषय के बीच समानता और संबंध महसूस हो सके. यह शॉट अक्सर सामान्य बातचीत या तटस्थ दृश्य में उपयोग किया जाता है.

सारांश; सभी तस्वीरें एक ऐसे फोटोग्राफिक एंगल पर आधारित होनी चाहियें जिससे दर्शक स्वयं को संबद्ध कर सके. इससे वह तस्वीर में खुद को देख सकता है और संदर्भ व भावनाओं को समझ सकता है. विभिन्न शॉट्स और एंगल पाठक को दृश्य को एक विशेष तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं—यही इनकी ताकत है! कुशलता से खींची गई कोई भी तस्वीर, अपनी अभिव्यक्ति के तरीके का सही उपयोग करती है, कहानी के अनुकूल होती है और पाठक पर गहरा असर डालती है.

12. एक्सपोज़र - बेहतरीन तस्वीरों की कुंजी

एक्सपोज़र की परिभाषा - एक्सपोज़र फोटोग्राफी का सबसे बुनियादी पहलू है. एक तस्वीर के लिए इष्टतम एक्सपोज़र प्राप्त करना तीन तत्वों को संतुलित करने पर निर्भर करता है. शटर स्पीड, आई एस ओ और अपर्चर के तालमेल को एक्सपोज़र कहते हैं. चित्र लेते समय तीनों का संतुलन अच्छा होगा तो तस्वीर बेहतर आएगी. आम तौर पर आपने किसी फोटोग्राफर को यह बोलते हुए सुना होगा कि यह फोटो अंडर एक्सपोज़्ड या ओवर एक्सपोज़्ड है. इसका एक्सपोज़र सही है. छायाकार के लिए यह आवश्यक है कि फोटो सही एक्सपोज़र पर ले. एक्सपोज़र यानि कैमरा लेंस के द्वारा उचित मात्रा में रोशनी कैमरा सेन्सर पर पहुंचे जिससे छवि बन सके. प्रकाश लेंस (अपर्चर) में प्रवेश करता है और एक निश्चित समय के बाद (शटर गति द्वारा निर्धारित) एक छवि को डिजिटल मीडिया या फिल्म पर रिकॉर्ड करता है. कई बार यह पूछा जाता है कि एक्सपोज़र क्या होना चाहिए और इस प्रश्न का उत्तर "सही एक्सपोज़र " है. एक्सपोज़र से आशय फोटो संवेदनशील वस्तु या पदार्थ (सेंसर या फिल्म) पर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा से है और हर फोटोग्राफर का लक्ष्य सही एक्सपोज़र होता है.

ईवी - एक्सपोजर वैल्यू का अर्थ -

एक फोटो लेने के लिए शटर स्पीड, अपर्चर और आईएसओ के कई कॉम्बिनेशन बनते हैं. प्रत्येक

संयोजन का फोटो पर अलग-अलग असर पड़ता है, लेकिन एक या दो कॉम्बिनेशन ही फोटोग्राफर की कल्पना साकार करते हैं, ताकि खींची गई तस्वीर में प्रकाश की उचित मात्रा रहे.

अंडर एक्सपोज़्ड - f /10 , शटर स्पीड 1 /200 सेकंड, आई एस ओ - 100

ओवर एक्सपोज़्ड - f /10 , शटर स्पीड 1/200 , आई एस ओ - 400

एक्सपोज़र वैल्यू के तत्व –

अपर्चर - अपर्चर के लिए कैमरे के डायल मोड को घुमाने पर या लेंस पर लगे छल्ले को घुमाने पर अपर्चर के नंबर व्यू फाइंडर में दिखाई देंगे जैसे f/1.0,f/ 2.8 ,f/ 4,f/5. 6, f/8,f/11,f/16/,f/22 . हर नंबर को घुमाने पर देखेंगे उस नंबर के अनुरूप लेंस का छिद्र खुलता है फोटोग्राफी की भाषा में इन्हें एफ स्टॉप कहते हैं.

अपर्चर को फोटोग्राफी की भाषा में कई अन्य नामों से भी जाना जाता है. जैसे डायफ़ार्म,आइरिस अपर्चर एक छेद को कहते हैं जो लेंस के अंदर रहता है जिससे होकर प्रकाश डिजिटल कैमरे से होते हुए सेंसर तक पहुंचता है. यह छेद अलग - अलग धातुओं के बने होते हैं . इसका काम यह निर्धारित करना और नियंत्रित करना होता है कि कितनी मात्रा में प्रकाश कैमरे के अंदर आए. अपर्चर लेंस द्वारा फिल्म या सेंसर पर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा नियंत्रण करता है. अपर्चर को लेंस के उपर अंकित एक खास एफ-नंबर से बदला जाता है. अपर्चर चार्ट इस प्रकार है -

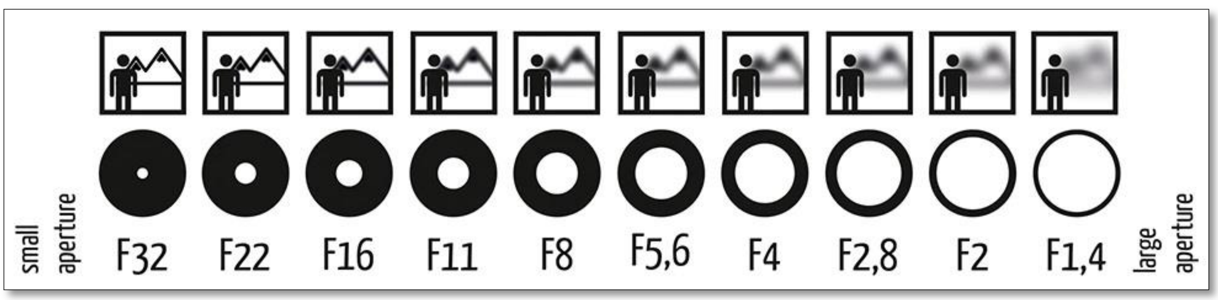

अपर्चर के लिए कैमरे के डायल मोड को घुमाने पर या लेंस पर लगे छल्ले को घुमाने पर अपर्चर के नंबर व्यू फाइंडर में दिखाई देंगे जैसे f/1.0, f1.4,f/ 2.8 , f/4, f/5. 6,f8, f/11, f/16, f/22. हर नंबर को घुमाने पर देखेंगे उस नंबर

के अनुरूप लेंस का छिद्र खुलता है इन्हें एफ स्टॉप कहते हैं. फोटोग्राफी में स्टॉप लाइट मापने का एक तरीका है, और इसका मतलब कैमरा सेंसर पर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा को दोगुना या आधा करना है.

अपर्चर के फोटो पर प्रभाव - विषय वस्तु का डेप्थ ऑफ फील्ड भी अपर्चर पर निर्भर करता है. कैमरे के लेंस पर लगे छल्ले को घुमाने पर अंकित एफ- नंबर बदला जाता है. उसी से डेप्थ ऑफ फील्ड भी निर्धारित की जाती है. सब्जेक्ट पर ज्यादा प्रकाश की जरूरत है तो एफ- नंबर छोटा यानि अपर्चर ज्यादा रहेगा, सब्जेक्ट के उपर प्रकाश ज्यादा है तो एफ-नंबर बड़ा यानि अपर्चर कम रहेगा. अपर्चर विपरीत संख्या में कार्य करता है.

जैसे - जैसे नंबर घटता जाता है वैसे ही बड़ा अपर्चर बड़ा होता जाता है. इसी प्रकार अगर आप नंबर बढ़ाते जाएँगे, छेद छोटा होता जाएगा. प्रत्येक सेटिंग को f- नंबर कहा जाता है. यह नंबर, कम या ज्यादा किये जाने पर उतना ही प्रकाश कैमरे के अंदर भेजता है. कैमरे में अपर्चर अंकित होता है जिससे हम तय करते हैं कि एक फोटो के लिए कितनी लाइट चाहिए. कैमरे पर लिखे नंबर का छोटा नंबर अर्थात बड़ा अपर्चर और बड़ी लाइट और बड़ा नंबर यानि छोटा अपर्चर और कम लाइट.

उपरोक्त चार्ट में आप देख सकते हैं कि छोटा अपर्चर सब्जेक्ट और ऑब्जेक्ट को फोकस करने में सहायता करता है और बड़े अपर्चर यानि छोटे एफ नंबर पर सब्जेक्ट एकदम स्पष्ट दिखाई देता है और बैकग्रॉउंड धुंधली हो जाती है. कैमरे में लेंस के द्वारा फोकस होता है. अपर्चर के द्वारा भी फोकस होता है क्योंकि अपर्चर डेप्थ ऑफ फील्ड को कम या ज्यादा करता है. (विस्तृत विवरण अपर्चर प्रायोरिटी मोड के अध्याय में)

शटर की गति - कैमरे में शटर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, विशेषकर फ्लैश के इस्तेमाल के दौरान. अगर शटर और फ्लैश के बीच सही तालमेल नहीं होगा, तो तस्वीर साफ नहीं आएगी. शटर स्पीड को सेकंड के अंशों में मापा जाता है. शटर की गति एक सेकंड के आधे से लेकर एक हजार तक हो सकती है, और कुछ कैमरों में यह 4000 से भी अधिक होती है. अधिक जानकारी के लिए चार्ट देखें.

शटर स्पीड का प्रभाव - कैमरे में प्रवेश करने वाली लाइट और ऑब्जेक्ट की गति को नियंत्रित करने के लिए शटर का उपयोग होता है. इसके माध्यम से एक्शन फोटोग्राफी करना आसान हो जाता है. यदि शटर ज्यादा देर तक खुला रहता है, तो अधिक लाइट सेंसर पर पहुंचती है, जिससे फोटो धुंधली हो सकती है. वहीं, यदि शटर जल्दी बंद होता है, तो फोटो साफ आती है. फास्ट शटर स्पीड के जरिए हम एक्शन को नियंत्रित करके बेहतर तस्वीरें खींच सकते हैं. कैमरे पर स्पीड चार्ट बना होता है, जिससे अलग-अलग स्पीड सेट कर एक्शन सब्जेक्ट की फोटोग्राफी बेहतर तरीके

से की जा सकती है. जब स्पीड फास्ट होती है, तो कैमरे का शटर तेजी से खुलता और बंद होता है (इसका विस्तृत विवरण शटर प्रायोरिटी मोड के अध्याय में दिया गया है).

अपर्चर और शटर स्पीड के बीच तालमेल होना बेहद जरूरी है, क्योंकि दोनों का अपना-अपना महत्व है. अपर्चर और स्पीड के संयोजन को समझने के लिए नीचे दिए गए चार्ट को ध्यान से देखें.

शटर की गति प्रति सैंकंड अपर्चर

एस -500	तीव्र एफ-2.8
एस -250	एफ-4
एस -125	एफ-5.6
एस -60	एफ-8
एस -30	एफ-11
एस -15	एफ-16
एस -8	एफ-22
एस -4	धीमी एफ-32

शटर स्पीड और अपर्चर के सही तालमेल से धीमे या अधिक गतिशील विषय की स्टीक फोटाग्राफी की जा सकती है.

आईएसओ - आईएसओ का शाब्दिक अर्थ - इमेज सेंसर ऑपटीमाईजेशन. उद्देश्य है सब्जेक्ट की दृश्यता को बेहतर तरीके से दिखाना. आईएसओ इमेज सेंसर की रोशनी के प्रति संवेदनशीलता है. कैमरे के अंदर आईएसओ का कार्य सेंसर को हीट देना है. इसके द्वारा ली गई फोटो पर लाइट की सही मात्रा दे सकते हैं. इसका प्रयोग डीओएफ बढ़ाने के लिए किया जाता है क्योंकि कम लाइट वाली जगह पर फोटो लेने पर हमें अपर्चर का साइज बड़ा रखना पड़ता है तो फोटो की डीओएफ कम हो जाती है. परन्तु जैसे- जैसे आई एस ओ बढ़ाते जाते हैं वैसे - वैसे फोटो में नोइस (noise) आता जाता है. अगले पृष्ठ पर दिए चार्ट को देखें जिसमें अधिक आई एस ओ के कारण फोटो में नोइस (noise) आ रहा है.

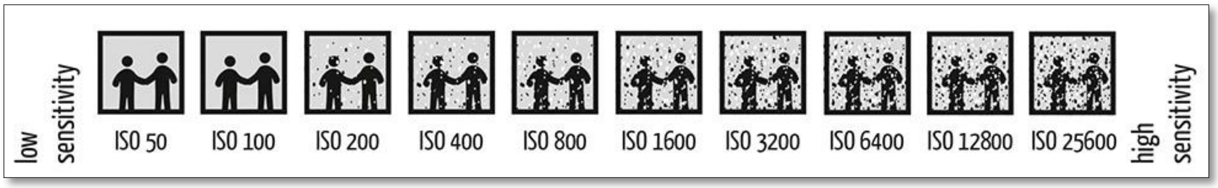

अधिक आई एस ओ का उपयोग केवल कुछ ही स्थितियों में किया जाता है. जैसे किसी स्थान पर रात के समय अपर्चर भी छोटा लिया और शटर स्पीड भी धीमी कर ली तब भी अगर उपयुक्त प्रकाश नहीं मिल रहा हो तब आई एस ओ बढ़ाया जाना चाहिए. जहां तक नोइस (noise) का सवाल है वो एडिटिंग सॉफ्टवेयर में एडिट हो जाता है. वैसे आजकल के कैमरे प्रकाश के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं जिससे अंधेरे में भी अच्छे फोटोग्राफ आ जाते हैं.

सही एक्सपोज़र प्राप्त करने की विधि -

उसके लिए यह जानना ज़रूरी है कि एक्सपोज़र मीटर क्या है? कैमरे का फीचर एक्सपोज़र मीटर जिसे लाइट मीटर भी कहते हैं, जो लाइट की तीव्रता को नापता है और सही एक्सपोज़र लेने की कोशिश करता है. जब भी ऑटो मोड में कोई फोटो खींचते हैं तो कैमरा अपने हिसाब से एक्सपोज़र लेता है. सोचिए कि एक कैमरा कैसे अपने आप तय करता है कि कितना एक्सपोज़र रखना है? ये तय करता है कैमरे का ऑटोमैटिक लाइट मीटर जिसे TTL या Through the Light कहते हैं. टीटीएल मीटर प्रत्येक डी एस एल आर में होता है जो कैमरा लेंस द्वारा कैमरे में अंदर आई रोशनी को नापता है. यह मीटर, कैमरा में कुछ इस तरह से दिखाई देता है.

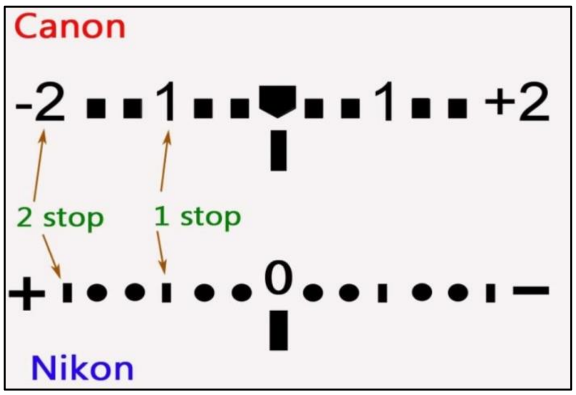

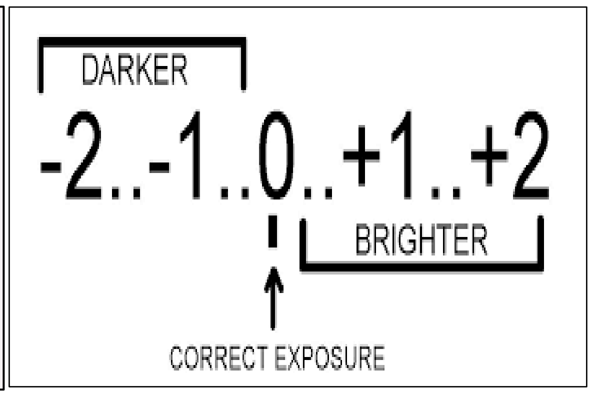

स्रोत-Oberphotography एवं httpwww.fotovoyage.com

जब हम कैमरे से किसी भी सब्जेक्ट पर फोकस करेंगे तो यह मीटर आपको लेंस के द्वारा आ रही लाइट की रीडिंग देगा . इस मीटर में के मध्य में एक छोटा सा बिंदु मुख्य रूप से दिखाई देता है जो आपको बताता है कि फोटो एक्सपोज़र स्तर क्या है .

अगर यह रीडिंग शून्य से कम की तरफ दिखा रहा है तो छवि अंडर एक्सपोज़्ड आएगी.

अगर यह रीडिंग आपको शून्य से आगे की तरफ दे रहा है तो इमेज ओवरएक्सपोज़्ड आएगी.

अगर रीडिंग शून्य पर ही है तो इसका अर्थ है की फोटो का एक्सपोज़र सही होगा . बाकी उपलब्ध लाइट देख कर हमें खुद ही फैसला करना होगा क्योंकि हम पूरी तरह से मीटर पर निर्भर नहीं रह सकते. इसके अलावा ज्यादातर फोटोग्राफर हमेशा समुचित एक्सपोज़र या नार्मल एक्सपोज़र ही खींचते हैं. लेकिन कुछ - कुछ जगह पर फोटो क्रिएटिव बनाने के लिए अंडर या ओवरएक्स्पोज़ड भी क्लिक करते हैं. यह रचनात्मक निर्णय फोटोग्राफर को ही लेना है कि उसे किस तरह की तस्वीर लेनी है.

एक्सपोज़र ट्रायंगल - अपर्चर, शटर स्पीड और आई एस ओ के संगम को ही एक्सपोज़र ट्रायंगल कहते हैं. इन तीनों के सही मिश्रण से एक अच्छी एक्सपोजड इमेज खींच सकते हैं. जब भी आप इनमें से किसी एक को बदलेंगे तब सही एक्सपोज़र पाने के लिए आपको बाक़ी दोनों में से भी किसी एक को या दोनों को एडजस्ट करना होगा. अगर आप शटर स्पीड बदलते हैं तो अपर्चर और आई एस ओ को भी साथ में एडजस्ट करना पड़ेगा. अगर अपर्चर का हो तो बाकी दोनों को भी संतुलित करना होगा. उदाहरण के लिए नीचे फोटो देखें –

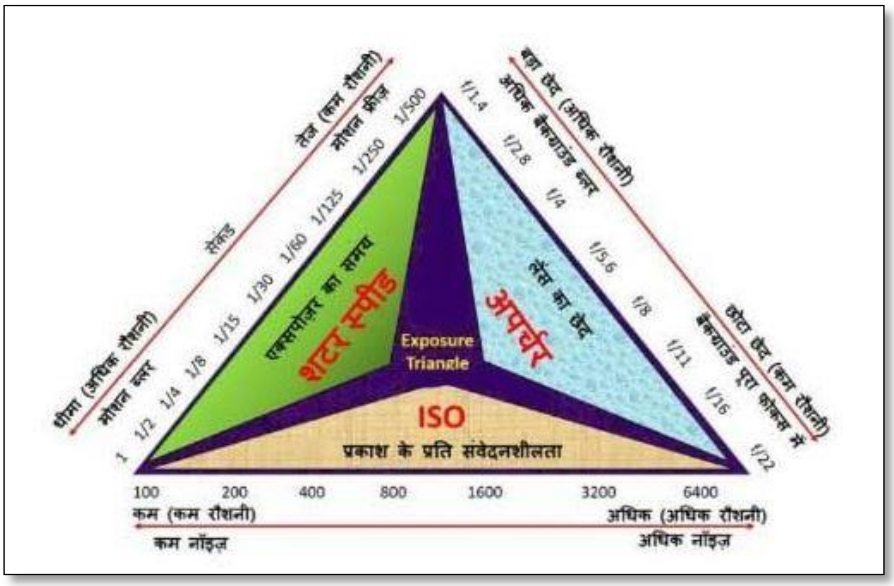

साभार - यात्राग्राफी

इस सन्दर्भ में वरिष्ठ पत्रकार राजीव त्यागी कहते हैं कि पत्रकारिता में जहां महत्वपूर्ण क्षणों को सटीकता से कैप्चर करना होता है, वहां एक्सपोज़र पर दक्षता आवश्यक है. फोटो जर्नलिस्ट शटर स्पीड और अपर्चर के सही तालमेल से किसी व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति की या धीमे/तेज़ गति वाले विषय की सटीक तस्वीरें ले सकता है. दृश्य के प्रभाव उजागर करने के लिए एक्सपोज़र ट्रायंगल का कलात्मक रूप से इस्तेमाल करते हैं. आईएसओ, अपर्चर और शटर स्पीड में कुशलता न केवल एक फोटो पत्रकार को तकनीकी रूप से सक्षम बनाती है, बल्कि उसकी रचनात्मक अभिव्यक्ति के नए रास्ते भी खोलती है.

13. डीएसएलआर शूटिंग मोड

कैनन निकोन

फोटोग्राफ में क्रिएटिव कंट्रोल पाने के लिए डीएसएलआर कैमरे के उपर एक मोड डायल बटन होता है जिस पर पीएसएम लिखा होता है और साथ ही सीन मोड दिए होते हैं. ये कैमरे के कुछ बुनियादी मोड हैं, जहां कैमरा एक्सपोज़र सेटिंग्स तय हैं और आपको तस्वीर लेने के लिए बस शटर बटन दबाना होगा. यदि आप किसी विशिष्ट प्रकार की तस्वीर लेना चाहतें हैं और मैन्युअल मोड पर शिफ्ट नहीं होना चाहते तो ये मोड हैं आपके लिए . इन मोड का उपयोग करते समय, कैमरा सब कुछ नियंत्रित कर रहा है जैसे कि वाइट बैलेंस ,रंग, कंट्रास्ट, शटर गति, अपर्चर और आईएसओ. मोड्स का उपयोग करते हुए केवल कुछ हद तक ही कुछ सेटिंग्स को बदल सकते हैं. इनका उपयोग करते हुए आपको अपनी रचनात्मकता दिखाने का मौका नहीं मिलेगा.

सीन मोड का अर्थ -

सीन मोड शुरुआती स्तर के डिजिटल कैमरों में पूर्व-निर्धारित एक्सपोज़र सेटिंग्स होते हैं, जो नवोदित फोटोग्राफरों को सही स्वचालित सेटिंग्स प्राप्त करने में सहायता करते हैं. जब आप सीन मोड का उपयोग करते हैं, तो कैमरे की सेटिंग्स में मैन्युअल बदलाव नहीं किया जा सकता.

ये प्री-सेटिंग्स कैमरे के अपर्चर, शटर स्पीड, आईएसओ, सफेद संतुलन, फोकस, और फ्लैश को उस सीन के प्रकार के अनुसार समायोजित करती हैं जिसे आप कैप्चर करना चाहते हैं. उदाहरण के लिए, यदि आप पोर्ट्रेट ले रहे हैं, तो आपको केवल पोर्ट्रेट मोड का चयन करना है, और बाकी काम कैमरा स्वयं कर लेगा. आपको बस सब्जेक्ट का फ्रेम तैयार करना है और शटर रिलीज बटन दबाना है.

कुछ कैमरों में एक दर्जन से अधिक सीन मोड होते हैं, जबकि अन्य केवल कुछ ही विकल्प प्रदान करते हैं. कैमरे में जितने अधिक दृश्य मोड होंगे, फोटोग्राफर उतनी ही सटीकता से सीन के लिए कैमरे की स्वचालित सेटिंग्स को समायोजित कर सकते हैं. एंट्री-लेवल डीएसएलआर या मिररलेस इंटरचेंजेबल लेंस कैमरों में सीन मोड का विकल्प उपलब्ध होता है, जबकि प्रोफेशनल डीएसएलआर कैमरों में इसकी आवश्यकता नहीं होती.

पोर्ट्रेट मोड - इस मोड में कैमरा यह मानता है कि इसका उपयोग मुख्य रूप से लोगों की तस्वीरें लेने के लिए किया जाएगा. फोटो खींचने के लिए, सबसे पहले मोड डायल को पोर्ट्रेट सेटिंग पर बदलें. पोर्ट्रेट मोड में, कैमरा सब्जेक्ट के फोरग्राउंड पर ध्यान केंद्रित करता है और बैकग्राउंड को धुंधला करने के लिए बड़ा अपर्चर सेट करता है. इसके परिणामस्वरूप, व्यक्ति की फोटो का रंग प्राकृतिक दिखाई देगा, और कम रोशनी की स्थिति में फ्लैश अपने आप सक्रिय हो जाएगा.

पोर्ट्रेट मोड - f /5.2, आई एस ओ - 400 और शटर स्पीड -1/100

लैंडस्केप मोड -प्राकृतिक दृश्य तथा नेचर फोटाग्राफी के लिए इस मोड का प्रयोग किया जाता है. जब कैमरे पर लैंडस्केप मोड पर स्विच करते हैं, तो इसका अर्थ है कि आप यथासंभव अधिक से अधिक सीन कैप्चर करना चाहते हैं. पहाड़ या नेचुरल सीन कैप्चर करने के लिए और शार्प रंगों को फ्रेम में लेने के लिए कैमरा छोटा अपर्चर इस्तेमाल करेगा और फ़्लैश ऑफ रहेगी चाहे उपलब्ध रोशनी जितनी भी हो.

चाइल्ड मोड - अधिकांश कैमरों में चाइल्ड मोड और पोर्ट्रेट मोड के बीच अंतर बहुत छोटा है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि पृष्ठभूमि को धुंधला करने के लिए ये मोड पोर्ट्रेट मोड के समान बड़े अपर्चर का उपयोग करता है लेकिन थोड़ी तेज़ शटर गति का उपयोग करता है ताकि बॉल सुलभ चंचलता कैप्चर की जा सके.

स्पोर्ट्स मोड - इस मोड में कैमरा उच्च स्पीड शटर का उपयोग करता है. स्पोर्ट्स मोड पूरी तरह से एक्शन को फ्रीज़ करने पर केंद्रित है. आपका कैमरा एक्शन को कैप्चर करने के लिए पहले शटर स्पीड का चयन करेगा, आमतौर पर

एक बड़े अपर्चर के साथ. यदि आवश्यक हो, तो इसे प्राप्त करने के लिए आईएसओ बढ़ाया जा सकता है, जिससे नॉइज़ का स्तर भी बढ़ जाएगा. स्पोर्ट्स मोड आपके कैमरे को सतत शूटिंग मोड में भी रखता है, यानी बटन को दबाए रखने पर एक साथ 3-4 तस्वीरें खींचता है और फ्लैश को बंद कर देता है. तेज़ गति से दौड़ती वस्तुओं की फोटोग्राफी के लिए यह मोड उपयोगी है.

मैक्रो मोड /क्लोज अप - डी एस एल आर में एक सेटिंग है जिसका उपयोग आप कीड़े या फूलों जैसी छोटी वस्तुओं की क्लोज़-अप तस्वीरें लेने के लिए कर सकते हैं. क्लोज़ अप मोड में कैमरा इस प्रकार के चित्र लेने के लिए फोकस संबंधी समस्याएँ दूर करने को एक छोटा अपर्चर सेट करने की कोशिश करेगा. लेकिन आप इस प्रयास में कुछ हद तक ही सफल हो सकते हैं क्योंकि जब तक आप मैक्रो लेंस का उपयोग नहीं करते, यह आपको किसी भी सब्जेक्ट या ऑब्जेक्ट को करीब फोकस करने में मदद नहीं कर सकता. फ़्लैश आमतौर पर डिफ़ॉल्ट रूप से स्वचालित होता है, लेकिन आप चाहें तो इसे बंद कर सकते हैं.

नाइट मोड - इस मोड पर शटर स्पीड धीमे कार्य करती है और इस मोड का प्रयोग नेचुरल बैकग्राउंड की फोटोग्राफी के लिए किया जाता है. रात्रि के समय लाइटिंग या विहंगम दृश्य लेने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं. नाईट मोड में तस्वीरें लेते समय, डिजिटल कैमरा सीन कैप्चर करने के लिए लंबी शटर गति का उपयोग करता है और शॉट के सब्जेक्ट ब्राइट करने के लिए फ्लैश ऑन रखता है. इस मोड के लिए अधिकतर ट्राइपॉड की आवश्यकता होती है.

आम तौर पर ये मोड कैमरा में मिलते हैं लेकिन कई कैमरा मॉडल इससे भी अधिक मोड देते हैं जैसे कि पार्टी/इंडोर ,नाईट पोर्ट्रेट,बीच/ स्नो मोड.

डिजिटल फोटोग्राफी में विभिन्न कैमरा मोड -

डिजिटल कैमरा मोड या "शूटिंग मोड" को डायल या कैमरा व्हील पर पाए जाने वाले विभिन्न कैमरा मोड आइकन का उपयोग कर बदला जा सकता है. अधिकांश डिजिटल कैमरों में ये कैमरा बॉडी के ऊपर होते हैं. कैमरे पर बने चिह्नों के अनुसार, इन मोड्स को "कैमरा मोड PASM" या "शूटिंग मोड P.A.S.M" भी कहा जाता है.

प्रोग्राम मोड (पी) - प्रोग्राम पी को सेट करने पर प्रोग्राम मोड को आईएसओ मोड मानें. फोटोग्राफर आईएसओ सेट करते हैं, जबकि कैमरा अपर्चर और शटर स्पीड सेट करता है और आपकी तस्वीर को एक एवरेज वैल्यू वाला एक्सपोज़र मिलता है,यानी तस्वीर ठीक-ठाक एक्सपोज़ होती है. प्रोग्राम मोड अन्य कैमरा सुविधाओं पर भी नियंत्रण देता है, जैसे कि एक्सपोज़र कंपंसेशन. उपलब्ध लाइट को ध्यान में रखकर एवरेज एक्सपोज़र के लिए कैमरा स्वतः ही अपर्चर और शटर स्पीड का एक उपयुक्त कॉम्बिनेशन सेट करता है. ऑटो मोड के विपरीत इसमें फोटोग्राफर को आईएसओ, व्हाइट बैलेंस, पिक्चर कंट्रोल, फोकस एरिया, फोकस मोड, मीटरिंग (metering) आदि एडजस्ट करने की सुविधा होती है . (विस्तृत विवरण आगे है.)

मैन्युअल मोड(एम) - यह कैमरे का सबसे महत्वपूर्ण मोड है. इस पर सर्वश्रेष्ठ तस्वीर आती है. इस मोड पर फोटोग्राफी का सही और अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है. काफी प्रैक्टिस और लंबे अनुभव के बाद इसकी समझ आती है, क्योंकि सब्जेक्ट की गति, दूरी एवं उस पर पड़ने वाली लाइट के अनुसार कैमरे की शटर स्पीड, अपर्चर और आईएसओ तुरंत बदलने होते हैं.

मैन्युअल मोड - f /5.0, आई एस ओ - 400 और शटर स्पीड -1/125 सेकंड (विस्तृत विवरण अध्याय15 में)

ए/एइ (A/AE) - इसका अर्थ अपर्चर प्रीओरिटी है. यह शटर स्पीड को आप के द्वारा दिए गए अपर्चर के अनुसार सेट करता है. शुरुआत में नए फोटोग्राफर को अपर्चर प्रायोरिटी मोड पर ही अभ्यास करने को कहा जाता है . एक बार इस मोड पर अभ्यास करने के बाद अन्य मोड पर काम करने की ललक बढ़ती है या यूं कहें बाकी मोड पर काम करने का आत्मविश्वास आ जाता है. (विस्तृत विवरण अध्याय16 में)

एस" या "टीवी"(S/Tv) - टीवी का मतलब टाइम वैल्यू है. जब शटर प्रीओरिटी लगाते हैं तब अपर्चर इस मोड पर आटोमेटिक सेट होता है. (विस्तृत विवरण अध्याय17 में)

ऑटो मोड (AUTO) - कैमरा इस मोड पर सभी फंक्शन स्वयं करता है. फोटोग्राफर को महज क्लिक का बटन दबाते रहना है. कैमरा स्वयंफोटो लेता रहेगा परंतु इस मोड पर फोटो उतने अच्छे नहीं आते, कलर भी ठीक नहीं होते. जहाँ जरुरत होगी वहां फ़्लैश भी स्वतः चालू हो जाएगी.

सारांश ;डीएसएलआर कैमरे के विभिन्न मोड्स का उपयोग करने से तस्वीरें लेना आसान हो जाता है, खासकर जब आप मैन्युअल सेटिंग्स नहीं बदलना चाहते. पीएएसएम और सीन मोड्स में, कैमरा एक्सपोज़र और अन्य सेटिंग्स को

नियंत्रित करता है, जिससे आप केवल शटर बटन दबाकर तस्वीर खींच सकते हैं. हालांकि, इन मोड्स में रचनात्मकता की सीमित गुंजाइश होती है, क्योंकि कैमरा अधिकांश सेटिंग्स खुद तय करता है. यह नए फोटोग्राफर्स के लिए उपयोगी है, लेकिन अपनी फोटोग्राफी में पूरी तरह से नियंत्रण और क्रिएटिव फ्रीडम पाने के लिए मैन्युअल मोड पर स्विच करना आवश्यक है.

14. प्रोग्राम मोड: ऑटोमैटिक और मैन्युअल का बेहतरीन संयोजन

प्रोग्राम मोड - f /5.0, आई एस ओ - 400 और शटर स्पीड -1/60.

प्रोग्राम मोड द्वारा आप कैमरे की अन्य सुविधाओं, जैसे एक्सपोज़र कंपंसेशन, पर नियंत्रण कर सकते हैं. इसमें कैमरा शटर स्पीड और अपर्चर सेट करता है, जिससे तस्वीर का एक्सपोज़र संतुलित रहता है. विभिन्न प्रकाश स्थितियों में, यह उचित अपर्चर और शटर स्पीड का संयोजन करता है.

इस मोड में आपको आईएसओ, व्हाइट बैलेंस, पिक्चर कंट्रोल, फोकस एरिया, फोकस मोड, और मीटरिंग स्वयं सेट करनी होती है. यह मोड आपकी पसंद के अनुसार जल्दी फोटो लेने के लिए उपयुक्त है.

प्रोग्राम मोड उपयोग करने की विधि -

कैमरा को पी मोड पर सेट करने के लिए कैमरे की नॉब को तब तक घुमाएं जब तक कि पी विकल्प नहीं देखते.

प्रोग्राम मोड लगभग अपर्चर प्रायोरिटी या शटर प्रायोरिटी जितना लोकप्रिय नहीं है, लेकिन यह फोटोग्राफी में बड़ा बदलाव ला सकता है. छायाकार को बस यह जानना होगा कि इसका उपयोग कब करना है.

जब आईएसओ के लिए और शटर स्पीड और अपर्चर को लेकर असमंजस में रहते हैं और समझ नहीं आता कि क्या सेटिंग रखें, ऐसे में प्रोग्राम मोड अच्छा विकल्प हो सकता है.

यदि केवल आईएसओ को एडजस्ट करना चाहते हैं, तो अपने कैमरे को प्रोग्राम मोड में रखें, आईएसओ बदलें, और अपर्चर, शटर स्पीड और समग्र एक्सपोजर के बारे में सोचने के बजाय अपने शॉट्स को कम्पोज़ करने पर ध्यान दें. फोटोपत्रकार को ध्यान देना है, सिर्फ दो चीजों पर - एक फोकस और दूसरा कम्पोज़िशन. प्रोग्राम मोड एक बेहतरीन ट्रांजिशन मोड है. यदि नवोदित / प्रशिक्षु छायाकार अपनी फोटोग्राफी को सुधारना चाहते हैं लेकिन वे ऑटो मोड से आगे नहीं बढे हैं, तो प्रोग्राम मोड आगे जाने के लिए बेहतरीन रास्ता है.

प्रोग्राम मोड में एक और मोड है, जिसका नाम है- फ्लेक्सिबल प्रोग्राम मोड. यह बेहद पावरफुल मोड है.

कैमरा को फ्लेक्सिबल प्रोग्राम मोड पर सेट करने का तरीका -

फ्लेक्सिबल प्रोग्राम मोड में जाने के लिए, प्रोग्राम मोड में ही कमांड डायल को घुमाएं. अगर पी के बगल में एक स्टार का निशान आए, तो इसका अर्थ है कि फ्लेक्सिबल प्रोग्राम मोड में खुल चुका है. फ्लेक्सिबल प्रोग्राम मोड में कैमरा, एक्सपोजर वैल्यू को लॉक कर देता है.

फोटो सौजन्य - जी मैक्स स्टूडियो

इसके बाद आप शटर स्पीड या अपर्चर नंबर बदलने के लिए आज़ाद होते हैं, लेकिन एक्सपोजर वहीं का वहीं रहता है. यह छायाकार पर निर्भर है कि वह अपर्चर बड़ा करना चाहे या शटर स्पीड तेज करना चाहे. फ्लेक्सिबल प्रोग्राम मोड में इन सभी चीजों से छुटकारा मिल जाता है. फोटोग्राफर मात्र फोटो लेने पर ध्यान केंद्रित करते हैं.

कैमरा प्रोग्राम मोड में इस प्रकार काम करता है -

कमांड डायल को घुमा कर फ्लेक्सिबल प्रोग्राम मोड को इस्तेमाल कर सकते हैं. जैसे-जैसे कमांड डायल को घुमा कर शटर स्पीड तेज करते जाते हैं, अपर्चर स्वतः ही और खुलता जाता है और लेंस की क्षमता के अनुसार पूरा खुल जाता है.

इसके विपरीत कमांड डायल को दूसरी तरफ घुमाने से शटर स्पीड स्लो होती जाती है. जैसे-जैसे हमारी शटर स्पीड और स्लो होती है,वैसे ही अपर्चर धीरे- धीरे बंद होता जाता है. फोटोग्राफर के कैमरे का एक्सपोजर चेंज न होने का अर्थ है कि फोटो न अंडर-एक्सपोज़्ड है, न ही ओवर एक्सपोज़्ड. इसे एक्सपोज़र मीटर से देखा जा सकता है.

कैमरा, प्रोग्राम मोड में, इस बात का ख्याल रखता है कि फोटोग्राफ ओवर या अंडर एक्सपोज़्ड न हो.

प्रोग्राम मोड में अधिकतर तब शूट करते हैं, जब फोटोग्राफर को जल्दी से निर्णय लेना होता है. गुरुग्राम में समाचार पत्र अमर उजाला के तत्कालीन फोटो पत्रकार योगेश शर्मा बताते हैं – 'मैं अंतरराष्ट्रीय स्तर के समारोह या बेहद महत्वपूर्ण

कार्यक्रम में अक्सर प्रोग्राम मोड में ही काम करता हूं, क्योंकि मेरे लिए ख़ास पलों को कैद करना जरूरी होता है'. इन प्रोग्राम में किसी मुख्य अतिथि को यह नहीं कहा जा सकता कि आप कलाकार को दोबारा सम्मानित करें क्योंकि फोटो क्लिक नहीं हुआ या किसी विवाह समारोह में दूल्हा-दुल्हन से यह नहीं कह सकते एक बार माला फिर से पहना दीजिए. इन स्थितियों में प्रोग्राम मोड बहुत काम आता है.

सारांश , प्रोग्राम मोड एक उपयोगी मोड है, जो मैन्युअल और ऑटोमैटिक सेटिंग्स के बीच संतुलन प्रदान करता है. इसका उपयोग करते समय कैमरा शटर स्पीड और अपर्चर जैसे महत्वपूर्ण एक्सपोज़र सेटिंग्स को स्वतः नियंत्रित करता है, जबकि फोटोग्राफर को अन्य सेटिंग्स, जैसे आईएसओ और वाइट बैलेंस, पर नियंत्रण करने का अवसर मिलता है. यह मोड उनके लिए लाभदायक है जो मैन्युअल मोड को विकल्प की तरह उपयोग करना चाहते हैं.

15. मैन्युअल मोड

हरियाणा के फरीदाबाद के सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेले में ढोल की थाप पर नृत्य करती लोक कलाकार के भाव अच्छे से अभिव्यक्त मैन्युअल मोड पर ही किये जा सकते थे .

मैन्युअल मोड - यह एक ऐसा विकल्प है जो फोटोग्राफर को कैमरे की सभी सेटिंग्स जैसे अपर्चर, शटर स्पीड, और आई एस ओ को पूरी तरह से नियंत्रित करने की सुविधा देता है. इस कारण वह हर स्थिति में फोटो को अपने अनुसार एडजस्ट कर सकता है, चाहे कम रोशनी हो, तेज़ गति से चल रहे सब्जेक्ट की फोटो लेनी हो, या बैकग्राउंड को ब्लर करना हो. अन्य ऑटोमोड्स में कैमरा आंशिक रूप से सेटिंग्स बदलता है, जिससे बेहतरीन परिणाम नहीं मिलते.

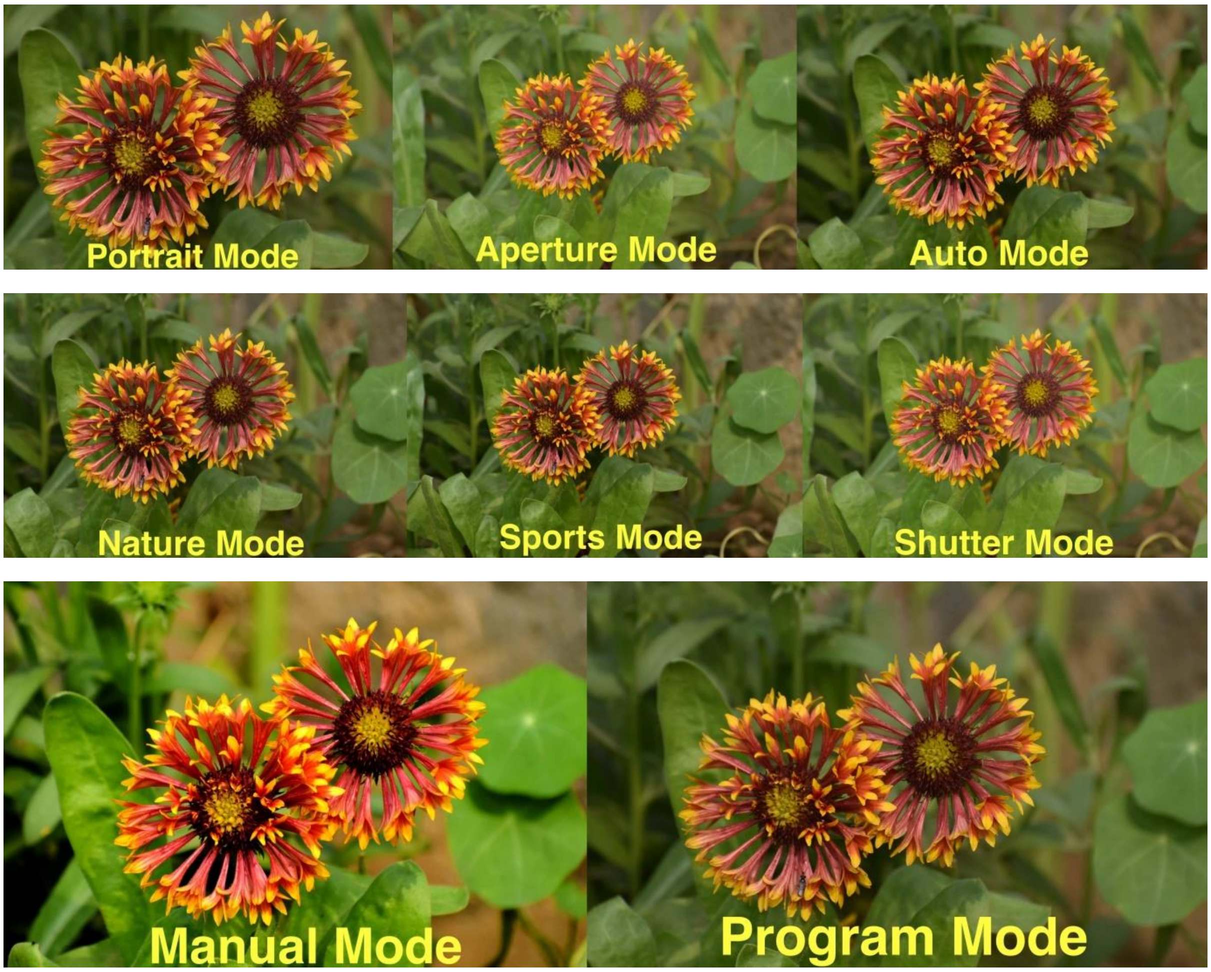

इन चित्रों से स्पष्ट है कि सबसे उपयुक्त परिणाम मैन्युअल मोड में ही मिल सकते हैं.

मैनुअल फोकस (एमएफ) का उपयोग -

किसी भी समय एमएफ का उपयोग कर सकते हैं. अक्सर खास परिदृश्य ऑटोफोकस के लिए एक चुनौती होते हैं, जिसमें यह या तो गलत विषय पर ध्यान केंद्रित करता है, या बस फोकस नहीं ढूंढ पाता है.

मैन्युअल मोड पर करने का तरीका -

डीएसअलआर के डायल मोड को एम (M) को सेट करना होता है इस मोड में आई एस ओ और शटर स्पीड और अपर्चर आपको खुद ही सेट करना होता है.

मैन्युअल मोड उपयोग करने का तरीका - कैमरे को मैन्युअल मोड पर सेट करें. अपने सब्जेक्ट पर व्यू फाइंडर में से देख कर फोकस करें और मुख्य कमांड डायल से अपर्चर, शटर स्पीड और आई एस ओ को व्यू फाइंडर में से देख कर तब तक सेट करते रहें जब तक कि कैमरे का लाइट मीटर सही एक्सपोज़र न दिखा दे. अब आप मैन्युअल मोड पर सही एक्सपोज़र पर फोटो ले रहे हैं.

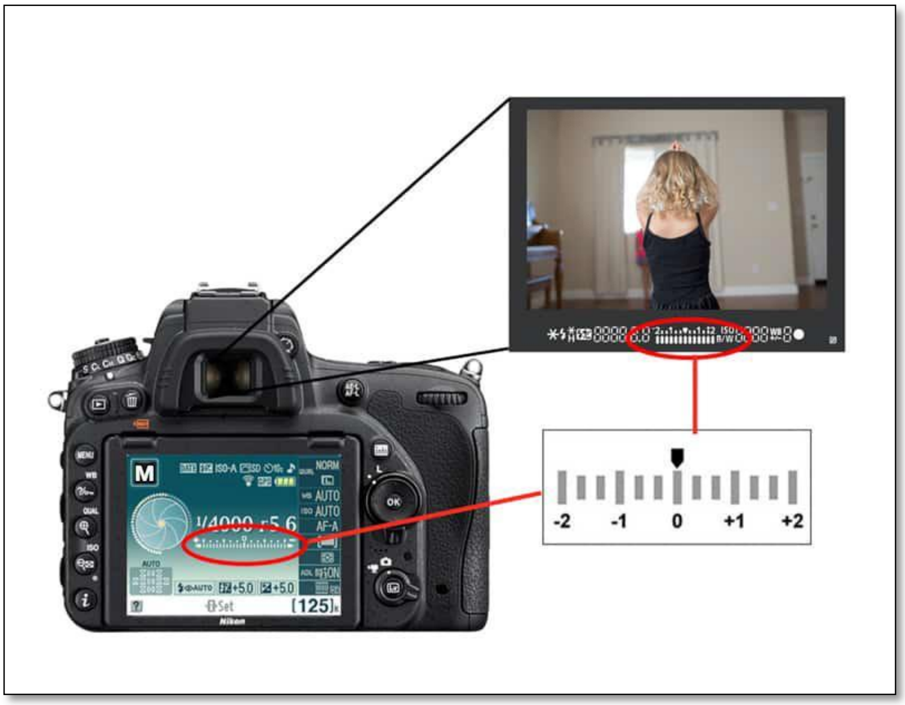

स्रोत-www.colesclassroom.com

मैन्युअल मोड सीखने की आवश्यकता क्यों है ?

1.कैमरा फ्लैश पर नियंत्रण रखना आसान -

कुछ कैमरों में एक अंतर्निहित फ्लैश होता है. ऑटो मोड में, यह फ्लैश हर बार सक्रिय हो जाता है जब कैमरा मानता है कि प्रकाश पर्याप्त नहीं है. फ्लैश की रोशनी तेज, जोरदार और सीधी होती है, जो अक्सर फोटो को अनुकूल प्रभाव नहीं देती. इसलिए, यह निर्णय करना ज़रूरी है कि फ्लैश का उपयोग करना है या नहीं. मैनुअल मोड में, फोटोग्राफर फ्लैश पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हैं और आईएसओ के साथ सेंसर की प्रकाश संवेदनशीलता बढ़ाकर फ्लैश का उपयोग करने से बच सकते हैं.

2. **रॉ (RAW) में शूट करना सुविधाजनक -**

रॉ फॉर्मेट का क्या मतलब है? कैमरा दो तरह की फाइलें, जेपीईजी (JPEG) फाइल और रॉ (RAW) फाइल बना सकता है. कैमरे की सेटिंग में ये चुनाव कर सकते हैं कि फोटो किस फॉर्मेट में संचित (save) करना है. फोटो संचित (save) करने के लिए जेपीईज (JPEG) फॉर्मेट का चुनाव करने पर फाइल प्रोसेस और कंप्रेस्ड हो जाती है. कैमरा सभी फोटोग्राफ को पोस्ट-प्रोसेस और कॉम्प्रेस कर देता है. अतः रॉ फॉर्मेट में फोटो सेव करने के लिए सेटिंग्स में से रॉ(RAW) का विकल्प चुनते हैं तो रॉ (RAW) फाइल सारी जानकारी एकत्र कर लेती है. यह डेटा के लगभग हर छोटे हिस्से को सहेजता है. रॉ फाइल को पोस्ट-प्रोसेस करने से फोटोग्राफर को अनंत संभावनाएं मिलती हैं . जब बड़े पोस्टर या वाल पेपर के लिए फोटोग्राफी करनी होती है तो बड़े आकर की फोटो के लिए हमें रॉ (RAW) फॉर्मेट इस्तेमाल करना चाहिए. इससे बेहतर परिणाम मिलते हैं. मैन्युअल मोड में इस तरह के विकल्पों के साथ काम करने में आसानी रहती है.

3. फोकस करने की सुविधा -

ऑटो मोड में कैमरे का फोकस स्वचालित होता है, लेकिन फोटोग्राफर चाहता है कि विषय वस्तु स्पष्ट फोकस में रहे. चूँकि कैमरे को यह पता नहीं होता कि छायाकार किस पर फोकस करना चाहते है, इसलिए मैन्युअल मोड में फोकस को खुद सेट करना आवश्यक होता है. ध्यान दें कि फोटो का फोकस अपने अनुसार सेट करना सिर्फ़ फोटो शूट के समय ही संभव है; इसे बाद में पोस्ट-प्रोसेसिंग में ठीक नहीं किया जा सकता. यदि विषय फोकस में नहीं है और फोटो धुंधली है, तो एडिटिंग के समय इसे सुधारना संभव नहीं होता. इसलिए, वांछित परिणाम के लिए फोटोग्राफी मैन्युअल मोड में ही करें.

शटर स्पीड और अपर्चर पर नियंत्रण - मैनुअल मोड में शटर स्पीड और अपर्चर पर पूरी से तरह से नियंत्रण किया जा सकता है. शटर स्पीड से किसी भी गतिशील विषयवस्तु की गति कैमरे में कैद की जा सकती है. अब फोटोग्राफर को यह तय करना है कि उसे किस तरह के प्रभाव चाहिएं. उसके अनुसार शटर स्पीड और अपर्चर नियंत्रित किया जा सकता है.

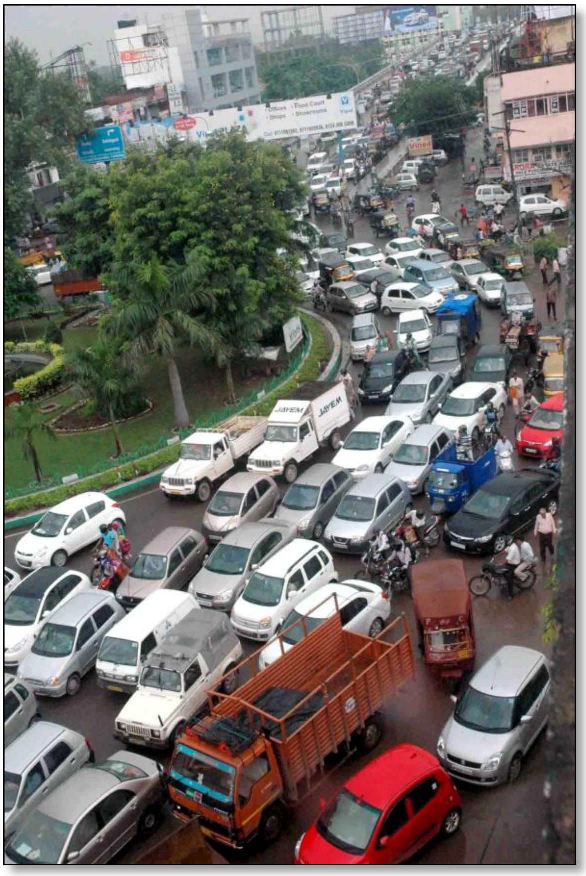

एनसीआर के व्यस्त फ्लाईओवर से चौराहे तक ट्रैफिक जाम की तस्वीर. मैन्युअल मोड, D80 Nikon camera (18-135mm AF-S DX Zoom Nikkor) से शटर स्पीड -1 /500, अपर्चर f/11 और आई एस ओ 100 .

अपर्चर पर नियंत्रण कर विषयवस्तु (subject) की पृष्ठभूमि धुंधली या स्पष्ट की जा सकती है. अपर्चर (f/5.6 से नीचे कुछ भी) इस्तेमाल करने से पृष्ठभूमि धुंधली हो जाएगी और जब (f/8 से ऊपर कुछ भी) लेते हैं, तो पृष्ठभूमि स्पष्ट हो जाएगी. इसी प्रकार अपर्चर पर नियंत्रण कर विषयवस्तु (subject) की पृष्ठभूमि धुंधली या स्पष्ट की जा सकती है.

उदाहरण के लिए, किसी पोर्ट्रेट को शूट करते समय पृष्ठभूमि को धुंधला करना आपके विषय पर ध्यान आकर्षित करने का एक बेहतर तरीका है. (विस्तृत विवरण के लिए अपर्चर और शटर स्पीड के अध्याय देखें)

मैन्युअल फोकस करने का तरीका -

1. अपने लेंस की तरफ, "AF - MF" लेबल वाला स्विच देखें. यह ऑटोफोकस और मैनुअल फ़ोकस के लिए है. एमएफ मोड में शूट करने के लिए अपने लेंस को उस सेटिंग पर स्विच करें. कुछ डी एस एल आर में ये स्विच नहीं होते.

डायल मोड से एम मोड पर कैमरा सेट कर दें. दोनों ही तरह से मैन्युअल मोड सेट किया जा सकता है.

स्रोत- tbn0.gstatic.com

ऑटोफोकस फोकस मोड पर सेट होने पर, शटर बटन को आधा दबाने से फोकस स्वतः ही समायोजित हो जाता है. लेकिन मैन्युअल मोड में, फोकस रिंग को लेंस पर घुमाना होगा. ध्यान रहे कि फोकस रिंग को घुमाने से पहले अपने कैमरे को मैन्युअल फोकस पर स्विच करें. कैमरे के स्वचालित फोकस में होने पर फोकस रिंग को समायोजित करने से लेंस क्षतिग्रस्त हो सकता है. एमएफ मोड पर, अपने लेंस पर फोकस रिंग का उपयोग कर विषय वस्तु का फोकस ठीक करना होगा . यदि ज़ूम लेंस है, तो आपके पास दो रिंग होने चाहियें - कैमरे के बॉडी के सबसे नजदीकी ज़ूम रिंग

और लेंस के अंतिम छोर की ओर फोकस रिंग. कैमरे बॉडी के सबसे करीब वाला रिंग ज़ूम को नियंत्रित करता है, और लेंस के अंत की ओर वाला रिंग फोकस को.

मैन्युअल फोकस करने के चरण -

1. फोटो क्लिक करने से पहले मन में छवि की कल्पना करें. यह हमेशा बेहतर रहता है. इससे पहले कि कैमरे को किसी विषय पर फोकस करें, यह तय करना जरूरी है कि आप फ्रेम क्या बनाना चाहते हैं, किस पर ध्यान देना चाहते हैं, और कैसा फोटो चाहिए यानि कि सब्जेक्ट की पृष्ठभूमि फोकस में हो या धुंधली हो. इस प्रकार शॉट को प्लान कर लेने से मनपसंद फोटो लेने में मदद मिलेगी.

1. ध्यान रहे कि यदि किसी एक्शन शॉट की फोटो खींच रहे हैं, तो एक्शन होने से पहले फ्रेम सेट करें ताकि फोटोग्राफर उसे कैद करने के लिए तैयार हों.

2. फोकस रिंग को तब तक घुमाएं जब तक कि विषय वस्तु शार्प न हो जाए.

3. फोकस फंक्शन के साथ प्रयोग करें और देखें कि मैन्युअल मोड पर समायोजन करते हुए शॉट कैसे बदलता है.

4. मैन्युअल मोड में, सही अपर्चर चुनना महत्वपूर्ण है. यह वांछित डेप्थ ऑफ़ फील्ड प्राप्त करने के लिए जरूरी है. यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं और क्या प्रभाव प्राप्त करना चाहते हैं. वृहत अपर्चर (छोटा एफ-नंबर) का उपयोग करने से शैलो डेप्थ ऑफ़ फील्ड बनता है. इस से छवि का अधिकांश भाग धुंधला हो जाता है और उसका केवल एक छोटा सा हिस्सा ही फोकस में रहता है. इसके विपरीत, एक संकीर्ण अपर्चर (बड़ा एफ-नंबर) क्षेत्र की एक बड़ी गहराई प्रदान करता है. यह छवि के अधिकांश हिस्से को फोकस में रखता है.

बड़ा अपर्चर कैमरे में अधिक रोशनी देता है. सही एक्सपोज़र प्राप्त करने के लिए शटर गति या आईएसओ को समायोजित करने की आवश्यकता होती है. संकीर्ण छिद्र से कम प्रकाश कैमरे में जाता है. इसके लिए धीमी शटर गति या उच्च आईएसओ का उपयोग करने की आवश्यकता हो सकती है. इसलिए, आपको शटर स्पीड और आईएसओ के विभिन्न संयोजनों के साथ प्रयोग करने की आवश्यकता है.

5. अगला कदम है - तीव्रता के लिए शटर स्पीड सेट करें. तस्वीर के लिए मैन्युअल मोड में उचित शटर गति निर्धारित करना महत्वपूर्ण है. यह आपको स्पष्ट चित्र प्राप्त करने में मदद करेगा. सबसे पहले, आपको यह निर्धारित करना होगा कि आपका विषय कितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है. यह भी महत्वपूर्ण है कि इसे फोकस में रखने के लिए आपको किस शटर स्पीड की आवश्यकता है. एक नियम है, जिसके अनुसार शटर गति कम से कम फोकल लंबाई के बराबर होनी चाहिए. उदाहरण के लिए, यदि आप 70 मिमी की फोकल लंबाई पर शूटिंग कर रहे हैं, तो शटर गति 1/70 या उससे तेज होनी चाहिए.

6. अगला कदम है - मैन्युअल कैमरा सेटिंग्स में आईएसओ को समायोजित कर सही एक्सपोज़र प्राप्त करें. लेकिन बेस्ट एक्सपोज़र प्राप्त करने के लिए अपर्चर और शटर गति को समायोजित करने की भी आवश्यकता हो सकती है.

आईएसओ को न्यूनतम संभव मानक पर सेट कर प्रारंभ करें, जो आमतौर पर आईएसओ 100 है. फिर कैमरे को विषय की ओर फोकस करें. व्यूफ़ाइंडर के नीचे मैनुअल एक्सपोज़र बार देखें. बार अंडरएक्सपोज़र (बाईं ओर तिरछा) दिखा सकता है. यदि ऐसा होता है, तो आपको एक्सपोज़र संतुलन तक आईएसओ संवेदनशीलता बढ़ाने की आवश्यकता है.

यदि पट्टी ओवरएक्सपोज़र दिखाती है, तो आपको या तो शटर गति बढ़ानी होगी या आप अपर्चर को तब तक कम भी कर सकते हैं जब तक आपको मैन्युअल मोड फोटोग्राफी में संतुलित एक्सपोज़र बार न मिल जाए. लेकिन ध्यान रखें कि आप जो भी सेटिंग्स रखें वो आपको वांछित रचनात्मक प्रभाव दे.

मैनुअल मोड में शूटिंग करते समय निम्न बिंदुओं का ध्यान रखें -

1. लेंस को अपने चेहरे के करीब रखें और फोकस रिंग को धीरे-धीरे घुमाएं. इससे आपको वस्तुओं को अधिक स्पष्ट रूप से देखने में मदद मिलेगी.
2. यदि आप एक मैन्युअल फोकस लेंस का उपयोग कर रहे हैं, तो व्यूइंग विंडो में वस्तुओं को स्पष्ट करने के लिए फोकस रिंग को तब तक घुमाएं जब तक कि वे स्पष्ट न हो जाएं.
3. यदि आप एक ऑटोफोकस लेंस का उपयोग कर रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि ऑटोफोकस सिस्टम चालू है.

Source :digital-photography-school.com

4.पोर्ट्रेट फोटोग्राफी करते हुए यह सुनिश्चित करने का प्रयास करें कि ध्यान सब्जेक्ट की आंखों पर रहे, ताकि सब्जेक्ट की आंखें अच्छी और स्पष्ट दिखें. फिर, आप अपर्चर को समायोजित कर अलग-अलग फोटोग्राफ ले सकते हैं.

5. अगर आप चौड़े अपर्चर का इस्तेमाल करते हैं, तो आप बैकग्राउंड में सॉफ्ट फोकस बना सकते हैं. इस तरह, विषय अभी भी फोकस में रहेगा, लेकिन उस के पीछे की पृष्ठभूमि धुंधली हो जाएगी.

6. अपने कैमरे को लाइव व्यू मोड पर स्विच करें (जहां एलसीडी व्यूफाइंडर है) . यदि कैमरे में एलसीडी स्क्रीन है, तो अंतिम फोकस जांच करने के लिए लाइव व्यू मोड पर स्विच करें. एलसीडी स्क्रीन पर अपना शॉट देखें, और फोकस रिंग को तब तक घुमाएं जब तक कि सब्जेक्ट शार्प न हो जाए.

7. अपने विषय पर जूम इन करने के लिए zoom बटन को दबाएं और देखने के क्षेत्र को स्थानांतरित करने के लिए कैमरे पर तीरों का उपयोग करें. (वैकल्पिक रूप से, विषय को फ्रेम करने के लिए अपने कैमरे को घुमाएं, और फिर से देखें)

1/8
+0.3

8. विषय के स्पष्ट होने तक फोकस को फाइन-ट्यून करें.

9. अपनी फोटो कैप्चर करने से पहले सामान्य दृश्य पर वापस जाने के लिए मैग्निफ़ायर टूल को फिर से टैप करें.

सारांश ; मैन्युअल मोड सीखना एक छायाकार के लिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कैमरे पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान करता है जिससे जटिल परिस्थितियों में भी उच्च गुणवत्ता वाली छवियों को कैप्चर करना संभव होता है. मैन्युअल फोकस के ज़रिए फ़ोटोग्राफ़र अपनी रचनात्मक दृष्टि को सटीक रूप से साकार कर सकता है. मैन्युअल फोकस करने के चरणों को सही ढंग से अपनाकर, किसी भी विषय को स्पष्ट और आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है. इस प्रकार, मैन्युअल मोड का अभ्यास फोटोग्राफी के कौशल को उन्नत करता है और फ़ोटोग्राफ़र को एक सशक्त दृष्टिकोण प्रदान करता है.

16. अपर्चर प्रायोरिटी मोड

प्रायोरिटी मोड पर f/4.5 पर 1/1250 सेकंड की शटर स्पीड पर ली गयी छवि . फोटो - दुष्यंत त्यागी

अपर्चर प्रायोरिटी मोड - यदि मैन्युअल मोड में फोटोग्राफी करना मुश्किल लग रहा है, तो डीएसएलआर में अपर्चर प्रायोरिटी मोड एक अच्छा विकल्प है. शुरुआती उपयोगकर्ताओं को मैन्युअल मोड में परेशानी हो सकती है, खासकर जब रोशनी के अनुसार शटर स्पीड और आईएसओ सेट करने की आवश्यकता होती है. यह स्थिति तब अधिक चुनौतीपूर्ण होती है जब रोशनी में तेजी से बदलाव होता है. ऐसे में, जो छायाकार ऑटो मोड का उपयोग नहीं करना चाहते, उनके लिए अपर्चर प्रायोरिटी मोड एक उपयुक्त विकल्प है.

क्या है अपर्चर प्रायोरिटी मोड?

अपर्चर प्रायोरिटी मोड का अर्थ है कि उपयोगकर्ता कैमरे का अपर्चर सेट करता है, जबकि शटर स्पीड और आईएसओ को कैमरा स्वयं निर्धारित करता है. यह मोड फोटोग्राफरों को महत्वपूर्ण पलों को आसानी से कैद करने की अनुमति देता है. इसमें एक अतिरिक्त सुविधा भी है, जहां उपयोगकर्ता अपर्चर के साथ आईएसओ सेट कर सकता है, और कैमरा स्वतः शटर स्पीड का आकलन करता है. पत्रकार मानसी अरोड़ा बताती हैं कि उन्होंने इसी मोड से फोटोग्राफी शुरू की. इस से उन्हें एक्सपोज़र सेट करने में आसानी हुई और डेप्थ ऑफ फील्ड को नियंत्रित करने में मदद मिली.

कैमरा को एवी या अपर्चर मोड पर कैसे सेट करें?

कैमरे को एवी या अपर्चर मोड पर सेट करना बहुत आसान है. नॉब को तब तक घुमाएं जब तक आप एवी या ए विकल्प नहीं देखते (कैमरे पर उपलब्ध सुविधा के अनुसार). कैनन के कैमरे में एवी और निकॉन में ए लिखा दिखाई देगा.

छोटा अपर्चर - जब हम छोटा अपर्चर सेट करते हैं तो लेंस के द्वारा रोशनी कम जाती है और डेप्थ ऑफ फील्ड बढ़ जाती है . अगर छोटा अपर्चर उपयोग करते हैं तो फोटो में सभी तत्व एकदम स्पष्ट (शार्प) नज़र आते हैं . बिलकुल एक कहानी की तरह से फोटो नज़र आती है जैसे एक कहानी की शुरुआत (फोरग्राउंड) है, मध्य है (फोटो के मिडिल एलिमेंट्स) और अंत है (बैकग्राउंड ऑफ़ द सब्जेक्ट) यानि अगर एक कहानी की तरह से फोटो लेनी हो तो छोटा अपर्चर बेहतर रहता है. f-11 से f-16 के मध्य के रेंज के छोटे अपर्चर माने जाते हैं .

f /13 पर ली गयी इस तस्वीर में अग्र भाग में पेड़ मध्य में पहाड़ और बैकग्राउंड में आसमान पर सूर्य पहाड़ों की नैसर्गिक सुंदरता बयां कर रहें हैं. फोटो - अजय सूरी

छोटे अपर्चर के साथ थोड़ी से सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि जैसे ही अधिक एफ स्टॉप (higher f/stop) लेंगे वैसे ही शटर स्पीड कम हो कर 1/100 या इससे भी कम हो जाती है. इससे फोटो ब्लर या हिल जाती है. ऐसा विशेषकर तब हो सकता है जब हम हाथ से या फिर बिना ट्राइपॉड के कैमरा उपयोग करते हैं. इसका समाधान है कि शटर स्पीड 1/100 सेकंड से नीचे ना जाए. नए कैमरों में ये सुविधा है कि फोटोपत्रकार न्यूनतम गति तय कर सकता है. इसके अलावा आई एस ओ भी बढ़ाया जा सकता है.

मध्यम अपर्चर - मध्यम अपर्चर नाम से ही ज़ाहिर है कि छोटे और बड़े अपर्चर के मध्य की सेटिंग्स का उपयोग किया जाता है. F/5.6- f/8 के अपर्चर मध्यम रेंज के अपर्चर कहा जा सकता है. कहीं भी उलझन हो कि बड़ा अपर्चर उपयोग करे या छोटा. ये अपर्चर रेंज बेफिक्र हो कर उपयोग कर सकते हैं. इस स्थिति में मध्यम रेंज के अपर्चर सब से उपयुक्त रहते हैं.

सूरजकुंड मेले में नृत्य प्रस्तुति देता हुआ लोक कलाकार - फोटो - दुष्यंत त्यागी

11 फरवरी 2009 को फरीदाबाद के सूरजकुंड मेले में एक लोक कलाकार का मध्यम अपर्चर f / 6.3 पर लिया गया चित्र . देखें कि कैसे लगातार बदलती नृत्य मुद्रा को कैप्चर किया गया जो उस समय की रोशनी के अनुसार सर्वोत्तम था . कलाकार की भाव भंगिमाएँ और सह कलाकारों की भी क्रियाएँ मध्यम अपर्चर से बेहतरीन तरीके से कैप्चर करना सम्भव हो सका.

बड़ा अपर्चर - आमतौर पर, f/2.8 से कम (इससे अधिक) कुछ भी बड़ा अपर्चर माना जाता है, लेकिन यह आपके लेंस पर निर्भर करता है. कुछ लेंस इतने नीचे नहीं जा सकते. उस स्थिति में, जो भी आपके लेंस की सबसे कम अपर्चर नंबर है वो ही बड़ा अपर्चर है . बड़े अपर्चर के लिए, f/1.2 से f/4 तक के f-नंबर का उपयोग करें.

बड़ा अपर्चर उपयोग करने का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि कम रोशनी में भी फोटोग्राफी की जा सकती है. बड़ा अपर्चर कैमरे के सेंसर तक अधिक रोशनी पहुंचने देता है. इसके अलावा जहाँ फोटोग्राफर को सब्जेक्ट पर फोकस करना हो और बैकग्राउंड धुंधली करनी हो, वहां बड़ा अपर्चर उपयोग किया जा सकता है .

06 अक्टूबर 2009 को फरीदाबाद में विरोध प्रदर्शन करते लोग

उक्त फोटो के विषय में वरिष्ठ फोटोपत्रकार दुष्यंत त्यागी बताते हैं - ‘इस फोटो में मुझे प्रदर्शनकरियों का आक्रोश दिखाना था, इसलिए मैंने 5.2 के अपर्चर पर , 250 आई एस ओ पर फोटो ली.

किसी भी सब्जेक्ट के भाव दिखाने के लिए भी बड़े अपर्चर का उपयोग किया जाता है .

प्रजनन और बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत नियुक्त अस्थायी कर्मचारी स्थायी किए जाने की मांग करते हुए .

इस फोटो में अस्थायी कर्मचारियों और पुलिस , दोनों पक्षों की भावनाएं स्पष्ट रूप से पाठकों के सामने आ सकें, इसलिए यह फोटो f/2.8 अपर्चर पर ली गई है, जिसमें शटर स्पीड 1/347 सेकंड और ISO 80 है.

डेप्थ ऑफ़ फील्ड - बड़ा अपर्चर से कम डेप्थ ऑफ़ फील्ड की फोटो ले सकते हैं यानि कि जहाँ फोटोग्राफर को सब्जेक्ट पर फोकस करना हो और बैकग्राउंड धुंधली करनी हो वहां बड़ा अपर्चर उपयोग किया जा सकता है.

वर्ष 2018 में एक प्रदर्शन के दौरान लिया गया इसी तरह का एक अन्य फोटो देखें. फोटोग्राफर का मकसद है कि देखने वालों का पूरा ध्यान प्रदर्शनकारियों पर ही जाए.

अपर्चर और डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड - नीचे दी हुई फोटोग्राफ देखें. फोटो में केवल मुख्य सब्जेक्ट के चेहरे के भाव दिखाने के लिए फोकस किया गया. अपने ख़ास मेहमान को रिक्शा पर बैठा कर खुश होता हुआ रिक्शा चालक. –

साभार - @ Kevin Landwer-Johan

अपर्चर से डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड नियंत्रित कर सकते हैं. यही मूल कारण है कि अपर्चर प्रायोरिटी मोड का उपयोग किया जाता है. अपर्चर का उपयोग कर हम अपनी हर फ़ोटोग्राफ़ को एक अलग पहचान दे सकते हैं. किसी भी फोटो में जिस जगह फ़ोकस होता है उसे पोईंट ऑफ़ फ़ोकस कहते हैं. इस पोईंट के थोड़ा आगे और थोड़ा पीछे का हिस्सा भी फ़ोकस में होता है. इसे डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड कहते हैं. ज़्यादा डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड को डीप डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड कहते है और कम डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड को शैलो डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड कहते हैं.

अगर हमें कम डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड चाहिए तो बड़ा अपर्चर उपयोग करना चाहिए. पोर्ट्रेट फोटोग्राफ़्स में बड़े अपर्चर का उपयोग करते हैं ताकि कम डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड ले सकें जिससे बाक़ी चीज़ों से ध्यान हटा कर केवल सब्जेक्ट पर फ़ोकस कर सकें. इसी तरह से शार्प फ़ोकस के लिए छोटे अपर्चर का इस्तेमाल करते हैं.

बड़े अपर्चर के साथ शटर स्पीड भी तेज रहेगी ताकि लेंस के द्वारा अंदर जाने वाली रोशनी पर नियंत्रण पा सकें. छोटे अपर्चर से शटर स्पीड कम हो जाती है या फिर ज़्यादा आई एस ओ हो जाता है जिससे कैमरे में प्रवेश कर रही रोशनी नियंत्रित हो सके.

बड़े, मध्य और छोटे अपर्चर की डेप्थ ऑफ़ फ़ील्ड फोटो साभार -विकिपीडिया

सारांश ; अपर्चर प्रायोरिटी मोड में फ़ोटोग्राफ़र अपने सब्जेक्ट और वांछित परिणाम के अनुसार छोटे, मध्यम या बड़े अपर्चर का चयन कर सकता है. इससे छवि में गहराई, फोकस और बैकग्राउंड ब्लर को नियंत्रित किया जा सकता है. छोटे अपर्चर से पूरी छवि में स्पष्टता मिलती है. बड़े अपर्चर से बैकग्राउंड ब्लर करके विषय को उभारने में मदद मिलती है. अपर्चर प्रायोरिटी मोड का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह फ़ोटोग्राफ़र को शटर स्पीड की चिंता किए बिना, अपर्चर के ज़रिए कलात्मकता को बढ़ाने का अवसर देता है.

17. शटर प्रायोरिटी मोड

1/40 सेकंड की शटर स्पीड और f /6.2 के बड़े अपर्चर पर भारी बारिश का फोटोग्राफ.

शटर प्रायोरिटी मोड में ज्यादातर फोटोग्राफर या तो सब्जेक्ट मोशन को फ्रीज़ करने की कोशिश करते हैं या मोशन ब्लर दिखाना चाहते हैं. मूलतः शटर स्पीड नियंत्रित करता है कि फोटो में कितनी स्पीड दिखाई दे. स्पोर्ट्स , एक्शन और वन्य जीवन की तस्वीरें लेने के लिए शटर प्रायोरिटी मोड अक्सर सबसे अच्छा एक्सपोज़र मोड होता है. फोटो पत्रकार इसका सबसे अधिक उपयोग स्पोर्ट्स कवर करने, खासकर खिलाड़ियों के एक्शन को फ्रीज़ करने के लिए करते हैं. किसी घटना के प्रति अपना नज़रिया प्रस्तुत करने के लिए भी इस मोड का उपयोग किया जाता है.

क्या है शटर प्रायोरिटी मोड ?

शटर प्रायोरिटी मोड का मतलब होता है अपने कैमरे द्वारा फोटो लेने की गति को नियंत्रित करना. आप कैमरे की शटर स्पीड तय करेंगे और अपर्चर तथा आई एस ओ, कैमरा स्वतः तय कर देगा . इस तरह फोटो-पत्रकार आसानी से स्पोर्ट्स कवर करते हुए रोमांचक क्षण को कैमरे में कैद कर सकता है.

शटर प्रायोरिटी मोड बेहद दिलचस्प है जिसमे किसी भी सब्जेक्ट को गतिमान दिखाने के लिए शटर स्पीड कम करके सब्जेक्ट की गति कैप्चर की जा सकती है.

इस फोटो को धीमी शटर स्पीड पर लिया ताकि एनसीआर के व्यस्तम चौक पर ट्रैफिक जाम को दिखाया जा सके . इस तरह वरिष्ठ फोटो पत्रकार दुष्यंत त्यागी ने धीमी शटर स्पीड के उपयोग से शहर के बीचों - बीच की अव्यवस्था को दिखाया. इसमें शटर स्पीड 1/13, अपर्चर f/4.5 और आई एस ओ 300 है.

शटर प्रायोरिटी मोड पर सेट करने का तरीका:

कैमरे को टी वी या एस मोड पर सेट करना बहुत आसान है. नॉब को तब तक घुमाएं जब तक कि आप टीवी या एस विकल्प नहीं देखते (यह कैमरे में उपलब्ध सुविधाओं पर निर्भर करता है). कैनन के कैमरे में टीवी और निकॉन में एस लिखा दिखाई देगा .

विभिन्न प्रकार के प्रभाव प्राप्त करने का माध्यम शटर स्पीड :

धीमी शटर स्पीड में शटर देर तक खुला रहता है इसलिए रोशनी को अंदर जाने का समय मिल जाता है. इस के कारण इमेज सेंसर पर छवि के छपने का समय मिल जाता है . धीमी शटर स्पीड रखनी है या तेज़, ये इस बात पर निर्भर करता है कि किस तरह का प्रभाव फोटो में दिखाना है.

क्रिकेट, फ़ुटबॉल, एथलेटिक्स, टेनिस, बास्केटबॉल और वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी करते हुए अगर तेज़ गति के क्रिस्प शॉट चाहिए तो आपको 1/1000 से 1/2000 तक की शटर गति की आवश्यकता होगी. दूसरी ओर, यदि गति को इंगित करने के लिए थोड़ा सा मोशन ब्लर दिखाना चाहते हैं, तो आपको 1/60 से 1/250 के बीच की शटर गति चाहिए होगी.

तेज़ शटर स्पीड - कोई भी शटर स्पीड जो कि 1 /100 वें सेकंड से ज्यादा हो उसे फास्ट शटर स्पीड कहा जाता है. किसी भी चलते हुए सब्जेक्ट को अगर हम उसी स्थान पर फ्रीज़ करना चाहते हैं तो फ़ास्ट शटर स्पीड का इस्तेमाल करेंगे, जैसे 1/1000 सेकंड या इससे भी अधिक तेज़. लेकिन यह ध्यान रखें कि तेज़ शटर स्पीड का इस्तेमाल करने के लिए पर्याप्त रोशनी की जरूरत होती है. तेज़ शटर गति के लिए फोटोग्राफर को अपने अपर्चर और आईएसओ को सन्तुलित करने की आवश्यकता हो सकती है.

यह फोटो 1 /500 सेकंड, f/5.6 62 के अपर्चर और 200 आई एस ओ पर ली गयी है. फोटो पत्रकार दुष्यंत त्यागी द्वारा ली गई इस तस्वीर में धावकों का एक्शन फ्रीज करने के लिए फास्ट शटर स्पीड उपयोग किया गया. चूँकि फोटो दिन के उजाले में ली गयी इसलिए अधिक आई एस ओ और बड़े अपर्चर की आवश्यकता नहीं थी .

मध्यम शटर स्पीड - 1 /60 से 1/250 वें सेकंड तक की स्पीड को आमतौर पर मध्यम शटर स्पीड मानते हैं . यह स्पीड, घूमते हुए सब्जेक्ट पर कुछ हद तक स्पीड का प्रभाव दिखाती है और सब्जेक्ट मूविंग ,जानदार और भाव पूर्ण दिखता है . यह तेज़ और धीमी गति के बीच की स्पीड है.

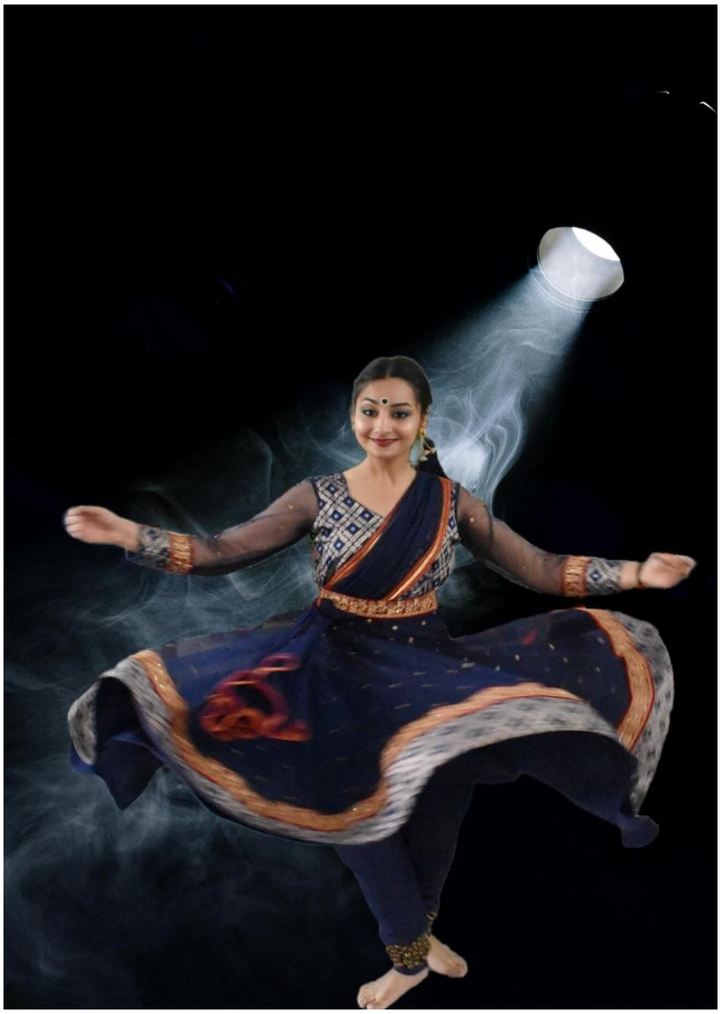

शटर स्पीड 1 /160, अपर्चर 5. 6 और आई एस ओ 6400 पर क्लिक गई इस फोटो में नृत्यांगना की मूवमेंट जानदार लग रही है.

धीमी शटर स्पीड- 1/100 सेकंड से 1 सेकंड तक की शटर गति, अपेक्षाकृत धीमी मानी जाती है. 1 /100 वें सेकंड से नीचे किसी भी शटर स्पीड को धीमी शटर स्पीड कहते हैं . रात के समय फोटोग्राफी करते हुए धीमी शटर स्पीड का अक्सर इस्तेमाल होता है . धीमी शटर स्पीड का उपयोग फोटो में गति या मोशन का अहसास देने के लिए किया जाता है . लेकिन धीमी शटर स्पीड प्रयोग करते समय, फोटो को धुंधला होने से बचाने के लिए अपने कैमरे को ट्राइपॉड (tripod) या स्थिर सतह पर रखें अन्यथा कैमरा हिल सकता है और फोटो ब्लर आएगा . कम रोशनी या अंधेरा है,

तो फोटोग्राफर को स्थिर सपाट सतह पर धीमी शटर गति और अधिक आई एस ओ का उपयोग करने की आवश्यकता होगी ताकि फोटो का एक्सपोज़र लेवल ठीक हो .

बरसात में बाइक चलाने वाले को कितनी मुश्किल हो रही है , इसे दर्शाने के लिए यह फोटो 1/40 सेकंड की शटर स्पीड पर f /9 के अपर्चर पर ली गयी. फोटो : दुष्यंत त्यागी

सारांश; शटर प्रायोरिटी मोड फ़ोटोग्राफ़र को शटर स्पीड पर नियंत्रण प्रदान करता है, जिससे गतिशीलता और गति के प्रभाव को कैप्चर करने में मदद मिलती है. अलग-अलग शटर स्पीड का उपयोग करके अलग-अलग प्रभाव प्राप्त किए जा सकते हैं—उच्च शटर स्पीड से तेज़ी से चलने वाले विषयों को स्थिर दिखाया जा सकता है, जबकि धीमी शटर स्पीड से गति धुंधली (motion blur) करके नाटकीय प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है. इस प्रकार, शटर प्रायोरिटी मोड का उपयोग गति और समय के प्रभावों को रचनात्मक रूप से प्रदर्शित करने के लिए आदर्श होता है.

18. फोटोग्राफी में लाइट यानि प्रकाश का महत्व

फोटोग्राफी में प्रकाश का अत्यधिक महत्व होता है, क्योंकि यह तस्वीर को जीवंत और प्रभावी बनाने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है. प्रकाश की गहरी समझ के साथ फोटो खींचना इस कला की एक आवश्यकता है, जो इसे चुनौतीपूर्ण भी बनाता है. फोटोग्राफी की आत्मा प्रकाश की समझ में निहित है. इस अध्याय में, हम फोटो पत्रकारिता के संदर्भ में प्रकाश के महत्व का विस्तार से अध्ययन करेंगे.

विषय की वास्तविकता को समझें – वरिष्ठ फोटो पत्रकार नरेश नरूला बताते हैं, "फोटो जर्नलिस्ट का मुख्य उद्देश्य महत्वपूर्ण क्षणों, घटनाओं या कहानियों को कैद करना होता है. प्रकाश वह प्रमुख साधन है जिसके द्वारा इस सार को प्रस्तुत किया जाता है. यह तस्वीर के मूड, माहौल और यहां तक कि भावनात्मक प्रभाव को भी प्रभावित करता है. जिस वस्तु या व्यक्ति का फोटो लिया जा रहा है, उस पर पड़ने वाली रोशनी अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है. फ़ोटोग्राफ़र प्रकाश का उपयोग करके अपने सब्जेक्ट का वास्तविक स्वरूप दिखाना पसंद करते हैं.

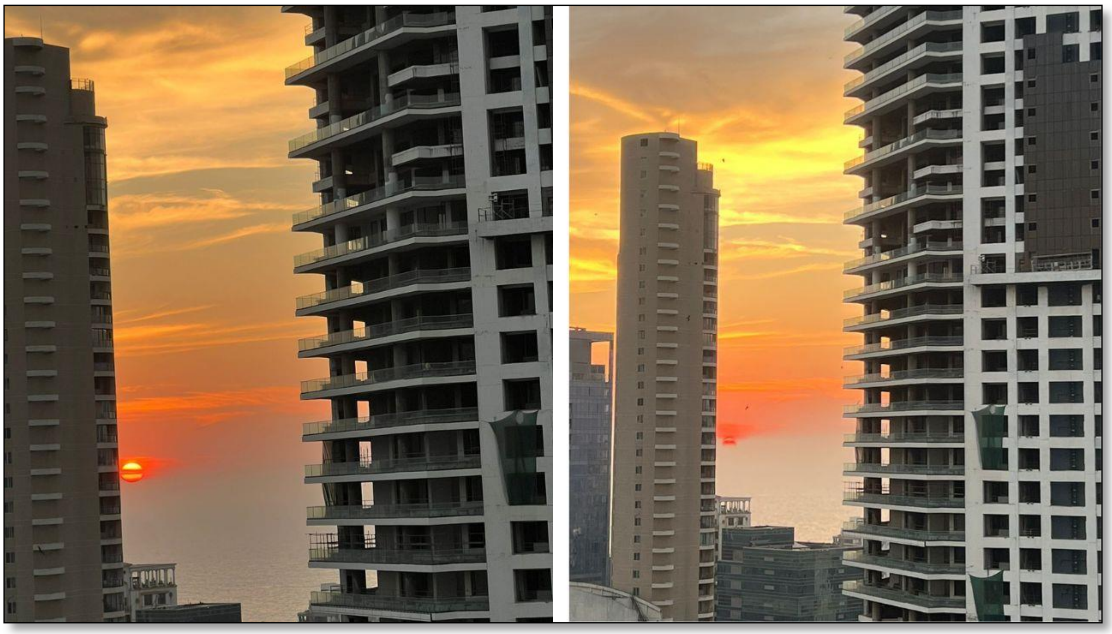

दिन के अलग-अलग समय पर ली गई ये दोनों तस्वीरें एक ही स्थान और विषय को दिखाती हैं. थोड़े से समय में प्रकाश में आए अंतर ने चित्र के भाव को बदल दिया है.

प्राकृतिक प्रकाश को समझें - फोटोग्राफी करते हुए प्राकृतिक और कृत्रिम प्रकाश को समझना ज़रूरी है. पहले प्राकृतिक प्रकाश की चर्चा करेंगे. यह प्रकाश एक ही दिन में अलग-अलग प्रकार से देखने को मिलता है. जो प्रकाश स्रोत प्राकृतिक रूप से प्राप्त होते हैं, प्राकृतिक प्रकाश स्रोत कहलाते हैं. सूर्य, चाँद तथा तारे प्राकृतिक प्रकाश स्रोत हैं.

अधिकांश फोटो पत्रकारों के लिए प्राथमिक उपकरण सूर्य की रोशनी ही है. लेकिन रोशनी का स्तर पूरे दिन बदलता रहता है. दिन के अलग -अलग समय पर ली गयी फोटो का प्रभाव अलग-अलग पड़ता है. इनके प्रभावों को जानने के लिए दिन के विभिन्न समय पर फोटो लेकर देखें तो समझ आएगा कि कैसे दिन भर बदलती रोशनी फोटो का मूड बदलती है. इसकी चर्चा आगे की गयी है.

हर परिस्थिति में ढलना सीखें - फोटो जर्नलिस्ट अप्रत्याशित परिस्थितियों में भी काम करते हैं. उपलब्ध प्रकाश का उपयोग कैसे किया जाए, यह जानना बहुत आवश्यक है. उन्हें सीखना होगा कि अपनी तस्वीरों को अच्छा दिखाने के लिए रोशनी के साथ कैसे काम करना है, चाहे वो बरसात का दिन हो या कोई ऐसा दिन जिसमें बहुत रोशनी न हो.

अंधेरे में कृत्रिम प्रकाश का उपयोग - कृत्रिम प्रकाश का उपयोग हम तब करते हैं जब अंधेरा होता है या कम रोशनी होती है. हम सब्जेक्ट को उज्जवल बनाने और महत्वपूर्ण क्षणों की तस्वीरें लेने के लिए फ्लैश, एलईडी पैनल या छोटी

फ्लैशलाइट जैसी चीजों का उपयोग कर सकते हैं. हालाँकि, इस प्रकाश का उपयोग समझदारी से करना चाहिए, ताकि यह सब्जेक्ट को खराब करने के बजाय उन्हें अच्छा दिखाने में मदद करे. कृत्रिम प्रकाश का उपयोग करते हुए ध्यान रखें कि लाइट सब्जेक्ट से समुचित दूरी पर और सही दिशा में हो जिससे सब्जेक्ट उभर कर आये और फोटो ओवर या अंडर एक्सपोज़्ड न हो.

प्रकाश की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप ढलें - फोटो पत्रकारों को अक्सर तेजी से बदलती प्रकाश स्थितियों के अनुरूप ढलने की जरूरत होती है. अपने चारों ओर देखें और पता लगाएं कि प्रकाश कहां से आ रहा है. प्रकाश कहीं से भी आ सकता है - आपके ऊपर, आपके पीछे या आपके आस-पास से. प्रकाश कहाँ से आ रहा है, इससे आपके सब्जेक्ट के दिखने में फ़र्क पड़ेगा. अपने सब्जेक्ट के चारों ओर घूमें और ध्यान दें कि प्रकाश की दिशा बदलने से छवि कैसे बदलती है. हो सके तो अपने सब्जेक्ट को ऐसे क्षेत्र में ले जाएँ जहाँ प्रकाश की दिशा वह प्रभाव देती है जो आप चाहते हैं. कुछ रोशनियाँ आपके विषयों को आकर्षक बनाएंगी, जबकि अन्य नाटकीयता पैदा कर सकती हैं. अगर कैमरा सेटिंग्स बदलने पर भी सब्जेक्ट पर समुचित लाइट ना आ रही रहो तो सब्जेक्ट की दिशा बदलें.

बैलेंस एक्सपोज़र - एक्सपोज़र को संतुलित करने के लिए अपने कैमरे की सेटिंग्स (अपर्चर, शटर स्पीड और आईएसओ) का उपयोग करें. यह सुनिश्चित करें कि आपका विषय अच्छी तरह से प्रकाशित है और ओवरएक्सपोज़्ड या अंडरएक्सपोज़्ड नहीं है.

क्वालिटी ऑफ लाइट - प्रकाश दो प्रकार का होता है— नरम प्रकाश और कठोर प्रकाश(Soft Light and Hard Light). नरम प्रकाश में गहरी छाया नहीं बनती, जबकि कठोर प्रकाश तेज और स्पष्ट छाया उत्पन्न करता है. नरम

प्रकाश कई तरह की तस्वीरों, जैसे भूदृश्य और पोर्ट्रेट, के लिए उपयुक्त होता है, खासकर जब आप चेहरे पर छाया नहीं चाहते. वहीं, कठोर प्रकाश का उपयोग अक्सर इमारतों या वस्तुओं की तस्वीरों में किया जाता है, क्योंकि इससे बन रही परछाई से चित्र में गहराई बनती है

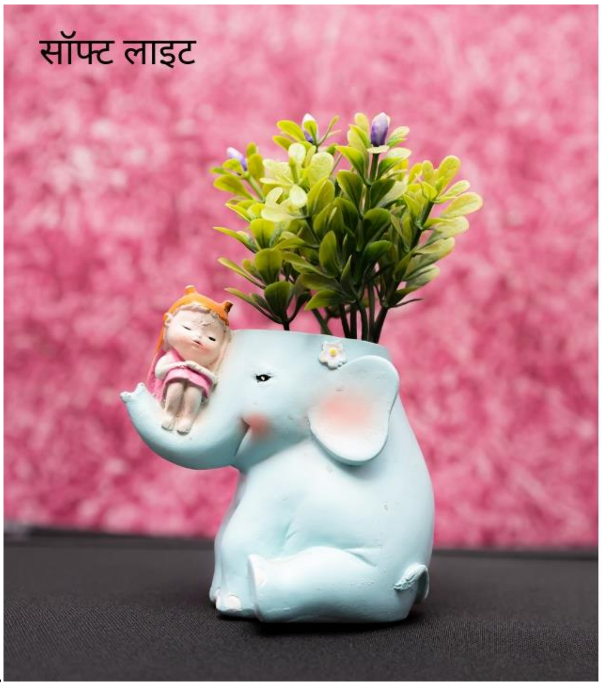

.

गोल्डन ऑवर में फोटोग्राफी करें – सूर्योदय के बाद का एक घंटा और सूर्यास्त से पहले का एक घंटा गोल्डन ऑवर (Golden hour) है . यह अपनी हल्की रोशनी से तस्वीरों को शांत और सुंदर बनाता है. गोल्डन ऑवर के समय सामान्य दृश्य भी असाधारण दृश्यों में बदल जाते हैं. नरम, गर्म गोल्डन रोशनी किसी भी फोटो में गहराई और भाव जोड़ सकती है, जिससे चित्र अधिक सुंदर और भावनात्मक बन जाता है. इसी कारण गोल्डन ऑवर, पोर्ट्रेट, लैंडस्केप और विभिन्न अन्य विषयों के लिए हमेशा फोटोग्राफर की पहली पसंद होता है.

सुंदरबन में मछुआरे घर लौटते हुए. अपर्चर f/ 13, आई एस ओ - 5 0 0 , शटर स्पीड 1 /1000. फोटो : अजय सूरी

दिशा और कोण पर ध्यान दें - तस्वीर लेते समय गौर से देखें कि आपके सब्जेक्ट पर किस दिशा से किस रंग का प्रकाश पड़ रहा है. यह बहुत महत्वपूर्ण है. हम आमतौर पर चार अलग-अलग दिशाओं से रोशनी का उपयोग करते हैं. प्रकाश की दिशा सब्जेक्ट के दिखने और महसूस करने के तरीके को बदल सकती है. यदि प्रकाश कैमरे के सामने है, तो चित्र में सब कुछ स्पष्ट और समान होगा, लेकिन यह बहुत दिलचस्प नहीं लग सकता. यदि प्रकाश एक दिशा से आ रहा है, तो यह छाया बनाएगा और चीज़ों को और अधिक सुन्दर बना देगा. यदि प्रकाश विषय के पीछे है, तो यह उसे सिल्हूट(silhouette) की तरह या उसकी रूपरेखा को अलग दिखा सकता है.

दिशा व कोण किस तरह से सब्जेक्ट पर पड़ रही लाइट को प्रभावित करते हैं इसका विवरण नीचे दिया जा रहा है.

हाई कोण प्रकाश - जब प्रकाश किसी चीज़ के ऊपर होता है, तो उससे बनने वाली छाया छोटी होगी और आपके विषय के ठीक नीचे होगी.

यदि प्रकाश तेज़ है, तो छाया गहरी या अंधकारमय होगी और उसके किनारे स्पष्ट होंगे. यदि प्रकाश मंद है, तो छाया अधिक नर्म होगी और उसके स्पष्ट किनारे नहीं होंगे.

निम्न कोण (लो) प्रकाश - जब लाइट निचले कोण से आ रही हो जैसा कि दिन की शुरुआत और अंत में अक्सर होता है, तो छायाएं लंबी हो जाती हैं.

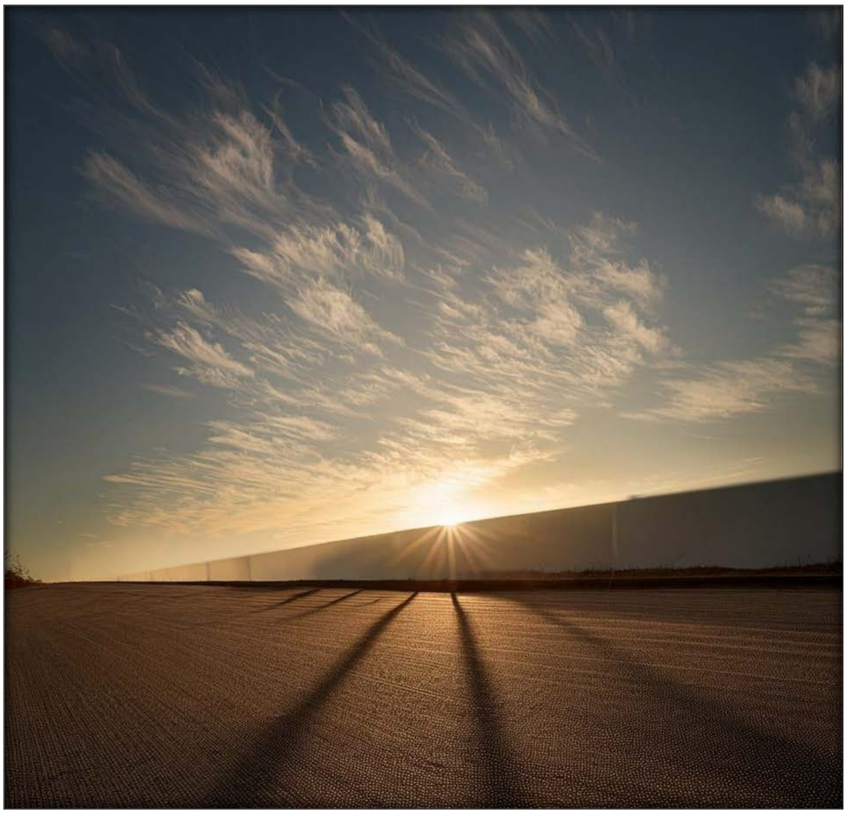

फ्रंट लाइट उपयोग करें - सब्जेक्ट के आगे पड़ने वाली लाइट को फ्रंट लाइट कहते हैं. इसमें फोटोग्राफर सब्जेक्ट के पीछे होता है . फोटोग्राफी में फ्रंट लाइट सब्जेक्ट को रोशन करने, शैडो को कम करने और सब्जेक्ट की डिटेल को उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. छवि को एक संतुलित और प्राकृतिक रूप देती है. जब लाइट सामने से आपके विषय पर पड़ती है, तो रोशनी समान होगी और कोई भी छाया उसके पीछे चली जाएगी.

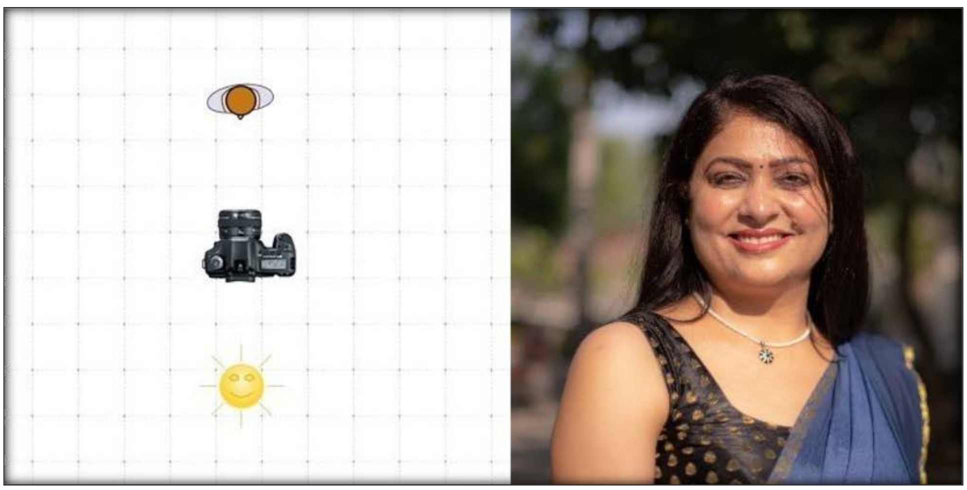

Source- www.lightningdiagrams.com

सब्जेक्ट की गहराई दिखाने के लिए साइड लाइटिंग - साइड लाइटिंग प्रकाश की एक तकनीक है, जहां प्रकाश का स्रोत सब्जेक्ट के एक तरफ हो, चाहे वो दाईं तरफ हो या बायीं ओर. साइड लाइट से सब्जेक्ट के एक तरफ परछाई बनती है, जो किसी भी सब्जेक्ट की बनावट और गहराई दिखाती है.

कैमरे के व्यू फाइंडर से सब्जेक्ट को देखने पर आप को लाइट बाईं या दाईं ओर से आती दिखेगी. साइड लाइटिंग से तात्पर्य उस जगह से है जहां से लाइट सब्जेक्ट पर पड़ती है. इसका प्रकाश की गुणवत्ता से कोई लेना-देना नहीं है. यह हार्ड या सॉफ्ट लाइट भी हो सकती है. यह कृत्रिम प्रकाश भी हो सकता है और प्राकृतिक भी.

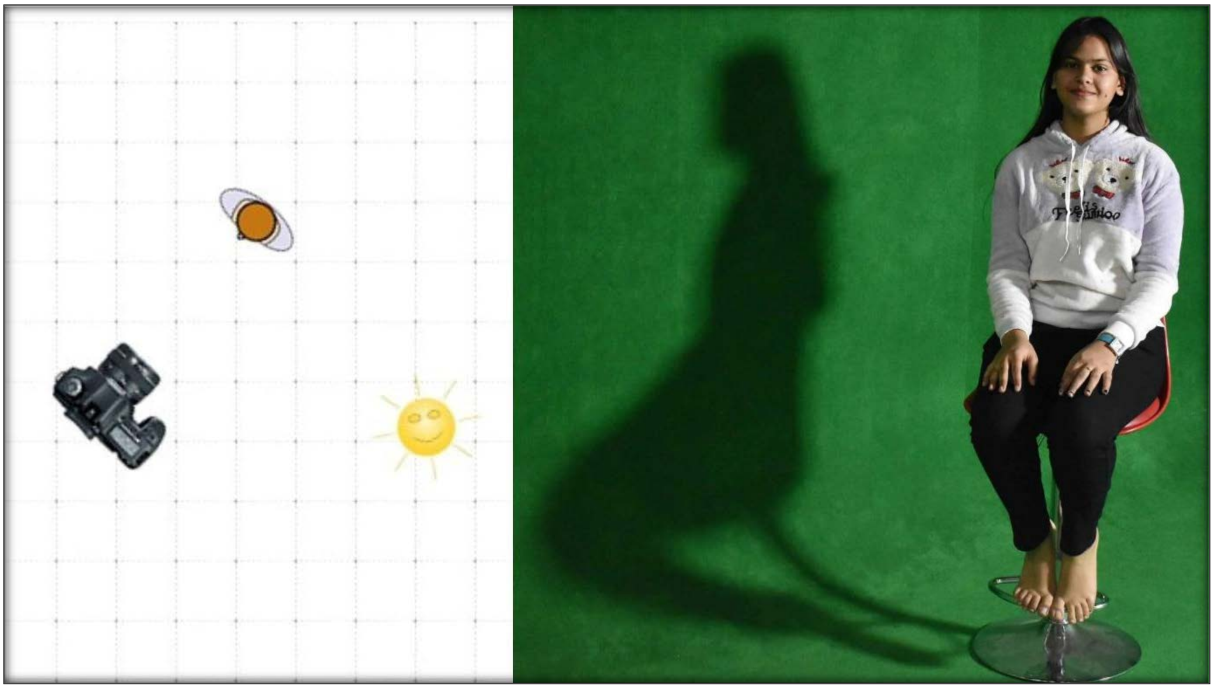

साइड लाइटिंग का उपयोग किसी भी सब्जेक्ट के डिटेल, आकृति और बनावट बेहतर तरीके से दिखाने के लिए किया जा सकता है. फोटो-पत्रकारिता में भले ही इस तकनीक का कम उपयोग होता हो लेकिन पोर्ट्रेट फोटोग्राफ़र अक्सर चेहरे को तराशने और व्यक्ति की विशेषताओं को निखारने के लिए साइड लाइटिंग का उपयोग करते हैं. लेकिन रिपोर्टिंग करते हुए, कुछ अवसरों पर - जैसे मेले में रखी मूर्तियों और फर्नीचर जैसी वस्तुओं के कलात्मक प्रभावों को दिखाने के लिए – साइड लाइट का उपयोग किया जा सकता है.

बिहाइंड/बैक लाइट से शानदार तस्वीर लें - फ़ोटोग्राफ़ी में बैकलाइटिंग तब होती है जब मुख्य प्रकाश सब्जेक्ट के पीछे से आता है. इस स्थिति में यह स्वाभाविक रूप से सब्जेक्ट पर छाया डाल देगा. इससे कई प्रकार के प्रभाव पैदा हो सकते हैं. सब्जेक्ट के किनारों को उजागर करना यानि एक रिम लाइट बनाना और कभी-कभी एक सिल्हूट (silhouette)तक ले जाना संभव हो जाता है. इस लाइटिंग का उपयोग सिल्हूट (silhouette) को बढ़ाने या सब्जेक्ट

अन्य प्रकाश स्रोतों से थोड़ा अलग करने के लिए किया जाता है. बैकलाइटिंग छवि में गहराई और नाटकीयता जोड़ सकती है, लेकिन विषय के अंडरएक्सपोज़र से बचने के लिए एक्सपोज़र को नियंत्रित करना आवश्यक है.

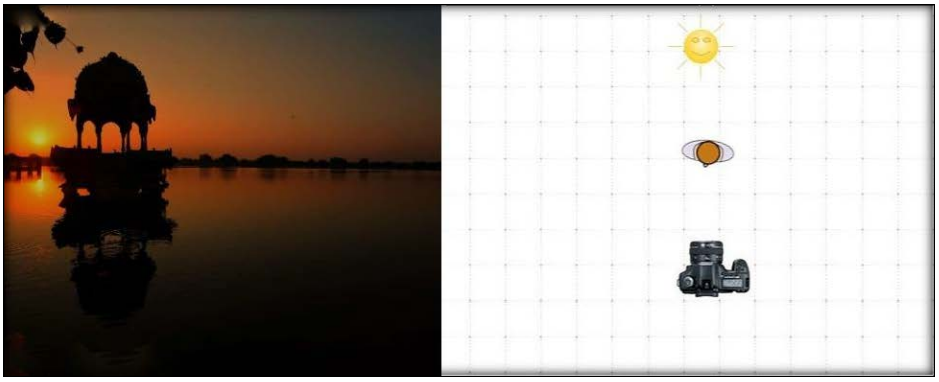

Source- www.lightningdiagrams.com

छाया का उपयोग करें – परछाइयां/ छायाएं चित्रों में रोचकता और रोमांच भर सकती हैं, जिससे वे अधिक गहरे और नाटकीय प्रतीत होते हैं.. बस आप इस बात पर ध्यान दें कि छायाएं आपके विषय पर कैसी दिखती हैं और वे पूरी तस्वीर में कैसे फिट बैठती हैं. उज्ज्वल और अंधेरे क्षेत्रों में तस्वीरें लेने का प्रयास करें, लेकिन सुनिश्चित करें कि आप सभी छोटे विवरण देख सकें. आप लोगों को अपनी तस्वीर में मुख्य सब्जेक्ट दिखाने, महत्वपूर्ण विवरण दिखाने या लोगों को एक निश्चित तरीके से महसूस कराने के लिए प्रकाश का उपयोग कर सकते हैं.

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में कुरुक्षेत्र ब्रह्मसरोवर में मंदिर की फोटो.

दोनों तस्वीरों में आप अंतर देख सकते हैं. परछाईं के साथ और बिना परछाईं के भी.

अभ्यास करें और सीखें - इसमें कोई दो राय नहीं कि फोटो पत्रकारिता में लाइट के उपयोग में महारत हासिल करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है. विभिन्न प्रकाश स्थितियों, कोणों और विषयों के साथ प्रयोग करें. इसके अलावा मास्टर फोटो पत्रकारों के काम का अध्ययन करें.

सारांश ; फोटोग्राफी में प्रकाश का अत्यधिक महत्व होता है, क्योंकि यह किसी भी तस्वीर के मूड और प्रभाव को बदल सकता है. चारों दिशाओं से आने वाली रोशनी से विषय की गुणवत्ता में अंतर आता है. विभिन्न कोणों से आने वाली रोशनी से क्योंकि ये छाया और हाइलाइट्स के माध्यम से तस्वीरें अलग दिखती है. इसके अलावा, लाइट की गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण होती है, जो यह निर्धारित करती है कि तस्वीर में छवि कितनी स्पष्ट और जीवंत दिखाई देगी. प्रकाश के विभिन्न प्रकार और उनके प्रभाव को समझना एक सफल और प्रभावशाली फोटोग्राफर बनने के लिए आवश्यक है.

19.कम रोशनी में फोटोग्राफी करने के तरीके

एफ/8, 1/125 सेकंड और 4000 आई एस ओ पर वाइड-एंगल लेंस से कैद किया गया ऋषिकेश का त्र्यंबकेश्वर मंदिर. देखिये कि *लक्षमण झूले और मंदिर की मध्यम रोशनी का* कितनी *खूबसूरती से उपयोग किया गया है.*

कम रोशनी की स्थिति में फोटो जर्नलिस्ट के रूप में काम करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन सही तकनीकों और उपकरणों के साथ, आप सम्मोहक और सार्थक तस्वीरें खींच सकते हैं. कम रोशनी में प्रभावी ढंग से काम करने में आपकी मदद के लिए यहां कुछ युक्तियां दी गई हैं:

फ़ास्ट लेंस का उपयोग करें - बड़े अपर्चर वाला लेंस (उदाहरण के लिए, f/1.4 या f/2.8) अधिक रोशनी को कैमरे में प्रवेश करने की अनुमति देता है, जो कम रोशनी की स्थिति में महत्वपूर्ण है. तेज़ लेंस कम रोशनी वाले वातावरण में छवियों को कैप्चर करने के लिए आदर्श होते हैं.

आईएसओ बढ़ाएँ - जब मजबूरी हो जाए तब अपने कैमरे की आईएसओ सेटिंग बढ़ाएं. इससे सेंसर, प्रकाश के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है. हालाँकि, उच्च आईएसओ मान तस्वीरों में ग्रेन ला सकते हैं, इसलिए आईएसओ और छवि गुणवत्ता के बीच एक बैलेंस बनाने का प्रयास करें.

ट्राइपॉड - जब लाइट का स्तर कम होता है, तो शटर स्पीड सामान्य से ज़्यादा हो जाती है, भले ही फोटोग्राफर कैमरा में वाइड अपर्चर और हाई आईएसओ सेटिंग का उपयोग करें. जिस स्थान से आप फोटोग्राफी कर रहे हैं, वहां आप ट्राइपॉड का उपयोग कर सकते हैं. यदि आप ट्राइपॉड का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं तो कैमरे को किसी ठोस सतह पर या उसके सामने रखकर स्थिर रख दें. कैमरा के पट्टे को आप अपने नेक एरिया में लगाकर अपने हाथों से कैमरा को स्थिर रखने का प्रयास कर सकते हैं. कैमरा को अपने दोनों ओर रखें और कोहनियों को अपने शरीर की तरफ दबा लें. इससे कैमरे को स्थिर रखने में मदद मिलेगी.

इमेज स्टेबिलाइजेशन का उपयोग करें - कई आधुनिक लेंस और कैमरे इमेज स्टेबिलाइजेशन तकनीक के साथ आते हैं, जिससे कैमरा शेक को कम करने में मदद मिलती है और लंबे समय तक हाथ में एक्सपोज़र मिल सकता है. चुनौतीपूर्ण प्रकाश स्थितियों में शूटिंग करते समय यह विशेष रूप से उपयोगी होता है.

RAW में शूट करें - RAW प्रारूप में छवियों को कैप्चर करने से आपको पोस्ट-प्रोसेसिंग में अधिक लचीलापन मिलता है, जिससे आप एक्सपोज़र और नॉइज़ को अधिक प्रभावी ढंग से ठीक कर सकते हैं.

अपने शॉट्स को ब्रैकेट करें - अलग-अलग एक्सपोज़र पर कई शॉट लेने और उन्हें पोस्ट-प्रोसेसिंग (एचडीआर या फ़ोटोशॉप एक्सपोज़र ब्लेंडिंग) में मिश्रित करने से अत्यधिक कम रोशनी वाली स्थितियों में अधिक विवरण कैप्चर करने में मदद मिल सकती है. जब फोटोग्राफर अपने कैमरे की सीमाओं से आगे बढ़कर तस्वीरें खींचना चाहते हैं, तो वे छवियों की पूरी गतिशील श्रेणी को कैप्चर करने के लिए HDR फ़ोटो तकनीक का उपयोग करते हैं. अलग-अलग एक्सपोज़र को मिलाकर, आप हर पिक्सेल का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं ताकि छवियाँ मानव-आँख द्वारा देखी

जाने वाली वास्तविकता के और करीब लगें. कई फोटोग्राफर रात के समय फोटोग्राफी करते हुए HDR फ़ोटो तकनीक का उपयोग करते हैं.

वाइड-एंगल लेंस पर विचार करें - वाइड-एंगल लेंस से अक्सर कैमरे में अधिक रोशनी आती है जिससे कम रोशनी में फोटोग्राफ क्लिक की जा सकती है. प्रकाश स्रोत सीमित होने पर यह एंगल व्यापक दृश्य कैप्चर करने में भी मदद करता है.

उपलब्ध रोशनी का उपयोग - पहले से मौजूद रोशनी का उपयोग करें. जब अंधेरा हो, तो आप अपनी तस्वीरों को अच्छा दिखाने के लिए स्ट्रीट लाइट, मोमबत्तियाँ, या चंद्रमा से आने वाली रोशनी जैसी चीज़ों का उपयोग कर सकते हैं. अपने चित्रों को और प्रभावशाली तथा आकर्षक बनाने के लिए प्रकाश के विभिन्न तरीकों का प्रयोग करें. कभी-कभी, जब आप इनडोर फोटोग्राफी करते हैं, तो अंधेरा हो सकता है. ऐसे में फ़्लैश उपयोग कर सकते हैं. इससे तस्वीरें और रंग भी अलग दिख सकते हैं. लेकिन , बेफिक्र रहें क्योंकि डी एस एल आर में हाई आई एस ओ और बड़ा अपर्चर जैसे कुछ विशेष टूल्स हैं जिनका उपयोग करते हुए बहुत अधिक लाइट न होने पर भी आप स्पष्ट फोटो क्लिक कर सकते हैं.

अपर्चर सेटिंग के साथ तस्वीर क्लिक करें - कम रोशनी में शूटिंग करना कुछ चुनौतियों के कारण निराशाजनक हो सकता है. थोड़ी सी हिम्मत रख कर, समय लगा कर, उचित सेटिंग्स के साथ कोशिश करें. कैमरा की सेटिंग को अपर्चर पर रख कर तस्वीरें लें. इनडोर पोर्ट्रेट में अपेक्षाकृत विस्तृत अपर्चर को सेट करें. लगभग f/5.6 का अपर्चर भरपूर रोशनी देगा. इसमें शटर स्पीड पर भी ध्यान देना होता है. यदि आप चलते हुए अपने विषय को शूट करते हैं, तो इसे सेकंड के 1/60 वें हिस्से या उससे अधिक के आसपास रखें.

वाइट बैलेंस - लो लाइट में काम करते हुए वाइट बैलेंस का भी ध्यान रखना होता है. यहाँ उपलब्ध लाइट के स्रोत को देखते हुए व्हाइट बैलेंस सेटिंग करनी होगी.

पोस्ट-प्रोसेसिंग: पोस्ट-प्रोडक्शन में, अपनी छवियों को बेहतर बनाने, एक्सपोज़र, नॉइज़ में कमी और आवश्यकतानुसार कलर बैलेंस को समायोजित (Well Adjust) करने के लिए एडोब लाइटरूम या फ़ोटोशॉप जैसे सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें.

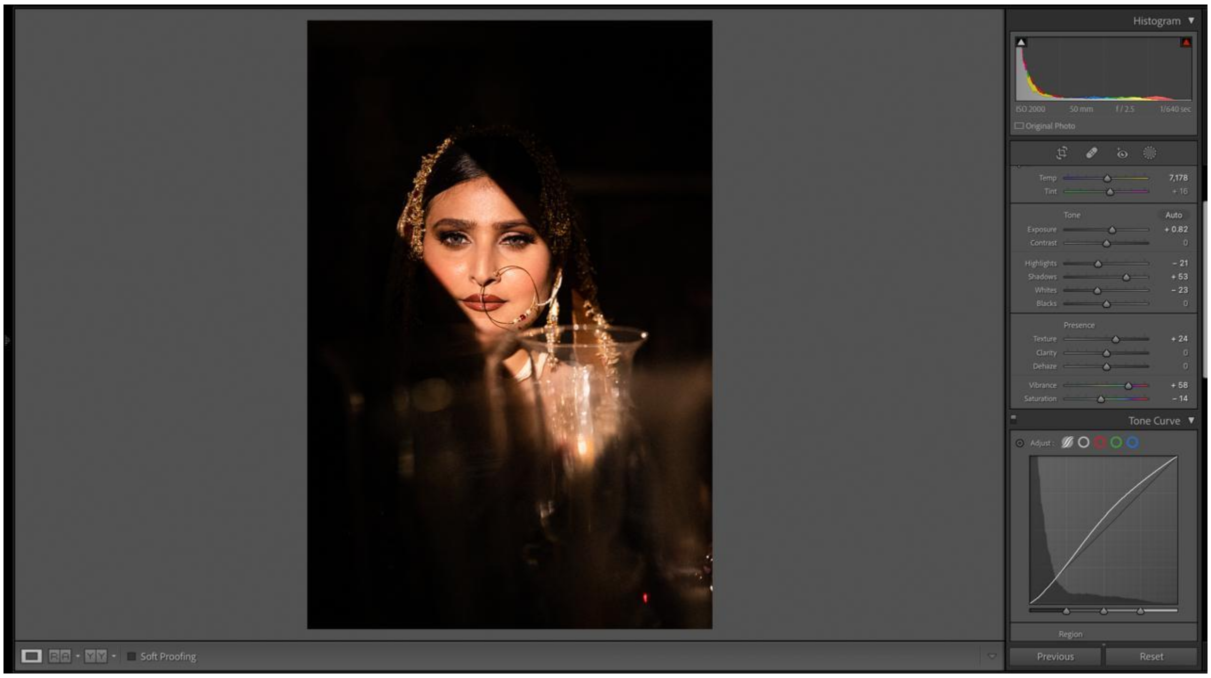

ऐसी तकनीकों और उपकरणों का उपयोग करके आप कम रोशनी में भी प्रभावशाली तस्वीरें ले सकते हैं. सही अभ्यास और धैर्य के साथ, कम रोशनी की चुनौतियों को अवसर में बदलकर आप अपनी फोटोग्राफी को एक नए स्तर पर ले जा सकते हैं.

20. श्री पॉइंट लाइटिंग और फोटो पत्रकारिता pls adjust photo

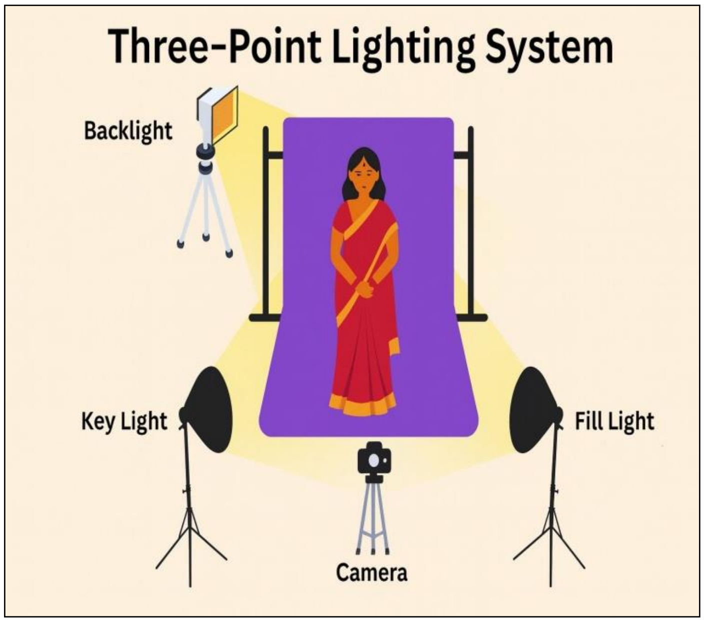

फोटो पत्रकरिता में श्री पॉइंट लाइटिंग का उपयोग नहीं होता, परन्तु फोटोग्राफी और सिनेमैटोग्राफी में श्री-पॉइंट लाइटिंग एक मौलिक और आवश्यक तकनीक है. यह न केवल फोटो पत्रकारों के लिए बल्कि सभी दृश्य कथाकारों के लिए महत्वपूर्ण है. इस तकनीक में किसी विषय/ सब्जेक्ट को रोशन करने के लिए तीन प्राथमिक प्रकाश स्रोतों का उपयोग शामिल है, जो शैडो और हाइलाइट्स पर गहराई, आयाम और नियंत्रण प्रदान करता है. यह कई कारणों से फोटो पत्रकारों के लिए महत्वपूर्ण है.

1. सब्जेक्ट की स्पष्टता - फोटोग्राफी में श्री पॉइंट लाइटनिंग तकनीक का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि आप जिस सब्जेक्ट की तस्वीर ले रहे हैं वह रोशन और स्पष्ट हो. समाचारों के लिए तस्वीरें लेने के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि आप उस क्षण को कैद करना और दिखाना चाहते हैं जहां वास्तव में घटना हो रही है.

2. आयाम और गहराई - किसी चित्र पर अलग-अलग दिशाओं से रोशन करने से, यह उसे और वास्तविक बनाता है और ऐसा लगता है मानो वह पृष्ठ से बाहर आ रहा हो. यह तस्वीर को अधिक रोचक बनाता है और यह दिखाने में मदद करता है कि फोटो में क्या हो रहा है. पत्रकारिता के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक तस्वीर को अधिक रोमांचक बना सकता है और एक कहानी बताने में मदद कर सकता है.

3. हाइलाइट नियंत्रण: - तीन-बिंदु प्रकाश फोटोग्राफरों को यह नियंत्रित करने में मदद करता है कि तस्वीर के विभिन्न हिस्से कितने प्रकाशित या गहरे दिखेंगे. यह वास्तव में उन लोगों के लिए उपयोगी है जो समाचारों के लिए तस्वीरें लेते हैं क्योंकि इससे उन्हें महत्वपूर्ण चीजें स्पष्ट रूप से दिखाने में मदद मिलती है और यह सुनिश्चित होता है कि कोई ध्यान भटकाने वाली छाया न हो.

4. भविष्य में मददगार - इसके अलावा अगर फोटो पत्रकार अपने जीवन में कभी भी स्टूडियो सेट अप करना चाहे तो इस तकनीक की समझ बेहद उपयोगी सिद्ध होगी.

थ्री पॉइंट लाइटनिंग तकनीक की अवधारणा में तीन प्राथमिक प्रकाश स्रोत शामिल हैं -

1. मुख्य प्रकाश - मुख्य प्रकाश रोशनी का प्राथमिक स्रोत है और आमतौर पर सबसे चमकीला होता है. यह सब्जेक्ट के एक तरफ स्थित होता है, और कैमरे के सामने वाले सब्जेक्ट के किनारे पर प्रकाश डालता है. इस key लाइट को सब्जेक्ट से 30 से 45 डिग्री एंगल पर रखा जाता है. मुख्य प्रकाश रोशनी का मुख्य स्रोत प्रदान करता है और छवि के समग्र मूड को निर्धारित करता है.

2. **फिल लाइट** - फिल लाइट को की (key)लाइट के विपरीत दिशा में स्थित किया जाता है और इसका उपयोग की (key) लाइट द्वारा बनाई गई छाया को भरने के लिए किया जाता है. यह लाइट सब्जेक्ट से 30 से 45 डिग्री एंगल पर निर्धारित की जाती है ,यह आमतौर पर मुख्य प्रकाश की तुलना में नरम और कम तीव्र होती है जो कंट्रास्ट को कम करने और अधिक समान रोशनी बनाने में मदद करता है. यह सुनिश्चित करता है कि महत्वपूर्ण विवरण छाया में न खो जाएँ. एक तस्वीर केवल फिल लाइट की है. मुख्य लाइट और फिल लाइट की तस्वीर आगे दी गयी है.

3. बैकलाइट (रिम लाइट) - बैकलाइट को सब्जेक्ट के पीछे स्थित किया जाता है. इसका उपयोग सब्जेक्ट को पृष्ठभूमि से अलग करने के लिए किया जाता है जो कि सब्जेक्ट से करीब 2 फीट की ऊंचाई पर होती है. यह लाइट सब्जेक्ट के किनारों के चारों ओर एक सूक्ष्म हाइलाइट बनाती है, जिससे वह अलग दिखता है और तस्वीर में गहराई जुड़ जाती है.

फोटोजर्नलिज्म में, यह भीड़-भाड़ वाले या अव्यवस्थित वातावरण में भी सब्जेक्ट को हाईलाइट करने में मदद कर सकता है. तीन बिंदु प्रकाश का समग्र परिणाम इन तस्वीरों में देखा जा सकता है.

सारांश ; फोटो पत्रकारिता में थ्री पॉइंट लाइटिंग तकनीक का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है . कठिन परिस्थितियों में अच्छी तस्वीरें लेने में मदद के लिए फोटो पत्रकार तीन-बिंदु प्रकाश व्यवस्था का उपयोग कर सकते हैं. यह तकनीक उन्हें प्रकाश को नियंत्रित करने, विषय को अधिक रोचक बनाने और सब्जेक्ट को स्पष्ट रूप से दिखाने में मदद करती है. यदि फोटो पत्रकार भविष्य में स्टूडियो सेटअप करना चाहें, तो इस तकनीक की समझ उन्हें और भी लाभ देगी.

21. लेंस के प्रकार एवं उपयोगिता

"लेंस एक संगीतज्ञ के वाद्य यंत्र की तरह होता है और फोटोग्राफर एक संगीतकार. ऐसे सही लेंस का चुनाव करना आवश्यक है जो दर्शकों की दृश्य सजगता को उद्वेलित कर सके"- स्टीव मैक्करी

यह कथन स्पष्ट रूप से लेंस की उपयोगिता को समझाता है. कैमरे का बेहद महत्वपूर्ण अंग है लेंस. इसकी गुणवत्ता कैमरे की गुणवत्ता से भी अधिक महत्वपूर्ण होती है. कैमरा कभी अच्छे फोटोग्राफ नहीं ले सकता अगर उसका लेंस घटिया किस्म का हो. लेकिन अगर अच्छे किस्म का लेंस साधारण डीएसएलआर कैमरे के साथ प्रयुक्त किया जाए तो भी बेहतरीन परिणाम मिल सकते हैं. एक लेंस फिल्म प्लेन/ सेंसर प्लेन पर लाइट फोकस करने के अलावा और भी बहुत कुछ करता है.

अमेरिकन फोटो पत्रकार जेम्स नचटवे अक्सर कहते हैं कि "कैमरे का लेंस मेरा पेंटब्रश है, और दुनिया मेरा कैनवस है. सही लेंस चुनना उस छवि के लिए सही ब्रशस्ट्रोक चुनने जैसा है जिसे मैं बनाना चाहता हूं."

तस्वीरें लेने के लिए सही लेंस होने से बड़ा अंतर आ सकता है. यह हमें वास्तव में अच्छी और सार्थक तस्वीरें लेने में मदद कर सकता है. विभिन्न प्रकार के चित्रों के लिए विभिन्न प्रकार के लेंस की आवश्यकता होती है. प्रत्येक लेंस हमें उसी चीज़ के लिए एक अलग रूप देता है जिसका हम चित्र ले रहे हैं, जैसे कि वह कितना करीब या दूर दिखता है या पृष्ठभूमि कितनी धुंधली है.

लेंस की आवश्यकता - कैमरे में लेंस ही वह हिस्सा है जो कैमरे के भीतर आ रहे प्रकाश को दिशा देता है. वो लेंस ही है जो बाहर की लाइट को फ़ोकस कर इमेज सेन्सर पर केंद्रित करता है जिससे तस्वीर स्पष्ट बनती है.

ज़रा कल्पना कीजिए अगर लेंस ना हो कैमरे में तो क्या परिणाम होंगे ? कैसे छवि बनेगी कैमरे में ?

एक कैमरा बॉडी से लेंस निकालने पर तस्वीर लेने का प्रयास करें. कुछ कैमरा में तो लेंस असेंबली हटा देने पर शटर रिलीज़ बटन ही नहीं दबेगा और फोटो ही नहीं क्लिक होगी. अगर लेंस हटाने के बाद शटर रिलीज़ बटन दबाने पर शीशा ऊपर उठता है , प्रकाश कैमरा बॉडी में प्रवेश करता है और सेन्सर पर हिट करता है तो फोटो एकदम धुंधली आएगी क्योंकि इस समय कोई ग्लास असेंबली नहीं है जो प्रकाश को दिशा देकर किरणों को फ़ोकस करे. इसका अर्थ है कि बिना लेंस हम कैमरे में प्रवेश कर रही प्रकाश की किरणों को नियंत्रित नहीं कर सकते और उसके बिना फोटो स्पष्ट नहीं आ सकती.

लेंस कैसे लगाएं ? - लेंस को माउंट या डिसमाउंट करने करने से पहले, सुनिश्चित करें कि कैमरे की पावर "ऑफ" है. लेंस को माउंट करने के लिए, लेंस और कैमरा बॉडी पर माउंटिंग इंडेक्स डॉट्स का मिलान करें, लेंस के बेस को

माउंट में डालें और फिर लेंस को घुमाएं जब तक कि यह अपनी जगह पर लॉक न हो जाए. लेंस किस डायरेक्शन में घूमेगा ये मॉडल पर निर्भर करेगा, अतः मैन्युअल देखें.

बॉडी पर लेंस रिलीज बटन को दबाने और लेंस को जिस दिशा में घुमा कर लगाया था उससे उलट दिशा में लगभग एक चौथाई घुमाने से लेंस हट जाएगा.

किसी लेंस को समझने के लिए हमें यह भी जानना होगा कि वह कैसे बना है.

लेंस की संरचना – उच्च गुणवत्ता वाले ग्लास से तैयार किए गए लेंस तत्वों की संरचना, ऑप्टिकल प्रदर्शन सुनिश्चित करती है. उत्तम किस्म का कांच विकृतियों को कम करता है, हर फ्रेम में स्पष्टता सुनिश्चित करता है. लेंस बनाने में प्लास्टिक के कुछ संघटकों जैसे एक्रिलिक का भी उपयोग किया जाता है जिसे प्लेक्सी ग्लास कहते हैं. प्लास्टिक से लेंस के घटक मज़बूत बनाने में मदद मिलती है जो कि काँच के लचीले न होने के कारण सम्भव नहीं

हो पाता. सामान्यतया ऐसा लोग सोचते हैं कि प्लास्टिक के संघटक लेंस में प्रयुक्त हुए हैं तो लेंस घटिया गुणवत्ता का होगा. परंतु ऐसा नहीं है. कई आधुनिक उच्च गुणवत्ता और महंगे लेंस निर्माता अपने लेंस में दोनों ही प्रकार की सामग्री का मिश्रण करते हैं.

लेंस के प्रकार - कैमरे में उत्तल और अवतल दोनों प्रकार के लेंस का उपयोग किया जाता है. ये लेंस कांच के बने होते हैं और ये विभिन्न तरीकों से प्रकाश को मोड़ते हैं. लेंस के प्रत्येक भाग का एक अलग काम होता है, और वे सभी एक स्पष्ट तस्वीर बनाने के लिए एक साथ काम करते हैं. कभी-कभी, यदि एक लेंस केवल एक ही प्रकार के लेंस तत्व से बनाया गया है, तो तस्वीर खराब हो सकती है क्योंकि प्रकाश के विभिन्न रंग सही ढंग से पंक्तिबद्ध नहीं होते हैं. इसे ठीक करने के लिए, कैमरा लेंस में विभिन्न लेंस तत्वों का मिश्रण होता है. ज़ूम लेंस में, वे उत्तल और अवतल लेंस के मिश्रण का उपयोग करते हैं.

लेंस के भाग व फ़ोटो -

लेंस से लाइट नियंत्रित करने का तरीका - शटर एवं अपर्चर के माध्यम से प्रकाश की मात्रा और समय को नियंत्रित कर सकते हैं . अपर्चर, लेंस के माध्यम से कैमरे में प्रविष्ट कर रही प्रकाश की किरणों को कन्ट्रोल करता है . कैमरे में अपर्चर, लेंस का छिद्र है जिसे कम या ज़्यादा खोला जा सकता है. इसका काम बाहर से प्रकाश को कैमरे में आने देना है. एक फोटोग्राफर अपर्चर को इस आधार पर समायोजित कर सकता है कि वह कितनी रोशनी कैप्चर करना चाहता है. यदि वे कम रोशनी चाहते हैं, तो वे अपर्चर संख्या बढ़ा देते हैं, जिससे छिद्र छोटा हो जाता है. यदि वे अधिक रोशनी

चाहते हैं, तो वे अपर्चर संख्या कम कर देते हैं, जिससे छिद्र बड़ा हो जाता है. वे अपनी आवश्यकता के आधार पर इसे बदल सकते हैं.

कैमरे के अंदर छवि को रिकॉर्ड करने के लिए सेंसर कितनी देर तक लाइट सेंसर पर पड़ेगी यह एक्सपोज़र का समय शटर गति से निर्धारित होता है. कैमरा बॉडी का शटर कुछ तात्कालिक समय के लिए खुलता है, जिससे लाइट कैमरे के अंदर आती है, और इमेज लाइट की सहायता से कैमरे के सेंसर पर छप जाती है. शटर के खुलकर बंद होने के इस समय को ही शटर स्पीड कहते हैं . कैमरे में प्रsकाश डालने के लिए अपर्चर और शटर स्पीड एक साथ काम करते हैं. अपर्चर उस छिद्र के आकार को नियंत्रित करता है जिसके माध्यम से प्रकाश गुज़रता है, जबकि शटर गति यह निर्धारित करती है कि सेंसर उस प्रकाश के संपर्क में कितनी देर तक रहेगा.

अपर्चर डेप्थ ऑफ़ फील्ड भी नियंत्रित करता है. डेप्थ ऑफ फील्ड क्या है? हमारे सब्जेक्ट के आगे और पीछे का जितना भाग फोकस में रहता है उसे डेप्थ ऑफ फील्ड कहतें हैं. (विस्तृत विवरण अपर्चर प्रायोरिटी मोड के अध्याय में)

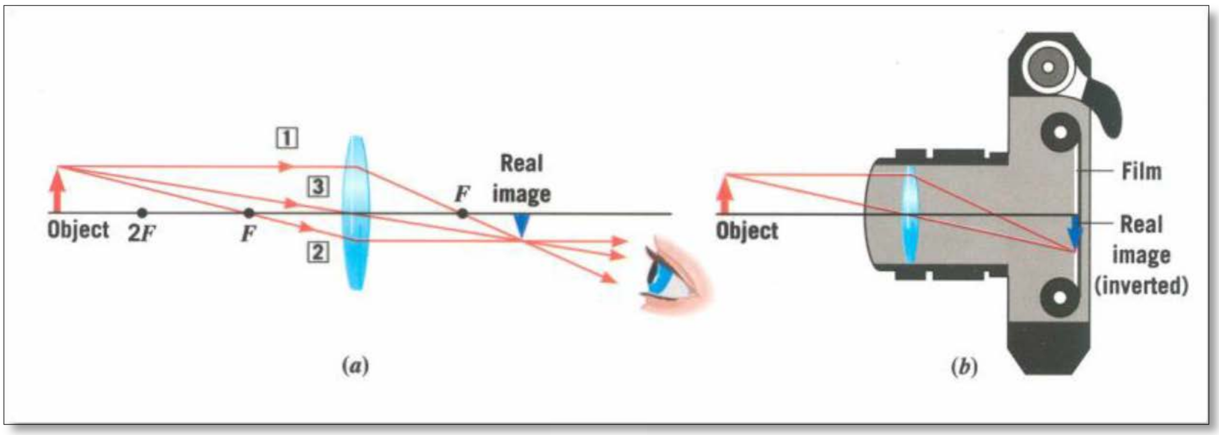

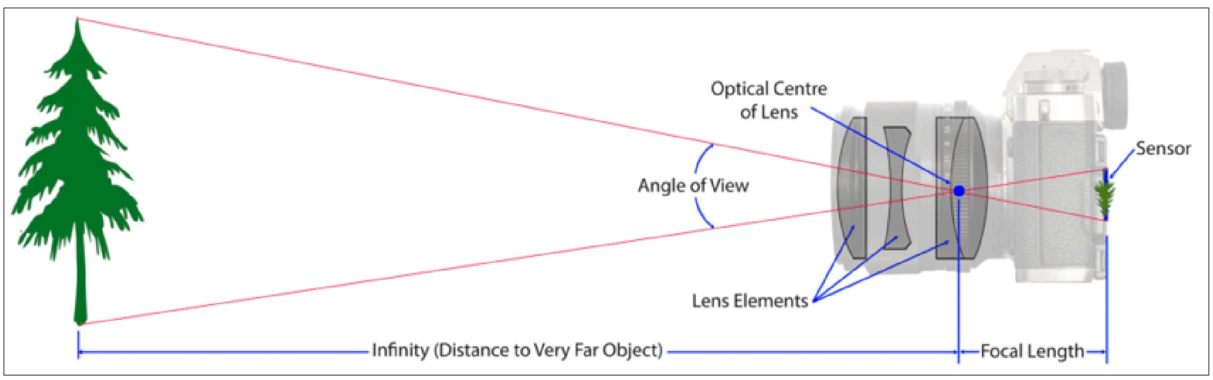

लेंस के प्रकार - अक्सर यह सवाल पूछा जाता है कि प्राइम लेंस कौन से होते हैं और ज़ूम लेंस कौन से. लेकिन उससे पहले यह जानना ज़रूरी है कि फ़ोकल लेंथ किसे कहते है और ऐंगल ऑफ़ व्यू क्या होता है. लेंस ही वह एकमात्र उपकरण है जिससे एक निश्चित फोकल बिंदु पर प्रकाश की किरणें फोकस होतीं हैं तो फोटो का निर्माण होता है. लेंस

से होकर प्रकाश किरणें जिस बिंदु पर केंद्रित होती हैं वहां से कैमरा सेंसर की दूरी को फोकल लेंथ कहते हैं जिसे मिली मीटर में नापा जाता है.

फोकल लेंथ – लेंस फोकल लेंथ, जिसे आमतौर पर मिलीमीटर (मि मी) में दर्शाया जाता है, एक फोटोग्राफिक लेंस का मूल विवरण है.

यह लेंस की वास्तविक लंबाई नहीं है, बल्कि उस बिंदु से एक ऑप्टिकल दूरी की गणना है जहां प्रकाश किरणें किसी वस्तु की स्पष्ट छवि डिजिटल सेंसर या 35 मिमी फिल्म कैमरे के फोकल प्लेन पर बनाती हैं.

लेंस की फोकल लंबाई तब निर्धारित की जाती है जब लेंस अनंत पर केंद्रित होता है. ऑप्टिकल सेंटर और फ़ोकस के बीच की दूरी को फ़ोकल लेंथ कहते हैं. ऑप्टिकल सेंटर लेंस के मध्य में वह बिंदु है जिनसे प्रकाश की किरणें अपना रास्ता बदले बिना गुज़रती हैं और एक जगह पर जड़ित होकर फिल्म सेंसर पर इमेज बनाती हैं. एंगल ऑफ़ व्यू (angle of view) फोकल लंबाई आपके देखने के कोण को प्रभावित करती है. देखने का कोण यह निर्धारित करता है कि आपका कैमरा लेंस कितना एंगल ऑफ़ व्यू कैप्चर कर सकता है और सब्जेक्ट कितना दिखाई देगा. मैग्निफिकेशन के संदर्भ में, फोकल लंबाई आपके देखने के कोण को प्रभावित करती है .

फील्ड ऑफ़ व्यू – फील्ड ऑफ़ व्यू किसे कहते है ? एक बार में हम जितना देख सकते हैं उसे फील्ड ऑफ़ व्यू कहते हैं . इसी तरह से हर लेंस का भी एक फ़ील्ड ऑफ़ व्यू होता है. लेंस की फोकल लंबाई हमें एंगल ऑफ़ व्यू बताती है यानि कितना दृश्य कैप्चर किया जाएगा . फोकल लंबाई जितनी लंबी होगी, एंगल ऑफ़ व्यू उतना ही कम होगा और मैग्निफिकेशन उतना ही अधिक होगा. फोकल लंबाई जितनी कम होगी, एंगल ऑफ़ व्यू उतना ही चौड़ा होगा और मैग्निफिकेशन कम होगा.

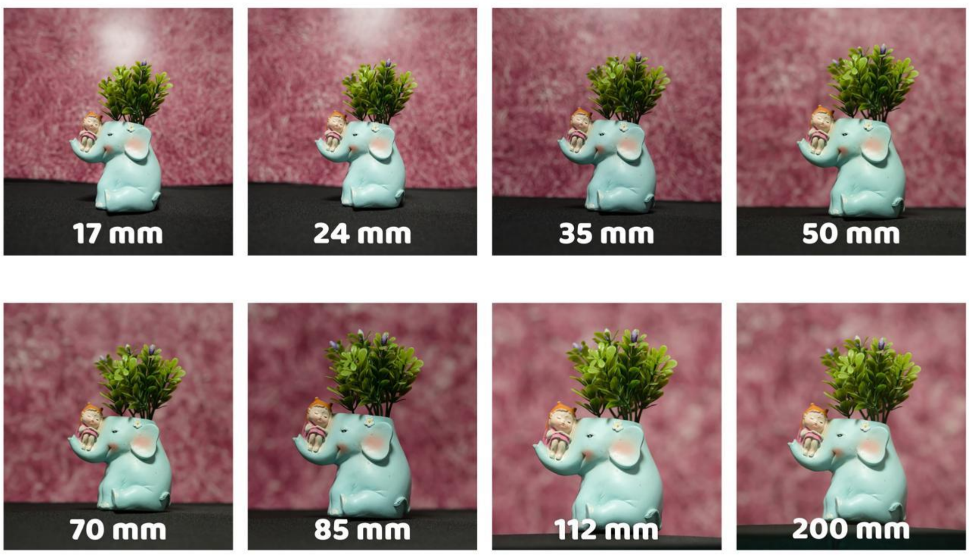

फील्ड ऑफ़ व्यू यानि एक लेंस से एक सीमा तक ही दृश्य को देख सकते हैं. आमतौर पर 50 मि मी के लेंस का फील्ड ऑफ़ व्यू उतना होता है जितना हम इंसान देख सकते हैं. अतः 50 मि मी को नोर्मल लेंस कहा जाता है. जैसे -जैसे लेंस की फ़ोकल लेंथ कम होती जाती है वैसे - वैसे उनका फील्ड ऑफ़ व्यू बढ़ता जाता है (जैसे 35 मि मी, 18 मि मी) इसलिए इन्हें वाइड ऐंगल लेंस कहते है. कुछ लेंस का फील्ड ऑफ़ व्यू इतना ज़्यादा होता है कि वह क़रीब 180 °,तक देख सकते है. इन्हें फ़िश आई लेंस कहते हैं. इसी तरह जिस लेंस की फ़ोकल लेंथ 50 मि मी से ज़्यादा होती है उनका फ़ील्ड ऑफ़ व्यू छोटा होता जाता है, जैसे 85 मि मी, 200 मि मी, 300 मि मी . इन लेंस का फील्ड ऑफ़ व्यू छोटा होता जाता है. इन लेंस से दूर का सब्जेक्ट बिलकुल नज़दीक दिखायी देता है.

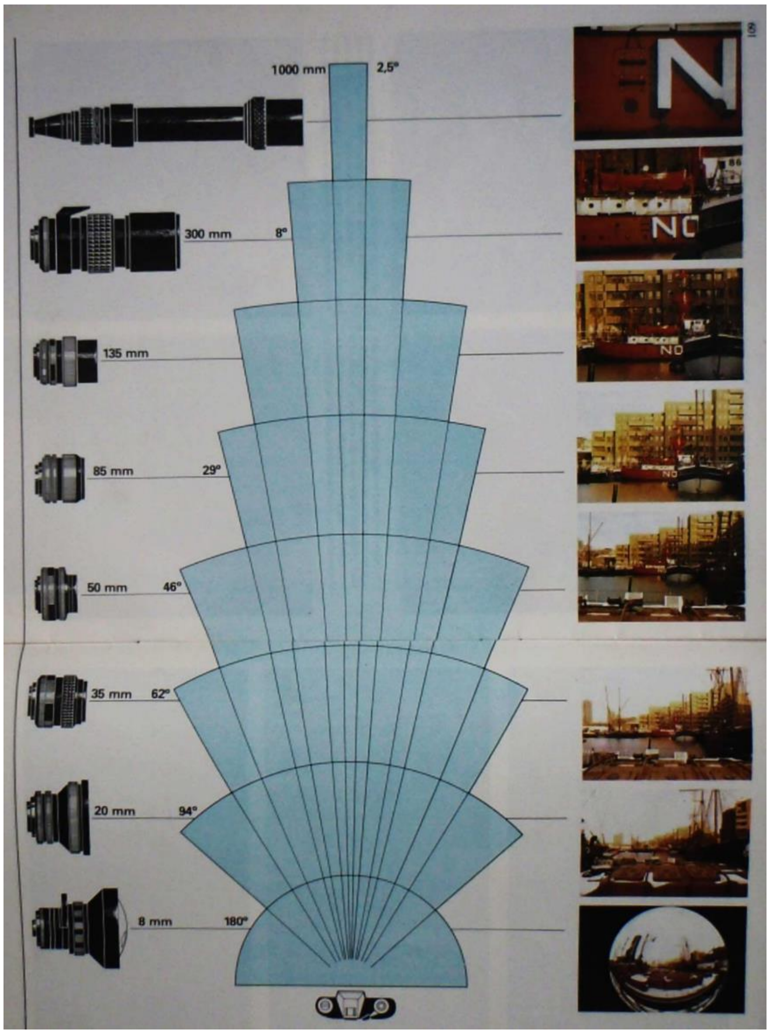

फ़ोकल लेंथ एवं फील्ड ऑफ़ व्यू छवि साभार - पिनटेरेस्ट

हर तरह का लेंस हर तरह की परिस्थिति के प्रति अनुकूल नहीं होता. उनकी क्षमताओं और सीमाओं को जानकर हम उनका बेहतर उपयोग कर पाएंगे.

लेंस के प्रकार -

प्राइम लेंस या फ़िक्स्ड लेंस–

जिम कॉर्बेट टाइगर रिजर्व के गेरल रेंज में, जंगल का शर्मीला राजा भीम, लेंस के उस पार अपनी दुनिया दिखाता. टेलीफ़ोटो प्राइम लेंस AF-S Nikkor 300mm, से f/4, 1/320 और 200 आई एस ओ पर अजय सूरी द्वारा ली गयी फोटो.

प्राइम लेंस की फ़ोकल लेंथ फ़िक्स/निश्चित रहती है. इसे ज़ूम नहीं कर सकते. प्राइम लेंस के बारे में कहा जाता है कि फ़ोटोग्राफ़र के पैर ही उनका ज़ूम है. उदाहरण के लिए अगर फ़ोटोग्राफ़र के पास 50 मि मी, 200 मि मी का प्राइम लेंस है तो उसे उसी ही फ़ोकल लेंथ पर फ़ोटो लेना पड़ेगा और ज़ूम करने के लिए स्वयं ही आगे पीछे होना होगा. प्राइम लेंस अपनी कुछ खूबियों के कारण फोटोग्राफर का पंसदीदा लेंस है. चूँकि प्राइम लेंस को इस्तेमाल करना आसान है इस कारण फोटो-पत्रकार इस लेंस का बखूबी इस्तेमाल करते हैं. जैसे 50 मिमी का लेंस कई फोटो-पत्रकार इस्तेमाल बेहतर फोटो क्वालिटी पाने के लिए करते हैं. प्राइम लेंस में बड़े अपर्चर होते हैं. प्राइम लेंस कई प्रकार की फोटोग्राफी में उपयोग किये जाते हैं. ये फ़ास्ट लेंस माने जाते हैं. जैसे - 24 मिमी/ 24 मिमी प्राइम स्ट्रीट फोटोग्राफी के लिए उपयुक्त है. 50 मिमी / 85 मिमी प्राइम पोर्ट्रेट फोटोग्राफी में इस्तेमाल होता है. 200 मिमी /500 मिमी वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी के लिए बेहतरीन लेंस है.

कनाडा की स्वतंत्र स्पोर्ट्स फोटोग्राफर मिशेल ग्रेनियर प्राइम लेंस के सन्दर्भ में बतातीं हैं कि “फोटोग्राफी शुरू करते समय, मेरे पास पैसे नहीं थे… लेकिन मुझे इसका लाभ ही हुआ मैंने गियर बेहद सावधानी से चुना क्योंकि मेरा ज्यादा बजट नहीं था. मुझे किफायती और मेरी आवश्यकता अनुसार लेंस चाहिए था. करियर के शुरू में ही समझ लिया था कि स्पोर्ट्स फोटोग्राफी के लिए तेज़ शटर गति और वाइड अपर्चर के लेंस की आवश्यकता होती है ऐसे में मेरे पास दो विकल्प थे एक f/2.8 और दूसरा f/1.8 अपर्चर वाले लेंस का. “

बकौल मिशेल “ मुझे एक बेहद लोकप्रिय, बहुपयोगी और किफ़ायती लेंस के बारे में पता चला, जिसे बहुत सारे फोटोग्राफर अपनी किट में रखते थे. यह लेंस था निफ्टी - फ़िफ्टी: एक 50mm f/1.8. . प्राइम लेंस निक्कोर 50mm f/1.8 मेरे शुरुआती करियर का सबसे अच्छा निवेश साबित हुआ. लगातार दो साल, मैंने 80% स्पोर्ट्स शॉट्स इसी लेंस से लिए और इससे मुझे सौ गुना फायदा हुआ.“ वह कहती हैं कि ‘ मैंने वास्तव में इस लेंस के साथ कुछ बहुत अच्छी तस्वीरें लीं - उनमें से कुछ आज भी मेरी पसंदीदा हैं’ (photofocus.com वेबसाइट से साभार)

प्राइम लेंस के लाभ -

शार्प फोटो - चूँकि इसमें कम लेंस एलिमेंट्स होते हैं, इसलिए वे अन्य फोटोग्राफिक लेंस की तुलना में शार्प फोटो देते हैं.

हल्का वज़न – प्राइम लेंस हल्के वज़न के होते हैं, इसलिए इनके साथ यात्रा करना आसान होता है.

अँधेरे में भी उपयोगी - अपर्चर वैल्यू अधिक होने के कारण ये अँधेरे में भी अच्छी फोटो लेने में सक्षम होते हैं .

प्राइम लेंस की सीमाएँ -

निश्चित फोकल लेंथ - इससे चीज़ों को दूर या पास से देखना कठिन हो जाता है, क्योंकि आप चीज़ों को बड़ा या छोटा नहीं दिखा सकते. किसी बड़े क्षेत्र में हर चीज़ की तस्वीरें लेना या केवल एक छोटी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना भी मुश्किल हो सकता है.

एक प्राइम लेंस ऐसा कर सकता है कि आपको जिसकी तस्वीर ले रहे हैं उसके करीब या दूर खड़ा होना पड़ेगा. कभी-कभी यह संभव नहीं है या आप जो चाहते हैं वह संभव नहीं है. इसका मतलब यह भी हो सकता है कि आपको अपने साथ एक से अधिक लेंस लाने होंगे, जो अधिक महंगे और भारी हो सकते हैं.

ज़ूम लेंस –

ज़ूम लेंस, फोटोग्राफर को एक ही लेंस में विभिन्न फोकल लेंथ की उपयोगी रेंज देता है जबकि प्राइम लेंस केवल एक फोकल लेंथ प्रदान करता है. वे इस प्रकार के लेंस हैं, जो फोटोग्राफर की जरूरतों के आधार पर ‘‘ज़ूम‘‘ करने में सक्षम हैं. फोकल लेंथ सीधे कैमरे के देखने के कोण से संबंधित है. लेंस की फोकल लेंथ (मिमी) जितनी कम होती है, देखने का कोण उतना ही चौड़ा होता है. फोकल लेंथ जितनी बढ़ती जाती है, एंगल ऑफ़ व्यू उतना ही संकीर्ण होता जाता है.

फोकल लेंथ जितनी अधिक होगी उतना ही ज़ूम हमें मिलेगा और हमारा फील्ड ऑफ़ व्यू उतना ही छोटा होता जायेगा. हम कह सकते हैं कि ज़ूम लेंस वह लेंस होते हैं जिनमें आप बिना आगे पीछे हुए तरह - तरह के फोकल लेंथ पर फोटो

खींच सकते हैं . ज़ूम लेंस का लाभ यह होता है कि फोटोग्राफर को बार- बार लेंस बदलना नहीं पड़ता है और आप एक ही स्थान पर रहते हुए सभी प्रकार की फोटो खींच पाते हैं. विभिन्न प्रकार की फोटोग्राफी के लिए लिए अलग - अलग लेंस की जरूरत रहती है, इस लिए फोटो पत्रकार ज़ूम लेंस का उपयोग ज्यादा करते हैं .

स्टैण्डर्ड ज़ूम लेंस से जामा मस्जिद, दिल्ली में ईद के अवसर पर ली गयी तस्वीर. canon 18-55mm **लेंस** f /14, 1/250, **और आई एस ओ** 200 , **चित्र -निशांत उपाध्याय .**

ज़ूम लेंस के फायदे -

लेंस बदलने की जरूरत नहीं – बार- बार लेंस बदलने की जरूरत नहीं क्योंकि एक ही लेंस में अलग अलग फोकल लेंथ मौजूद है .

दूर की फोटो लेना आसान – ज़ूम लेंस की सबसे ख़ास बात यही है कि इससे एक ही स्थान पर खड़े रह कर भी फोटो क्लिक की जा सकती है. फोटोग्राफर को बार -बार स्थान बदलने की ज़रूरत नहीं है. स्पोर्ट्स और वाइड एंगल फोटोग्राफी में, जहाँ सब्जेक्ट के अधिक पास नहीं जा सकते वहां ज़ूम लेंस ही काम आते हैं.

बहुउद्देशीय हैं ज़ूम लेंस - ज़ूम लेंस कई तरह की फोटोग्राफी के लिए बेहतरीन हैं.

कई लेंस रखने की ज़रूरत नहीं - ज़ूम लेंस के होते हुए कई लेंस रखने की ज़रूरत नहीं क्योंकि अलग - अलग फोकल लम्बाई के होते हुए एक ही लेंस से काम हो जाता है. कई बार इसी एक ही लेंस से फोटो -पत्रकार का काम चल जाता है.

ज़ूम लेंस की सीमायें

शार्पनेस में कमी - पूरा करने पर शार्पनेस में कमी - जिससे कई बार फोटो की वांछित क्वालिटी नहीं आ पाती.

थोड़े भारी होते हैं - ज़ूम लेंस अपेक्षाकृत भारी होते हैं और उन्हें उपयोग करने के लिए कई बार ट्रायपॉड की आवश्यकता होती है .

छोटा अपर्चर - ज़ूम करने पर अधिकतर ज़ूम लेंस में अपर्चर कम हो जाता है जिससे फील्ड ऑफ़ व्यू कम हो जाता है.

वाइड एंगल लेंस -

Panasonic Leica DG Summilux 15mm f/1.7 ASPH. Lens

फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र में वाइड-एंगल लेंस अपरिहार्य हैं. ये लेंस फोटोग्राफरों को व्यापक दृश्यों को कैद करने में मदद करते हैं और शानदार फोटोग्राफ कैप्चर कर दर्शकों को एक्शन का अहसास करवा सकते हैं. वाइड-एंगल लेंस की फोकल लंबाई 35 मिमी या उससे कम होती है, जो आपको व्यापक दृश्य क्षेत्र प्रदान करती है. आपका दृश्य क्षेत्र जितना व्यापक होगा, आप फ्रेम में उतना ही अधिक दृश्य देख पाएंगे. ये लेंस कई परिदृश्यों के लिए श्रेष्ठ हैं और अधिकांश फोटोग्राफरों के किट में कम से कम एक भरोसेमंद वाइड-एंगल लेंस होता है.

वाइड-एंगल लेंस के लाभ

बड़ी तस्वीर कैप्चर करना - वाइड-एंगल लेंस की फोकल लंबाई 35 मिमी या उससे कम होती है. वाइड-एंगल लेंस उन लोगों के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण हैं जो महत्वपूर्ण घटनाओं और समाचारों की तस्वीरें लेते हैं. वे फ़ोटोग्राफ़रों को ऐसी तस्वीरें लेने में मदद करते हैं जो यह दिखाती हैं कि क्या हो रहा है, ताकि लोग महसूस कर सकें कि वे इस तस्वीर का हिस्सा हैं. ये लेंस नियमित लेंस की तुलना में बहुत अधिक देख सकते हैं, इसलिए आप अपनी तस्वीर में अधिक चीज़ें फिट कर सकते हैं. ये इसी कारण कई अलग-अलग स्थितियों में उपयोगी होते हैं. अधिकांश फोटोग्राफरों के बैग में एक ऐसा लेंस जरूर होता है.

AF Zoom-Nikkor 20-35mm f/2.8D वाइडएंगल लेंस द्वारा ली गयी लद्दाख की तस्वीर. 1/1250 शटर स्पीड, आई एस ओ 250, अपर्चर f/ 8.0 पर फोटो : अजय सूरी

कम रोशनी में उपयोगी - कई वाइड एंगल लेंस में चौड़े अपर्चर होते हैं, जिससे कम रोशनी में भी उपयोग लिया जा सकता है. यानी कि कम रोशनी वाले जगहों या शाम के समय घटनाओं को कवर करते समय फोटो पत्रकार इनलेंस पर भरोसा कर सकते हैं.

रचनात्मक फोटोग्राफ - वाइड-एंगल लेंस के कारण फोटोग्राफर किसी भी घटना के अग्रभूमि तत्वों (foreground elements) व बैकग्राउंड को स्पष्ट कैप्चर कर सकते हैं . इस से शॉट्स और भी अर्थपूर्ण हो जाते हैं.

फोटो पत्रकारिता में, वाइड-एंगल लेंस का उपयोग ऐसे किया जाता है :

व्यापक दृष्टिकोण - फोटो जर्नलिस्ट प्रदर्शनों, रैलियों और प्राकृतिक आपदाओं जैसी घटनाओं को विस्तृत रूप से कैप्चर करने के लिए वाइड-एंगल लेंस का उपयोग करते हैं. इस से दर्शकों को घटना का पूरा विवरण मिलता है.

बेहतर सन्दर्भ - वाइड-एंगल शॉट्स फोटो पत्रकारों को बेहतर संदर्भ प्रदान करते हैं. वे संदर्भगत वातावरण पर जोर देकर समाचार को गहन बनाने में मदद कर सकते हैं. इस से घटनाएं बेहतर तरीके से सामने आती हैं.

अशांत क्षेत्र - संघर्ष रिपोर्टिंग में, स्थिति की तीव्रता और अराजकता को पकड़ने के लिए भी वाइड-एंगल लेंस का उपयोग किया जा सकता है ताकि दर्शकों को युद्ध या संकट की वास्तविकताओं को समझने में मदद मिले.

डॉक्यूमेंट्री प्रोजेक्ट्स - लंबी अवधि के डॉक्यूमेंट्री प्रोजेक्ट्स पर काम करने वाले फोटो जर्नलिस्ट अक्सर समय और स्थान का विस्तार करने वाली दृश्य कथा बनाने के लिए वाइड-एंगल लेंस पर भरोसा करते हैं.

फोटो-पत्रकारिता में वाइड-एंगल लेंस के नुकसान

डिस्टॉरशन - **वाइड-एंगल लेंस चीजों को अजीब बना सकते हैं, खासकर तस्वीर के किनारों पर. इससे लोगों के चेहरे फैले हुए या वास्तव में बड़े दिख सकते हैं.**

सीमित पहुंच - वाइड-एंगल लेंस क्लोज़-अप या दूर की तस्वीरें लेने के लिए अच्छा काम नहीं करते.

फोटो पत्रकारिता में मैक्रो लेंस की ज़रूरत

फोटो पत्रकारिता करते हुए कब किस लेंस की ज़रूरत होगी यह निर्भर करता है कि क्या असाइनमेंट दी गयी है. कई बार फोटोजर्नलिज्म में मैक्रो लेंस का उपयोग कर बेहतरीन और शानदार शॉट्स को कैप्चर किया जा सकता है. मैक्रो लेंस में सबसे लोकप्रिय फोकल लंबाई 90 मिमी-100 मिमी है.

मैक्रो लेंस - एक विशेष प्रकार का लेंस है जो तस्वीरों में चीज़ों को बड़ा दिखा सकता है. यह वास्तव में उस चीज़ के करीब (12 इंच या उससे भी करीब) पहुंच सकता है, जिसकी आप तस्वीर ले रहे हैं. यह कीड़े-मकोड़ों, फूलों, गहनों या महीन वस्तुओं की छवि लेने के लिए बहुत अच्छा है. कुछ मैक्रो लेंस चीज़ों को उनकी असलियत से भी बड़ा दिखा सकते हैं. उदाहरण के लिए, यदि आप 2:1 मैक्रो लेंस का उपयोग करते हैं, तो चित्र उस चीज़ से दोगुना बड़ा होगा जिसका आप चित्र ले रहे हैं. लोग आमतौर पर लगभग 90 मिमी-100 मिमी लंबे मैक्रो लेंस का उपयोग करना पसंद करते हैं.

इन कारणों से मैक्रो लेंस का उपयोग किया जा सकता है :

1.विस्तृत शॉट्स - मैक्रो लेंस से बड़े अपर्चर के कारण किसी भी बड़े दृश्य के भीतर सूक्ष्म तत्वों की तस्वीरें ले सकते हैं इसलिए इसका उपयोग किसी भी न्यूज़ स्टोरी के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करने के लिए किया जा सकता है जैसे कि सड़क पर रहने वाले बच्चों की भावनाओं को करीब से व्यक्त करने के लिए.

2. वन्य जीवन कवरेज - फोटोजर्नलिस्ट अक्सर वन्य जीवन, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं कृषि संबंधी ख़बरों को प्रभावशाली व विश्वसनीय बनाने के लिए फोटो सब्जेक्ट के करीब जाकर लेने पड़ते हैं. ऐसे में मैक्रो लेंस से कीड़ों, फूल -पत्तियों या छोटे जीवों की क्लोज़-अप तस्वीरें लेने पर न्यूज़ /फीचर स्टोरी में जीवंतता आ जाती है.

3. उत्पाद फोटोग्राफी - वित्तीय पत्रकारिता (financial journalism) करते हुए फोटो पत्रकार उत्पादों या उद्योगों से संबंधित ख़बरों को कवर करते समय, उत्पाद की खूबसूरती, जटिल/महीन बनावट और शिल्प कौशल को दिखाने के लिए मैक्रो लेंस का उपयोग कर सकता है.

4.चिकित्सा और विज्ञान संबंधित ख़बरों - स्वास्थ्य देखभाल या विज्ञान से संबंधित फोटो-पत्रकारिता में मैक्रो लेंस चिकित्सीय प्रक्रियाओं, प्रयोगशाला उपकरणों और जटिल वैज्ञानिक विषयों के दस्तावेजीकरण में मैक्रो लेंस का बेहतरीन उपयोग कर सकते हैं.

5 फ़ूड फोटोग्राफी - मैक्रो लेंस भोजन की सजावट और खूबसूरती को कैप्चर करने के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं, जो पाक कला या रेस्तरां से संबंधित फोटो स्टोरीज़ में महत्वपूर्ण है. अक्सर फ़ूड फेस्टिवल या अन्य मेलों की शान दिखाने और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए फ़ूड फोटोग्राफी की जाती है.

6.सामाजिक मुद्दे - सामाजिक मुद्दों से संबंधित न्यूज़/ फीचर में मैक्रो लेंस का उपयोग उन भावनाओं और विवरणों पर जोर देने के लिए किया जा सकता है जो सामान्य शॉट्स में नज़रअंदाज हो जातें हैं, जिससे न्यूज़/ फीचर का मानवीय पक्ष उजागर होता है.

7.सांस्कृतिक कलाकृतियाँ - संस्कृति और इतिहास से जुड़ी कहानियों के लिए, मैक्रो लेंस का उपयोग कलाकृतियों, या पारंपरिक परिधानों के जटिल विवरणों को उभारने के लिए किया जा सकता है.

8. वैज्ञानिक चित्रण - विज्ञान से संबंधित पत्रकारिता में मैक्रो लेंस का उपयोग अनुसंधान निष्कर्षों, जैविक नमूनों और वैज्ञानिक प्रयोगों को विस्तार से दस्तावेजित करने के लिए किया जाता है.

मैक्रो लेंस के लाभ

अत्यधिक क्लोज़-अप - मैक्रो लेंस विशेष लेंस होते हैं जो चीज़ों की बहुत करीब से तस्वीरें ले सकते हैं. वे चीज़ों को चित्र में उनकी असलियत से कहीं ज़्यादा बड़ा दिखाते हैं. इससे हमें छोटे-छोटे विवरण देखने में मदद मिलती है जिन्हें हम आम तौर पर अपनी आंखों से नहीं देख पाते.

तीक्ष्णता और विवरण - मैक्रो लेंस विशेष लेंस होते हैं जो आपको बहुत स्पष्ट और विस्तृत चित्र लेने में मदद करते हैं. वे यह सुनिश्चित करते हैं कि आप अपनी तस्वीरों में छोटी से छोटी चीज़ भी बहुत स्पष्ट रूप से देख सकें.

बहुउपयोगी लेंस - मैक्रो लेंस करीब से तस्वीरें लेने के लिए बहुत उपयोगी होते हैं, लेकिन इनका उपयोग पोर्ट्रेट और सामान्य फोटोग्राफी की तस्वीरें लेने के लिए भी किया जा सकता है. यह उन्हें फोटोग्राफरों के लिए अपने कैमरा बैग में रखने के लिए वास्तव में उपयोगी बनाता है.

फोटोग्राफ में बोकेह - मैक्रो लेंस में बड़े अपर्चर पृष्ठभूमि को अस्पष्ट बनाते हैं और चित्र में मुख्य चीज़ वास्तव में उभर कर सामने आती है, जिससे फोटोग्राफ्स वास्तव में सुंदर और विशेष दिखते हैं.

फिशआई लेंस क्या हैं? यह एक विशेष प्रकार का लेंस है जिसे आम तौर पर 180 डिग्री के वाइड एंगल शूट करने के लिए डिज़ाइन किया गया है. इनलेंस को अल्ट्रा-वाइड या सुपर-वाइड लेंस के रूप में भी जाना जाता है. लेकिन इस लेंस डिज़ाइन से फोटोग्राफ में गोलाकार या अर्धगोलाकार प्रभाव पैदा होते हैं ठीक वैसे जैसे एक मछली अपनी आंखों से दुनिया को देखती है. एक्सट्रीम स्पोर्ट्स,विस्तृत और दृष्टिबाधित फोटोग्राफ़ को कैप्चर करने के लिए फोटोग्राफी, सिनेमैटोग्राफी, निगरानी और आभासी वास्तविकता सहित विभिन्न क्षेत्रों में फिशआई लेंस का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है.

घर में दरवाज़े से देखने पर जिस तरह का दृश्य नज़र आता है कुछ उसी तरह का ही गोलाकार और किनारों से कटा हुआ फोटो इस लेंस से आता है. एक सामान्य गोलाकार फिशआई लेंस की फोकल लंबाई 8 मिमी से 10 मिमी होती है जबकि पूर्ण-फ्रेम लेंस की फोकल लंबाई 15 मिमी से 16 मिमी होती है.

फिशआई लेंस के लाभ

अल्ट्रा-वाइड व्यू - फिशआई लेंस असाधारण रूप से विस्तृत दृश्य क्षेत्र प्रदान करते हैं. इन से ऐसे बेहद बड़े दृश्य, वास्तुकला, या गहन दृश्य कैप्चर किये जा सकते हैं जो आमतौर पर किसी अन्य लेंस से एक ही फ्रेम में कवर नहीं हो सकते.

रचनात्मक फोटोग्राफ - फिशआई लेंस चित्रों और वीडियो को वास्तव में शानदार और अलग बनाते हैं. यह अवास्तविक लेकिन देखने में मनमोहक छवियां बना सकता है.

कम रोशनी में क़ामयाब - कई फिशआई लेंस में तेज़ अपर्चर होते हैं, जो कम रोशनी की स्थिति में फायदेमंद हो सकते हैं, क्योंकि उनसे अधिक रोशनी कैमरे में प्रवेश कर सकती है, जिससे उच्च आईएसओ सेटिंग्स की आवश्यकता कम हो जाती है.

कॉम्पैक्ट और हल्के वजन - फिशआई लेंस आम तौर पर कॉम्पैक्ट और हल्के व पोर्टेबल होते हैं जिससे उन्हें कैमरा बैग में ले जाना आसान होता है.

फिशआई लेंस के नुकसान

विकृत फोटोग्राफ - कभी-कभी, जानबूझ कर तस्वीरों में चीज़ों को बदलना मज़ेदार होता है जैसे सीधी रेखाओं को घुमावदार या मुड़ा हुआ दिखाना. यह कला और डिज़ाइन को अधिक रोचक बनाने में मदद कर सकता है. लेकिन जब हम कोई ऐसी तस्वीर लेना चाहते हैं जो यह दिखाती है कि चीजें वास्तव में कैसी दिखती हैं, तो इस विकृति के

कारण यह समझना मुश्किल हो जाता है कि हम क्या देख रहे हैं. यह वैसा ही है जैसे हमने किसी इमारत की तस्वीर ली, लेकिन वह बिल्कुल अजीब लग रही थी और वास्तव में वैसी नहीं थी.

सीमित उपयोग - फिशआई लेंस का उपयोग सीमित है. वह सभी प्रकार की फोटोग्राफी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते. इनका उपयोग मुख्य रूप से विशिष्ट रचनात्मक या वाइड-एंगल उद्देश्यों के लिए किया जाता है. पारंपरिक या पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के लिए यह सबसे अच्छा विकल्प नहीं हो सकता.

किनारे पर कटाव - कुछ फिशआई लेंस फ्रेम के किनारों पर कटाव दे सकते हैं, जिससे फोटो गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है.

फोटो साभार - रिसर्च गेट

महंगा लेंस - उच्च गुणवत्ता वाले फिशआई लेंस, खासकर मानक वाइड-एंगल लेंस की तुलना में, महंगे हो सकते हैं. यह शौकिया फ़ोटोग्राफ़रों या बजट वाले फ़ोटोग्राफ़रों के लिए अनुपयुक्त हो सकते हैं.

पोस्ट-प्रोसेसिंग की आवश्यकता - फिशआई लेंस का उपयोग करते समय वांछित प्रभाव प्राप्त करने या विकृति को ठीक करने के लिए अक्सर एडिटिंग की आवश्यकता होती है. इससे काम करने में और समय लग जाता है.

फिशआई लेंस का फोटो-पत्रकारिता में उपयोग - फिशआई लेंस वाइड-एंगल दृश्यों और रचनात्मक छवियों को कैप्चर करने का एक विशिष्ट तरीका प्रदान करते हैं. लेकिन वे विकृतियों और सीमाओं के साथ आते हैं. वे किसी

सब्जेक्ट के लिए उपयुक्त जबकि दूसरे सब्जेक्ट के लिए कम उपयुक्त होते हैं. फिशआई लेंस आपके लिए सही विकल्प है या नहीं, यह आपकी विशिष्ट फोटोग्राफिक आवश्यकताओं और कलात्मक प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है.

फिश-आई लेंस में अद्वितीय विशेषताएं होती हैं जिन्हें अलग-अलग दृष्टिकोणों को पकड़ने और आकर्षक कहानियां बताने के लिए फोटो जर्नलिज्म में रचनात्मक रूप से नियोजित किया जा सकता है.

फोटो-पत्रकारिता में फिश-आई लेंस के कुछ उपयोग :

इमर्सिव इमेज - कैमरे में उपयोग किया जाने वाला विशेष लेंस वास्तव में शानदार तस्वीरें ले सकता है. यह आपको ऐसा महसूस कराता है जैसे कि आप एक्शन के ठीक बीच में हैं. यह ठंडी जगहों, रोमांचक घटनाओं, विरोध प्रदर्शनों या बड़ी पार्टियों की तस्वीरों को बहुत वास्तविक बनाता है.

वास्तुकला और शहरी परिदृश्य - समाचार पत्रों में अक्सर इमारतों और वास्तु कला से सम्बन्धी फीचर पब्लिश होते रहते हैं. ये तस्वीरें इमारतों की दिलचस्प आकृतियाँ और रेखाएँ दिखा सकती हैं. ये यह भी दिखा सकती हैं कि ऊपर से पूरा शहर कैसा दिखता है.

360-डिग्री पैनोरमा - फिश-आई लेंस का उपयोग 360-डिग्री पैनोरमा बनाने के लिए किया जा सकता है. यह किसी स्थान का व्यापक दृश्य प्रदान करता है, जो विशेष रूप से यात्रा और पर्यटन पत्रकारिता में उपयोगी है.

खेल फ़ोटोग्राफ़ी - खेल फोटोग्राफी में, तस्वीरें लेने के लिए फिश-आई लेंस का उपयोग किया जाता है. वे एक स्टेडियम जैसे बड़े क्षेत्र को दिखा सकते हैं. वे तस्वीरों को वास्तव में शानदार बना सकते हैं.

गैर परंपरागत पोर्ट्रेट - फिश-आई लेंस का उपयोग कलात्मक और गैर परंपरागत पोर्ट्रेट बनाने के लिए किया जा सकता है. इन से सब्जेट को अनोखे और आकर्षक तरीके से कैप्चर किया जा सकता है.

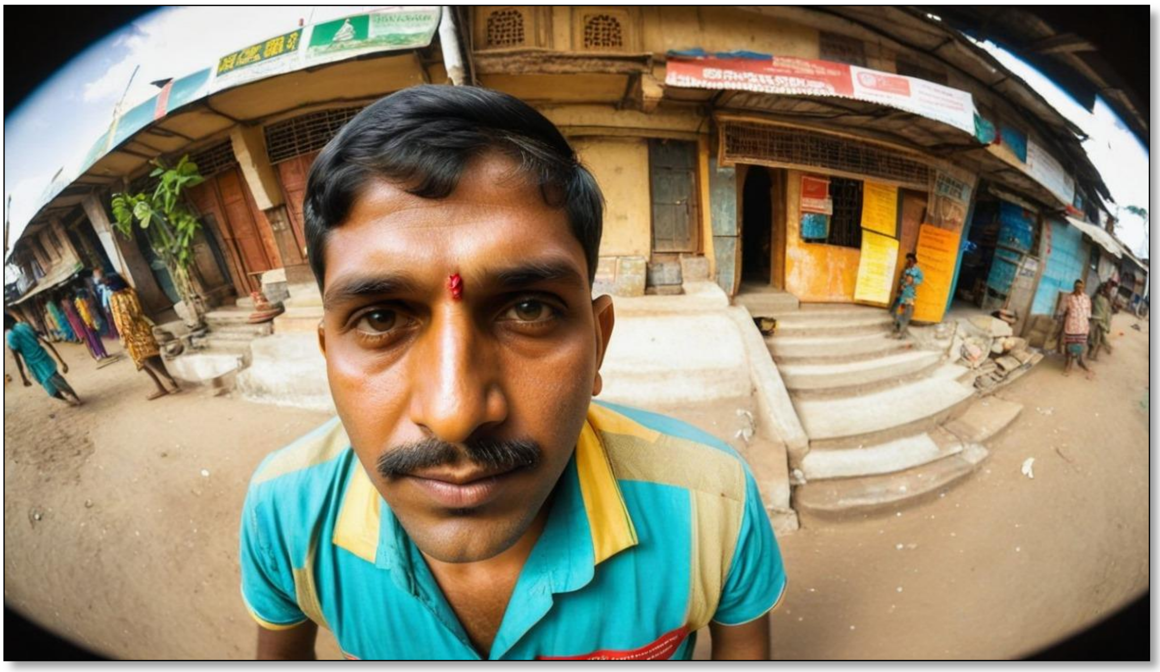

विषम परिस्थितियों का दस्तावेजीकरण - खराब मौसम या खतरनाक स्थानों पर तस्वीरें लेना वास्तव में कठिन हो सकता है, लेकिन ये विशेष लेंस ऐसा कर सकते हैं. वे यह कैद कर सकते हैं कि चीजें कितनी तीव्र हैं. वे बड़े तूफानों की ऐसी तस्वीरें ले सकते हैं जिन से व्यक्त हो कि लोग किन कठिन परिस्थितियों से जूझ रहे हैं.

कला और संस्कृति - कलात्मक - सांस्कृतिक कार्यक्रमों या विरोध प्रदर्शनों की वास्तविकता दिखाने के लिए फोटो-पत्रकार जिस विशेष प्रकार के लेंस का उपयोग करते हैं उसे फिश-आई लेंस कहा जाता है. यह लेंस दर्शकों को बड़ा आयाम दिखा सकता है. यह दिखा सकता है कि जो फोटो में जो चल रहा है उसमें शामिल लोग कितने उत्साहित हैं.

पानी के अंदर की फोटोग्राफी - समुद्री जीवन और पानी के नीचे के वातावरण के वाइड-एंगल शॉट्स को कैप्चर करने के लिए फिश-आई लेंस का भी उपयोग किया जाता है.

अंत में कहा जा सकता है कि इससे बहुत अंतर नहीं पड़ता कि लेंस किस तकनीक से बना है. महत्वपूर्ण यह है कि कैसे एक कैमरापर्सन लेंस की विशेषताओं का उपयोग करता है. लेंस की विशेषताओं का सही उपयोग कर मनचाहे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं . फोटो लेने से पहले यह सोचें कि आप क्या व्यक्त करना चाहते हैं. उसके अनुसार लेंस चुनें. अगर फोटोग्राफर के दिल और दिमाग में कोई अच्छी तस्वीर नहीं है तो फोटो अच्छी नहीं आ सकती.

22. सेंसर साइज एवं क्रॉप फैक्टर

कैमरा सेंसर सुनते ही आप सोच रहे होंगे कि जैसे कुछ कठिन इलेक्ट्रॉनिक सर्किट्स को समझना मुश्किल है, वैसे ही इसे समझना भी मुश्किल होगा. चलिए आपके लिए इसे आसान बनाते हैं. यदि आप किसी फोटोग्राफर से पूछेंगे कि सेंसर क्या होता है, तो उसका आसान शब्दों में जवाब होगा कि सेंसर किसी भी कैमरे का वह सबसे जरूरी पार्ट होता है जो लाइट को इकठ्ठा कर फाइनल तस्वीर बनाने में मदद करता है.

हर प्रकार के कैमरे में अलग-अलग साइज़ के सेंसर होते हैं. किसी में फुल साइज़ फ्रेम सेंसर - यानि 36x24 मिमी. कुछ कैमरों में छोटे साइज़ के सेंसर साइज़ लगे होते हैं, जिन्हें एडवांस फोटो सिस्टम टाइप-सी सेंसर भी कहा जाता है. इनका साइज़ 23.6x 15.7 मिमी और 22.2 x 14.8 मिमी होता है. कुछ कैमरों में आपको 17.3 x 13 साइज़ का लेंस भी मिल जाएगा. किसी भी साइज़ से यह नहीं बदलता कि आप क्या फोटो खींच सकते हैं, या कैसे खींच सकते हैं. हाँ, अलग-अलग साइज़ का फोकल लेंथ पर प्रभाव जरूर पड़ता है. यह ध्यान में रखें कि लेंस की प्रभावी फोकल लंबाई निर्धारित करने के लिए "क्रॉप फैक्टर" या "फोकल लेंथ मैग्निफायर" का उपयोग किया जाता है. उदाहरण के लिए एपीएस-सी आकार के सेंसर वाले निकॉन का क्रॉप फैक्टर 1.5x है इसलिए 100 मिमी फोकल लंबाई वाला लेंस वास्तव में 150 मिमी लेंस की तरह व्यवहार करेगा. 2x के क्रॉप फैक्टर के साथ, कैमरे पर समान लेंस की प्रभावी फोकल लंबाई 200 मिमी होगी.

क्रॉप फैक्टर

ए पी एस -सी /डी एक्स (D X)

फुल फ्रेम सेंसर

35 mm / FX change pic

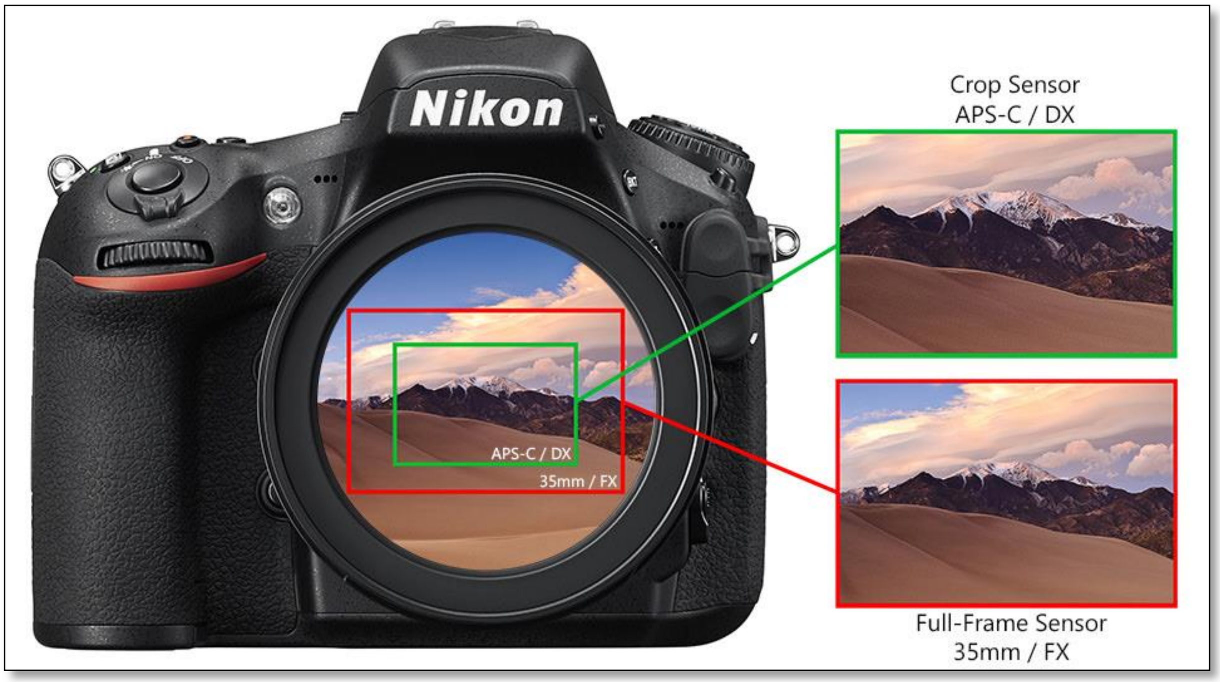

सेंसर के साइज़

फुल फ्रेम 36x24 मिमी

एपीएस-सी कैनन 22.2x14.8 मिमी

एपीएस-सी निकॉन 23.6x15.7 मिमी फोरथर्ड सिस्टम 17.3x13 मिमी

क्रॉप फैक्टर

फोटोग्राफर जब फुल-फ्रेम कैमरे और छोटे, क्रॉप्ड सेंसर वाले कैमरे दोनों के साथ एक ही लेंस का उपयोग करते हैं, तो छोटे-सेंसर वाले कैमरे से ली गई छवियों के परिणामस्वरूप देखने का क्षेत्र क्रॉप हो जाता है. क्रॉप फैक्टर महत्वपूर्ण है. यह इंगित करता है कि फोटो लेते समय आपकी छवि का कितना हिस्सा क्रॉप किया जाएगा. उदाहरण के लिए, यदि आप फुल-फ्रेम सेंसर कैमरे, क्रॉप सेंसर कैमरे और माइक्रो फोर-थर्ड कैमरे पर एक ही लेंस के साथ एक ही सटीक दृश्य की तस्वीर लेते हैं, तो बड़े सेंसर से स्विच करने पर आप अधिक दृश्य खो देंगे. इसका कारण यह है कि फोटोग्राफर वस्तुतः दृश्य के एक हिस्से को काट रहा है और केवल रचना के केंद्र को ही कायम रख रहा हैं.

इमेज स्टैबिलाइज़ेशन

तस्वीर खींचते समय कैमरे को स्थिर रखना बेहद जरूरी है. यदि कैमरा स्थिर नहीं होगा तो तस्वीर ब्लर आएगी. इमेज स्टैबिलाइज़ेशन का अर्थ है कि किसी तस्वीर को कैप्चर करते समय कैमरे का ऑप्टिकल सिस्टम कितना स्थिर है. एक स्थिर प्रणाली के बिना, तस्वीर धुंधली दिखाई देंगी और तस्वीर की गुणवत्ता को भी प्रभावित करेगी. इमेज स्टैबिलाइज़ेशन, कैमरा कंपन को रोकने के लिए कुछ लेंस में निर्मित एक तकनीक है. यह लेंस में सेंसर के उपयोग के माध्यम से ऐसा करता है, जो कैमरे की किसी भी गतिविधि का पता लगा सकता है. जब वे ऐसा करते हैं, तो लेंस के अंदर लेंस तत्वों का एक विशेष समूह क्षतिपूर्ति करने के लिए विपरीत दिशा में चलता है, जो आपके शॉट लेते समय छवि को सेंसर पर उसी स्थान पर रखता है. ------

सुपर-ज़ूम लेंस

सुपर-ज़ूम लेंस एक विशिष्ट प्रकार का लेंस होता है. यह फोकल लेंथ की रेंज को बाकी लेंस के मुकाबले अधिक कवर करता है. आमतौर पर इस से 18-200 मिमी या 18-300 मिमी के क्षेत्र में भी कवर किया जा सकता है. व्यापक रेंज वाले, इस प्रकार के लेंस से कैमरा हिलने का खतरा बढ़ जाता है. इनका मुख्य लाभ यह है कि फोकल लंबाई की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर कर सकते हैं. सुपर-ज़ूम लेंस के माध्यम से फोटोग्राफर के पास घर के अंदर, परिदृश्य, चित्र और जानवरों और पक्षियों जैसी कुछ दूर की चीज़ों को शूट करने की सुविधा रहती है, इसके लिए उसे अलग-अलग लेंस ले जाने की ज़रूरत नहीं है.

-----मूविंग सब्जेक्ट

तस्वीर लेते समय कैमरा हिल गया तो छवि ब्लर आएगी. या अगर किसी मूविंग सब्जेक्ट की तस्वीर ले रहे हैं तो फोटो स्टैबिलाइज़ेशन एक्सपोज़र के दौरान किसी विषय के हिलने से होने वाले धुंधलेपन को आप नहीं रोक सकते. लेकिन जब आप हाथ से शूटिंग कर रहे हों तो यह आपको एक्सपोज़र सेटिंग्स को बदले बिना, बेहतर परिणाम प्राप्त करने में मदद कर सकता है.

स्टैबिलाइज़ेशन के बिना और स्टैबिलाइज़ेशन के साथ

फोटो साभार - ग्रेट बिग फ़ोटोग्राफ़ी वर्ल्ड

वर्किंग इन मैक्रो

मैक्रो और क्लोज-अप फोटोग्राफी छोटी चीज़ों को बड़ा दिखाने की कला है. छोटे विषयों को बड़ा कर के आप खाली फ्रेम को भर सकते हैं. फोटोग्राफर सब्जेक्ट के करीब जाकर या टेलीफोटो लेंस द्वारा ज़ूम इन करके चित्र लेते हैं. मैक्रो फोटोग्राफी आसान नहीं होती. सही कौशल के साथ इसे आसान बनाया जा सकता है.

टेली-फोटो लेंस

टेली-फोटो लेंस कैमरे की गतिविधि को बढ़ा कर, दूर के विषयों के करीब आने देते हैं. यह एक लंबा-फोकस लेंस होता है जो फोटोग्राफरों को फोकल लेंथ का उपयोग करने की अनुमति देता है. टेलीफोटो लेंस एसएलआर या डीएसएलआर के कैमरा बॉडी से जोड़ा जा सकता है.

23. फ्लैश तकनीक - पॉप अप और बाहरी फ्लैश का उपयोग

पॉप फ़्लैश और बाहरी फ़्लैश में अंतर

फोटोग्राफी में फ्लैश का उपयोग आम तौर पर दृश्य / सब्जेक्ट को बेहतर ढंग से रोशन करने के लिए किया जाता है. अक्सर, एक छोटा एलईडी स्ट्रोब फ्लैश डीएसएलआर कैमरे से जुड़ा होता है या अलग से हॉट शू पर लगाया जाता है. दोनों ही फ्लैश, फोटोग्राफी में इस्तेमाल के योग्य हैं. फ्लैश एक उपकरण है जो कैमरे से जुड़ा होता है. इसमें आमतौर पर क्सीनन गैस वाला एक फ्लैश बल्ब होता है जो "फ्लैश फायर" करता है, जिससे लगभग 5500K के रंग तापमान के साथ प्रकाश उत्पन्न होता है. फ़्लैश, किसी भी क्षेत्र या सब्जेक्ट को अस्थायी रूप से एक माइक्रोसेकंड के लिए रोशन कर गहरी छाया हटा देती है या गहरी छाया बना देती है. ध्यान दें एक्सटर्नल फ़्लैश को स्पीडलाइट भी कहा जा सकता है, इसलिए आप इन शब्दों का परस्पर उपयोग होते हुए देख सकते हैं.

फ़्लैश का उपयोग कब करें?

1. **कम रोशनी या अँधेरा** - जब अँधेरा हो तो फ़्लैश का उपयोग करें. जब बहुत अधिक प्राकृतिक रोशनी न हो, तो फ़्लैश का उपयोग करना बेहतर होगा. यह इनडोर और आउटडोर दोनों ही सेटिंग्स पर लागू होता है. उचित अभ्यास के साथ कोई भी फोटोग्राफर हर तस्वीर के लिए सर्वोत्तम एक्सपोज़र सुनिश्चित कर सकता है. फ्लैश से आप अंधेरे दृश्य को उज्ज्वल करने, फैली हुई रोशनी को संतुलित करने या फ्लैश के साथ अवांछित छाया को खत्म करने में सक्षम होंगे.

2 .**ब्राइट लाइट में फ़्लैश का उपयोग -** ब्राइट लाइट में भी फ़्लैश का उपयोग किया जाता है. यह आपको उल्टा लग सकता है लेकिन जब आप घर के अंदर और बाहर ज़्यादा रोशन जगह पर तस्वीरें ले रहे हों तो बाहरी फ्लैश का उपयोग करना चाहिए. इससे सब्जेक्ट को रोशन करने में मदद मिलती है. वर्ना सब्जेक्ट अधिक रोशनी या छाया की तुलना में अधिक काला दिखाई दे सकता है.

3. **भीड़ -भाड़ वाली जगह पर फ़्लैश इस्तेमाल करें -** बहुत सारे लोगों के साथ व्यस्त परिस्थितियों में, एक फोटो-जर्नलिस्ट एकल, महत्वपूर्ण सब्जेक्ट पर ध्यान आकर्षित करने के लिए फ्लैश का उपयोग कर सकता है और साथ ही प्रोग्राम का संदर्भ बनाए रख सकता है. महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण व्यक्ति /अधिकारी कई लोगों से घिरे होते हैं. ऐसे में मुख्य सब्जेक्ट पर फोकस करना मुश्किल हो जाता है लेकिन फ्लैश से केवल उस चीज़ /सब्जेक्ट को महत्व दिया जा सकता है जिसमें फोटो पत्रकार की रुचि है. एक संगीत कार्यक्रम, एक थिएटर, एक सम्मेलन या ऐसे ही किसी अन्य बड़े आयोजन में इस तकनीक से फोटोग्राफ ली जा सकती है.

लेकिन ध्यान रखें कि "फ्लैश का मैन्युअल मोड" उपयोग करें ताकि केवल सब्जेक्ट को रोशन कर अन्य प्रकार की रोशनी के प्रभाव को कम किया जा सके. अक्सर फोटो पत्रकार मैन्युअल फ़्लैश का उपयोग करते हैं, क्योंकि वो टीटीएल फ्लैश मीटरिंग से अधिक पावरफुल है. सब्जेक्ट को करीब से ही शूट करें, फ्लैश तभी प्रभावी होगी.

मैन्युअल और टी टी एल फ़्लैश के विषय में आगे पढ़ेंगे.

4. प्रकाश के विरुद्ध - जब आपका सब्जेक्ट लाइट के विरुद्ध हो तब भी फ़्लैश का उपयोग करना पड़ता है ताकि सब्जेक्ट को रोशन किया जा सके. वर्ना सब्जेक्ट बिल्कुल काला दिखाई देगा क्योंकि बैकग्राउंड ब्राइट होगी और सब्जेक्ट रोशनी ब्लॉक कर रहा होगा.

5.फ़्लैश से शैडो क्रिएट की जा सकती है - फोटो में गहराई और आयाम जोड़ सकती है - फ़्लैश . किसी विषय की आकृति को उभार कर, फ्लैश शैडो इसे अधिक त्रि-आयामी और वास्तविक बना सकती हैं. यह पोर्ट्रेट के लिए विशेष रूप से प्रभावी हो सकता है, जहां आप चेहरे की ख़ूबसूरती निखारना चाहते हों.

यह फोटो में चीज़ों को अलग दिखाने और स्पष्ट दिखने में मदद करता है और पृष्ठभूमि को मुख्य वस्तु से अलग भी दिखाता है.

फ़्लैश फोटोग्राफी करते हुए बेहतर होगा कि तीन पहलुओं पर ध्यान दें :

1. आप फोटो कहां ले रहे हैं?
2. आप क्या फोटो खींच रहे हैं?
3. क्या आपके पास फ़्लैश के लिए उपयुक्त कोई विषय है?

इन सवालों पर ध्यान देने से जिस दृश्य की फोटोग्राफी कर रहे हैं उस घटना या आयोजन की जानकारी के साथ - साथ उपलब्ध लाइट की समझ से भी आपको फ्लैश उपयोग करने में आसानी होगी.

आंतरिक पॉप-अप फ्लैश बनाम एक्सटर्नल फ़्लैश –फोटोग्राफर को कभी-कभी यह तय करने में कठिनाई होती है कि उसे अपने कैमरे पर पॉप अप होने वाली फ़्लैश का उपयोग करना चाहिए या एक बाहरी फ़्लैश का जिसे कैमरे के साथ जोड़ा जा सकता है. दोनों विकल्पों के अपने-अपने फायदे और उपयोग हैं. फोटोग्राफी में बाहरी फ्लैश, पॉप-अप फ्लैश से बेहतर होती है. पॉप-अप फ्लैश के अपने फायदे हैं. चूँकि ये कैमरे में इन -बिल्ट होती है इसलिए वह हमेशा आसानी से उपलब्ध रहती है. समय की कमी की स्थिति में इसे आसानी से उपयोग किया जा सकता है. छोटी और हलकी होने के कारण भी पॉप-अप फ्लैश का उपयोग करना आसान हो जाता है. लेकिन बाहरी फ्लैश के उपयोग से ही बेहतर परिणाम आ सकते हैं.

1. **बाहरी फ़्लैश का कवरेज एरिया अधिक -** कैमरा फ़्लैश की अपेक्षा बाहरी फ़्लैश की लाइट दूर तक जाती है. इससे अपेक्षाकृत दूर का सब्जेक्ट भी कवर किया जा सकता है. कैमरा फ़्लैश की लाइट आम तौर पर एक से तीन

मीटर की दूरी तक ही सब्जेक्ट को रोशन कर पाती है और अधिकतम शटर स्पीड 200 तक रहती है. इस कारण सब्जेक्ट अंडर एक्सपोज्ड ही रह जाता है.

लेकिन बाहरी फ्लैश की पावर, अंतर्निर्मित/ पॉप अप फ्लैश की तुलना में अधिक होती है. इनमें से कुछ फ्लैश 10 मीटर से अधिक दूरी पर स्थित सब्जेक्ट को रोशन करने में सक्षम होती हैं. दूसरे शब्दों में, आप उनका उपयोग कैमरे से दूर स्थित सब्जेक्ट पर पर्याप्त रोशनी सुनिश्चित करने के लिए कर सकते हैं.

आप इन दोनों चित्रों में अंतर स्पष्ट देख सकते हैं.

2.**एंगल ऑफ़ कवरेज** – अंतर्निर्मित/ पॉप अप फ्लैश में कवरेज का एक एंगल होता है जिससे सब्जेक्ट पूरी तरह से कवर नहीं हो पाता. सब्जेक्ट के चेहरे पर फ्लैट रोशनी आती है और धब्बे से नज़र आते हैं. इसी कारण ही सब्जेक्ट की आँखें लाल रंग की नज़र आतीं हैं. जिसे **रेड आई रिडक्शन कहते हैं** .

रेड आई रिडक्शन क्या है? अंतर्निर्मित/ पॉप अप फ्लैश में कवरेज का एक एंगल होता है जिससे सब्जेक्ट पूरी तरह से कवर नहीं हो पाता और सब्जेक्ट के चेहरे पर फ्लैट रोशनी आती है और धब्बे से नज़र आते हैं. इसी कारण ही सब्जेक्ट की आँखें लाल रंग की नज़र आती हैं.

दूसरी ओर, बाहरी फ़्लैश से फोटोग्राफर अधिक एरिया कवर कर सकते हैं. यानि हर तरह के लेंस के साथ पूरी इमेज को ब्राइट कर सकते हैं और सब्जेक्ट की आँखें लाल रंग का होना टाला जा सकता है. चूँकि मानव आँख का रेटिना लाल प्रकाश को सीधे उसी दिशा में परावर्तित करता है जिस दिशा से वह आया था, इस लिए चेहरे के ठीक सामने से ली गई तस्वीरें अक्सर इस प्रभाव को प्रदर्शित करती हैं.

अंधेरे कमरे में या फिर कम रोशनी में फ्लैश के माध्यम से ली गई तस्वीर में व्यक्ति की आंखे लाल रंग की नज़र आती हैं. कई कैमरों में "रेड आई रिडक्शन" (एक प्री-फ्लैश जो विषय की आंखों की पुतलियों को सिकोड़ता है) फोटोग्राफिक टूल्स का उपयोग कर, कुछ हद तक कम किया जा सकता है. लेकिन, बहुत अच्छे परिणाम केवल एक एक्सटर्नल फ्लैश से प्राप्त किए जा सकते हैं. ऐसी परिस्थितियों में फोटो खींचते समय कुछ सावधानी बरतनी होती है. एक, उस स्थान पर टयूब लाइट, बल्ब, मोमबत्ती, टार्च जलाकर या फिर अन्य स्रोतों से प्रकाश की व्यवस्था की जा सकती है. दूसरे, फोटो खिंचवाने वाले व्यक्ति से कहें कि वह लेंस में देखे. उसका आई कांटेक्ट थोड़ा दाएं, बांए या फिर उपर की दिशा में कर दें, ताकि फ्लैश की लाइट, सीधी उसकी आंख की पुतली पर न पड़े.

3. बाहरी फ़्लैश से बेहतर परिणाम - बाहरी फ़्लैश से फोटोग्राफर अधिक एरिया कवर कर सकते हैं. वे हर तरह के लेंस के साथ पूरी इमेज को ब्राइट कर सकते हैं और सब्जेक्ट की आँखों का लाल रंग टाल सकते हैं. लेकिन, बहुत अच्छे परिणाम केवल एक एक्सटर्नल फ़्लैश से प्राप्त किए जा सकते हैं. लाल रंग वाली आंखों को कंप्यूटर में फोटोशाप की मदद से एडिट किया जा सकता है.

4 .**पावर स्रोत-** बाहरी फ्लैश का अपना पावर स्रोत होता है. इस की बदौलत वह तुरंत हरकत करती है. इससे फोटोग्राफर, तेज़ी से अपना काम कर पाता है.

5**. अधिक रचनात्मक संभावनाएँ -** बाहरी फ्लैश में यदि एडजेस्टेबल फ्लैश हेड है, तो फ्लैश बाउंस करने के लिए हेड को झुका सकते हैं और एंगल बदल सकते हैं. इस से लाइट सब्जेक्ट पर सीधी नहीं जाती और बाउंस होकर सॉफ्ट हो जाती है. नतीजा, सब्जेक्ट अधिक सुंदर या रोमांटिक दिखता है. यदि बाहरी फ़्लैश में वायरलेस फायरिंग और अन्य फ़्लैश इकाइयों के साथ लिंक करने जैसी सुविधा है तो कई तरह के परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं.

फ्लैश का प्रयोग इंडोर शूटिंग एवं नाइट विज़न फोटोग्राफी के लिए किया जाता है.

बाहरी फ्लैश में यदि एडजस्टेबल फ्लैश हेड है, तो बाउंस फ्लैश करने के लिए फ्लैश हेड को झुका और एंगल बदल सकते हैं . इसका उदाहरण नीचे देख सकते हैं.

सब्जेक्ट के चेहरे पर सीधे फ़्लैश - फ़्लैश का सीधे सब्जेक्ट पर डालने से सब्जेक्ट का चेहरा एकदम फ्लैट नज़र आता है और चेहरे पर ठोड़ी के नीचे छाया बनती हैं.

दीवार के एक तरफ लाइट बाउंस - इस सेटअप से सब्जेक्ट के विपरीत दिशा में शैडो बनता है जिससे फोटो में अधिक गहराई दिखती है. लाइट आम तौर पर नरम और अधिक फैली होती है, जिससे हार्श शैडो कम हो जाती है. जब सब्जेक्ट बेहद प्राकृतिक दिखाना हो तो इस तरह की दिशात्मक (directional light) लाइट का उपयोग किया जाता है.

इस फोटो में आप देख सकते हैं कि रोशनी आने वाली दिशा की दूसरी तरफ चेहरे पर हलकी परछाई है.

छत पर लाइट बाउंस - इस सेटिंग में लाइट ऊपर से आएगी. वह शैडो को नरम करेगी और सब्जेक्ट के नीचे जाएगी. इससे चेहरे पर (जैसे ठोड़ी या नाक के नीचे) अनाकर्षक परछाइयाँ कम हो जाती हैं. सफेद छत पर लाइट बाउंस करने से नरम और अधिक समान लाइट उत्पन्न होती है जो आमतौर पर पोर्ट्रेट के लिए अधिक अनुकूल होती है.

दोनों तकनीकें उपयोगी हैं. लेकिन कब कौन सी तकनीक इस्तेमाल करनी है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप को किस तरह के परिणाम चाहियें.

बाहरी फ़्लैश लगाने का तरीका

1. अपना कैमरा और फ़्लैश बंद करें. किसी भी आकस्मिक विद्युत निर्वहन (electrical discharge) से बचने के लिए , सुरक्षा की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण सावधानी है.

2. अपना कैमरा और फ़्लैश ऑन करें. आपके कैमरे द्वारा फ़्लैश का स्वचालित रूप से पता लगाया जाना चाहिए. फिर आप यह देखने के लिए अपने कैमरे के मेनू की जांच कर सकते हैं कि क्या किसी अतिरिक्त सेटिंग्स को समायोजित करने की आवश्यकता है.

फ्लैश के मोड - फ्लैश दो मोड पर काम करती है - टीटीएल और मैनुअल.

टीटीएल फ्लैश

टीटीएल का मतलब "through the lens' यानि "लेंस के माध्यम से" है. इस फ़्लैश मोड को अपने मिररलेस या डिजिटल कैमरे के ऑटोमैटिक मोड के समान समझें . टीटीएल मोड में फ़्लैश, कैमरे के लेंस से गुज़रने वाले एक्सपोज़र को समझती है. उसके अनुसार कैमरा स्वतः ही फ़्लैश फायर करता है.

टीटीएल स्वचालित रूप से कैमरे की अंतर्निर्मित मीटरिंग प्रणाली और विषय से दूरी का उपयोग करता है. इसे कभी-कभी टीटीएल मीटरिंग या टीटीएल फ्लैश मीटरिंग कहा जाता है.

टीटीएल फ्लैश मैनुअल की तुलना में अधिक महंगे होते हैं. लेकिन आजकल कई फ़्लैश में दोनों ही मोड्स होते हैं यानि फोटोग्राफर अपनी ज़रूरत के अनुसार दोनों में से किसी भी मोड का चुनाव कर सकता है.

टीटीएल फ़्लैश की आवश्यकता - टीटीएल फ़्लैश तब बेहद कारगर है जब फोटोग्राफर समयाभाव के कारण मैन्युअल फ़्लैश की सेटिंग बार -बार बदल नहीं सकता. टीटीएल फ़्लैश से फोटो के ओवर एक्सपोज्ड या अंडर एक्सपोज्ड होने की सम्भावना नहीं के बराबर रहती है.

टीटीएल फ़्लैश का उपयोग

टीटीएल एक ऑटोमैटिक सेटिंग है. टीटीएल फ्लैश का उपयोग करने के लिए, आपको बस अपने कैमरे को टीटीएल फ्लैश मोड में सेट करना होगा. अधिकांश कैमरों में एक "i-TTL" या "E-TTL" मोड होता है. एक बार जब आपका कैमरा टीटीएल फ्लैश मोड में हो जाए, तो आप फ्लैश को चालू कर सकते हैं और शूट करना शुरू कर सकते हैं.

कैमरे का शटर बटन दबाने पर स्पीडलाइट, कैमरे की एक्सपोज़र रीडिंग के अनुसार प्रकाश की मात्रा डालता है. यदि फोटो सीन में अंधेरा है, तो फ़्लैश आउटपुट तीव्र होगा, यदि रोशनी है, तो कम रहेगा.

क्या टी टी एल कैमरे से अलग फ़्लैश का उपयोग कर सकते हैं?

हाँ, परन्तु ये कितनी कामयाब होगा, यह परिस्थिति पर निर्भर करता है. टीटीएल के लिए एक्सपोज़र रीडिंग कैमरे के लेंस के माध्यम से होती है. यह सुनिश्चित करने के लिए कि शॉट्स को सही एक्सपोज़र मिले, अपने फ़्लैश को कैमरे के पास रखें. एक ट्राइपॉड पर एक उपयुक्त हॉट शू एडॉप्टर के साथ फ़्लैश लगा कर उपयोग कर सकते हैं. इस तरह आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आपके फ्लैश का आउटपुट आपके कैमरे की एक्सपोज़र रीडिंग से काफी मेल खाता है.

यदि आप अधिक सटीक आउटपुट चाहते हैं, तो शायद इसके बजाय मैन्युअल फ़्लैश का उपयोग करना बेहतर होगा.

मैन्युअल फ़्लैश का उपयोग

सब्जेक्ट पर पड़ने वाली लाइट पर अधिक नियंत्रण - कैमरे के मैन्युअल मोड की तरह, मैन्युअल फ़्लैश भी छवियों पर अधिक नियंत्रण प्रदान करता है. मैन्युअल मोड के साथ, फोटोग्राफर किसी शॉट को लेने के लिए लाइट की मात्रा /पावर चुनता है. मैन्युअल फ़्लैश पावर को अंशों में मापा जाता है. फ्लैश उपयोग करते समय पावर सबसे महत्वपूर्ण फैक्टर है. इसे गाइड नंबर में मापा जाता है जो फ्लैश की पावर को परिभाषित करने का एक स्टैण्डर्ड तरीका

है. एक उच्च /अधिक गाइड नंबर का मतलब अधिक शक्तिशाली फ्लैश है. इसलिए हमेशा गाइड नंबर 50 या इससे ऊपर वाला फ्लैश इस्तेमाल करें.

फ़्लैश पावर- 1/1 पावर के साथ हम 1/1000 सेकंड तक और 1/128 पावर के साथ और 1/35000 सेकंड तक फ़्लैश अवधि प्राप्त कर सकते हैं. नीचे वह चार्ट है जो विभिन्न पावर सेटिंग्स पर फ्लैश अवधि दिखाता है. विभिन्न फ़्लैश मॉडल में अलग-अलग फ़्लैश रेंज होंगी. कुछ की पावर 1/64 तक होगी , कुछ की 1/128 तक, और अन्य की 1/250 तक.

1/2 पावर का अर्थ है अधिक रोशनी और 1 /16 पावर का मतलब कम रोशनी. फ़्लैश पावर में अंतर समझने के लिए नीचे फोटोग्राफ्स देखें.

मैन्युअल फ़्लैश के साथ काम करते हुए लाइट समझने में परेशानी हो तो उसका हैंड हेल्ड लाइट मीटर उपयोग कर सकते है. इस डेटा का उपयोग सही एक्सपोज़र और फ़्लैश सेटिंग्स निर्धारित करने के लिए कर सकते हैं. आमतौर पर, हैंडहेल्ड मीटर, हैंडहेल्ड फ्लैश की तुलना में अधिक सटीक रीडिंग देते हैं.

फ़्लैश स्क्रीन रीडिंग - आइये समझते हैं कि फ़्लैश स्क्रीन पर क्या लिखा है?

फ़्लैश पावर 1 /2 का अर्थ है कि फ़्लैश अपनी आधी पावर पर काम कर रही है.

फोकल लेंथ उस लेंस की है जिस पर फ़्लैश लगाई गयी है.

स्केल - बाहरी फ़्लैश पर 0.5 से 18 मीटर तक का स्केल आमतौर पर फ़्लैश की प्रभावी सीमा को बताता है. यह रेंज आपको बताती है कि फ़्लैश किस दूरी पर किसी विषय को ठीक से रोशन कर सकती है.

न्यूनतम दूरी (0.5 मीटर) - यह निकटतम दूरी है जिस पर फ्लैश बहुत अधिक शक्तिशाली हुए बिना प्रभावी हो सकती है.

अधिकतम दूरी (18 मीटर) - यह सबसे दूर का फासला है जिस पर फ्लैश किसी सब्जेक्ट को प्रभावी ढंग से रोशन कर सकता है. इस दूरी से ज़्यादा, फ़्लैश की रोशनी विषय को ठीक से उजागर नहीं कर सकती है.

सामान्यतः, उच्च पावर सेटिंग्स, उच्च आईएसओ मान और बड़े अपर्चर (कम एफ-स्टॉप संख्या) पर फ्लैश बेहतर काम कर सकेगी .

कैमरे की एक्सपोज़र सेटिंग्स और फ़्लैश -मैन्युअल मोड फ़्लैश को नियंत्रित करने का एकमात्र तरीका नहीं है. कैमरे की एक्सपोज़र सेटिंग्स फ़्लैश सिस्टम पर भी प्रभाव डालती हैं.

अपर्चर को छोटा करने से फ़्लैश आउटपुट को कम करने जैसा प्रभाव पैदा होगा और सब्जेक्ट पर लाइट कम दिखाई देगी. फ़्लैश पावर समान रहने पर भी अपर्चर को छोटा या बड़ा करने से फ़्लैश की चमक प्रभावित होगी. इसलिए उपलब्ध रोशनी के साथ फ्लैश को बैलेंस करने के लिए, शटर गति का सही होना आवश्यक है. यदि सब्जेक्ट पर अच्छी रोशनी है लेकिन बैकग्राउंड में अंधेरा है, तो कैमरे की शटर गति कम करनी होगी.

हाई-स्पीड सिंक - हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य है कि जब फ़्लैश की बात आती है तो शटर गति की एक सीमा होती है.

अधिकांश कैमरों में, शटर गति सीमा या तो 1/200 या 1/250 होती है. यदि आप सीमा से आगे जाते हैं, तो आपको इमेज पर काली पट्टियाँ दिखाई देंगी.

क्योंकि यदि आप 1/200 या अधिक से आगे जाते हैं, तो शटर फ़्लैश के साथ सिंक में नहीं होगा, इसीलिए वो काली पट्टियाँ फोटो में देखते हैं. इसी कारण हाई-स्पीड सिंक फ़्लैश इस्तेमाल करनी पड़ती है.

मैन्युअल मोड फ़्लैश को नियंत्रित करने का एकमात्र तरीका नहीं है. कैमरे की एक्सपोज़र सेटिंग्स फ़्लैश सिस्टम पर भी प्रभाव डालती हैं.

अपर्चर को छोटा करने से फ़्लैश आउटपुट को कम करने जैसा प्रभाव पैदा होगा और सब्जेक्ट पर लाइट कम दिखाई देगी. फ़्लैश पावर समान रहने पर भी अपर्चर को छोटा या बड़ा करने से फ़्लैश की चमक प्रभावित होगी. इसलिए उपलब्ध रोशनी के साथ फ्लैश को बैलेंस करने के लिए, शटर गति का सही होना आवश्यक है. यदि सब्जेक्ट पर अच्छी रोशनी है लेकिन बैकग्राउंड में अंधेरा है, तो कैमरे की शटर गति कम करनी होगी.

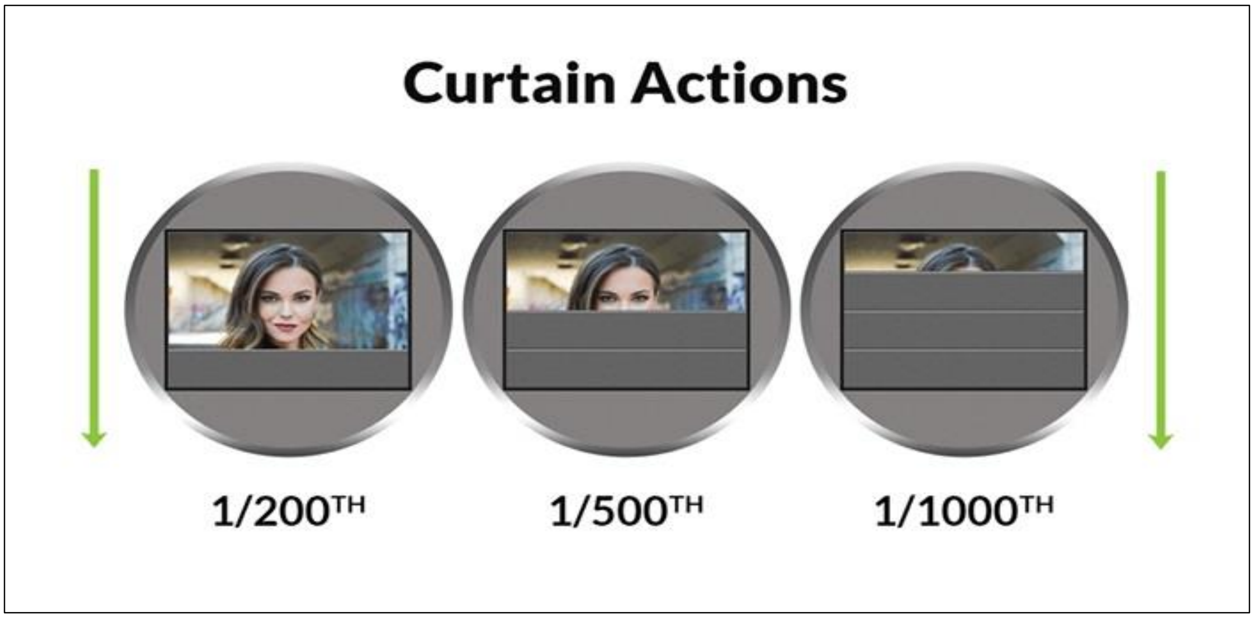

साभार :एक्सपर्ट फोटोग्राफी

एक उच्च सिंक गति (HSS) आपको फ़्लैश को बहुत तेज़ शटर गति पर उपयोग करने देती है. इससे कैमरे और फ्लैश के बीच एक बेहतर लिंक बनाता है ताकि फ़्लैश और शटर स्पीड का तालमेल बना रहे.

एचएसएस उपयोग करें -एचएसएस उपयोग करने के लिए, कैमरे की कस्टम सेटिंग मेनू के ब्रैकेटिंग/फ्लैश ऑप्शन खोलें और फ्लैश सिंक स्पीड विकल्प का चयन करें, जैसा कि दिखाया गया है.

आप निम्न सेटिंग्स में से चुन सकते हैं. आपको 1/200 से अधिक तेज़ शटर गति के विकल्प देखने चाहिए. वह चुनें जो आपके शॉट की आवश्यक शटर गति के लिए सबसे उपयुक्त हो.

फिर, अपनी स्पीडलाइट पर एचएसएस सेटिंग और उसका सही लेवल चुनें. कैमरा सेट होते ही कुछ स्पीडलाइट्स स्वचालित रूप से एचएसएस मोड में अपडेट हो जाती हैं. कैमरे में सही सेटिंग्स होने पर एलईडी पर एक इन्डीकेटर लाइट जगनी चाहिए.

टीटीएल और मैनुअल फ्लैश के बीच अंतर -

यदि टीटीएल आपके कैमरे पर ऑटो मोड की तरह है, तो मैन्युअल मोड कैमरे के मैन्युअल मोड की तरह है जिसमें सभी सेटिंग्स खुद ही करनी पड़ती हैं. दोनों ही मोड के अपने -अपने लाभ और हानियाँ हैं. एक परिदृश्य के लिए आप टीटीएल और दूसरे के लिए मैनुअल का उपयोग कर सकते हैं. जैसे ही आपके सब्जेक्ट और कैमरे के बीच की दूरी बदलती है, टीटीएल फ़्लैश आउटपुट को स्वचालित रूप से एडजस्ट कर देता है.

मैन्युअल फ़्लैश उन परिदृश्यों में सर्वोत्तम है जहां आप प्रकाश स्रोत पर सबसे अधिक नियंत्रण चाहते हैं. यदि सब्जेक्ट और फ़्लैश के बीच की दूरी तेजी से नहीं बदलती है तो भी उपयोगी है. अगले पृष्ठ पर दिए चित्रों से दोनों मोड में अंतर स्पष्ट समझ सकते हैं.

सारांश ; टीटीएल मोड चूँकि लाइट के अनुसार फ़्लैश फायर करता है इसलिए यह गतिशील सब्जेक्ट के लिए उपयुक्त है. लेकिन अक्सर, मैन्युअल फ़्लैश मोड से बेहतर परिणाम मिलेंगे.

टीटीएल और मैनुअल के बीच चयन करना प्राथमिकता का विषय नहीं, बल्कि आपका ध्यान सब्जेक्ट के प्रकाश परिदृश्य पर होना चाहिए.

स्लेव यूनिट (Slave Unit) : डीएसएलआर फोटोग्राफी में, "स्लेव यूनिट" का मतलब एक बाहरी फ्लैश या स्ट्रोब लाइट है जो डी एस एल आर की फ्लैश से ट्रिगर होती है. जब डी एस एल आर फ्लैश ऑन होता है, तो यह स्लेव यूनिट को एक संकेत भेजता है. इससे यह डीएसएलआर फ़्लैश के साथ ही फ्लैश होता है. स्लेव यूनिट्स को बिना किसी तार के इन्फ्रारेड, रेडियो सिग्नल, या एक अंतर्निहित ऑप्टिकल सेंसर के माध्यम से वायरलेस तरीके से चालू किया जा सकता है. यह सेंसर मास्टर / डीएसएलआर फ़्लैश से प्रकाश का पता लगाता है. उससे निकलने वाली लाइट को स्लेव यूनिट का वायरलेस सेंसर पकड़ता है.

बाहरी फ़्लैश सेट करने का तरीका - चूंकि हम अपनी फ़्लैश को कैमरे से दूर इस्तेमाल करते हैं इसलिए हमें कोई स्टैंड चाहिए होगा जिस पर फ़्लैश लगा सकें. एक कम वज़न का स्टैंड जैसा कि तस्वीर में देख सकते हैं, उचित रहेगा.

मैन्युअल मोड पर स्विच करें - अगर हम कैमरे की फ़्लैश को एस 1(स्लेव 1) मोड में रखते हैं तो फ़्लैश को मैन्युअल मोड में रखना होगा.

एक्सटर्नल फ़्लैश 1 /32 पावर पर सेट करें. कैमरे की अंतर्निर्मित फ़्लैश के, ट्रिगर के रूप में कार्य करने के लिए, कैमरे के फ़्लैश मेन्यू में अंतर्निर्मित फ़्लैश ऑप्शन को चुनें. उसमें भी इन बिल्ट (in built) ऑप्शन का चयन करेँ. अपने सब्जेक्ट और लाइट को पोजीशन कर कैमरे फ़्लैश ऑपरेट करें. अंतर्निर्मित फ़्लैश से लाइट फायर होते ही स्लेव फ़्लैश तुरंत सक्रिय हो जाती है. लेकिन सुनिश्चित करें कि कैमरे का फ़्लैश सिंक अधिक न हो.

टी टी एल पर कैसे शूट करें?- अपने हॉट शू फ्लैश को उसके टीटीएल मोड पर सेट करें, ताकि कैमरा यह नियंत्रित कर सके कि फ्लैश कितना शक्तिशाली है. यह आपके द्वारा उपयोग की जा रही एक्सपोज़र सेटिंग्स पर निर्भर करता है. इस तरह, यदि आप अपर्चर बदलते हैं, तो फ़्लैश क्षतिपूर्ति करेगी . टी टी एल पर शूट करने के लिए स्लेव यूनिट में S 2 ऑप्शन चुनें. स्लेव फ़्लैश पहले फ़्लैश (प्री-फ़्लैश) को अनदेखा करती है और दूसरे फ़्लैश पर सक्रिय होती है, जो वास्तविक एक्सपोज़र फ़्लैश है.

कैमरा डायल पर एक मोड चुनें - चूँकि आपका कैमरा फ़्लैश आउटपुट को स्वचालित रूप से नियंत्रित करेगा, आप शूटिंग मोड को प्रोग्राम, अपर्चर प्राथमिकता, या शटर प्राथमिकता पर सेट कर सकते हैं. लेकिन सुनिश्चित करें कि कैमरे की फ्लैश सिंक गति से अधिक न हो.

ट्रिगर: एक छोटा सा इंस्ट्रूमेंट है जिसे डीएसएलआर कैमरे के हॉट शू पर लगाया जाता है. यह दो फ़्लैश को एकसाथ ऑपरेट करने में मदद करता है. ट्रिगर ऑन करने के साथ ही उसके आसपास लगी फ़्लैश कैमरे की एक क्लिक के साथ कार्य करना शुरू कर देती है.

फ़्लैश की दो और विशेषताएं

मल्टी फ्लैश मोड - यह मूलतः स्टूडियो लाइटिंग में एक तकनीक है. इसका उपयोग एक सिंगल शॉट में कई बार फ्लैश करने के लिए किया जाता है. फ़्लैश का मल्टी मोड चयन कर एकल एक्सपोज़र एक विशिष्ट दर पर निर्धारित संख्या में फ़्लैश फायर की सुविधा मिलती है . मुख्य उद्देश्य गतिशील वस्तुओं की गतिविधि को कैप्चर करना होता है. जैसे एक फास्ट मूविंग सब्जेक्ट नर्तक या धावक की कई तरह की पोज़िशन को एक ही फ्रेम में दिखाने के लिए या क्रिएटिव फोटोग्राफी में विभिन्न प्रकाश इफेक्ट्स जोड़ने के लिए.

टीसीएम - टीसीएम का मतलब है "टीटीएल कन्वर्टेड टू मैनुअल." टीटीएल (लेंस के माध्यम से) एक स्वचालित फ्लैश मीटरिंग प्रणाली है जो किसी दिए गए दृश्य के लिए इष्टतम फ्लैश आउटपुट निर्धारित करने के लिए कैमरे की मीटरिंग प्रणाली का उपयोग करती है. यह फ्लैश के लिए एक फ़ंक्शन है जो आपको टीटीएल (TTL) मोड में शूटिंग शुरू करने और फिर फ्लैश और कैमरे की सेटिंग्स को मैन्युअल मोड में बदलने की अनुमति देता है. इसका मतलब है कि आप पहले स्वचालित रूप से एक्सपोजर प्राप्त कर सकते हैं और फिर मैन्युअल नियंत्रण के लिए सेटिंग्स को लॉक कर सकते हैं.

कैसे काम करता है?

1. टीटीएल मोड - प्रारंभ में, फ्लैश टीटीएल मोड में संचालित होता है, जो कैमरे की मीटरिंग के आधार पर स्वचालित रूप से सही फ्लैश आउटपुट का निर्धारण करता है.

2. मैनुअल में रूपांतरण - जब टीसीएम सक्रिय होता है, तो फ्लैश टीटीएल-निर्धारित आउटपुट सेटिंग्स को कैप्चर करता है और फिर उन सेटिंग्स को बरकरार रखते हुए मैनुअल मोड में स्विच हो जाता है.

सारांश; टीटीएल मोड आपको प्रारंभिक मीटर रीडिंग लेने की अनुमति देता है. फिर टीसीएम उस रीडिंग को मैन्युअल सेटिंग्स में "लॉक" कर देता है. दूसरे शब्दों में, यह आसान मीटरिंग और लगातार सटीक फ़्लैश लाइट प्रदान करता है.

24. रिफ्लेक्टर का उपयोग

रिफ्लेक्टर क्या है? फोटोग्राफी रिफ्लेक्टर एक टूल है जिसका उपयोग पहले से मौजूद प्रकाश का उपयोग और नियंत्रण करने में मदद करता है. जो अक्सर बड़े, गोलाकार या आयताकार पैनल के रूप में होते हैं. रिफ्लेक्टर तब उपयोगी होते हैं जब एक निश्चित दिशा से ही प्रकाश आ रहा हो, लेकिन फोटोग्राफर अन्य दिशाओं से भी अधिक प्रकाश चाहता हो. रिफ्लेक्टर प्रकाश उत्पन्न नहीं करते हैं, बल्कि जैसा नाम से ही स्पष्ट है कि ये उपकरण सूर्य की रोशनी को सब्जेक्ट पर प्रतिबिंबित करने के लिए प्रयुक्त होता है.

रिफ्लेक्टर का महत्व तथा उपयोग

एक फोटोशूट में कई चीजों का विशेष महत्व होता है. इन में से एक है रिफ्लेक्टर. फोटोशूट के दौरान सब्जेक्ट पर रिफ्लेक्टर का उपयोग करने से तस्वीर में रोशनी की गुणवत्ता पर अच्छा खासा प्रभाव पड़ता है.

रिफ्लेक्टर ऐसे उपकरण हैं जो शैडो को बेहतर दिखाने में मदद करते हैं. दिन के समय बाहर लोगों की तस्वीरें लेते समय, उनके चेहरे पर अजीब शैडो को ठीक करने के लिए रिफ्लेक्टर का उपयोग किया जा सकता है. जब सूरज उनके पीछे चमक रहा हो तो वे सब्जेक्ट का सिल्हूट बनने से भी रोक सकते हैं.

फोटोग्राफर किसी सब्जेक्ट पर लाइट बाउंस करने और री - डायरेक्ट करने, शैडो फिल करने और एक सीन में लाइट को बढ़ाने के लिए रिफ्लेक्टर का उपयोग करते हैं. ये विभिन्न रंगों और मैटेरियल में आते हैं, जैसे कि सफेद, सिल्वर ,

गोल्ड और translucent (अल्प पारदर्शी). प्रत्येक का प्रतिबिंबित प्रकाश अलग-अलग प्रभाव पैदा करता है यानि सिल्वर और गोल्ड दोनों ही रंगों के रिफ्लेक्टर अलग -अलग इफ़ेक्ट देते हैं. वांछित प्रकाश प्रभाव प्राप्त करने और तस्वीरों की क्वालिटी में सुधार करने के लिए, पोर्ट्रेट फोटोग्राफी, आउटडोर शूट और स्टूडियो सेटअप के लिए रिफ्लेक्टर आवश्यक हैं. इसका उपयोग फोटो पत्रकारिता में नहीं होता, लेकिन मॉडलिंग, फ़ैशन-शो विवाह-समारोह , प्रोडक्ट-फोटोग्राफी, इवेंट-शूट और स्टूडियो फ़ोटोग्राफ़ी जैसे कई अन्य क्षेत्रों में होता है.

फोटो पत्रकारिता में रिफ्लेक्टर का उपयोग

फोटो पत्रकारिता में इसका इस्तेमाल दुर्लभ ही होता है. वास्तव में यह उन फोटो पत्रकारों के लिए उपयोगी है जो अक्सर बेहतर रोशनी न होने वाली जगहों पर काम करते हैं. रिफ्लेक्टर के कुछ लाभ देखें :

1.रिफ्लेक्टर और फ्लैश का उपयोग कर, फोटोग्राफर अपनी तस्वीरों को बेहतर बना सकते हैं. वे अपनी तस्वीरें बेहतर दिखाने के लिए विभिन्न स्थितियों में रिफ्लेक्टर के उपयोग के विभिन्न तरीके सीख सकते हैं.

2. रिफ्लेक्टर को उपयोग करने से किसी भी फोटो - पत्रकार में लाइट कंडीशंस को बेहतर तरीके से समझने की ताकत आती है.

3 .कई बार फोटो-पत्रकरिता से विद्यार्थी सिनेमा या फोटोग्राफी की अन्य विधाओं को भी अपनाते हैं, तब भी रिफ्लेक्टर के इस्तेमाल की जानकारी काम आती है.

इसका उपयोग कैसे करें ?

सही रिफ्लेक्टर चुनें - रिफ्लेक्टर विभिन्न आकार और रंगों में आते हैं. आम तौर पर सफेद, सिल्वर, गोल्डन और translucent(अल्प पारदर्शी) शेड में. अलग - अलग उद्देश्य के अनुसार रिफ्लेक्टर का चुनाव करते हैं. यह सब निर्भर करता है कि किस तरह के परिणाम चाहियें. यदि सब्जेक्ट के चेहरे पर सुनहरी चमक देनी हो या गर्म टोन देनी हो तो गोल्डन रिफ्लेक्टर का उपयोग किया जाता है. मिसाल के तौर पर दूल्हे या दुल्हन के पारम्परिक लिबास में फोटोग्राफी के लिए आप गोल्डन रिफ्लेक्टर का इस्तेमाल करेंगे.

गोल्डन रिफ्लेक्टर- इसका उपयोग बाहर ही करना बेहतर है. वहां ये सूर्य की छटा को और बढ़ा देता है. इस रिफ्लेक्टर का उपयोग ज्यादातर सूर्योदय या सूर्यास्त के समय अतिरिक्त गोल्डन रोशनी को कैप्चर करने के लिए किया जाता है.

इसे यदि घर या स्टूडियो के अंदर उपयोग किया जाए तो वही प्रभाव होगा जो बाहर होगा. लेकिन इंडोर फोटोग्राफी में परावर्तित होने वाली लाइट काफी हार्श होगी, ज्यादा पीलापन लिए होगी. यदि आप वह पीला रंग नहीं चाहते हैं तो सब्जेक्ट से रिफ्लेक्टर की दूरी थोड़ी बढ़ा दें. परन्तु गोल्डन रिफ्लेक्टर आउटडोर फोटोग्राफी के लिए अधिक उपयुक्त है.

सफ़ेद रिफ्लेक्टर - इनडोर और आउटडोर उपयोग के बीच अधिक उपयुक्त सफ़ेद रिफ्लेक्टर है. चूंकि यह सिल्वर रिफ्लेक्टर जितनी रोशनी न ही कैच करता है और न ही उतना बाउंस करता है , इसलिए यह इनडोर रिफ्लेक्टर और आउटडोर रिफ्लेक्टर के बीच का है. इसे अक्सर स्टूडियो या घर के अंदर और बाहर दोनों जगह बेहतरीन तरीके से उपयोग किया जा सकता है. यह उत्पाद फोटोग्राफी के लिए उपयुक्त है. सफेद रिफ्लेक्टर का उपयोग करते समय लाइट अन्य रिफ्लेक्टर की तुलना में कम रिफ्लेक्ट होती है. इसलिए यह गोल्डन और सिल्वर के रिफ्लेक्टर की तुलना में तटस्थ और सॉफ्ट लाइट को प्रतिबिंबित करता है.

सिल्वर रिफ्लेक्टर - यह लाइट को सबसे अधिक रिफ्लेक्ट करता है. ये स्टूडियो में सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले रिफ्लेक्टर हैं, क्योंकि इनसे परावर्तित प्रकाश का रंग नहीं बदलता और रोशनी तटस्थ तथा संतुलित रहती है. यदि सब्जेक्ट कैमरे से अलग-अलग दूरी पर हो तब भी यह रिफ्लेक्टर बेहतर परिणाम देता है.

ब्लैक रिफ्लेक्टर - काला "रिफ्लेक्टर" एक ऐसा उपकरण है जो छाया बनाने में मदद करता है. यह सब्जेक्ट पर उतना प्रकाश प्रतिबिंबित नहीं करता कि वह अधिक गहरा हो जाये. यह अन्य परावर्तकों से भिन्न है, क्योंकि यह प्रकाश को परावर्तित करने के बजाय अवशोषित करता है. यह परावर्तक तब उपयोगी होता है जब चारों ओर बहुत अधिक प्रकाश बाउंस हो रहा हो और आप वस्तु पर प्रकाश की मात्रा कम करना चाहते हों. इसका उपयोग अक्सर स्टूडियो में कुछ प्रकाश को अवरुद्ध करने और चित्र में सब्जेक्ट को बेहतर दिखाने के लिए किया जाता है. यह उन चीज़ों की तस्वीरें लेने के लिए बहुत अच्छा है जो प्रकाश को प्रतिबिंबित करती हैं.

रिफ्लेक्टर का समुचित उपयोग भी लगातार अभ्यास से करना आएगा. प्रकाश को सही दिशा में बाउंस करने के लिए आपको रिफ्लेक्टर को इधर-उधर घुमाना होगा. जब तक आपको सर्वोत्तम स्थिति न मिल जाए तब तक अलग-अलग स्थिति आज़माते रहें. फिर, रिफ्लेक्टर को उसी स्थिति में रखने के लिए किसी व्यक्ति या किसी विशेष उपकरण का उपयोग करें. विभिन्न प्रकार के रिफ्लेक्टर आपकी तस्वीरों को बेहतर दिखाने में मदद कर सकते हैं.

रिफ्लेक्टर को प्रभावी ढंग से कैसे पकड़ें?

पोजिशनिंग - यदि आप रिफ्लेक्टर को सीधे प्रकाश स्रोत के सामने रखते हैं, तो आपको सबसे अधिक या सबसे चमकीला प्रकाश मिलेगा. इस चित्र को देखिये. यह फोटो तब लिया गया था, जब सूरज ढल रहा था. उस समय इस सब्जेक्ट को ऐसी स्थिति में रखा गया कि प्रकाश पीछे से आ रहा था (बैकलाइट). रिफ्लेक्टर का उपयोग, रोशनी को उनके चेहरे पर समान रूप से डालने के लिए किया गया. इस पोजिशन से सब्जेक्ट पर अच्छी नरम रोशनी मिलती है

और रिम लाइट की गहराई पैदा करती है. इससे आपका सब्जेक्ट पृष्ठभूमि से अलग हो जाता है और फोटो बेहद प्रभावशाली/शानदार दिखता है.

गर्मियों में शाम 4 बजे के आसपास की रोशनी अक्सर गर्म और सुनहरी होती है, क्योंकि सूरज आसमान में नीचे होता है. एक रिफ्लेक्टर इस गर्म रोशनी को बढ़ाता है. सब्जेक्ट में एक सुनहरी चमक दे कर वह अधिक आकर्षक और नेचुरल लुक प्रदान करता है .

फिल लाइट के लिए रिफ्लेक्टर का उपयोग करें

यह रिफ्लेक्टर फोटोग्राफी करने का सबसे सरल और बेहद उपयोगी तरीका है. जब दोपहर के समय शूटिंग कर रहे हों और कड़ी धूप आपके विषय की नाक, आंखों और ठुड्डी के नीचे छाया बना रही हो तो इसे प्रयोग करें. अगर आप छाया में शूटिंग कर रहे हैं तो सिल्वर रिफ्लेक्टर का इस्तेमाल करें. अगर आप धूप में फोटोग्राफी कर रहे हैं तो सफेद रिफ्लेक्टर का इस्तेमाल करें. नीचे से प्रकाश डालकर, रिफ्लेक्टर जॉ-लाइन और गर्दन उभार सकते हैं. इससे ऊपर की

ओर एक हल्की सी छाया बनती है जो इन विशेषताओं को अधिक स्पष्ट रूप से निखार सकती है. ये परछाई रिफ्लेक्टर की सहायता से ख़त्म हो जाएंगी तथा सब्जेक्ट सुन्दर और प्रकाशित दिखाई देगा.

नीचे दी गई छवि प्राप्त करने के लिए इसे विषय की ठोड़ी के नीचे सफेद रिफ्लेक्टर के साथ शूट किया गया था. गर्मियों में शाम की रोशनी अक्सर गर्म, सुनहरी होती है क्योंकि सूरज आसमान में नीचे होता है. रिफ्लेक्टर इस गर्म रोशनी को बढ़ा कर सब्जेक्ट में एक सुनहरी चमक जोड़ देगा और अधिक आकर्षक और नेचुरल लुक देगा. नीचे से प्रकाश डालकर, रिफ्लेक्टर जॉलाइन और गर्दन उभार सकते हैं. इससे एक हल्की सी छाया ऊपर की ओर बनती है जो इन विशेषताओं को अधिक स्पष्ट रूप से निखार सकती है.

कोण और दूरी - फ़ोटोग्राफ़र को तस्वीरें लेते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह रिफ्लेक्टर कहाँ लगाए. यदि यह बहुत करीब है, तो चित्र अच्छा नहीं बनेगा. रेफ्लेक्टेड लाइट को अच्छा दिखाने के लिए उन्हें सही कोण और दूरी ढूंढनी होगी. रिफ्लेक्टर कितना चमकीला है यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह प्रकाश से कितनी दूर है. जैसे-जैसे प्रकाश स्रोत और रिफ्लेक्टर के बीच की दूरी कम होती जाती है, रिफ्लेक्टर पर पड़ने वाली रोशनी बढ़ती जाती है.

सहायक या स्टैंड- यदि फोटोग्राफर के पास कोई सहायक है, तो वह रिफ्लेक्टर को पकड़ सकता है. इससे इसे सटीक स्थिति में रखना आसान हो जाता है. यदि फोटोग्राफर अकेले काम कर रहे हैं, तो रिफ्लेक्टर स्टैंड या लाइट स्टैंड से जुड़े होल्डर का उपयोग भी किया जा सकता है. इससे फोटोग्राफर के हाथ कैमरा चलाने के लिए फ्री हो जाते हैं.

ध्यान भटकाने वाली छाया से बचें - अपने सब्जेक्ट पर रिफ्लेक्टर द्वारा डाली गई छाया से फोटोग्राफर को सचेत रहना चाहिए. अवांछित छाया को कम करने के लिए कोण और दूरी को समायोजित करें और सुनिश्चित करें कि परावर्तित प्रकाश आपके विषय की विशेषताओं के अनुरूप हो.

इन चित्रों को देख कर आप समझ सकते हैं कि कैसे थोड़ी सी पोजीशन बदल कर रिफ्लेक्टर की समान रोशनी सब्जेक्ट पर दी जा सकती है.

डिफ्यूजर अटैचमेंट - कुछ रिफ्लेक्टर एक डिफ्यूजर पैनल के साथ आते हैं. इनका उपयोग परावर्तित प्रकाश को सॉफ्ट और फैलाने के लिए किया जा सकता है. यह विशेष रूप से पोर्ट्रेट के लिए अधिक आकर्षक और समान रोशनी बनाने में मदद कर सकता है.

प्रयोग - यदि एक पोजिशन पर रखने से सब्जेक्ट पर अपेक्षित रोशनी नहीं आ रही है तो रिफ्लेक्टर को दूसरे कोण से उपयोग करने का प्रयोग किया जाना चाहिए. विभिन्न कोणों और दूरियों के साथ प्रयोग करने से न डरें. फोटोग्राफी एक रचनात्मक प्रक्रिया है और प्रत्येक शॉट के लिए प्रकाश का सही संतुलन खोजने के लिए कुछ परीक्षण की आवश्यकता हो सकती है.

कंसिस्टेंसी -यदि फोटोग्राफर किसी फोटोशूट की सीरीज़ शूट कर रहे हैं, तो अपनी छवियों में एक सुसंगत रूप सुनिश्चित करने के लिए लगातार रिफ्लेक्टर प्लेसमेंट और सेटिंग्स बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए.

अभ्यास - किसी भी फोटोग्राफी तकनीक की तरह, रिफ्लेक्टर को प्रभावी ढंग से पकड़ने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है. जितना अधिक रिफ्लेक्टर के साथ काम करेंगे, अपनी फोटोग्राफी को बेहतर बनाने के लिए उसका उतना ही बेहतर उपयोग कर पाएँगे.

याद रखें कि आपकी विशिष्ट तकनीकें और उपकरण, आप की फोटोग्राफी के प्रकार (जैसे, पोर्ट्रेट, उत्पाद, आउटडोर, स्टूडियो), उपलब्ध प्रकाश व्यवस्था की स्थिति और आपकी रचनात्मक दृष्टि के आधार पर भिन्न हो सकते हैं.

25. फोटोग्राफी में वाइट बैलेंस क्या है.

“ फोटो पत्रकार राजेश पुंजनानी कहते हैं कि “वाइट बैलेंस (White Balance) सबसे ज़रूरी कैमरा सेटिंग है. इससे सटीक कलर्स में पिक्चर्स क्लिक कर सकते हैं. न केवल नवोदित फोटोग्राफर को कैमरे पर व्हाइट बैलेंस करना मुश्किल लगता है,बल्कि अनुभवी फोटोग्राफर को भी इस समायोजन और तस्वीरों पर पड़ने प्रभावों को समझने में वक़्त लगता है.“

व्हाइट बैलेंस करना महत्वपूर्ण है क्योंकि कैमरा इंसान की तरह रंग की पहचान नहीं कर सकता. आप जब भी किसी भी रंग को देखते हैं तो वो लाइट सोर्स (source) को देख कर यह जान लेते हैं कि ये रंग इस विशेष लाइट सोर्स के कारण अलग दिख रहा है. अगर सफ़ेद रंग थोड़ा पीला या क्रीम रंग का भी दिखाई देगा तो भी यह समझ आ जाएगा कि ये ब्लब ,फ़्लोरोसेंट या ट्यूब लाइट के कारण अलग लग रहा है. लेकिन कैमरा ये नहीं समझ सकता कि लाइट का सोर्स अलग होने के कारण सब्जेक्ट/ऑब्जेक्ट का रंग अलग नज़र आ रहा है. इसलिए, जब वाइट बैलेंस बंद होता है, तब फोटो में रंग थोड़े अलग नज़र आते हैं . जैसे फ्लोरोसेंट लाइट(fluorescent light) में फोटो में थोड़ा हरा रंग नज़र आ जाता है. अतः कैमरा को ये बताना पड़ता है कि ये लाइट अलग है और इस लाइट में सब्जेक्ट को वाइट दिखाना है. केवल सफ़ेद ही नहीं, आप को यह भी सुनिश्चित करना होता है कि फोटो में बाकी रंग भी प्रकाश स्रोत से प्रभावित हुए बिना, स्वाभाविक रूप से दिखाई दें. इस प्रक्रिया को वाइट बैलेंस कहते हैं.

फोटोग्राफी में वाइट बैलेंस को समझने के लिए, यह जानना ज़रूरी है कि वाइट बैलेंस और रंग तापमान कैसे कार्य करते हैं. वर्ना तस्वीर में रंग वार्म या कूल टोन ले लेंगे जिसे फोटोग्राफी के दौरान नोटिस नहीं कर सकते. इसे "कलर कास्ट" कहा जाता है.

वाइट बैलेंस और रंग तापमान - आइए समझते हैं कि कूल, न्यूट्रल और वार्म क्या होता है?

कूल -अगर किसी तस्वीर में ब्लूइश टोन है तो उसे कूल कहते हैं. अगले पन्ने पर देखें - पहली तस्वीर कूल है, क्योंकि स्पष्ट नज़र आ रहा है कि रंग थोड़ी नीली टोन में हैं.

वार्म - अगर किसी फोटो में रेड या ऑरेंज तरह की टोन दिख रही हैं, तो उसे वार्म कलर कहते हैं. दूसरी फोटो को वार्म कहेंगे क्योंकि इसमें थोड़े रेडिश टोन्स, थोड़े ऑरेंज टोन्स दिख रही हैं.

न्यूट्रल कलर –जिस तस्वीर में कोई टोन नहीं है और सारे रंग बिल्कुल वैसे ही दिख रहे हैं जैसे कि वो हैं, तो उसे न्यूट्रल कहा जाता है. तीसरी फोटो न्यूट्रल है क्योंकि इसमें किसी भी तरह की कोई टोन नहीं है. इसमें सारे रंग उसी तरह दिख रहे हैं जैसे कि वो होने चाहियें.

व्हाइट बैलेंस को समझने के लिए ये जानना बहुत ज़रूरी है कि इन तीन तरह की टोन्स में क्या अंतर् है और ये कैसे दिखते हैं? दुनिया रंगीन है. हमारे आसपास कई तरह की लाइट हैं. 24 घंटे रोशनी की तीव्रता अलग - अलग होती है. दिन के अलग-अलग वक़्त पर रोशनी/प्रकाश का रंग भिन्न हो जाता है. सूर्यास्त के समय की तुलना में दोपहर के समय सूर्य के प्रकाश का रंग - तापमान भिन्न हो सकता है. केवल नेचुरल ही नहीं आर्टिफिशल लाइट भी एक दूसरे से अलग होती हैं भले ही वे बिल्कुल समान दिखाई दें. इन्हीं बदलते रंगों का असर फोटो पर पड़ता है. इसी कारण वो कभी वार्म और कभी कूल हो जाती हैं, क्योंकि कैमरे का सिस्टम ये नहीं समझ सकता कि वो इन तस्वीरों को न्यूट्रल कैसे बनाए?

कलर टेम्परेचर या रंग - तापमान क्या है? फोटोग्राफी की भाषा में पीली /संतरी रंगत वाली रोशनी वार्म टेम्प्रेचर **(warm temperature)** वाली लाइट कहलाती है. सफेद या नीली रंग की रोशनी को कूल टेम्प्रेचर **(cool temperature)** वाली लाइट कहते हैं. याद रखिए यह वार्म या कूल टेंप्रेचर केवल नाम है. इन्हें रोशनी के तापमान के रूप में न समझें. हर रोशनी का कलर टेंप्रेचर निर्धारित है. इसे केल्विन (K) से निर्दिष्ट करते हैं. यह चार्ट देखिए -

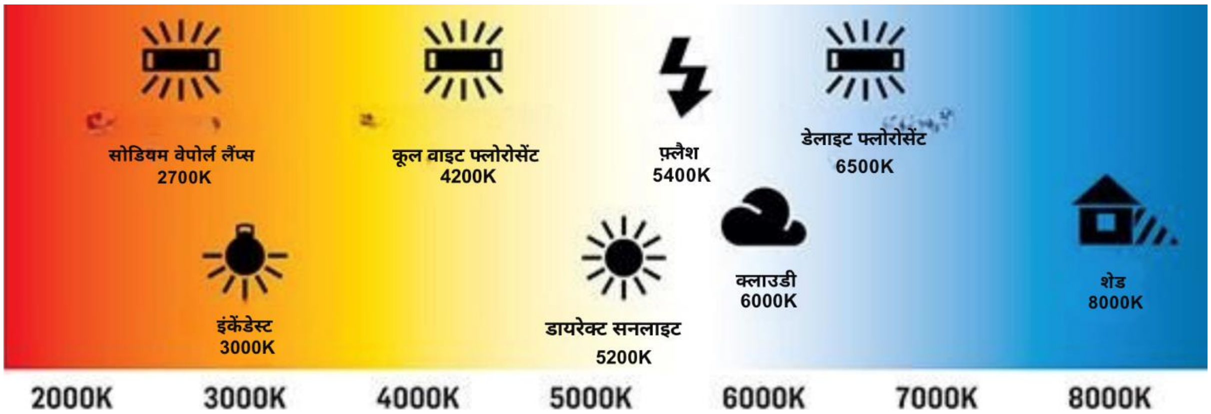

कलर टेम्परेचर (केल्विन)

जिस तरह से मौसम को डिग्री में नापा जाता है ठीक उसी तरह से रंग कलर टेम्परेचर (K) की इकाइयों में मापा जाता है. जैसे -जैसे केल्विन बदलते जाते हैं वैसे - वैसे कलर टेम्परेचर भी बदलता जाता है. हर कैमरे में कलर टेम्परेचर सेटिंग लगभग 2,500 केल्विन से लेकर 10,000 केल्विन तक होती है. 2,500 केल्विन पर फोटो पीली /संतरी रंगत का हो जाता है. फोटोग्राफर को बस इतना याद रखना है कि जितना कलर टेम्परेचर अधिक होगा, उतनी फोटो ब्लू या कोल्ड होंगी यानि कूल कहलायेंगी. कलर टेम्परेचर 1000 से 4000 केल्विन तक होगा तो फोटोग्राफ पीली रगंत लिए होगा, तो तस्वीरें वार्म होंगी. जो लाइट बिल्कुल सफ़ेद यानी प्योर व्हाइट होती है, वो 2,500 केल्विन और 10,000 केल्विन के बीच में पड़ती है यानी 5,500 केल्विन पर. आमतौर पर 12 बजे की दिन की लाइट 5,500 केल्विन की होती है. इसीलिए इसे डे-लाइट टेम्परेचर भी कहते हैं.

कैमरों में व्हाइट बैलेंस (White Balance) सेटिंग – अब सवाल यह है कि वाइट बैलेंस कैसे करें? बेसिक और एडवांस्ड दोनों ही तरह के डीएसएलआर में व्हाइट बैलेंस सेट करने की सुविधा होती है. एडवांस कैमरे में बॉडी पर ही इसका बटन होता है. कुछ मॉडल के कैमरे में आप MENU में जाकर इसे सेट कर सकते हैं. डिजिटल कैमरों में अक्सर यह सेटिंग्स मिलती हैं :

दिन का प्रकाश –	तेज़ धूप में शूटिंग कर रहे हों तो इस सेटिंग का उपयोग करें. इसे लगभग 5,200K के रंग तापमान के लिए डिज़ाइन किया गया है, यह वास्तव में दोपहर की धूप की तुलना में थोड़ा ठंडा है. लेकिन यह सेटिंग दिन के अधिकांश समय तक अच्छी तरह से काम करेगी.	

क्लॉउडी (Cloudy)	यह बादल वाले दिनों की शूटिंग के लिए एक बढ़िया विकल्प है . यह मोड फोटो में वार्म टोन बढ़ाता है, यानि कम रोशनी में भी तस्वीर थोड़ा पीलापन लिए होगी.	
शेड (Shade)	शेड सेटिंग को धूप वाले दिन में बाहर बनी ठंडी छाया को कम्पेन्सेट करने के लिए डिज़ाइन किया गया है. यह क्लाउडी से भी अधिक वार्म टोन देता है, शैडो वाली जगह के लिए.	
इन्कैंडिसेंट लैम्प(Incandescent/ Tungsten)	टंगस्टन लाइट को एडजस्ट करने के लिए इस मोड का उपयोग कर सकते हैं. सामान्य घरेलू लाइट का रंग तापमान बनाता है.	
फ्लोरोसेंट(Fluorescent) 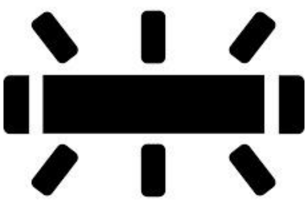	फ्लोरोसेंट दिन के उजाले या सफेद रोशनी का प्रभाव पैदा करता है. कैमरे कई फ्लोरोसेंट सेटिंग्स के साथ आते हैं ताकि विभिन्न तरह की कृत्रिम लाइटिंग के साथ तालमेल बना सकें. ट्यूबलाइट या सीएफएल की सफेद रोशनी के लिए ये मोड उपयुक्त रहेगा.	

फ़्लैश (Flash)	इस सेटिंग को कैमरे के इलेक्ट्रॉनिक फ़्लैश का उपयोग करते समय इस्तेमाल करें. फ्लैश व्हाइट बैलेंस मोड पर स्विच करें जो दिन के उजाले से थोड़ी ठंडी है.	
कस्टम (Custom)	कस्टम सेटिंग फोटोग्राफर को अपना स्वयं का सफेद बैलेंस सेट करने की अनुमति देती है. अक्सर सफेद या ग्रे कार्ड को इस्तेमाल करते हुए वाइट बैलेंस किया जाता है.	
ऑटो (Auto) AWB 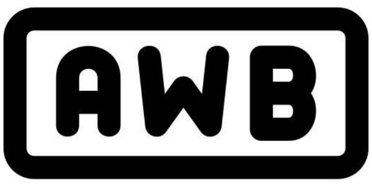	यह ऑटो व्हाइट बैलेंस मोड है. इस दशा में कैमरा दृश्य के अनुसार सटीक अनुमान लगा कर वाइट बैलेंस कर लेता है. फोटोग्राफर को कुछ भी सेटिंग करने की आवश्यकता नहीं. आजकल के कैमरे का व्हाइट बैलेंस अच्छा होता है और 90 % सही भी.	

वाइट बैलेंस कैसे करें - व्हाइट बैलेंस (White Balance) को ऑटो मोड में रखना अक्सर सही रहता है. इस मोड में रोशनी की स्थिति और उसके कलर टेंप्रेचर के आधार पर कैमरे का इमेज प्रॉसेसर स्वतः सही वैल्यू सेट कर लेता है. ऑटो वाइट बैलेंस आम तौर पर सबसे सीधी लाइटनिग स्थितियों के लिए उपयुक्त होगा, लेकिन जब किसी स्थान पर मिक्स रोशनी हो तो कठिनाई शुरू हो सकती है. जैसे किसी भी पार्टी में अलग - अलग तरह की लाइट मिल सकती है. यदि यह रिजल्ट मनमाफ़िक नहीं हैं तो व्हाट बैलेंस के दूसरे मोड्स जाँच सकते हैं.

1. एक मोड चुनें - आप आमतौर पर व्हाइट बैलेंस मोड को ऑटो या सीन मोड के अलावा किसी भी मोड में सेट कर सकते हैं. यदि छायाकार एक्सपोज़र सेट करना चाहता है तो प्रोग्राम मोड फोटोग्राफर के लिए अच्छा है.

2. वाइट बैलेंस स्थापित करना- अपने कैमरे की वाइट बैलेंस सेटिंग्स तक पहुंचें और वह चुनें जो आपके द्वारा शूट की जा रही प्रकाश स्थितियों से सबसे अधिक मेल खाती हो.

3. एक परीक्षण शॉट लें - वाइट बैलेंस मेनू से बाहर निकलें और एक परीक्षण शॉट लें ताकि फोटोग्राफर अपनी सेटिंग्स की सटीकता तक पहुंच सकें.

4. वाइट बैलेंस एडजस्ट करें - यदि परीक्षण शॉट में अप्रत्याशित या अवांछनीय रंग का पता चलता है, तो वाइट बैलेंस को फिर से समायोजित करें.

कस्टम वाइट बैलेंस सेट करना- अक्सर बेहतर होता है अपने कैमरे को ऑटो पर सेट कर दें क्योंकि आजकल के डी एस एल आर का व्हाइट बैलेंस अच्छा होता है. फिर भी लगातार सटीक परिणाम प्राप्त करने के लिए आमतौर पर इसके व्हाइट बैलेंस प्रीसेट में से किसी एक को चुनने की आवश्यकता होती है. यह तब होता है जब आप अपने आप को जिद्दी कलर कास्ट पर फोटो से हटाने की कोशिश करतें हैं. खासकर तब होता है जब मिश्रित मिक्सड लाइटिंग की स्थिति में तस्वीर लेने की कोशिश कर रहे होते हैं, जहां दो या दो से अधिक प्रकाश स्रोतों का रंग तापमान बहुत अलग होता है, और ऐसे में कस्टम व्हाइट बैलेंस सेट करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है. प्री सेट या कस्टम व्हाइट बैलेंस यानि फोटोग्राफर कैमरा को ख़ुद बताते हैं कि ये व्हाइट है. ये सफ़ेद रंग है और कैमरा बाक़ी रंगों को स्वतः ही एडजेस्ट कर लेता है. प्री सेट या कस्टम व्हाइट बैलेंस सेट करने का अधिकतर एक ही तरीक़ा होता है. कैमरा को एक सफ़ेद काग़ज़ दिखा कर या वाइट बैलेंस डिस्क उसकी तस्वीर लेनी होती है.

कैसे करें - यदि पीली या टंगस्टन रोशनी के कारण यदि सब्जेक्ट भी पीला दिखाई दे रहा है तब फोटोग्राफर को कलर टेम्परेचर 5,600 केल्विन करना होगा इस तरह से नेचुरल कलर प्राप्त कर सकते हैं .

इसी तरह से अगर सब्जेक्ट पर ब्लू लाइट पड़ रही है जिससे कि सब्जेक्ट ब्लू दिखाई दे रहा है तो कैमरे का केल्विन यानि कलर टेम्प्रेचर बढ़ा कर 5000 से ऊपर लाकर व्यक्ति के त्वचा या नेचुरल रंग का फोटो क्लिक कर सकते हैं.

कलर टेम्प्रेचर की मदद से व्हाइट बैलेंस सेट करने की सुविधा एडवांस्ड डीएसएलआर कैमरों में होती है.

सारांश ; व्हाइट बैलेंस के ये सारे मोड्स कॉमन हैं. कैमरा ब्रांड और मॉडल के अनुसार इनके नाम और परिणाम में फर्क होता है. इसलिए, फोटोग्राफर को मॉडलनुसार अपने कैमरे के व्हाइट बैलेंस को अपने 'ट्रायल एंड एरर 'कर अनुभव से खुद समझना पड़ेगा.

26. फोटो संरचना, कंपोजिशन -

नुब्रा वैली में बुद्ध की मूर्ति -फोटो सौजन्य - अजय सूरी

एक बेहतरीन छवि क्या होती है? अलग -अलग शैली के फोटोग्राफर इस सवाल का विभिन्न जवाब देंगे. यदि यह सवाल वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर से पूछा जाए तो वे बताएंगे कि वो फोटोग्राफ्स जो शिकारी-शिकार को प्रदर्शित करते हैं. उनके अनुसार वह तस्वीरें बेहतरीन होती हैं, जो वन्य जीवन में मानवीय हस्तक्षेप से उत्पन्न हुए नकारात्मक प्रभावों को उजागर करती हैं. नेचर फोटोग्राफर्स के अनुसार सूर्यास्त के समय नारियल के पेड़ों का पानी में प्रतिबिंम्ब या पहाड़ों और नीले आसमान की सुंदरता को दर्शाता बेहतरीन लैंडस्केप. यह छवियां अद्भुत लगती हैं वास्तविक तस्वीरों के बिना केवल यह भरोसा कर सकते हैं कि वे उतने ही अविश्वसनीय हैं जितना उल्लेख किया गया है.

यह पूरी तरह से संभव है कि छवियां सम्मोहक ना हों भावहीन हों. क्योंकि सम्मोहक फोटोग्राफी फोटोग्राफी एलिमेंट्स के बारे में नहीं उसकी व्यवस्था के बारे में है. कोई भी फोटो एक फोटोग्राफर के अंतर्मन को दर्शाता है. हर तस्वीर फोटोग्राफर की सोच को प्रकट करती है. एक फोटो फोटोग्राफर के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करती है. फोटोग्राफी रचना एक अविरल यात्रा है जो समय के साथ विभिन्न मार्गों को दर्शाती है. भावनाओं को व्यक्त करने के लिए जैसे शब्दों का महत्व होता है. वही फोटो में कंपोजिशन का होता है. भाषा में व्याकरण के नियम की भांति फोटो संरचना के भी नियम होते हैं. जिनका पालन करने से आकर्षक संरचना होती है.

फोटो का विषय - फोटो में सब्जेक्ट मुख्य फोकस होता है. जो तस्वीर फोटोग्राफर ले रहा है उसका विषय और कहानी क्या या किस पर केंद्रित है इसे भी बयां करना जरूरी होता है. इस तस्वीर में विषय वस्तु क्या है या कौन है? किसी भी फोटो में फोकस बहुत स्पष्ट होना चाहिए. फोटो को देखते ही पाठक / दर्शक का ध्यान मुख्य विषय वस्तु पर जाना चाहिए. उसे समझ आना चाहिए कि फोटो किस संबंध में है. यही सिद्धांत फोटो कंपोजिशन का आधार है.

ऊपर का फोटो फोकस्ड और स्पष्ट नहीं है.लेकिन नीचे का फोटो सब्जेक्ट पर फोकस्ड है.

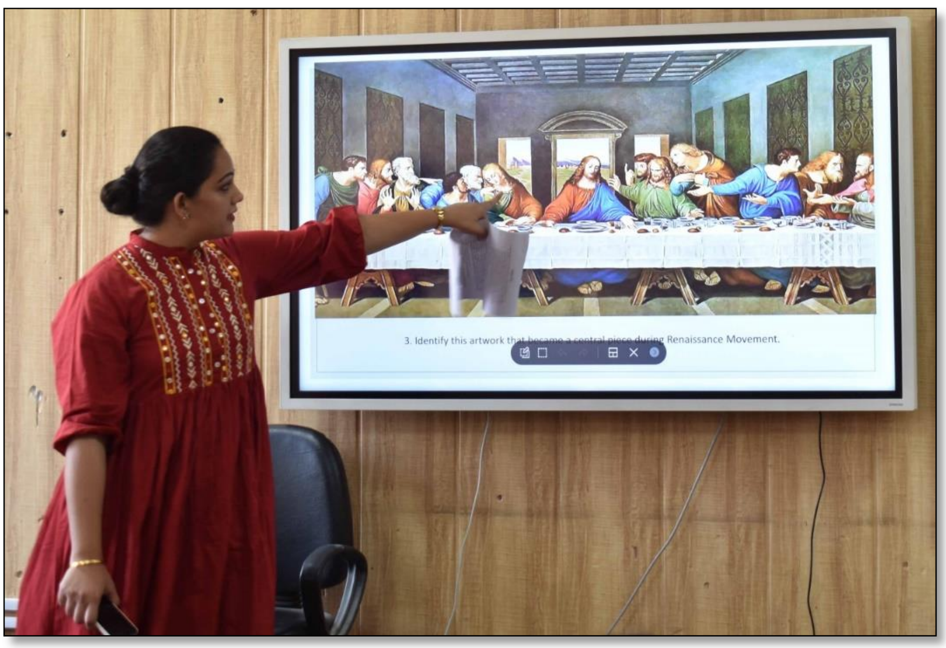

फोटो कंपोजिशन करते हुए कुछ निम्न बिंदुओं का ध्यान रखें -

पृष्ठभूमि, मध्य भूमि व अग्रभूमि - :

जब फोटो पत्रकार एक शॉट को फ्रेम करते हैं तो इसमें अग्रभूमि, मध्य और पृष्ठभूमि होती है. आप गहराई और आयाम बनाकर तस्वीर में दृश्य रुचि जोड़ते हैं. लैंडस्केप फोटोग्राफी में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है. प्रत्येक परत में विभिन्न बनावट या दिलचस्प वस्तुओं को खोजने का प्रयास करें जैसे कि अग्रभूमि में फूल, मध्य मैदान में पानी और पृष्ठभूमि में पहाड़.

दर्शक के सबसे नजदीकी तस्वीर का तत्व फोरग्राउंड (अग्रभूमि) बनाता है. पाठक से सबसे दूर का तत्व बैकग्राउंड (पृष्ठभूमि) है, जबकि बीच का मैदान मिडिल (बीच का) क्षेत्र बनाता है. सभी तस्वीरों में सभी तीन तत्व नहीं होते (या आवश्यकता नहीं होती है) - कुछ में केवल एक अग्रभूमि और पृष्ठभूमि, या एक मध्य जमीन और पृष्ठभूमि हो सकती है. इसके दो उदाहरण नीचे दिए हैं.

जब फोटोग्राफर तीन परतों की पहचान करने में अधिक सहज हो जाता है, तो वह अतिरिक्त फोटोग्राफिक सिद्धांतों को भी शामिल करना शुरू कर सकता है, जैसे लीडिंग लाइन्स या रूल ऑफ़ थर्ड. लीडिंग लाइन्स दर्शकों की रुचि के क्षेत्र में मार्गदर्शन करेंगी, जबकि रूल ऑफ थर्ड्स से मोहक रचनाएं बनाने में मदद मिलती हैं. लेकिन सफल फ़ोटोग्राफ़िक रचना की कई तकनीक हैं जिन्हें ध्यान में रखना चाहिए जिनका जिक्र आगे किया गया है.

समाचार फोटोग्राफी समाचार लिखने की तरह ही है - दैनिक जागरण के वरिष्ठ फोटो पत्रकार ओम प्रकाश पांचाल मानते हैं कि एक छवि को संरचित करना एक लेख लिखने से अलग नहीं है. वो कहते हैं “जब मैंने तस्वीरों का विश्लेषण करना शुरू किया तो मुझे एहसास हुआ कि वे लिखित कहानियों की तरह ही संरचित दृश्य कहानियां थीं. अच्छी तरह से किया गया कोई भी कार्य आसान लगता है और एक अच्छी ख़बर कोई अपवाद नहीं है. समाचार फोटो पर भी यही बात लागू होती है.“ एक फोटो एक हजार शब्दों को अभिव्यक्त करती है.

फोटो की स्थिति एवं संरचना - छवियों में एक एंगल खोजें . सभी कहानियों का एक बिंदु है - एक एंगल है - अन्यथा यह लिखित या बोले गए शब्दों का एक उबाऊ संग्रह की तरह है. इंसान जीवन को आँख के स्तर (Eye Level) पर देखते हैं इसलिए फोटोग्राफर जितना संभव हो उतना एंगल खोजने की कोशिश करते हैं स्वयं की पोजीशन बदलकर फोटो के एंगल चुनते हैं जिससे फोटो दर्शकों के लिए अधिक दिलचस्प बना सकें. ध्यान रहे कि अगर आप अपने विषय की स्थिति को बदल नहीं सकते हैं तो स्वयं की दिशा को बदल सकते हैं. किस पोजीशन से कौन सा एंगल सर्वश्रेठ हो सकता है या बन सकता है उसी एंगल से बेहतर कम्पोज़िशन करते हुए चित्र लेना होता है. आगे दिए गए उदाहरण में, इस दृश्य कहानी को जीवंत करने और अर्थ लाने के लिए एक कोण की आवश्यकता है. उस कोण

को खोजने और तथ्यों को शामिल करने का अर्थ है कि दृश्य कहानी कहीं अधिक रोचक है. नीचे दिखाई गई एक ही फोटो को दो अलग -अलग एंगल से लेने पर दोनों फोटो अलग अलग अर्थ दे रहीं हैं.

तस्वीर में सजीवता लाने के लिए मानवीय तत्व जोड़ें - पायनियर के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट राजेश पुंजानी बताते हैं कि जिस तरह से समाचार में लोगों के कथन / उद्धरण हैं उसी तरह से समाचार तस्वीरों में लोग हैं. जब हम दूसरे मनुष्यों को देखते हैं तो मनुष्य के रूप में हम रुचि रखते हैं.

झमाझम बारिश के दौरान आसमान से बरसती बारिश अच्छी लग सकती है, लेकिन बारिश के बीच बाढ़ग्रस्त इलाके से बाहर निकलने का प्रयास करते हुए निवासियों से सभी पाठक सहानुभूति करेंगे क्योंकि सब उस स्थिति को समझ सकते हैं.

इसी तरह का एक अन्य फोटो देखें.

एक्शन ओरिएंटेड फोटो का इस्तेमाल करें - दैनिक हिंदुस्तान के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट सुभाष शर्मा का कहना है कि एक्शन ओरिएंटेड फोटो ज़्यादा आकर्षक होते हैं. ऐसी तस्वीरें किसी कहानी को जीवंत कर देतीं हैं. अपनी तस्वीर या दृश्य कहानी में ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप अपने विषय से कुछ करवाएं या करते हुए का फोटो खीचें. उदाहरणतः आमतौर पर कुछ करने के लिए हाथ मिलाना होता है या डांस करते हुए एक्शन ओरिएंटेड तस्वीर लें क्योंकि किसी का निष्क्रिय हाथ लटका हुआ देखने से बुरा कुछ नहीं होता. अगले पृष्ठ पर इसके उदाहरण देखें.

डांस फोटोग्राफी - डांस फोटोग्राफी पूरी तरह से मूवमेंट को कैप्चर करना होता है. डांस में पैटर्न्स के लिए देखें. डांसर्स अक्सर नृत्य के दौरान कुछ गतियों या पैटर्न को दोहराते हैं. इन पैटर्न पर ध्यान देकर एक फोटो पत्रकार सहजता से अंदाजा लगा लेगा की अगला स्टेप क्या होगा. यानि दो कलाकार स्टेज पर नृत्य कर रहे हैं और एक बार अपना स्थान बदल रहे हैं तो फिर दोबारा भी बदलेंगे. कुछ देर ध्यान से देखने पर समझ में आ जाएगा कि कब कौन सा स्टेप लिया जाएगा और कब एक्शन ओरिएंटेड फोटो लेना है. डांसर्स के एक बड़े समूह की तस्वीरें खींचते समय डिटेल्ड फोटो के लिए अपर्चर को f/8 के आसपास रखें. छोटे अपर्चर के साथ स्टेज और बैकड्रॉप भी आ सकता है अगर आवश्यकता है तो. किसी एक डांसर या युगल को समूह से अलग विशेष रूप से कवर करने के लिए f/1.4 जैसे बड़े अपर्चर का उपयोग कर सकते हैं. बड़े अपर्चर का इस्तेमाल कर बैकग्राउंड और फोरग्रॉउंड (अगर आवश्यकता है तो) को अलग किया जा सकता है जिससे डांसर्स के भाव कैप्चर किये जा सकते हैं.

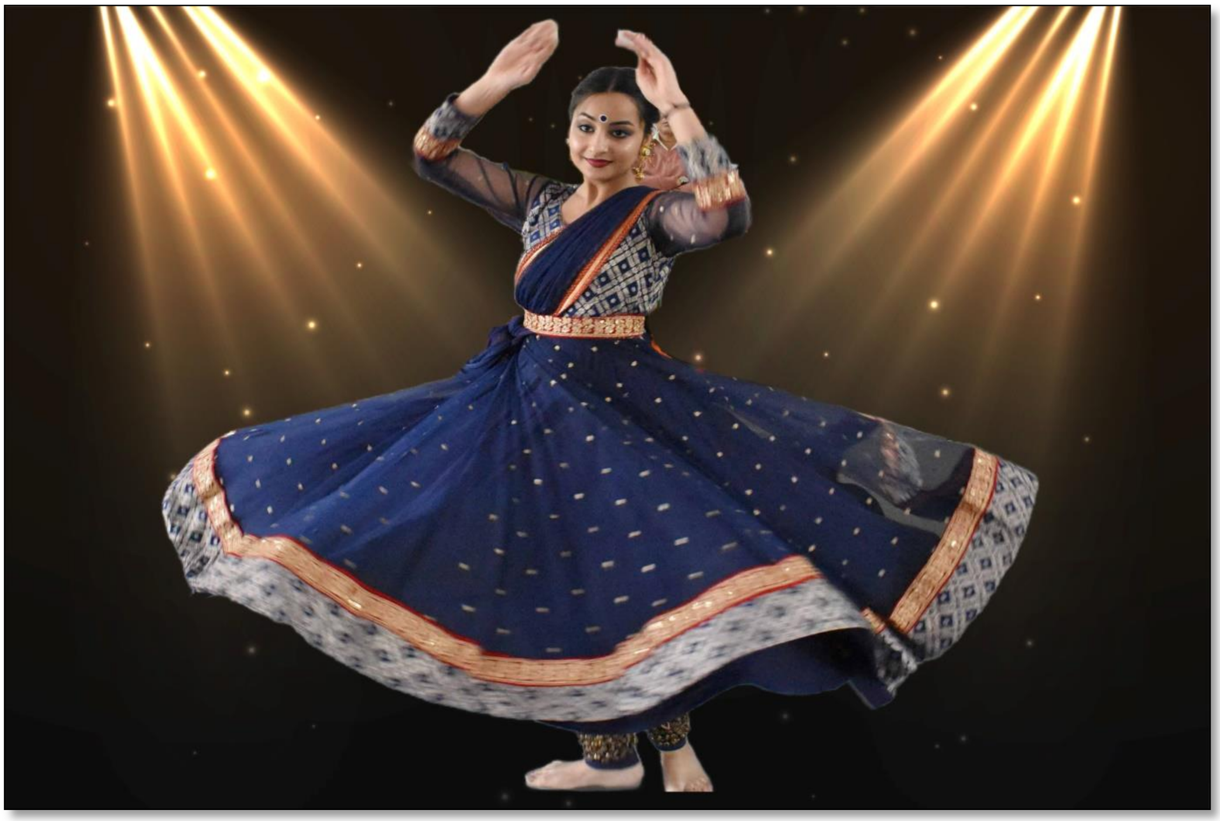

f/5.6, आई एस ओ 6400 और शटर स्पीड 1/160 पर ली गयी इस तस्वीर में डांस मूवमेंट और भाव दोनों ही कैप्चर किये गए हैं.

कैमरा की पोजीशन - स्मार्टफोन और कैमरा उपकरणों को वर्टिकल रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है. इसलिए लोग सहज रूप से एक (पोर्ट्रेट) छवि लेते हैं. लेकिन हम हॉरिज़ॉन्टल दुनिया में रहते हैं. हम हॉरिज़ॉन्टल तरीके से 'बाएं से दाएं' देखते हैं, ऊपर से नीचे नहीं. एक कमरा, समुद्र, क्रिकेट का मैदान, खेत, पार्क ... यह सूची लंबी है.

ध्यान से देखें तो पोर्ट्रेट फोटो में अनावश्यक जानकारी अधिक है. हौरिजौंटल में नर्सरी बेहतर कवर हो रही है.

हमारे टीवी और मूवी स्क्रीन इसी कारण से हॉरिजॉन्टल हैं. अच्छी तरह से ली गई एक तस्वीर और अच्छी तरह से लिखी गई एक कहानी में बेकार जानकारी नहीं होती. अधिकतर वर्टिकल फोटोग्राफ, फ्रेम के बीच में तो प्रासंगिक दृश्य जानकारी दिखाती हैं लेकिन फ्रेम के निचले हिस्से में बेकार इनफार्मेशन देती हैं.

इन सभी तकनीकों को प्रत्येक तस्वीर पर लागू किया जाना चाहिए, चाहे फोटोग्राफर काम पर हो, किसी पार्टी में हो या छुट्टी मना रहा हो. एक फोटो जो एक कहानी बताती है, वह उस तस्वीर की तुलना में कहीं अधिक दिलचस्प है जो केवल कुछ दिखाती है.

वास्तविक तरीके से तस्वीर क्लिक करें - फोटो क्लिक करते हुए ध्यान रखें कि सब्जेक्ट कैमरे की और न देख रहा हो. ऐसा अहसास हो कि फोटो पोज़ कर के नहीं लिया गया है. वास्तविक तरीके से ली गयी फोटो का प्रभाव अधिक पड़ता है. वह स्वाभाविक भी दिखाई देती है.

स्टॉल पर खरीदारी करते हुए सब्जेक्ट का फोटो इस तरह लिया गया कि उसे पता नहीं चला.

सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेले में बुत के साथ फोटो करवाते पर्यटक.

विषय एवं अन्य तत्वों में वर्तमान और अतीत का सामंजस्य - फोटो असाइनमेंट करते हुए अनेक मौके आते हैं जहाँ सब्जेक्ट और अन्य संबंधित तत्वों को वर्तमान व अतीत से जोड़ने के मौके मिलते हैं. उदाहरण के लिए रामलीला में राम का किरदार निभाने वाला आर्टिस्ट ठण्डा पी रहा है, मोबाइल पर कुछ देख रहा है या किसी से बात कर रहा है या फिर लक्ष्मण, राम और रावण के किरदार मेकअप में रामलीला स्थल के नज़दीक एक साथ एक ही बाइक पर सवार होकर जा रहे हैं, तब फोटोग्राफर अपने सब्जेक्ट को अतीत और वर्तमान से संबद्ध करते हुए एक सुंदर तस्वीर ले सकते हैं. इस तरह के फोटोग्राफ की ओर लोग तुरंत खिंचते हैं और इन तस्वीरों की खूब चर्चा होती है. मेले में चलते-फिरते बायोस्कोप जैसे प्राचीन सिनेमा-संचार के साधन को हम अपने कैमरे में कैद कर सकते हैं. मेले में बाइस्कोप-शो को एन्जॉय करते हुए लोगों का फोटो भी बड़ा रोचक बनता है. सब्जेक्ट के साथ कई अन्य तत्वों को वर्तमान और अतीत से जोड़ने का प्रयास करते हुए कई चित्र लिए जा सकते हैं.

मेले में आधुनिक कला टैटू बाज़ू पर गुदवाता साधु.

कुएँ से पानी भरने के पुराने डोल के साथ मेले में सेल्फी लेता एक पर्यटक.

सामाजिक सरोकार की फोटोग्राफी - सामाजिक सरोकारों से जुड़ी फोटोग्राफी करना क्यों महत्वपूर्ण है? क्योंकि यह दर्शकों को रोजमर्रा के जीवन को देखने का नया नज़रिया देती है. इस तरह के फोटोग्राफ ही सामाजिक दायित्वों, आर्थिक विसंगतियों, सांसारिक परिवर्तनों और विभिन्न सन्दर्भों में विचार करने के लिए मुद्दे देते हैं. उदाहरण के लिए फोटो पत्रकार देश में आर्थिक विषमताओं से जूझती हुई दो तस्वीरों से समाज के दो तरह के हालात में संघर्ष कर रहे लोगों की सच्चाई व्यक्त कर सकते हैं. एक तरफ देश में लोगों के पास अन्न की कमी है और दूसरी तरफ भोजन की बर्बादी होती है. लेकिन इस प्रकार की फोटोग्राफी हमेशा 'बड़े' मुद्दों के बारे में नहीं होती. इसमें दैनिक जीवन, सामाजिक वातावरण और हमारे आस-पास के मानवीय संबंध दिखते हैं. अक्सर हम इन्हें अनदेखा कर देते हैं. हाड़ कंपा देने वाली सर्दी में केवल अखबार या प्लास्टिक कवर ओढ़कर सोते हुए लोग अक्सर दिखते हैं, लेकिन हम में से कितने उनका हाल पूछने को रुकते हैं. यह एक प्रकार से सम्पन्न समाज की असंवेदनशीलता को दर्शाता है.

कभी - कभी जो हमारे सामने घटता है, हम उस पर सवाल नहीं उठाते, उसे गंभीरता से नहीं लेते. उसे नोटिस नहीं करते. इस तरह के फोटो या फोटो फीचर तंग गलियों में जैसे-कैसे जी रहे लोगों का नज़रिया भी दिखाते हैं.

उदहारण के लिए ये दो फोटो देखिये. क्या इनसे ज़ाहिर नहीं होता कि कठिन परिस्थतियों में भी कुछ बच्चों में शिक्षा के प्रति कितना लगाव होता है.

रोज़ हमारे जीवन में बहुत कुछ ऐसा होता है जिस की तस्वीरें लोगों और स्थितियों को पहचानने का अवसर देती हैं. समाज को जागरूक करती हैं. ऐसी फोटोग्राफी, ऐसी परिस्थिति के प्रति किसी विशेष कार्रवाई के लिए प्रेरित भी कर सकती है.

सामाजिक सरोकार की फोटोग्राफी एक तरह से विशुद्ध 'वृत्तचित्र' है. समाज का दस्तावेज़ है. समाज पर गहरा प्रभाव डालता है. यह 'सामान्य' नहीं है. इन दृश्यों को भूला नहीं जा सकता. यह लोगों के दिमाग में हमेशा के लिए छप जाते हैं. इस से उनका सोचने का तरीका ही बदल जाता है.

बदलते समय का उदाहरण देखिये. इस फोटो से हमें ज्ञात होता है कि अब समाज कहाँ आ गया है. पहले गैस सिलेंडर भरवाने के लिए इतनी लम्बी लाइन में लगना पड़ता था. अब ऑनलाइन गैस बुक हो जाती है.

सामाजिक सरोकार की फोटोग्राफी इस दुनिया को समझने में हमारी मदद करती है. फोटो पत्रकार दिन-प्रतिदिन के दृश्यों का दस्तावेज प्रस्तुत करता है. इन चित्रों को देख कर आम आदमी के मन में जिज्ञासा उठती है. प्रश्न उठते हैं.

एक दिन वह यह प्रश्न उठाता है. कभी-कभी इस तरह के प्रश्न कुछ परिवर्तनों के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं.

रेलवे लाइन पर पुल बनने से पहले की एक तस्वीर. जान की बाज़ी लगा कर रेलवे लाइन पार करते हुए लोग. इसी तरह की लगातार कवरेज के बाद अब इस जगह फ्लाई ओवर बन जाने के बाद यातायात सुगम हो गया है.

संवेदनशील मुद्दों की कवरेज - दैनिक जागरण के वरिष्ठ फोटो पत्रकार ओम प्रकाश पांचाल कहते हैं कि संवेदनशील विषयों को कवर करते समय, हमें उस भावनात्मक आघात को भी ध्यान में रखना होगा, जिस से पीड़ित व्यक्ति गुजर रहा है. ऐसी नाजुक स्थिति में इस व्यक्ति की तस्वीरें लेने की अनुमति देने वाले को आश्वस्त किया जाना चाहिए कि सामग्री प्रकाशित होने से वे किसी भी अप्रिय स्थिति में नहीं आयेंगे. " यौन शोषण के पीड़ितों को कवर करते हुए मैंने उनसे / उनके परिजनों से सहमति मांगी . कुछ चाहते थे कि उनके चेहरे और नाम का इस्तेमाल किया जाए, कुछ नहीं. अमर उजाला की वरिष्ठ महिला पत्रकार मूर्ति दलाल कहतीं हैं कि " यौन शोषण की घटनाओं को कवर करते समय पीड़ित की आंखों और चेहरे पर अपराध बोध, शर्म और आघात जैसे भाव दिखते हैं. यही मानवीय भावनाएं फोटो पत्रकार के अंदर समाहित हो जाती हैं. देखने वाले इस पीड़ा को तस्वीरों में महसूस कर सकते हैं. मैंने ऐसा कोई भी फोटो लेने से पहले हमेशा अनुमति मांगकर उनकी निजता का सम्मान किया. मुझे लगता है कि दुष्कर्म/ यौन शोषण संदर्भ में महिलाओं की छवि को और व्यापक रूप से देखे जाने की आवश्यकता है. हम लगातार अकेले पीड़ित की तस्वीर लेते हैं. परन्तु क्या हम इस तरह से तस्वीर खींच सकते हैं जिसमें उनका उपचार किया जा रहा हो ? किसी का हाथ पकड़े हुए दिखाया गया हो ? पीड़ित नर्स या केयरटेकर की ओर देख रहा हो ? सहानुभूति से भरी तस्वीर समाज को बता सकती है कि इस व्यक्ति को कैसे गले लगाया गया है और आघात से उबारने के लिए प्रयासरत है."

प्रतीकात्मक तस्वीर - सौजन्य -www.covenanteyes.com

लाइट को देखें - लाइट फोटोग्राफी के सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है. प्रकाश की दिशा को समझना और उस पर ध्यान देना सीखना किसी की फोटोग्राफी को भी बेहतर बना सकता है. फोटोग्राफी में लाइट के सही इस्तेमाल से न केवल सब्जेक्ट निखरता है बल्कि इसके माध्यम से भावनाओं को बेहतर तरीके से व्यक्त/अभिव्यक्त किया जा सकता है.

,

अलग-अलग प्रोफेशनल फोटोग्राफर एक दूसरे के साथ अपनी - अपनी लाइटिंग तकनीक पर चर्चा करते हैं. जब प्रशिक्षु फोटो पत्रकार, लाइट का उपयोग करना समझ जाएंगे तो वे रचनात्मक और प्रभावी फोटोग्राफ ले सकेंगे. अपने सब्जेक्ट पर लाइट, शैडो और हाइलाइट्स का सटीक आकलन करने के लिए अपने सब्जेक्ट को चारों तरफ से देखें. ये समझें कि लाइट किस दिशा से आ रही है और किधर से सब्जेक्ट ज़्यादा निखर रहा है. अगर आप लाइट और शैडो को बेहतर तरीके से समझ लेंगे तो एक बेहतरीन फोटो ले सकेंगे.

फोटोग्राफी केवल सब्जेक्ट के लिए नहीं, परस्पर रिश्तों के लिए - फोटोग्राफी करते हुए हम मनपसंद विषयों की तलाश में रहते हैं और अलग - अलग एंगल से फोटो क्लिक करने की कोशिश करते हैं. लेकिन इस कोशिश में ये भूल जाते हैं कि फोटोग्राफी केवल मनपसंद विषयों के बारे में नहीं है. विषयों और अन्य तत्वों के बीच संबंध ही हैं जो फोटो को दिलचस्प बनाते हैं.

विषय और अन्य तत्व - एक महत्वपूर्ण प्रश्न जिसे समझने की ज़रूरत है, वह है फोटोग्राफी में विषय और वस्तु अर्थात अन्य तत्वों के बीच अंतर. वस्तु एक तस्वीर के भीतर विजुअल एलिमेंट है. तस्वीर का मुख्य विषय है वो जिस की छवि वास्तव में है. मुख्य विषय के साथ, फोटो के फ्रेम की बैकग्राउंड में मौजूद फूल,आकाश, नदी, सूर्य, नाव,पेड़, चेहरा,कपड़ा, पक्षी, चंद्रमा या कोई भी और चीज़ – अन्य तत्व है.

दिल्ली के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट राजीव त्यागी बताते हैं "किसी फ़ोटो में मुख्य विषय और वस्तु को समझने के लिए, आपको चित्र को ध्यान से देखना होगा और महत्वपूर्ण चीज़ों को अन्य चीज़ों से अलग करना होगा. आपको खुद से पूछना चाहिए कि वह मुख्य चीज़ क्या है जिसे आप अपने चित्र के माध्यम से दिखाने की कोशिश कर रहे हैं. फ़ोटो हमें कौन सी कहानी या दृष्टिकोण बता रही है? "कैसे सब्जेक्ट को ओब्जेक्ट यानि छवि में मौजूद अन्य तत्वों से जोड़ा गया है?” मिसाल के तौर पर इस फोटो को समझते हैं –

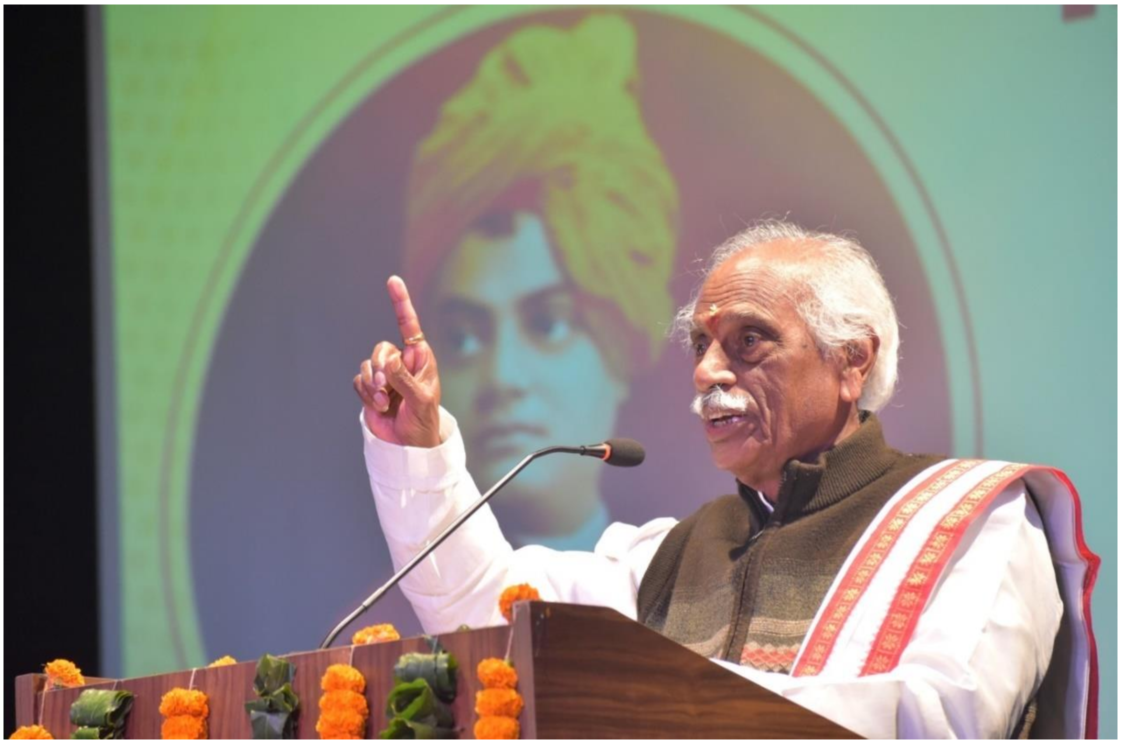

यह फोटो स्वामी विवेकानन्द पर आयोजित सेमिनार की है. इस तस्वीर को ध्यान से देखें तो स्वामी विवेकानन्द की पेंटिंग के सामने ही हरियाणा के तत्कालीन गवर्नर श्री बंडारू दत्तात्रेय भाषण दे रहे हैं. इससे साफ ज़ाहिर होता है कि फोटो किस कार्यक्रम की है. इस तरह से सब्जेक्ट और संबंधी तत्वों को अलग कर विश्लेषण करें. स्वाभाविक रूप से आप अपनी कुछ तस्वीरों के साथ ऐसा करना चाहेंगे. हालाँकि इस प्रक्रिया को सीखने के लिए, उन तस्वीरों का विश्लेषण अक्सर फायदेमंद होता है जिनसे आपका व्यक्तिगत लगाव नहीं है.

फोटो पत्रकारिता केवल कैमरे से तस्वीर लेना भर नहीं है, बल्कि यह दृश्य के माध्यम से एक जीवंत कहानी रचने की कला है. फोटोग्राफ के तीनों तत्व अग्रभूमि, मध्य और पृष्ठभूमि का सामंजस्य तस्वीर को जीवंत बनाता है. लीडिंग लाइन्स दर्शक की निगाह को दिशा देते हैं, और रूल ऑफ थर्ड्स तस्वीर को संतुलित और सुंदर बनाता है. रोशनी और फोटोग्राफिक एंगल का खेल-तस्वीर में भावनाओं को गहराई से उभारता है. आपके हर क्लिक में संवेदनशीलता और सहानुभूति का स्पर्श होना चाहिए, तभी आप सामाजिक मुद्दों को छू पाएंगे. इसी प्रकार एक्शन फोटोग्राफी की तीव्रता और डांस फोटोग्राफी की लय, गति को सजीव कर देती है. विषय और वस्तु के बीच तालमेल की तस्वीर, कहानी को और अर्थपूर्ण बना देती है. यह कला केवल दृष्टि का खेल नहीं, बल्कि दिल से दिल तक जुड़ने का माध्यम है.

26. फोटो पत्रकारिता के मुख्य आयाम

फोटो पत्रकारिता, समाचार और सांस्कृतिक घटनाओं को विशेष रूप से प्रस्तुत करने का शक्तिशाली माध्यम है.आप लोगों से बात कर, कार्यक्रमों में जाकर और तस्वीरें लेकर समाज और बदलती दुनिया के बारे में कहानियाँ बता सकते हैं. फोटो पत्रकारिता के विभिन्न आयाम होते हैं. एक फोटो पत्रकार सभी तरह की फोटोग्राफी करता है. इस कला के विभिन्न पहलुओं को समझना आसान बनाने के लिए, उन्हें उनके अंतर और उनकी गहराई के आधार पर निम्न श्रेणियों में क्रमबद्ध किया गया है:

1. **स्पॉट न्यूज फोटो पत्रकारिता -** फोटो जर्नलिज्म की एक व्यापक कर्मभूमि है. चुनौती भरे इस कैरियर में हर तरह की फोटोग्राफी करने के अवसर मिलते हैं. आप समाज में होने वाली हर घटना-दुर्घटना और उस से उत्पन्न हर क्रिया-प्रतिक्रिया को अपने कैमरे में कैद करते हैं. आप को सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, फैशन, खेल, वाईल्ड लाईफ जैसे तमाम तरह के विषयों संबंधित फोटोग्राफी कर अपना कौशल प्रदर्शित करने का मौका मिलता है. स्पॉट न्यूज फोटो-जर्नलिज्म का अर्थ उन फोटो-पत्रकारों से है जो तुरंत घटना स्थल पर पहुंच कर उसे कवर करते हैं.

रोंगटे खड़े कर देने वाली सड़क दुर्घटना की तस्वीर. फोटो - दुष्यंत त्यागी

राजीव त्यागी की दो अन्य तस्वीरें देखें. सोलहवीं सदी में बनाई गई बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचे को छह दिसंबर 1992 को कारसेवकों की एक भीड़ ने ढहा दिया था . लगभग 30 वर्षों से फोटो पत्रकारिता कर रहे फोटो पत्रकार राजीव त्यागी अपना अनुभव सांझा करते हुए बताते हैं कि ‘‘उपरोक्त घटना को आक्रामक भीड़ के बीच एक तरह से जान की बाजी लगा कर कवर किया था. ऐसे दबाव भरे माहौल में फोटो जर्नलिस्ट पेशेवर तरीके से काम करते हैं. अक्सर उन्हें ख़बरें कैप्चर करने के लिए घटना और स्थान को तुरंत समझने की आवश्यकता होती है. लेकिन स्पॉट न्यूज़ फोटोग्राफी करते हुए कानूनी और नैतिक सीमाओं का पालन करना आवश्यक है , ख़ासकर संवेदनशील मुद्दे कवर करते हुए चेहरों को धुंधला करना बेहतर है. इससे घटना में शामिल लोगों या पीड़ित की पहचान और निजता बनी रहती है और फोटो पत्रकार भी किसी भी तरह की कानूनी कार्रवाई से सुरक्षित रहता है. अगर किसी पीड़िता को

इंसाफ दिलाने के लिए विरोध प्रदर्शन हो रहा हो तो पोस्टर या बैनर पर लिखे पीड़िता के नाम को फोटो एडिटिंग करते हुए छुपा देना चाहिए.

2.**फोटो फीचर -** किसी घटनाक्रम को या किसी शख़्सियत के जीवन को फोटो के माध्यम से दर्शाना फोटो फीचर कहलाता है. इसमें एक खास कहानी से संबंधित तीन या चार फोटो होती हैं, जो एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी एक ही विषय पर आधारित होती हैं. समाचारपत्र तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित तीन-चार चित्र ही हमें पूरी कहानी समझा देते हैं. यह बात अलग है कि एक बेहतर चित्र ही पूरे घटनाक्रम को समझाने के लिए पर्याप्त होता है. पाठ्य सामग्री को रोचक बनाने के लिए कभी-कभी फोटो कहानी प्रकाशित करना उचित रहता है. बदलते परिवेश में सभी प्रकाशनों में फोटो की महत्ता कम हुई है, फिर भी फोटो कहानी फोटो पत्रकारिता का एक रोचक एवं प्रभावशाली माध्यम है.

यात्रा के शुरुआत विशाल मादा हाथी से होती है, जो अपने बच्चे को राम गंगा के किनारे तक ले जाती है.

नदी में खड़े होकर, माँ हाथी तेज़ी से बढ़ते पानी का आकलन करती है, उसकी सूँड़ उसके बच्चा को छूने के लिये आगे बढ़ती है.

धार तेज़ थी, पर माँ का हौसला उससे तेज़ था.

माँ सुरक्षा और मार्गदर्शन की भावना प्रदान करती है और सतर्क कदम आगे बढ़ाते हुए, बच्चा नदी पर करने लगता है.

नदी की धाराएँ तेज़ी से बह रही है लेकिन माँ दृढ़ रहती है, दोनों साथ मिलकर चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ते है.

धारा की तीव्रता में माँ अपनी सूंड़ को जीवन रेखा के रूप में प्रस्तुत करते हुए, बच्चे को सहारा देते हुए मंज़िल तक पहुँच गई है.

जैसे ही वे विपरीत तट पर पहुँचते है, दोनों के मन में ख़ुशी का भाव है, दोनों ने मिलकर राम गंगा के अशांत जल पर विजय प्राप्त कर ली है.

क्रासिंग पूरी पर, माँ अपनी सूँड़ को बच्चे के चारों ओर एक कोमल आलिंगन में लपेट लेती है, इस क्षण में, वे अपने बंधन की गर्माहट का आनंद लेते है.

नदी पार करने करने के बाद माँ और बच्चा दोनों अपने अगले पड़ाव की ओर चल देते हैं।

3. **थीम आधारित तस्वीरें -**

हल्की थीम की तस्वीरें - हल्की छवियां अक्सर हल्की-फुल्की और अनछुए पहलुओं पर आधारित होती हैं. इनका लक्ष्य पाठक को जानकारी देने की बजाय उसका मनोरंजन करना है.

हाथी की सवारी और गर्मियों में रामगंगा नदी में गोता लगाता हुए बच्चा ! फोटो - अजय सूरी

भारी थीम की तस्वीरें - इस तरह की छवियां गंभीर थीम पर होती हैं और पाठक को मनोरंजन के बजाय किसी घटना के बारे में सूचित करती हैं. इसी कारण ये तस्वीरें अक्सर भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं. गुजरात में कच्छ का रण. आपको यहां क्या दिख रहा है- खुशी या बेबसी? ``भारत के नमक निर्माता" इस तस्वीर का शीर्षक है. यह आरिया जनजाति के लोग है. इस क्षेत्र के लगभग 700 वर्षों के इतिहास में वे अभी तक पारम्परिक तरीकों से नमक बना रहे हैं. पीने के पानी, बिजली, पक्की सड़कें, स्वच्छता या बेहतर भविष्य की संभावनाओं तक इनकी पहुंच कभी आसान नहीं रही. हाल के कुछ प्रयास इनकी हालत कुछ ज्यादा बदल नहीं पाए. लेकिन वे अपने जीवन की गाड़ी जैसे-कैसे खींचते चले जा रहे हैं. हमारे व्यंजनों का स्वाद बेहतर बनाने के लिए वे दिन भर नमक के साथ खटते हैं, लेकिन क्या इनकी ज़िन्दगी में कोई स्वाद है. कुछ समय पहले एक वृत्तचित्र बनाने के दौरान वरिष्ठ फोटोग्राफर अजय सूरी ने इन में से एक परिवार के साथ लगभग तीन दिन बातचीत की.

नमक की खेती करतीं कच्छ की आरिया जनजाति की महिलाएं. फोटो अजय सूरी

4. **पर्यावरण फोटो पत्रकारिता** - पर्यावरण बीट पिछले कुछ दशकों में अलग - अलग समाचारपत्रों में महत्वपूर्ण स्थान ले चुकी है. नदियों, पर्वतों, झरनों, और जंगली या समुद्री जीवों की अलग-अलग कोण से फोटो लेना प्रकृति-पत्रकारिता अथवा पर्यावरण पत्रकारिता के अंतर्गत आता है.

प्रकृति के बोलते हुए चित्र लेना, निस्संदेह पत्रकारिता का एक सबसे दिलचस्प रूप है. अपने आस -पास के वातावरण की बुनियादी समझ और रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति पर्यावरण पत्रकारिता में हाथ आजमा सकता है. एक रिपोर्टर, एक फोटो-पत्रकार के तौर पर भी पर्यावरण की तस्वीरें ले सकता है. प्रकृति चित्रकारिता अपना जूनून पूरा करने के साथ- साथ आजीविका कमाने का अच्छा ज़रिया है. इसमें फोटो पत्रकार अपने चित्रों के ज़रिये पर्यावरण की सुंदरता के अलावा सृष्टि में आ रहे गंभीर परिवर्तनों को भी दर्शाता है ताकि वर्तमान के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को संभावित खतरों के प्रति आगाह कर सके. नीचे दिए गए दो चित्रों से स्पष्ट होता है किस तरह से जल स्रोत सूखते जा रहे हैं. हरियाणा में फरीदाबाद में कभी पानी से लबालब भरी रहने वाली बड़खल झील, वर्ष 2000 से सूखी हुई है. प्रशासन के वर्षों के प्रयास के बाद भी यह पुनर्जीवित नहीं हो पाई है, भले ही ए सी पी तकनीक से झील को फिर से भरा जा रहा है.

प्रकृति चित्रकारिता या फोटो पत्रकारिता की आवश्यकता - इन दिनों फोटो-पत्रकार पर्यावरण की सुन्दरता के साथ-साथ प्रकृति के दोहन और प्रकृति के प्रकोप को भी दिखा रहे हैं. नेचर फोटोग्राफी का उद्देश्य लोगों को यह बताना और शिक्षित करना है कि उनकी गतिविधियाँ पर्यावरण को कैसे प्रभावित करती हैं. पर्यावरण- संरक्षण के प्रयासों के लिए जागरूकता बहुत महत्वपूर्ण है. जलवायु-परिवर्तन, सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है लम्बे समय से वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तनों को लेकर चेतावनी दे रहे हैं. अब विश्व पर्यावरण संरक्षण के लिए यह स्थिति आ गयी है कि अभी नहीं तो कभी नहीं.

संयुक्त राष्ट्र की सितंबर 2022 की रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन से दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय चक्रवात ज्यादा आयेंगे और उन के कारण भारी वर्षा में वृद्धि होगी. वर्ष 2021 की संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन और आपदाओं के कारण केवल भारत में ही 50 लाख लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा. यह आंकड़े डरावने हैं. दुनिया भर में अपने इलाकों से पलायन करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है. उन के चित्र दयनीय हैं. यही कारण है कि नेचर फोटोग्राफी दुनिया भर के लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही है.

पर्यावरण फोटोग्राफी के जरिये हम समय के साथ कहीं भी होने वाली घटनाओं या परिवर्तनों के दस्तावेज़ तैयार कर सकते हैं. पर्यावरण रिपोर्टिंग में रामनाथ गोयनका पुरस्कार प्राप्त फोटो पत्रकार अजय सूरी कहते हैं कि "अगर सच्चे मन और उद्देश्य के साथ नेचर फोटोग्राफी की जाए तो पर्यावरण के लिए अत्यधिक लाभकारी हो सकती है. फोटोग्राफी के माध्यम से वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना संभव है. एक तस्वीर से बेहतर कुछ भी किसी

दृश्य का वर्णन नहीं कर सकता. यह भावनाओं को जगा सकता है. सोशल मीडिया पर एक बहस शुरू कर सकता है.‘‘एक नेचर फोटोग्राफर के तौर पर पर्यावरण सम्बन्धी समस्या की फोटो सोशल मीडिया पर भी डाल कर समाज का ध्यान समस्या की ओर आकर्षित किया जा सकता है. हो सकता है कि आवश्यक कदम उठाने पर सकारात्मक परिणाम आएं. एक स्थानीय फोटोग्राफर के तौर पर भी आप बेहतर तरीके से काम कर सकते हैं. जिस परिवेश से आप परिचित हैं, आप जानते हैं कि वहां क्या हो रहा है और उसका वास्तविक लेखा-जोखा दे सकते हैं तो मैदान में आ जाइए.

बंधवारी लैंडफिल: कचरे के बढ़ते पहाड़ों के बीच जिंदगी का संघर्ष - फोटो हिमांशु.

एक स्थानीय फोटोग्राफर हिमांशु द्वारा ली गयी बंधवारी लैंडफिल की यह फोटो एक लम्बी कहानी कहती है. इसमें पहले 800 टन कूड़ा जाता था अब 8000 टन कूड़ा रोज़ जाता है. इससे फैली बदबू से गुरुग्राम - फरीदाबाद सड़क पर आवाजाही में तो परेशानी तो हो ही रही है, यह लैंडफिल गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियाँ उत्पन्न कर रहा है. अपशिष्ट से मिट्टी और पानी प्रदूषित हो रहे हैं. मीथेन उत्सर्जन के कारण वायु- प्रदूषण बढ़ रहा है. इस तरह के फोटो जनता और प्रशासन दोनों को समस्या के समाधान के लिए प्रेरित करते हैं.

5.पोर्ट्रेट या व्यक्तित्व फोटो-पत्रकारिता - समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रसिद्ध व्यक्तियों के चित्रों की भरमार होती है. किसी सेलेब्रिटी, खिलाड़ी, या देश -विदेश के किसी अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति की तस्वीर आप को अक्सर देखने को मिलती है. कुछ फोटो उस व्यक्ति के काम की पहचान भी बताती हैं. कुछ उद्देश्यपूर्ण फोटो समाज को सोचने के लिए मुद्दे देती हैं. लेकिन पोर्ट्रेट फोटोजर्नलिज़्म केवल लोगों की तस्वीरें लेने के बारे में नहीं है, यह उनके जीवन, जीवन शैली, मूल्यों और आत्म-सम्मान को व्यक्त करने के बारे में भी है. तस्वीर के माध्यम से एक फोटो पत्रकार भारत या दुनिया भर के दिल को छू लेने वाली कहानियों और मुद्दों का दस्तावेजीकरण कर सकता है.

उदाहरण के लिए उभरते हुए फोटोपत्रकार नितिन उपाध्याय द्वारा लिया गया आदिवासी महिला का यह पोर्ट्रेट. देखिये कि इसका फोकस उसकी आँखों के आकर्षण, उसकी सादगी और प्राकृतिक सौंदर्य पर है. समृद्ध सांस्कृतिक विरासत दर्शाने वाले गहने पहने इस महिला के पोर्ट्रेट में लाइट का प्रभावशाली उपयोग किया गया है. काली बैकग्राउंड होने के कारण बड़े अपर्चर f/3.5, शटर स्पीड 1/ 320 सेकंड और आई एस ओ 400 लिया है. कई मर्मस्पर्शी पोर्ट्रेट अपने अंदर गहरे अर्थ समेटे होते हैं. वे अपनी गहरी छाप छोड़ते हैं. ऐसे कई फोटोपत्रकार हैं जिनकी तस्वीरों ने देश में एक चर्चा छेड़ी है. उन्होंने फोटोग्राफी के मूल उद्देश्य को सार्थक करते हुए लोगों को सोचने पर मजबूर किया है. इसके

अनेकों उदाहरण हैं. रघु राय की बांग्लादेश युद्ध और भोपाल गैस त्रासदी की तस्वीरें ,दानिश इक़बाल की युद्ध फोटोग्राफी और पद्म श्री सुधारक ओलवे की देश के कुपोषित बच्चों की तस्वीरें आपके मन को आंदोलित करती हैं.

पत्र - पत्रिकाओं में पोर्ट्रेट की श्रेणियाँ - हम कई प्रकार के पोर्ट्रेट देखते हैं. वे एक सब्जेक्ट, दो लोगों या किसी समूह की फोटो हो सकती है. हर तरह के पोर्ट्रेट फोटो का एक अलग उद्देश्य होता है.

सिंगल पोर्ट्रेट फोटो - अक्सर सिंगल पोर्ट्रेट फोटो में सब्जेक्ट की भावनाओं, उसके क्रियाकलापों/ गतिविधियों को दर्शाया जाता है. जैसे अक्सर कैमरामैन किसी खिलाड़ी के मैच जीतने या हारने पर या मैच खेलते हुए ख़ास तरह के एक्सप्रेशन पकड़ लेते हैं. किसी नेता की विशेष मुद्रा को कैमरे मैं कैद कर लेते हैं. ध्यान रहे फोटो में पोज़ चाहे कोई भी हो, उसे देखते ही दर्शक को उस में निहित भाव तुरंत समझ आ जाने चाहियें. यह तभी संभव है जब फोटो पत्रकार कुछ ही क्षणों में सब्जेक्ट की बारीक स्टडी कर सके. सब्जेक्ट का हर एक हिस्सा महत्वपूर्ण है. फोटोग्राफर न केवल चेहरे पर ध्यान दे बल्कि ड्रेस, मेकअप , हेयर स्टाइल आदि हर पहलू को पकडे. फोटो में किसी नारी का दुपट्टे या घूंघट में से झांकता हुआ चेहरा बहुत कुछ कह जाता है. अगर छायाकार को सब्जेक्ट के पेशे, आदतों और शौक का भी कुछ ज्ञान हो, तो सोने पर सुहागा. इससे उसकी बॉडी लैंग्वेज समझने, फोटो क्लिक करने और कैप्शन लिखने में आसानी रहती है.

प्राचीन वाद्य रावणहत्था बजाते एक राजस्थानी लोक कलाकार का पोर्ट्रेट; f /4 , शटर स्पीड 1 /640 सेकंड और आई एस ओ 200; फोटो : अजय सूरी.

ऐसी मान्यता है कि श्री लंका के राजा रावण ने इस वाद्य-यंत्र का आविष्कार किया था. लंका से भारत में आया यह वाद्य इस बात का अद्भुत उदाहरण है कि कैसे प्रवासन विश्व संस्कृति को समृद्ध कर सकता है और कैसे विभिन्न देशों के वाद्य मिलकर विश्व संगीत में अमिट योगदान दे सकते हैं. रावणहत्था पर धुनें सुन कर पर्यटक खुद को रोक नहीं पाते. फिल्मी गाने हों या राजस्थानी लोक संगीत, ये अपनी मधुर धुनों से सभी को मंत्रमुग्ध कर देता है.

सामूहिक पोट्रेट – यह तस्वीरें आपसी सम्बन्धों को दर्शाती हैं. दो या तीन राजनीतिक नेताओं की एक ही फ्रेम में फोटो एक कथा बांच देती है. नेता लोग अपनी एकता या सामंजस्य दिखाने के लिए एक मंच पर आते हैं और फोटोपत्रकार इसी को कैप्चर करते हैं. किसी पुरस्कार समारोह में दो या तीन लोगों का एक फ्रेम में होना, पुरस्कार - वितरक और प्राप्तकर्ता के सम्बन्धों को दर्शाता है. चूंकि समूह चित्र हमेशा किसी सन्दर्भ में लिए जाते हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि छायाकार सब्जेक्ट के आपसी संबंधों के अलावा स्थिति पर भी ध्यान दे. अगर आप इन नुक्तों को दिमाग में रखेंगे तो आपकी ख़बर और फोटो का कोण ही अलग हो जायेगा. उस से अर्थ ही अलग व्यक्त होने लगेंगे. यह अर्थ आपको और आपके चित्रों को अलग पहचान दिलाएंगे. किसी भी तरह का पोट्रेट क्लिक करने के लिए आम जीवन को गौर से देखना सीखना होगा, वास्तव में ऑब्ज़र्वेशन विकसित करने के लिए धैर्य और अभ्यास की आवश्यकता होती है. इसके लिए आपको जगह और लोगों के साथ एक होना होगा और उन्हें समझना होगा.

अनोखे विवाह समारोह की तस्वीरें – इन चित्रों में पत्रकार विलक्षण तत्व को अभिव्यक्त करता है. कई जोड़े अनोखे अंदाज़ में शादी करते हैं. कोई जे सी बी मशीन पर दुलहन को ले जाता है. कोई समुद्र के अंदर शादी करता है, कोई जोड़ा किसी अनोखी जगह पर शादी करता है. इस तरह के पोर्टेट में रोमांस और रोमांच दोनों ही कैप्चर किए जाते हैं.

व्यापारिक समूह - व्यापारिक समूह के फोटो में पत्रकार का उद्देश्य किसी बिजनेसमैन की कार्य नीति को कैप्चर करना हो सकता है. इन तस्वीरों में उस कारोबारी की बॉडी लैंग्वेज और गतिविधियों पर बारीकी से नज़र रखी जानी चाहिए. जो नज़र आ रहा है उससे हट कर कुछ कैप्चर करने की ख़ूबी /कला ही आप को असाधारण फोटो पत्रकार बनाती है.

f /3 5 शटर स्पीड, 1 /160 सेकंड और आई एस ओ 2000 पर, रियल एस्टेट कम्पनी बीपीटीपी की ज़ोनल बिजनेस मीटिंग की तस्वीर .

6. लाइफस्टाइल पोर्ट्रेट - कुछ पोर्ट्रेट लाइफस्टाइल पर केंद्रित रहते हैं चाहे वो किसी रईस, किसी देश के सर्वोच्च नेता या आम इंसान के हों. इस तरह के पोर्ट्रेट, सब्जेक्ट की जीवन शैली को अधिक महत्व देते हैं. इस प्रकार की फोटोग्राफी का उद्देश्य रोज़मर्रा की स्थितियों और वातावरण में विषयों को कैप्चर करना है. मुख्य रूप से चित्रकार, किसी सेलिब्रिटी/आम आदमी की स्थितियों, वास्तविक जीवन की घटनाओं या महत्वपूर्ण उपलब्धियों/मजबूरियों को कलात्मक तरीके से चित्र में पकड़ता है. मूलतः वह इन लोगों के जीवन की कोई कहानी दर्शा कर लोगों को प्रेरित करना चाहता है. ये चित्र अक्सर विषय के व्यक्तित्व या पहचान को रेखांकित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं.

एक हाथ रिक्शा चालक कोलकाता के व्यस्त बाज़ार में यात्रियों को खींचता हुआ. फोटो - अजय सूरी

पसीने से लथपथ, दुखते शरीर से जीवन में संघर्ष करते हुए कलकत्ता के एक हाथ - रिक्शा चालक की यह तस्वीर लाइफस्टाइल फोटोग्राफी का एक अच्छा उदाहरण है . चिलचिलाती धूप हो या मूसलाधार वर्षा, हर प्रतिकूल परिस्थिति में काम करने की तकलीफ़, इस आदमी के बदन पर स्पष्ट दिख रही है. ये लोग आजीविका कमाने के लिए हर पल पीड़ा से जूझते हैं, खामोश. वे शोषणकारी मालिकों और बिचौलियों की दया पर निर्भर रहते हैं. बिचौलिया और मालिक उनकी मेहनत की कमाई का एक बड़ा हिस्सा हड़प लेता है. ये चालक गरीबी की चक्की के पाटों से कभी नहीं निकल पाते. वरिष्ठ फोटो-पत्रकार अजय सूरी ने यह तमाम दास्तान इस फोटो में बयान कर दी है.

7.स्पोर्ट्स फोटो जर्नलिज्म - खेल फोटोग्राफी रोमांच से भरपूर है. खेल के मैदान में हर तरफ जबरदस्त उत्साह के बीच फ़ोटोग्राफ़र को खुद नहीं पता कि उसे किस पल क्या तस्वीर मिल जाएगी. खिलाड़ियों और दर्शकों के एक्शन, जुनून और भावनाओं को लाइव कैप्चर करना "बेहद चुनौतीपूर्ण" होता है.

खेल की सभी तस्वीरें हिमखंडो की तरह एक दूसरे से अलग होती हैं. कोई भी तस्वीर दूसरे के समान नहीं होती. किसी भी खेल फोटोग्राफर का पहला टारगेट होता है - स्पोर्ट एक्शन को फ्रीज करना. यह एक नॉनस्टॉप फोटोग्राफिंग इवेंट है. स्पोर्ट्स फोटोग्राफी सबसे यादगार तस्वीरों को कैप्चर करती है. यह आशा-निराशा, जीत-हार और खोने-पाने की छवियों की एक विस्तृत श्रृंखला है. फोटोग्राफ़र हमेशा गेम को विभिन्न एंगल से कैप्चर करते हैं. अगले दिन यही तस्वीरें समाचार पत्रों के ज़रिये पाठकों को मैच के सुखद और दुखद पलों का अहसास करवाती हैं.

केवल कुछ फोटो पत्रकारों को कोई अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन कवर करने और अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है. उदाहरण के तौर पर आई पी एल की कुछ फोटो देखें . कैसे चित्रकार ने एक ही खिलाड़ी को अलग-अलग एंगल से कैप्चर किया है. कुछ अन्य चित्रों में खिलाड़ियों की भावनाओं को बडी कुशलता से पकड़ा गया है.

इसलिए फोटो जर्नलिस्ट अपने कैमरे को शांत नहीं बैठने देते. वे छवियों को कैप्चर करते रहते हैं. ये पल खिलाड़ियों को अमर बना देते हैं.

फोटो जर्नलिस्ट को खेल के नियमों का ज्ञान होना लाजिमी है. तभी वह गेम की सही तस्वीर ले सकेगा. किसी दौड़ की शुरुआत और अंत पकड़ना बेहतर रहता है. किसी भी गेम को कवर करने से पहले उस के बारे रिसर्च कर लेना लाभकर रहता है. खेल के महत्वपूर्ण क्षणों के अनुरूप विभिन्न लेंस इस्तेमाल करें. कुछ लेंस जैसे निकोन या केनन का 70-200mm, Canon EF 70-300mm, Canon EF-S 55-250mm f/4-5.6 और Nikon 80-200mm स्पोर्ट्स फोटोग्राफी के लिए बेहतर हैं. खेल गतिविधियों की फोटोग्राफी के लिए इस तरह के टेलीलेन्स से ही सुन्दर,आकर्षक एवं एक्शन - ओरिएंटेड फोटो लेना संभव है.

सारांश ;फोटो पत्रकारिता समाज, सांस्कृतिक घटनाओं और समाचारों को कैप्चर करने और सांझा करने का एक शक्तिशाली माध्यम है. इस फोटोग्राफी के विभिन्न प्रकार हैं, जिनके अपने उद्देश्य और शैलियाँ हैं. स्पॉट न्यूज़ फोटो पत्रकारिता वास्तविक समय में होने वाली घटनाओं को केप्चर करती है. दुर्घटनाओं या राजनीतिक जलूसों इत्यादि की कवरेज में छायाकार पर भागमभाग का दबाव रहता है. फोटो पत्रकारिता के आयामों में पर्यावरणीय पत्रकारिता भी शामिल है, जो प्रकृति और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को प्रभावशाली चित्रों से उजागर करती है. इसी तरह पोर्ट्रेट फोटोग्राफी लोगों के व्यक्तित्व और कहानियों को कैप्चर करती है. फोटोग्राफी करते हुए घटना के संदर्भ को समझना और विवरण पर ध्यान देना महत्वपूर्ण होता है.

28. फोटो पत्रकारिता: जुनून और कला का संगम

एआई उत्पन्न छवि

"एक सफल फोटो पत्रकार बनने के लिए आपको अनुभव, कौशल, ऊर्जा, सेल्समैनशिप, व्यवस्थित-व्यक्तित्व , स्मार्ट-लुकआउट और गेटक्रैशिंग जैसे गुणों के साथ - साथ एक सार्थक नज़रिये और धैर्य की आवश्यकता होती है." अमेरिकी फोटोपत्रकार रूथ ओर्किन.

फोटो पत्रकारिता एक जुनून है. फोटोग्राफी की लगन के साथ पत्रकारिता के लिए जुनून आप को फोटो-पत्रकार बनाती है. रोज़ फोटोग्राफी का सच्चे मन से अभ्यास करने की आवश्यकता है. ये एक कला है. कैसे फोटो संयोजन करना है, किस तरह से प्रकाश व्यवस्था करनी है यह अभ्यास आप को रोज़ करना है. अन्यथा आप चित्रकारी के नियम याद नहीं रख पायेंगे. फोटोग्राफी इसलिए करें क्योंकि आप इसे करना चाहते हैं, क्योंकि फोटोग्राफी में ही आपको जीवन का मज़ा मिलता है. फोटो-पत्रकार का यही मुख्य पुरस्कार भी है. फोटो-पत्रकारिता के व्यवसाय में पैसा, पुरस्कार और प्रतिष्ठा पाने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है. फोटोग्राफी को एक कमाऊ करियर के रूप में नहीं देखेंगे तो धैर्य बना रहेगा. यही दृष्टिकोण / गुण ही आपको साधारण से असाधारण फोटो-जर्नलिस्ट की मंजिल तक लेकर जाएगा.

विभिन्न विषयों की विभिन्न कोणों से तस्वीरें लें - विविध विषयों की भिन्न- भिन्न कोणों से तस्वीर लेने की कोशिश करें. देखें और सोचें कि किसी एक विषय की फोटो अलग-अलग कोण से कैसे खींच सकते हैं. फोटो पत्रकारिता में रचनात्मकता बेहद महत्वपूर्ण है. इसके बिना, तस्वीरें बेजान होंगी. वरिष्ठ पत्रकार रवि कहते हैं "एक फोटो जर्नलिस्ट को एक कलाकार की तरह सोचना और एक रिपोर्टर की तरह काम करना होता है". क्योंकि फोटो पत्रकारिता शटर क्लिक करने से आगे भी बहुत कुछ है. भावनात्मक चित्रों और भावनाओं को कैद करना वास्तव में सम्मोहक छवियां बनाने की कुंजी है. ऐसी कई अलग-अलग भावनाएँ हैं जिन्हें एक छवि में दर्शाया जा सकता है. अपनी सभी तस्वीरों में हम सुख , दुख, निराशा और प्रेम को उजागर करने का प्रयास करते हैं. चुनौती किसी भावना, को उसे फोटो में दिखाने में है. इसका मतलब है कि आप सही समय पर घटनास्थल पर मौजूद थे.

सम सामयिक विषयों की जागरूकता - फोटो पत्रकार जिज्ञासु और बहिर्मुखी प्रवृत्ति का होना चाहिए. एक पत्रकार की तरह ही फोटो पत्रकार को भी वर्तमान मुद्दों के बारे में पता होना चाहिए. इस तरह से ही वे समाचार फोटोग्राफी के लिए नज़रिया विकसित कर सकते हैं. कब किस तरह, किस सब्जेक्ट की फोटो लेनी है, ये बोध भी तभी उत्पन्न होगा. आप को हर बड़ी घटना की जानकारी होनी चाहिए.

फोटोग्राफी सीखें और घटनाओं के प्रति दृष्टिकोण विकसित करें - मशहूर फोटो जर्नलिस्ट रघु राय के अनुसार "कोई भी फोटो जर्नलिस्ट विपरीत परिस्थितियों में यदि एक फोटोग्राफ से किसी स्थिति की वास्तविकता को गहराई को और व्यापकता को अनुभव करा पाता है; जो ईमानदारी से मनोभाव को वैसा ही दर्शाता है जैसा आपको अपना चेहरा दर्पण में दिखाई देता है; तो समझ लीजिए कि कैमरे ने अपना काम पूर्णता से कर दिया है."

फोटोग्राफी का कौशल और घटनाओं के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित करना आप की एक मूलभूत आवश्यकता और योग्यता है. आजकल मोबाइल फोन में उत्तम किस्म के कैमरे उपलब्ध हैं. इससे फोटोग्राफी सीखना शुरू करना आसान हो जाता है. फोटोग्राफी सीखें और अभ्यास करें. आज अगर आप के पास स्मार्ट-फ़ोन है तो आप फोटोग्राफर बन सकते हैं. आप के लिए देश - विदेश की घटनाओं की जानकारी होना ज़रूरी है. समसामयिक मामलों की गहरी समझ, फ़ौरन हरकत में आने की योग्यता, सही समय पर सही जगह पर पहुँचने की क्षमता आप को फोटो-पत्रकार बनाती है.

एक घटना में सभी फोटो जर्नलिस्ट शामिल होते हैं, अनेक तस्वीरें खींचते हैं लेकिन केवल कुछ तस्वीरें ही प्रकाशित होती हैं. चुनिंदा फोटो पत्रकारों के काम की और उनके चित्रों की ही चर्चा होती है. कुछ लोग सोचते हैं कि एक अच्छा छायाकार होने के लिए एक अच्छा कैमरा पास होना ज़रूरी है. ऐसा बिल्कुल भी नहीं है. एक अच्छा कैमरा शॉट्स की गुणवत्ता ही बढ़ा सकता है लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है आप के पास फोटोग्राफी का एक नज़रिया होना चाहिए .

निरंतर अभ्यास द्वारा अपनी सोच को विकसित करें. अपने आस पास की दुनिया को बार- बार फ्रेम करें और फिर देखें कि कौन सा फोटोग्राफ समाचार के लिए उपयुक्त है. "हमेशा ध्यान रखें कि फोटो पत्रकारिता में फोटो तभी सफल मानी

जाती है जब पाठक भी फोटो देख कर घटना को वैसे ही महसूस कर सके जैसा फोटो पत्रकार ने फोटो खींचते हुए किया."

मास्टर्स का काम देखें और सीखें - फोटो पत्रकार मूल रूप से ऐसे लोग हैं जो कहानियां बताते हैं और तस्वीरों के माध्यम से घटनाओं और समाचारों को कैप्चर करते हैं. फोटोग्राफी में दक्षता के साथ -साथ लोगों की उनकी जीवन से जुड़ी घटनाओं में रूचि होनी चाहिए. फोटो पत्रकारिता की बेहतर समझ विकसित करने के लिए विभिन्न समाचार संगठनों के वरिष्ठ फोटो पत्रकारों का काम देखें. इसके लिए मार्गरेट बॉर्के (भारत- पाक विभाजन की तस्वीरें) भारत के सबसे प्रमुख फोटोग्राफर रघु राय, अर्को दत्ता, (वर्ष 2005 में 'वर्ल्ड प्रेस फोटो ऑफ द ईयर' के पुरस्कार-विजेता) की तस्वीरों को देखें .

पद्म श्री राजन देवदास (1921-2014) एक भारतीय अमेरिकी फोटो जर्नलिस्ट और गांधीवादी थे. लगभग पचास वर्ष उन्होंने भारत-अमरीका संबंधों की फोटोग्राफिक कवरेज के लिए नाम कमाया. वह व्हाइट हाउस के भारतीय मूल के पहले मान्यता प्राप्त फोटोग्राफर थे. एक पेशेवर फोटो पत्रकार रूप में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू से लेकर हर भारतीय प्रधानमंत्री की अमरीका यात्राओं के चित्र लिए.

इन सभी प्रतिष्ठित फोटो पत्रकारों का काम सब को कड़ी मेहनत के लिए प्रेरित करता है.

लिखना सीखें – लेखन के अभ्यास से फोटो पत्रकार का कला कौशल निखर आता है. किसी समाचार संस्थान में कार्य करते हुए आपको कई बार घटना की ख़बर भी लिखनी पड़ जाती है. इसके लिए अपने साथ एक नोटपैड जरूर रखें. आप दुनिया में क्या देख रहे हैं, इस पर ध्यान दें. चित्र लेते हुए, समय , स्थान, क्षेत्र और वहां के लोगों और उनकी भावनाओं का दस्तावेजीकरण करें. यह जानना महत्वपूर्ण है कि फोटो कब और कहां ली गई थी. साथ ही यह जानना भी जरूरी है कि वहां क्या हो रहा था. आप उस जानकारी का उपयोग अपने लेखन के लिए या अन्य लेखकों को देने के लिए या कैप्शन बनाने के लिए कर सकते हैं. कैप्शन लिखना फोटो पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. इस का अभ्यास करें. मीडिया में फोटोजर्नलिस्ट की भूमिका, क्रिकेट के आल-राउंडर खिलाडी की तरह बहुत महत्वपूर्ण होती है. वह स्वयं में एक चलता फिरता ब्यूरो होता है. उसे हर बीट की जानकारी होती है.

एक फोटो पत्रकार कभी - कभी ख़बर भी लिखता है. ऐसे बहुत से फोटो-ग्राफर हैं जो बाद में पत्रकार बन गए. उन्होंने अपनी लेखन क्षमता से स्वयं को स्थापित भी किया.

दैनिक भास्कर के सीनियर फोटो जर्नलिस्ट शेखर घोष अपनी प्रखर लेखनी के लिए जाने जाते हैं. उनकी गिनती दिल्ली एनसीआर के अच्छे पत्रकारों में होती है. गुरुग्राम में हिंदुस्तान के ब्यूरो चीफ, फोटो-पत्रकार गौरव चौधरी अपनी लेखनी से हमेशा चर्चा में रहते हैं. गुरुग्राम के वरिष्ठ छायाकार कैलाश गठवाल, प्रिंट मीडिया में क्राइम रिपोर्टर के तौर

पर कार्यरत हैं. अच्छा लिखने वालों की मांग हमेशा रहती है. आप एक पत्रकार के रूप में अपने लेख इत्यादि अन्य पत्र -पत्रिकाओं में छपवा कर अलग से आजीविका कमा सकते हैं.

कार्य उन्मुखी तस्वीरें अधिक कारगर – फोटो-जर्नलिज्म का आधार है - हमारे चारों तरफ चल रहे घटनाक्रम का विजुअल डॉक्यूमेंटेशन. एक साधारण और निष्क्रिय फोटोग्राफर की अपेक्षा, फोटो-पत्रकार द्वारा ली जा रही तस्वीरें अधिक कारगर हैं. एक्शन में लोगों की तस्वीरें ही जानकारी से भरपूर और प्रभावशाली होती हैं. साधारण और असाधारण तस्वीरों में यही बुनियादी फर्क है.

फरीदाबाद के बराही तालाब में गर्मियों में मस्ती करते बच्चे- फोटो - दुष्यंत त्यागी

अस्वीकृति को स्वीकारना सीखें – बहुत बार सम्पादक फोटो खारिज़ कर देते हैं. इसके कई कारण हो सकते हैं. सम्पादक बेहद व्यस्त रहते हैं. उनके पास फोटो प्राप्त करने के कई सूत्र होते हैं. यदि वर्षों के प्रयास के बाद भी आपके काम को उचित सम्मान नहीं मिल पा रहा तो निराश न हों. एक स्वतंत्र फोटो-पत्रकार के रूप में आप लोगों से मिलते रहें. कुछ नया जानने की कोशिश करते रहें. नई –नई जगह घूमते रहें. नए विषयों और कहानियों को खोजते रहें. इससे फोटो खींचने का नया आइडिया मिलता है. पत्रकारिता एक प्रतिस्पर्धी क्षेत्र है. मीडिया उद्योग में सफल होने के लिए कड़ी मेहनत, धैर्य के साथ -साथ जनसम्पर्क भी बेहद ज़रूरी है.

फोटो पत्रकार के तौर पर जनसम्पर्क बनाने के लिए नवोदित पत्रकार किसी वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट से या कुछ पेशेवर संगठनों से भी जुड़ सकते हैं. फोटाग्राफी का औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए किसी शिक्षण संस्थान से डिप्लोमा या डिग्री हासिल की चाहिए . किसी अच्छे फोटोग्राफी संस्थान के अनुभवी अध्यापकों या प्रशिक्षकों से फोटोग्राफी की बारीकियां सीखी जा सकती हैं. आपको फोटोग्राफी के कलात्मक और तकनीकी दोनों ही पक्षों का प्रशिक्षण लेना चाहिए.

सारांश ,फोटो पत्रकारिता में सफलता के लिए जुनून, अनुभव और दृष्टिकोण जरूरी हैं. फोटोग्राफर को हर रोज़ अभ्यास और रचनात्मकता से काम करना चाहिए. सबसे अहम है घटनाओं की गहरी समझ और भावनाओं को तस्वीरों में कैद करना. समसामयिक मुद्दों पर जागरूकता और विपरीत परिस्थितियों में काम करने की क्षमता भी जरूरी है. चूंकि एक अच्छा कैमरा केवल शॉट्स की गुणवत्ता बढ़ा सकता है, अतः दृष्टिकोण सबसे महत्वपूर्ण है. कई बार ख़बर लिखनी पड़ती है इसलिए लेखन कौशल भी आवश्यक है. वरिष्ठ पत्रकारों के काम से प्रेरणा लेना और लगातार अभ्यास करना फोटोग्राफी में सुधार लाता है. सफलता के लिए जनसंपर्क और कड़ी मेहनत भी आवश्यक है. मीडिया में सफलता पाने के लिए सही समय पर सही जगह होना जरूरी है.

29. सफलता के तीन महत्वपूर्ण पहलू: उपकरण, विषय और रचनात्मकता

सूरजकुंड मेले में प्रस्तुति देने के लिए तैयार होता एक कलाकार. फोटो सौजन्य - नरेश नरूला

फोटो-पत्रकार किसी भी परिस्थिति में तीन महत्वपूर्ण पहलू ध्यान में रखें . इस से आप अपने फोटो को असाधारण बना सकते हैं. पहला : फोटोग्राफिक उपकरण, दूसरा : विषय वस्तु, और तीसरा : आपकी रचनात्मकता . अगर एक छायाकार को तरक्की करनी है तो उसे फोटोग्राफी में नित्य नए प्रयोग करने होंगे. यानि नए विषयों, नए स्थानों, नए कैमरों, लेंस के साथ कुछ नया करना होगा. नई तकनीकें आजमाने और नए तरीके से एडिट करने पर भी परिपक्वता आती है. एक नवोदित फोटोपत्रकार को हर समय अपने आप से पूछना चाहिए, "मैं कैसे बेहतर कर सकता हूं ! अपने चित्र को और सुंदर और प्रभावपूर्ण कैसे बना सकता हूं?

अपने अनोखे अंदाज के साथ एक फोटो जर्नलिस्ट रोज़ अपना व्यू नए तरीके से रख सकता है. उस का हर चित्र अगर हर बार अलग अंदाज में और एक ख़ास अलग शैली से सामने आये तो उसकी पहचान जल्दी बनेगी. बहुत सोच विचार कर ही कोई क्लिक करें ताकि आपकी फोटो, देखने वाले के दिमाग में, हमेशा के लिए अंकित हो जाए. हर बार नए एंगल से ली जाने वाली फोटो ही क्रिएशन कहलाती है. ऐसे फोटो को पिक्टोरियल फोटो कहा जाता है. लेकिन कलात्मक फोटो की छटा ही अलग होती है. वे भी देखने में मनोरम और सूचनात्मक होते हैं.

कलात्मक फोटोग्राफी को क्रिएट करने के लिए कई बार फोटोग्राफर सब्जेक्ट की स्थिति को, विशेष तौर पर अपनी तस्वीर को अपनी इच्छानुसार तैयार करता है. वैसे तो इसे फोटोग्राफी के सिद्धांतों के खिलाफ बताया जाता है. परन्तु क्रिएट किए हुए फोटो में सौंदर्य तथा सत्यता को कायम रखते हुए उसे और आकर्षक बनाया जा सकता है.

सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला में पारंपरिक जूती स्टोर के बाहर एक विशाल जूती, आकर्षण का प्रमुख केंद्र बनी.

इस तस्वीर के फोटोग्राफर दुष्यंत त्यागी कहते हैं कि एक पारम्परिक जूती स्टोर के बाहर ये बड़ी सी जूती आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी. कई पर्यटक इसके साथ फोटो खिंचवा रहे थे. मैंने जरा से हट कर सोचा और कारीगर को इस जूती के अंदर बैठा कर ये फोटो ले लिया''.

दैनिक हिंदुस्तान के फोटो पत्रकार सुभाष शर्मा कहते हैं कि क्रिएशन को मापा नहीं जा सकता. हम फोटो के लिए किस जगह पर कैसे कम्पोज़ करते हैं, उपलब्ध रोशनी को कैसे उपयोग करते हैं और अपने विषयों के साथ कैसे व्यवहार करते हैं, ये सभी पहलु फोटो क्रिएशन को प्रभावित करते हैं . "मैं फोटो का क्रिएशन न केवल सब्जेक्ट की पोज़िंग

बल्कि लाइटिंग और लेंस सिलेक्शन के माध्यम से भी करता हूँ. मैं खुद को, किसी परिस्थिति में , जितना संभव हो सकता है, अपनी सीमाओं से निकलने के लिए चुनौती देता हूं. अक्सर फोटोग्राफी करते हुए नए - नए एंगल से फोटो लेने की कोशिश करता हूँ ".

तीन पेंटेड चेहरे. एक फेस पेंटिंग प्रतियोगिता के दौरान ली गयी फोटो. इवेंट के अनुरूप लिए गए इस चित्र में इवेंट का थीम" पर्यावरण बचाओ" भी नज़र आ रहा है. तीन अलग - अलग बालिकाओं को एक साथ ले कर कुछ अलग से दिखने वाले चित्र का सृजन.

क्रिएटिव फोटोग्राफी में एक फोटो पत्रकार की कल्पनाएं साकार होती हैं. उसके सोचने का तरीका, उसकी और उसके चित्र की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है. सूर्योदय और सूर्यास्त, गरमी और सर्दी में बदलते मौसम, बारिश के प्रभावों और तीज-त्योहारों की तैयारियों के चित्र अगर सुख-दुख में चेहरे के मनोभावों का अद्भुत चित्रण करते हैं तो वह एक अच्छे फोटो पत्रकार की कलात्मक प्रस्तुति है. कलात्मक तस्वीर सूचनात्मक भी होती है.

मेले में एक कार्यक्रम के दौरान ली गयी यह फोटो एक फ्यूज़न है - प्राचीन और वर्तमान समय का. दो पौराणिक किरदार और बीच में खड़ा महात्मा गाँधी का किरदार. लेकिन तीनों का सन्देश एक - शांति, प्रेम और अहिंसा. इस तरह के फोटोग्राफ अक्सर फोटो संपादक को पसंद आते हैं. कई बार ऐसे फोटोपत्रकार को बाइ - लाइन भी मिल जाती है.

कलात्मक फोटोग्राफ हमेशा समाचार पत्र और पत्रिकाओं में बड़े आकार में छपती है. क्रिएटिव इमेज की प्रस्तुति ही एक फोटोग्राफर की चर्चा का विषय बन जाती है. निरंतर अभ्यास और लंबे अनुभव के उपरांत ही बेहतर कलात्मक फोटाग्राफी संभव है. थोड़े से ध्यान और धैर्य से फोटोग्राफी की जाए तो उस में क्रिएशन झलक सकता है. कुछ बातों पर बहुत गौर करने की आवश्यकता होती है. किसी भी राष्ट्रीय या अंतर-राष्ट्रीय घटना को वर्तमान में अपने लोकल स्तर पर ली गई तस्वीर से कनेक्ट कर दें , वह आपका क्रिएशन बन जाएगा. एक साधारण सी फोटो की धूम भी पूरे विश्व में हो जाएगी . यह फोटोग्राफ 26 /11 की बरसी पर फरीदाबाद के एक स्कूल के विद्यार्थियों का है. उन्होंने मोमबत्तियां जलाकर मृतकों को श्रद्धांजलि अर्पित की. सीमा पार से हुए इस हमले ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान खींचा था, इसी को विद्यार्थियों ने स्थानीय स्तर पर प्रदर्शित किया.

मुंबई हमले की बरसी पर मोमबत्तियां जलाकर मृतकों को श्रद्धांजलि देते हुए एक स्कूल के विद्यार्थी.

एक अन्य उदाहरण देखें, यह तस्वीर सूरजकुंड मेले के दौरान ली गयी थी. वैश्वीकरण के दौर में-अपनी पहचान और संस्कृति को प्रस्तुत करते हुए दो देशों के कलाकार. छायाकार इस तरह के फोटो को स्टेज करवा कर खींच सकता है. यह तस्वीर फोटोग्राफर की वृहद् सोच को परिलिक्षित करती है. इसी तरह के फोटोग्राफ उसे पहचान भी दिलवाते हैं .

सारांश ; फोटोपत्रकारिता में असाधारण तस्वीरें खींचने के लिए तीन मुख्य तत्वों का ध्यान रखना आवश्यक है: उपलब्ध उपकरण, विषय वस्तु, और रचनात्मकता. एक फोटोग्राफर को हमेशा नए विषयों, स्थानों और तकनीकों के साथ प्रयोग करते रहना चाहिए. उसकी कला तब निखरती है जब वह तस्वीरों में अपनी सोच, संवेदनाएं और क्रिएटिविटी डालता है. एक अच्छा फोटो जर्नलिस्ट अपनी तस्वीरों में न सिर्फ सौंदर्य बल्कि सत्यता को भी बनाए रखता है,इससे वे सूचनात्मक और प्रभावपूर्ण बनती हैं. कलात्मक फोटोग्राफी में पत्रकार का एक खास दृष्टिकोण होता है. प्रत्येक फोटो में नए एंगल और लाइटिंग का प्रयोग उसे खास बनाता है. निरंतर अभ्यास और सोच में बदलाव से ही बेहतरीन फोटोग्राफी संभव होती है. ऐसे चित्र समाचार पत्रों में छपकर फोटोग्राफर की पहचान बन जाते हैं.

30. सोशल मीडिया और फोटोग्राफी

सोशल मीडिया वर्तमान समय का सबसे चर्चित मंच बन चुका है. एक क्षण में दुनिया की कोई भी घटना-दुर्घटना चित्र सहित एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंच जाती है. इस प्रौद्योगिकी ने जनसंचार माध्यमों में क्रांतिकारी बदलाव किया है. इसके चलते परंपरागत जनसंचार के माध्यमों यानि समाचार पत्र -पत्रिकाओं, टीवी चैनल तथा रेडियो में भी आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं. इस क्रांतिकारी बदलाव ने सभी माध्यमों को बदलकर रख दिया है. सोशल मीडिया को न्यू मीडिया भी कहा जाता है. मीडिया के अन्य स्वरूपों को चुनौती देते हुए सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्थापित हो चुका है.

मीडिया कर्मियों के साथ - साथ जनसंचार तथा पत्रकारिता के विद्यार्थियों का सोशल मीडिया पर अकाउंट होना बहुत आवश्यक है. दुनियाभर की नवीनतम ख़बरें, फोटो और वीडियो एक्स (पूर्व में ट्विटर) इंस्टाग्राम ,फेसबुक और यू ट्यूब आदि के माध्यम से मिलती हैं .

सोशल मीडिया और फोटोग्राफी एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फोटोग्राफर्स को अपनी कला को दुनिया भर के लोगों के साथ सांझा करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम प्रदान करता है. यहां हम देखेंगे कैसे सोशल मीडिया ने फोटोग्राफी के क्षेत्र में नए दरवाज़े खोले हैं :

1 . वैश्विक पहुंच - सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म छायाकारों को वैश्विक प्लेटफार्म प्रदान करता है. सोशल मीडिया पर केवल फोटोग्राफी के लिए भी प्लेटफार्म हैं. वहां फोटोग्राफर अपनी -अपनी तस्वीरों को न केवल पोस्ट कर सकते हैं अपितु बेच भी सकते हैं. इन प्लेटफॉर्म्स पर प्रासंगिक हैशटैग का उपयोग कर सोशल मीडिया यूज़र्स के साथ जुड़कर, फोटोग्राफर दर्शकों व ख़रीदारों के एक बड़े वर्ग तक पहुंच सकते हैं. प्रासंगिक की-वर्ड और विवरण का उपयोग एसईओ (SEO) का हिस्सा है. सर्च इंजनों के लिए छवियों को अनुकूलित करने से वे आसानी से खोजने योग्य और पहचाने जाने योग्य हो जाएंगी. तस्वीरें सर्च रिजल्ट्स में बेहतर रैंक करेंगी और प्रासंगिक श्रेणियों में दिखाई देंगी.

2 . सीखने और जुड़ने का माध्यम - सोशल मीडिया पर आप अपनी तस्वीरें कई अन्य लोगों को दिखा सकते हैं. लेकिन यह एक ऐसी जगह भी है जहां आप दुनिया भर के प्रसिद्ध फोटोग्राफरों द्वारा ली गई शानदार तस्वीरें देख सकते हैं.

3. प्रेरणा और बदलाव - सोशल मीडिया फ़ोटोग्राफ़रों को नए विचार प्राप्त करने और चीज़ों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने में मदद करता है. आप अन्य कलाकारों से बात कर सकते हैं और अपने विचार सांझा कर सकते हैं. इससे आप नए और आधुनिक कला के अवसरों की ओर बढ़ सकते हैं.

4 . सामाजिक परिवर्तन में सहायक - सोशल मीडिया पर पोस्ट हो रही फोटोग्राफ के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन भी हो रहा है. जिस घटना की तस्वीरें और खबरें सोशल मीडिया पर आती हैं, उस पर समाज या प्रशासन प्रतिक्रिया देता है. समाज में यह एक नया बदलाव आया है. अर्थात फोटोग्राफर सामाजिक परिवर्तन में अब और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

5 . व्यक्तिगत ब्रांड का निर्माण - सोशल मीडिया पर छायाकारों को अपनी शैली और दृष्टिकोण को दर्शाती व्यक्तिगत छवि बनाने का अवसर मिलता है. लगातार बेहतरीन छवियों को पोस्ट कर और सोशल मीडिया यूज़र्स के साथ जुड़कर, फोटोग्राफर स्वयं को एक मज़बूत ब्रांड के तौर पर स्थापित कर सकते हैं.

6 . रोज़गार के अवसर - फोटोग्राफर्स सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी ब्रांडिंग कर, अपने काम को दिखा कर रोज़गार के नए अवसर पा सकते हैं. वे सीधे व्यवसायियों से जुड़ कर व्यापारिक आदान-प्रदान में भाग ले सकते हैं. लेकिन इसके लिए ऐसी कुछ बुनियादी बातों पर ध्यान देना ज़रूरी है : -

I. **एक मजबूत पोर्टफोलियो बनाएं** - अपने कौशल और शैली को प्रदर्शित करने के लिए अपने फोटो पत्रकारिता के काम का एक विविध पोर्टफोलियो सोशल मीडिया पर अपलोड करें. इसके कोई भी एक प्रासंगिक थीम को ध्यान में रखते हुए फोटो श्रृंखला बनाएं जिससे लोगों को आपके काम को जानने का मौका मिले. ध्यान रखें कि किसी एक विषय या शैली पर ध्यान केंद्रित करना किसी नौसिखिया के लिए बेहतर हो सकता है लेकिन आगे चलकर, अगर आप अपने फोटोग्राफी पोर्टफोलियो में विविधता लाते हैं तो आपके चित्रों को खरीदने की संभावना बढ़ सकती है.

II. **अपने दर्शकों से जुड़ें** - अक्सर पर्दे के पीछे की कहानी दर्शकों को आकर्षित करती है. अतः काम करते हुए ही फोटो या वीडियो अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर डालें. आईजीटीवी का उपयोग करें, जिससे दर्शकों को बेहतरीन चित्रों के लिए की गयी आपकी मेहनत का अंदाज़ा लग सके.

III. **ब्रांड्स और प्रभावशाली लोगों के साथ सहयोग करें** - अपनी पहुंच बढ़ाने और एक्सपोज़र हासिल करने के लिए अपने क्षेत्र के प्रभावशाली लोगों के साथ संबंध बनाएं और विभिन्न कम्पनियों के ब्रांड्स के साथ जुड़ने का प्रयास करें.

IV. **प्रिंट बेचें** - सोशल मीडिया के माध्यम से बिक्री के लिए अपने सर्वोत्तम चित्रों के सीमित संस्करण प्रिंट प्रस्तुत करें. इसके लिए ऐसे ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करें जो सोशल मीडिया के साथ एकीकृत हों या खरीदारी के लिए फ़ॉलोअर्स को आपकी वेबसाइट या सोशल मीडिया अकाउंट पर निर्देशित करें.

V. **फ्रीलांस असाइनमेंट** - फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र में कुछ अनुभव प्राप्त करने के बाद, अपना कौशल दिखाने और फ्रीलांस असाइनमेंट आकर्षित करने के लिए आप सोशल मीडिया पर अपने इंस्टाग्राम जैसे अकाउंट का उपयोग कर सकते हैं. इसके लिए ज़रूरी है कि अकाउंट पर अपनी बायो या पोस्ट में उल्लेख करें कि आप फोटो बेचना चाहते हैं .

VI. **विज्ञापन** - अपनी सेवाओं या विशिष्ट फोटो जर्नलिस्टिक परियोजनाओं को व्यापक दर्शकों तक प्रचारित करने के लिए सोशल मीडिया के विज्ञापन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग कर सकते हैं .

VII. **फोटोग्राफी कार्यशालाओं का आयोजन** - फोटोग्राफी कार्यशालाएं या वेबिनार आयोजित कर सकते हैं. उन्हें अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर प्रचारित कर एक बड़े दर्शक वर्ग को आकर्षित कर सकते हैं. आप ऑनलाइन पेड कोर्सेज या ट्यूटोरियल द्वारा भी कमा सकते हैं.

VIII. **लाइसेंसिंग और स्टॉक फोटोग्राफी** - स्टॉक फोटोग्राफी प्लेटफार्मों के माध्यम से व्यावसायिक उपयोग के लिए अपनी छवियों को लाइसेंस किया जा सकता है. स्टॉक फ़ोटो ख़रीदार स्वयं द्वारा ली गई फ़ोटो से बेहतर गुणवत्ता की अपेक्षा करते हैं. इसलिए, उच्च गुणवत्ता की छवियां और विभिन्न फोटो-संपादन सॉफ़्टवेयर का उपयोग कर फोटो अपलोड करें. अपने पोर्टफोलियो को प्रदर्शित करने और संभावित खरीदारों को लाइसेंसिंग विकल्पों की ओर निर्देशित करने के लिए अपने सोशल मीडिया अकाउंट का उपयोग करें.

IX. **फोटो पुस्तकें बेचें** - धनोपार्जन करने के एक अन्य तरीका हो सकता है कि आप अपने सर्वोत्तम फोटो पत्रकारिता कार्य को दर्शाने वाली फोटो पुस्तकें बनाएं और बेचें. इस पुस्तक को अपने सोशल मीडिया एकाउंट्स के माध्यम से लॉन्च करें और बिक्री को बढ़ावा दें.

X. **अपने कानूनी अधिकारों और दायित्वों को समझें** - अपनी तस्वीरें ऑनलाइन बेचने का प्रयास शुरू करने से पहले यह बेहद ज़रूरी है कि आप स्टॉक फोटो उद्योग में अपने कानूनी अधिकारों और दायित्वों को जानें . पहले जांच लें कि आपकी तस्वीरें लीगल हैं या नहीं. यानि ,आपके कार्य में कॉपीराइट का उल्लंघन नहीं होना चाहिए. यदि आपकी तस्वीर विख्यात लोगों और संपत्तियों को दिखाती है, तो आपको फोटो बेचने से पहले उचित रिलीज़ फॉर्म प्राप्त करना होगा. जब आप स्टॉक फ़ोटोग्राफ़ी वेबसाइटों पर फ़ोटो अपलोड करते हैं, तो ध्यान रहे कि आप लोगों को कॉपीराइट नहीं बेच रहे, आप अपने काम को विभिन्न तरीकों से उपयोग करने के अधिकार का लाइसेंस दे रहे हैं.

इसके अलावा यह भी जांचें कि क्या आपको ऑनलाइन तस्वीरें बेचने के लिए व्यवसायिक लाइसेंस की आवश्यकता है. फोटोग्राफर को अपना काम बढ़ाने और उसका मुद्रीकरण करने के लिए रचनात्मक और कलात्मक लाइसेंस की आवश्यकता हो सकती है.

सारांश; सोशल मीडिया के माध्यम से एक स्थायी आय बनाने में समय और मेहनत लगती है. इसलिए बेहतरीन फोटोग्राफी करने और अपनी टारगेट ऑडियंस के साथ नियमित रूप से जुड़ने पर ध्यान केंद्रित करें. साथ ही ऐसी रणनीति बनाएं जो आपकी अनूठी शैली, दर्शकों और लक्ष्यों के साथ मेल खाती हो. कुल मिलाकर, समझने की बात यह है कि सोशल मीडिया फोटोग्राफी के लिए एक ऐसा प्लेटफार्म है जो फोटोग्राफरों को अपनी कला को दुनिया भर के लोगों के साथ सांझा करने और व्यवसाय के अवसरों को बढ़ावा देने में मदद कर रहा है.

31. फोटोजर्नलिस्ट्स एजेंसियों से कैसे कमाएं ?

समाचारों के साथ - साथ उनके फोटो और वीडियो उपलब्ध कराने वाली कई विश्वस्तरीय एजेंसिंया हैं. इन से जुड़कर फोटो-पत्रकार अपने काम के दाम हासिल कर सकता है और नियमित रूप से कमाई कर सकता है. इनमें रायटर्स, एएफपी, एपी, पीटीआई, भाषा, वार्ता, यूएनआई, एएनआई और हिंदुस्तान समाचार गेट्टी इमेजेस के नाम प्रमुख हैं.

एजेंसियां प्रत्येक चित्र और लेख का भुगतान करती हैं. इनके कार्यालय दिल्ली और देश के अन्य प्रमुख शहरों में मौजूद हैं. यह सभी एजेंसियां किसी बड़ी घटना-दुर्घटना के समाचार के चित्र या ख़बर ही लेती हैं. किसी तीज - त्यौहार के समय वे किसी खास एंगल वाली फोटो को ही प्रमुखता देती हैं.

स्ट्रिंगर फोटोग्राफर बनें - एजेंसियों के लिए स्ट्रिंगर फोटोग्राफर बनकर आप उन्हें ताज़ा घटनाओं की तस्वीरें प्रदान कर सकते हैं. विशिष्ट घटनाओं, लोगों, स्थानों या वस्तुओं की विशिष्ट तस्वीरें लेने के लिए फोटो स्ट्रिंगर्स को रखा जाता है. एक संपादक स्ट्रिंगर को अनुबंधित करता है. उसे वांछित फोटो और विडियो का थीम या कांसेप्ट समझाता है. किस तरह की तस्वीरें और क्लिप लेनी हैं, उस बारे में निर्देश देता है. स्ट्रिंगर की विशेषज्ञता के आधार पर, एक संपादक फोटोग्राफर को यह तय करने की अनुमति दे सकता है कि किसी घटना या कहानी के विषय को कैसे शूट किया जाए.

विशेष क्षेत्र में निर्मित तस्वीरें - अगर आप खेल-चित्रकारिता या युद्ध-चित्रकारिता जैसे किसी विशेष क्षेत्र में माहिर हैं तो आप एजेंसियों के लिए ऐसे क्षेत्र में बड़े लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं . किसी क्षेत्र में आप की विशेषज्ञता आप के लिए काम के रास्ते खोल सकती है.

आउटसोर्सिंग का लाभ उठाएं - कुछ एजेंसियां आपको आउटसोर्सिंग के ज़रिये काम करने का अवसर दे सकती हैं. इन दिनों काम देने का यही सही तरीका माना जाता है.

आवश्यक योजना बनाएं - एक अनुभवी फोटो - जर्नलिस्ट अपनी कार्य कुशलता से वर्ष भर का शेडयूल बनाकर अपने प्रोजेक्ट पूरे करता है. एक फ्रीलांसर के तौर पर आप एकसाथ कई जगह कार्य कर सकते हैं. यह उचित आय करने का बेहतर तरीका है.

नेटवर्क बनाएं - अच्छे संबंध बनाएं. विभिन्न एजेंसियों के संपर्क में रहें. एक मज़बूत नेटवर्क आपको नए असाइनमेंट दिलाने में मदद कर सकता है. एजेंसी के साथ भी काम करिए और निजी तौर पर कोई न कोई इवेंट भी कवर करते रहिये. तकनीकी रूप से दक्ष व्यक्ति कभी बेकार नहीं बैठ सकता.

प्रोफेशनल पोर्टफोलियो तैयार करें - एक प्रोफेशनल पोर्टफोलियो से आप एजेंसियों को अपने कार्य की गुणवत्ता दिखा सकते हैं.

कमीशन आधारित भुगतान की प्रक्रिया - कई एजेंसियां कमीशन पर आधारित भुगतान करती हैं. ऐसे अनुबंध के अंतर्गत आपको आपकी तस्वीर की बिक्री का कुछ प्रतिशत का हिस्सा भी एजेंसी से हासिल हो जाता है.

नियम और शर्तें -ध्यान रखें कि हर एजेंसी के अपने नियम और शर्तें होती हैं. इन शर्तों को अच्छी तरह समझकर काम पकड़ने की सहमती दें.

कॉपी राइट समझें - आपकी तस्वीरों का कॉपीराइट आप के पास होना चाहिए. इस से आप उन्हें अन्य स्थानों पर भी बेच सकेंगे.

सारांश ; एक सफल फोटो जर्नलिस्ट विभिन्न एजेंसिओं के साथ बढ़िया संबंध बना सकता है और अच्छी कमाई कर सकता है. तकनीकी दक्षता के अलावा अगर आप के अन्दर ठेठ प्रोफेशनलिज़्म और उत्कृष्ट काम की आदतें भी हैं तो कामयाबी मिलने में देर नहीं लगती .

32. फोटो संपादन (एडिटिंग इन फोटोशाप)

फोटो संपादन फोटोग्राफी का महत्वपूर्ण आयाम है. फोटो लेने के बाद उसकी गलतियां दूर करने के लिए संपादन किया जाता है. फोटोशाप या अन्य किसी सॉफ्टवेयर की सहायता से फोटो एडिटिंग की जा सकती है. कैमरे से लिए गए सभी चित्र कंप्यूटर में लोड कर लें. जिस तस्वीर को एडिट करना चाहते हैं उस को चुन लें. आप को फोटो संपादन के लिए उपलब्ध हर साफ्टवेयर की जानकारी होनी चाहिए.

आप को स्केनर के साथ एक कलर प्रिंटर की भी जरूरत होती है. फोटोशाप के टूल्स की मदद से हम फोटो का संपादन करते हैं. इन टूल्स की अच्छी जानकारी जरूरी है. इन की मदद से फोटो से अनचाहे स्थान को हटाना, ब्रेकग्राउंड को बदलना, रंगों को संपादित करना, पुराने ब्लैक एंड व्हाईट फोटो को रंगीन और कलर फोटो को ब्लैक एंड व्हाईट बनाना, पुराने फोटो के दाग-धब्बे मिटाना, फोटो की ब्राइटनेस और कंट्रास्ट को कम या ज्यादा करना संभव है.

यह स्मार्ट फोन का ज़माना है. औसत मूल्य के हर मोबाइल में अच्छी क्वालिटी के कैमरे और एप आ रहे हैं. इन की मदद से आप मोबाइल से भी आसानी से फोटो को एडिट कर सकते हैं. बड़े आकार का और अच्छी क्वालिटी का प्रिंटआउट लेने के लिए जरूरी है कि फोटो डीएसएलआर से ली गयी हो और उसे फोटोशाप के माध्यम से एडिट किया गया हो.

निम्न लिखित चरण अपनाएँ :-

1- सभी फोटो कंप्यूटर में ट्रांसफर करें और एडिट होने वाली तस्वीरें चुनें - शूट के बाद, कैमरे के मेमोरी कार्ड से सभी फोटो उस डिवाइस पर स्थानांतरित कर दें, जिस पर आप संपादन करने जा रहे हैं. यदि आप डेस्कटॉप या लैपटॉप से काम कर रहे हैं, तो संपादन के लिए अलग-अलग फोल्डर बनाएं. प्रत्येक फोटो पर दांया क्लिक करके री-नेम करें. देखें कि कौन - कौन सी तस्वीर को संपादन की जरूरत है, उन्हें चुन लें. केवल कुछ फोटो ही समाचार पत्र में छापने योग्य होती हैं. फोटो किस उद्देश्य से क्लिक की गयी है, उसी के अनुसार इमेज का चुनाव किया जाएगा.

2-सुनिश्चित करें कि किस प्रकार का संपादन चाहिए – तस्वीर को गौर से देखें. सोचें कि वह क्या है जो आपकी तस्वीर में संपादन मांगता है. संपादित करने के केवल दो कारण हैं - पहला, किसी तकनीकी पहलू को सही करने के लिए जो शॉट लेते समय ग़लत था. दूसरा, फोटो का रचनात्मक पहलू, जिस में सुधार की आवश्यकता है. पहले सफेद संतुलन(White Balance) एक्सपोज़र कंपनसेशन, ब्लर या क्लीयर जैसे तकनीकी पहलू देखें. ज़रूरत हो तो क्रॉपिंग करें, कलर बैलेंस और रेसोलुशन को सही करें.

3. छवि को सीधा करें, घुमाएँ और क्रॉप करें - अब अधिक तकनीकी और रचनात्मक संपादन की तैयारी में अपनी छवि को साफ करने का समय आ गया है. अगर चीजें थोड़ी हटकर दिखती हैं, तो उन्हें सीधा करें. एक फोटो एडिटिंग के लिए सबसे पहले फोटो को सीधा करें. फिर तय करें कि क्या इसे अंतिम उत्पाद के लिए और क्रॉपिंग या रिपोजिशनिंग की आवश्यकता है.

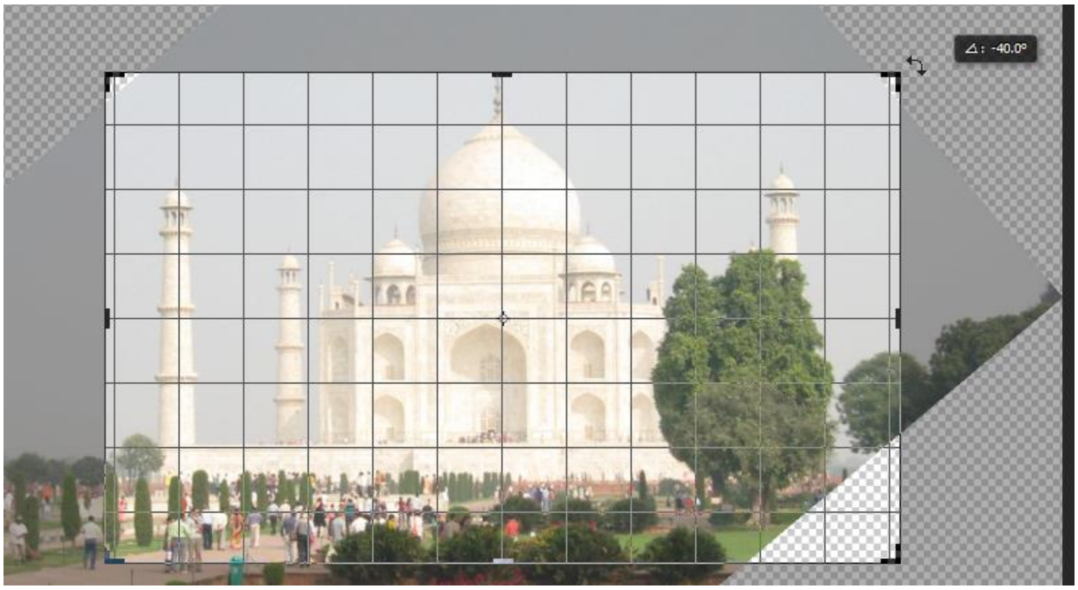

फोटो सौजन्य: helpx.adobe.com

क्रॉप टूल का उपयोग कर फ़ोटो को सीधा करने के लिए उसे घुमाएं और फोटो का आकार बदलें.

4. फोटो के रंगों को सुधारें - सफेद संतुलन के बाद फोटो के रंगों को और निखारा जा सकता है. रंगों का संतुलन बनाए रखने के लिए फोटो शॉप के कलर एडजस्ट में मौजूद टूल से फोटो के कलर में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है. ध्यान रहे कि फोटो पत्रकारिता में फोटो के रंगों में ज्यादा परिवर्तन नहीं किया जा सकता. कभी रंगीन फोटो को श्वेत श्याम में नहीं बदला जाता या किसी और रंग में नहीं परिवर्तित किया जाता. पर क्रिएटिव कारणों से ऐसा किया जा सकता है, जैसे किसी फोटो को कैप्शन देने के लिए आपको रंग बदलना हो.

फोटो शॉप में, निम्न में से किसी भी स्थान से रंग संतुलन समायोजन विकल्प का उपयोग कर सकते हैं:

एडजस्टमेंट पैनल में, कलर बैलेंस ( ) आइकन पर क्लिक करें.

लेयर>नई एडस्टमेंट लेयर>कलर बैलेंस चुनें. न्यू लेयर डायलॉग बॉक्स में ओके पर क्लिक करें.

लेयर पैनल में, नई लेयर या एडजस्टमेंट लेयर बनाएं ( ) आइकन पर क्लिक करें. संदर्भ मैन्यु विकल्पों में से कलर बैलेंस का चयन करें.

फोटोग्राफर इमेज>अड्जस्टमेंट्स>कलर बैलेंस भी चुन सकते हैं.

एकबार जब कलर बैलेंस विकल्प चुन लेते हैं, तो ऐसा करें -प्रॉपर्टीज पैनल में, टोन संतुलन करने वाले विकल्पों में से कोई भी चुनें — शैडो ,मिडटोन या हाइ लाइट का चयन उस टोन श्रेणी के लिए करें जिसमें आप संपादन करना चाहते हैं.

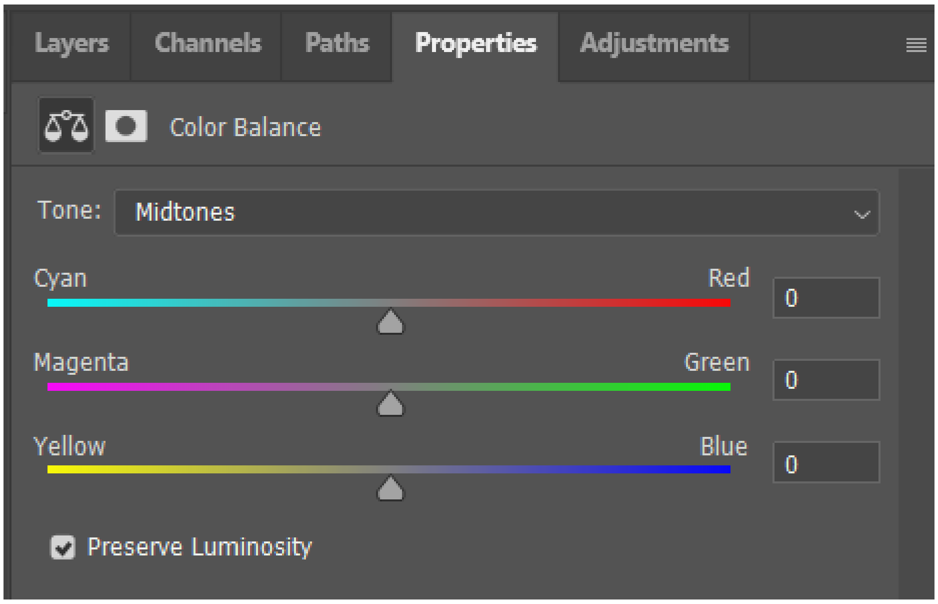

फोटो सौजन्य:helpx.adobe.com

कलर बैलेंस प्रॉपर्टीज पैनल: एडजस्टमेंट पैनल पर जाएं और कलर बैलेंस आइकन पर क्लिक करें.

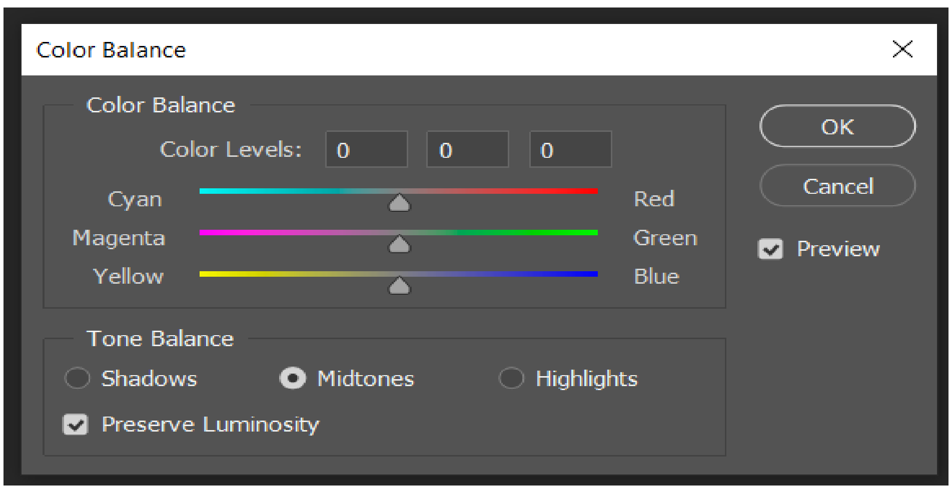

फोटो सौजन्य:helpx.adobe.com

कलर बैलेंस डायलॉग: लेयर >न्यू एडजस्टमेंट लेयर >कलर बैलेंस चुनें -

सियान/ लाल, मैजेंटा/ हरा, या पीला/ नीले रंग के स्लाइडर को उस रंग की ओर ले जाएं जिसे आप फोटो में बढ़ाना चाहते हैं और रंग कलर कम करने के लिए स्लाइडर को उस रंग से दूर खींचें जिसे आप फोटो से कम करना चाहते हैं.

स्लाइडर के ऊपर प्रदर्शित वैल्यूज (values) लाल, हरे और नीले चैनलों के लिए रंग परिवर्तन दिखातीं हैं. ये मान -100 से +100 तक हो सकते हैं. आप स्लाइडर्स को घुमाते हुए साथ - साथ ही फोटो में बदलाव देख सकते हैं.

5- एक्सपोजर एडजस्टमेंट- एक फोटोपत्रकार को हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि फोटो लेते समय जितना हो सके उतना अच्छा एक्सपोज़र मिले. हालांकि कभी-कभी आपको हाइलाइट्स या शैडो में डिटेल्स को दिखाने के लिए ओवर- या अंडर एक्सपोज़ करने की आवश्यकता होती है. फोटोशॉप में एक्सपोज़र एडजस्टमेंट लेयर तस्वीरों के एक्सपोज़र में समायोजन करने के कई तरीकों में से एक है. फोटोशॉप के टूल्स जैसे कि कर्व्स (Curves) और लेवल (level) अलग-अलग तरीकों से काम करते हैं और फोटोग्राफर समग्र संपूर्ण एक्सपोज़र को एडजस्ट करने के लिए ब्लेंडिंग (blending) मोड के साथ डुप्लिकेट परतों का भी संयुक्त (combined) रूप से उपयोग कर सकते हैं. आप कौन सा विकल्प चुनते हैं यह आपकी व्यक्तिगत पसंद है और यह भी कि किसी विशेष फोटो के लिए सबसे अच्छा क्या लगता है.

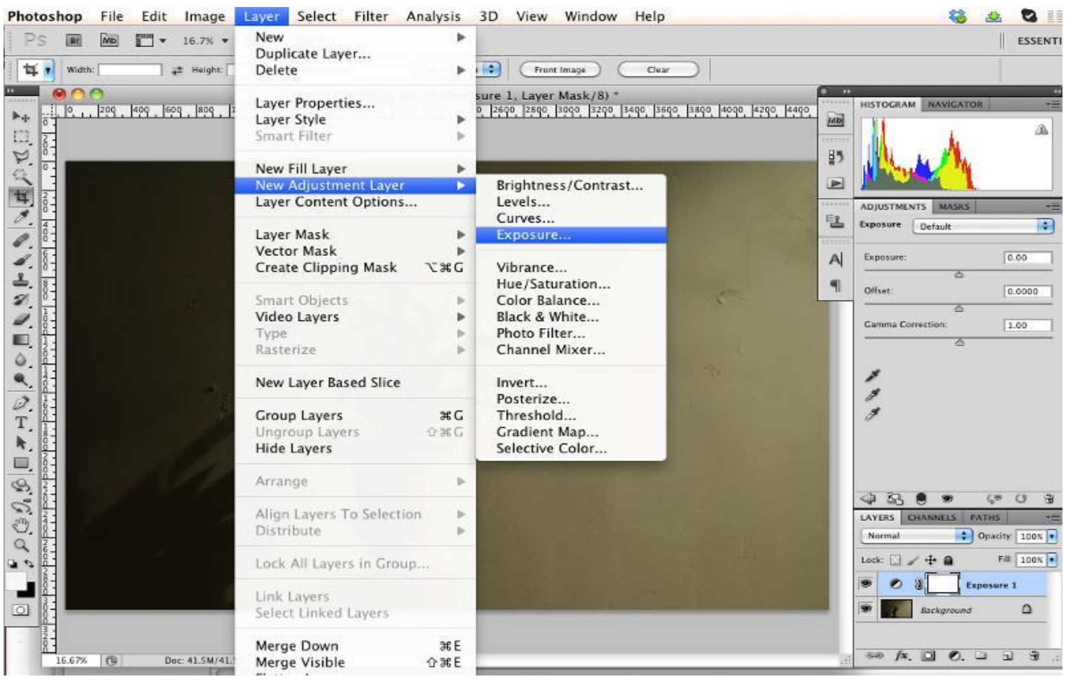

फोटो सौजन्य:helpx.adobe.com

6. फोटो संपादित करने के बाद फोटो का साइज और रेसोलुशन भी तय करना होता है. फोटो का साइज़ चुनने के यह चरण हैं -

फ़ोटोशॉप में अपनी फोटो खोलें.

विंडो के शीर्ष पर स्थित "इमेज " पर जाएं.

"इमेज साइज" चुनें.

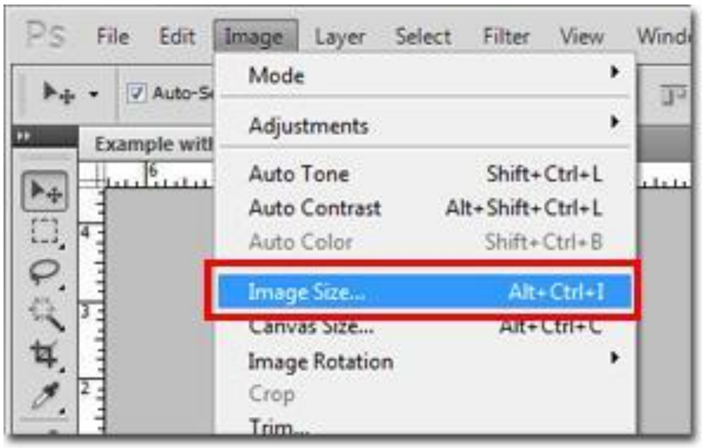

फोटो सौजन्य:helpx.adobe.com

एक नयी विंडो खुलेगी.

अपनी फोटो के अनुपात (proportions) को बनाए रखने के लिए, "Constrain Proportions” पर क्लिक करें.

"डॉक्यूमेंट साइज (Document Size)" के अंतर्गत:

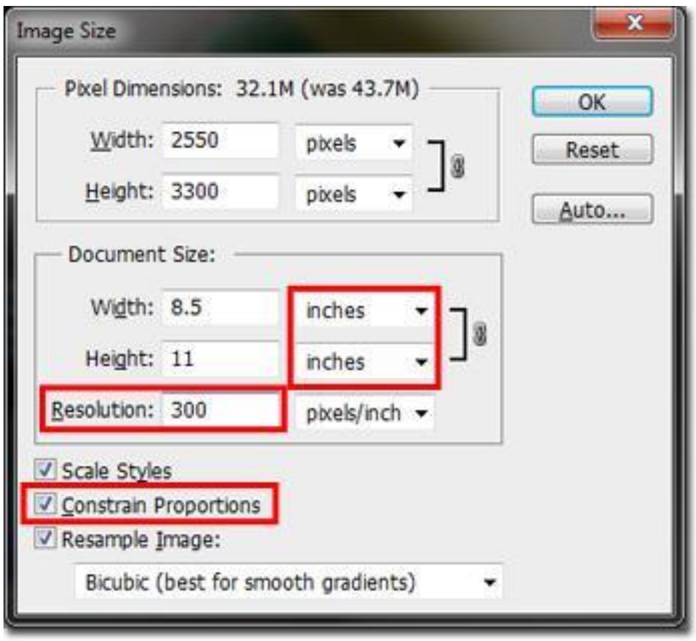

साइज की इकाई के लिए "इंच" या सेंटीमीटर चुनें.

सुनिश्चित करें कि रिज़ॉल्यूशन "200 पिक्सल/इंच" से कम न हो, हालांकि "300 पिक्सल/इंच" प्रिंटिंग के लिए आदर्श है.

अपनी इच्छा के अनुसार चौड़ाई और ऊंचाई इनपुट करें.

यदि आपकी मूल छवि का अनुपात आपके इच्छित प्रिंट आकार से भिन्न है, तो इसे आकार देने के बाद आपकी छवि को क्रॉप करना आवश्यक होगा .

ओके पर क्लिक करें.

अपनी फ़ाइल सेव करें.

यदि आप अपनी मूल फ़ाइल रखना चाहते हैं, तो " save as" चुनें और अपनी छवि को मूल फ़ाइल से कुछ अलग नाम दें.

7 - फोटो को फाइनल टच दें - तकनीकी और रचनात्मक रूप से फोटो संपादन के बाद एक बार नए सिरे से अपनी फोटो देखें और जांच लें कोई कमी तो नहीं रह गयी. अगर लगता है किसी भी सुधार की जरुरत है तो सुधार करने के बाद फोटो कार्यालय में जमा करें या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर शेयर करें.

सारांश ; फोटो संपादन फोटोग्राफी का एक अहम हिस्सा है, जिसका उद्देश्य तस्वीरों की गलतियों को सुधार कर बेहतर बनाना है. यह प्रक्रिया फोटोशॉप जैसे सॉफ़्टवेयर के माध्यम से की जाती है. संपादन के लिए कंप्यूटर, कलर प्रिंटर, स्कैनर और फोटोशॉप सॉफ़्टवेयर की आवश्यकता होती है. टूल्स की मदद से हम अनचाहे स्थानों को हटा सकते हैं, रंगों को बदल सकते हैं और फोटो की ब्राइटनेस को एडजस्ट कर सकते हैं. स्मार्टफोन ऐप्स भी फोटो एडिटिंग के लिए उपयोगी होते हैं. उच्च गुणवत्ता के बड़े प्रिंट्स के लिए डीएसएलआर कैमरे और फोटोशॉप की मदद ली जाती है. पुराने ब्लैक एंड व्हाइट फोटोज को रंगीन बनाना या पुराने दाग-धब्बों को मिटाना भी संभव है. एडिटिंग के सही तरीके से की गई प्रक्रिया से तस्वीरें और भी आकर्षक बनती हैं. यह संपादन पत्रकारिता और व्यक्तिगत प्रोजेक्ट्स में उपयोगी हो सकता है. फोटो एडिटिंग के चरणों का पालन करके अच्छे परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं.

33. फोटोग्राफी लाइब्रेरी का महत्व

फोटो पत्रकारिता में फोटो लाइब्रेरी की अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है. एक फोटो पत्रकार को अपने द्वारा क्लिक की गई तस्वीरों का संग्रहण और वर्गीकरण सही तरीके से करना चाहिए ताकि जरूरत पड़ने पर वह आसानी से काम आ सके. फोटो लाइब्रेरी में फोटो को वर्गीकृत करने से कार्य की गति बढ़ती है और समय की बचत होती है. वरिष्ठ फोटो पत्रकार नरेश नरूला का मानना है कि एक फोटो पत्रकार के लिए फोटो लाइब्रेरी एक धारदार हथियार की तरह होती है. डाटा रिकॉर्ड या फोटो संग्रह एक पत्रकार का ब्रह्मास्त्र है. बिना रिकॉर्ड चाहे वह लिखित सामग्री हो वीडियो या फोटोग्राफ हो उसकी बिना पत्रकार की कल्पना भी नहीं की जा सकती. किसी भी समाचार संस्थान के पास अपनी लाइब्रेरी ना हो ऐसा संभव नहीं है. किसी भी समाचार संस्थान को पुराने संदर्भ देखने के लिए लिखित सामग्री अथवा फोटो या वीडियो फुटेज की आवश्यकता पड़ती रहती है. ख़ासकर पुराने फोटो बहुत बार समाचार पत्र में उपयोग किए जाते हैं. कभी किसी नेता की, कभी किसी खूंखार अपराधी की या कई ऐतिहासिक घटनाओं की भी फोटो चाहिए होती है जो फोटो लाइब्रेरी से आसानी से मिल जाती है.

फोटो पत्रकार विभिन्न प्रकार की तस्वीरें क्लिक करते हैं. जैसे-जैसे उनका संग्रह बढ़ता है, इन्हें उचित रूप से वर्गीकृत और संग्रहित करना आवश्यक हो जाता है. फोटोग्राफ्स को कला और मनोरंजन, राजनीति, धर्म, और त्योहार जैसी श्रेणियों में बांटा जा सकता है ताकि वक्त पड़ने पर आसानी से ज़रूरी तस्वीरें मिल सकें. फोल्डर संरचना बनाने से यह काम और भी आसान हो जाता है. जैसे प्रकृति, कला, राजनीति और धार्मिक लीडरों से संबंधित फोटोग्राफ्स के लिए अलग-अलग फोल्डर बनाए जा सकते हैं. कंप्यूटर और क्लाउड आधारित संग्रहण सेवाओं का उपयोग भी किया जा सकता है. लेकिन इनमें से किसी एक पर निर्भर रहने की बजाय बैकअप लेना और कई प्लेटफॉर्म्स पर संग्रहण करना अधिक सुरक्षित होता है. इस प्रकार, उचित तरीके से फोटोग्राफ्स का संग्रहण और वर्गीकरण न केवल समय की बचत करता है, बल्कि यह पत्रकारिता के काम को और प्रभावी बनाता है.

कोई फोटो लाइब्रेरी कैसे बनाएं? इन बिंदुओं का ध्यान रखें :

अपलोड या स्कैन की गई तस्वीरों को संग्रहीत करने के लिए अपने कंप्यूटर के फोल्डर सिस्टम का उपयोग करें. फोटो नामक एक मुख्य फोल्डर बनाएँ, फिर उस फोल्डर में अपने सभी फोटो रखें. फोटो के प्रत्येक नए समूह के लिए वर्ष - महीने -दिन- विवरण के प्रारूप में नाम का एक फोल्डर बनाएं - उदाहरण के लिए 2019-06-27-लोणावला में छुट्टी. प्रत्येक वर्ष के अंत में, उस साल के 12 महीने के फोटोग्राफ फ़ोल्डर्स को एक अलग फोल्डर में स्थानांतरित करें, उदाहरण के लिए वर्ष 2023. इस प्रकार प्रत्येक वर्ष का डाटा एकत्रित होता जाएगा.

फोटो पत्रकार कई बार दुर्लभ महत्वपूर्ण क्षणों की फोटो भी क्लिक करते हैं. महत्वपूर्ण फोटोग्राफ्स को संभाल कर वर्गीकृत कर रखने की आवश्यकता होती है. धीरे-धीरे जब अनुभव बढ़ जाता है तब फोटोग्राफ का अंबार भी बढ़ जाता है ऐसे में फोटो वर्गीकरण की जरूरत रहती है.

1.**फोटो लाइब्रेरी का वर्गीकरण -** कला एवं मनोरंजन क्षेत्र की फोटो को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है: फिल्मस्टार, टीवी आर्टिस्ट, थिएटर आर्टिस्ट, संगीत कलाकार, नृत्य कलाकार इत्यादि. इसी तरह राजनीतिक क्षेत्र के फोटो भी वर्गीकृत किए जा सकते हैं : कॉन्ग्रेस, बीजेपी, क्षेत्रीय पार्टी या इससे आगे. फोटोग्राफी का संग्रह बढ़ने के साथ-साथ वर्गीकरण भी बढाया जा सकता है. इस डायग्राम के मुताबिक फोटो लाइब्रेरी का विभाजन किया जा सकता है:

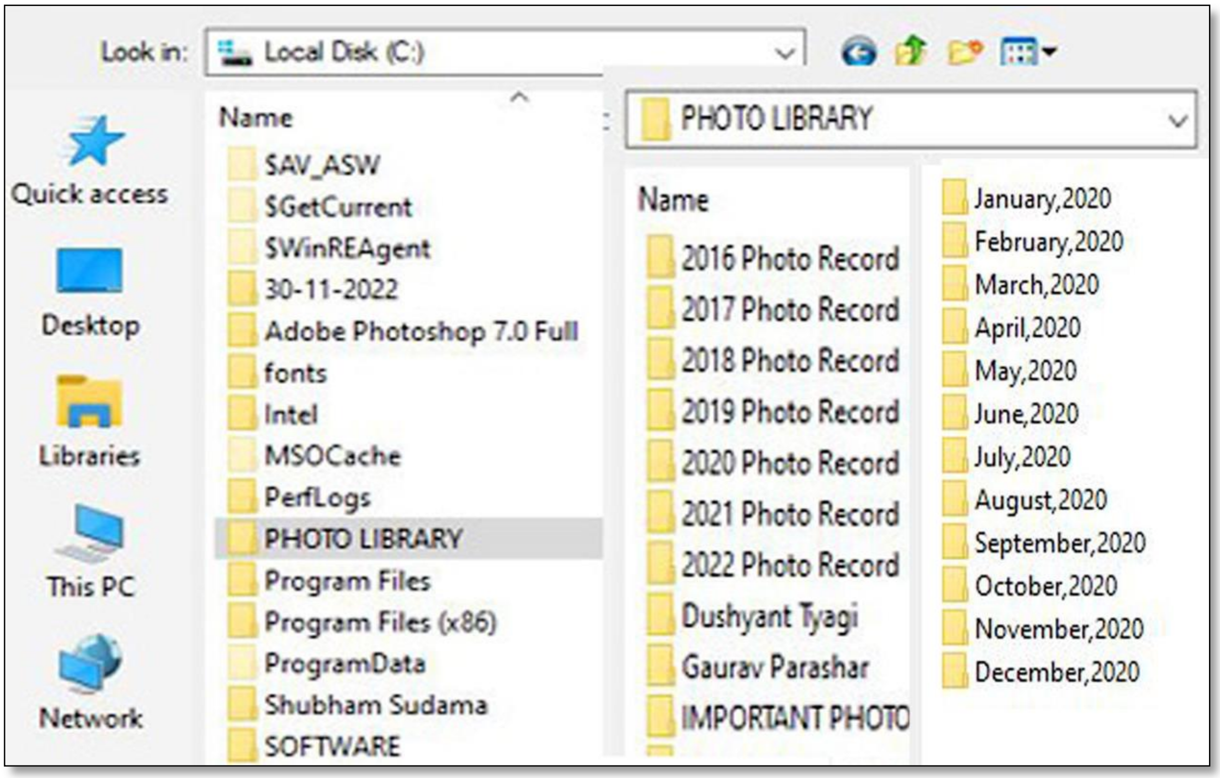

2. **फोल्डर** - प्रकृति के फोटो, कला एवं मनोरंजन, व्यापार एवं व्यवस्था, व्यापारिक संस्थान, व्यक्तिगत मार्केट प्रबंधन संस्थान और उनसे संबंधित व्यक्तित्व और धर्म बीट इत्यादि . त्योहारों के फोटो, धार्मिक नेताओं और उनसे संबंधित फोटो. धर्म स्थलों से संबंधित किसी घटना कार्यक्रम के फोटो. इन तरीकों से फोटो-पत्रकार अपनी फोटो लाइब्रेरी वर्गीकृत कर सकते हैं. समाचार जगत में समय का बेहद महत्व होता है. इसलिए जितनी व्यवस्थित पत्रकार की लाइब्रेरी होगी उतनी ही शीघ्रता से वह उपयोगी फोटो निकाल पाएगा.

फोटो पत्रकार रोज़ अनेक प्रकार की तस्वीरें क्लिक करते हैं. ऐसे में आवश्यक है कि महत्वपूर्ण फोटो संभाल कर रखें और अनावश्यक फोटो हटा दें.

3. कंप्यूटर के अलावा, Adobe, Apple ,Google Drive ,Microsoft One Drive जैसी कंपनियों की ऑनलाइन फोटो व्यवस्थित / संग्रहण सुविधाएं उपयोगी हो सकती हैं, लेकिन ध्यान रखें कि इन कंपनियों के नियम, शर्तें कभी भी कम समय में बदल सकते हैं. बेहतर यही है कि किसी भी एक प्रकार के फोटो ऑर्गन /स्टोरेज सुविधा पर पूरी तरह से निर्भर न रहें.

Google drive, iCloud और Microsoft One Drive उन कंपनियों के कुछ उदाहरण हैं जो फोटो के लिए क्लाउड स्टोरेज सेवाएं प्रदान करते हैं. लेकिन अधिकांश क्लाउड स्टोरेज सेवाएँ मासिक या वार्षिक शुल्क लेती हैं. कैमरे की वाई -फाई कनेक्टिविटी और स्मार्टफोन लोकप्रियता के कारण फोटो बकेट (Photobucket), ग्लोरिफाई (Glorify) इम्गुर (Imgur), पिविगो (Piwigo), स्मॉग मग (Smug Mug) और ड्रॉपबॉक्स जैसी क्लाउड आधारित स्टोरेज सेवाएँ तेज़ी से लोकप्रिय हो रही हैं. यदि आप क्लाउड संग्रहण पर निर्भर हैं, तो सेवा अनुबंधों के नियमों और शर्तों को बहुत ध्यान से पढ़ें. निः शुल्क संग्रहण की समय सीमा समाप्त होने से पहले समय पर आवश्यक शुल्क का भुगतान कर दें. सेवा की अवधि समाप्त होने पर आपकी संग्रहीत फोटोग्राफ एप से स्वतः हटा दी जा सकती हैं. इसलिए सुनिश्चित करें कि आप अपने होम स्टोरेज सिस्टम पर क्लाउड में संग्रहीत चित्रों का बैक अप लें. यानि अपने विशेष फोटोग्राफ सहेजकर रखने के लिए किसी एक सिस्टम पर निर्भर न रहें.

4.. एक नियमित रूप से आपके कंप्यूटर के लिए एक अलग स्थान में संग्रहीत बाहरी ड्राइव के लिए बैकअप लें . ध्यान रहे कि बाहरी ड्राइव का औसत समय लगभग 6 वर्ष है यानि लंबे अरसे के लिए फोटो सहेजकर रखना स्वयं में किसी चुनौती से कम नहीं होता.

5. नियमित रूप से अपनी पसंदीदा तस्वीरें प्रिंट करना भी एक समाधान हो सकता है. प्रिंट की गई सभी तस्वीरों के लिए अपने कंप्यूटर पर एक अलग फोल्डर रखें, ताकि प्रिंट क्षतिग्रस्त होने या खो जाने की हालत में, उन्हें आसानी से फिर प्रिंट किया जा सके.

आजकल क्लाउड स्टोरेज ऑनलाइन डेटा संग्रहीत करने के सबसे सुविधाजनक और कुशल तरीकों में से एक है. दुनिया का 60% से अधिक कॉर्पोरेट डेटा क्लाउड में स्टोर होने के कारण, इस सेवा क्षेत्र में क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर सेवाएं सालाना 178 बिलियन डॉलर का राजस्व उत्पन्न करती हैं. कई कंपनियां अब अलग-अलग डेटा स्टोरेज सुविधाओं का संचालन कर रही हैं.

कुछ फोटो स्टोरेज सेवाएँ कई वर्षों से मौजूद हैं, लेकिन कुछ हाल के वर्षों में उभरीं हैं. ये आम तौर पर बहुत ही अनुकूल हैं. इनमें से कुछ का उल्लेख यहां किया गया है:

1. फोटो बकेट (Photo bucket): यह फोटो होस्टिंग, शेयरिंग और प्रिंटिंग के क्षेत्र में ग्लोबल लीडर है. इसकी वेबसाइट और ऐप दोनों ही हैं, जिन पर कोई भी सरलता से फोटो, वीडियो एडिट कर सोशल नेटवर्क पर सांझा कर

सकता है. इस प्लेटफार्म पर आप अपनी नॉन-कंप्रेस्ड (non-compressed) मूल तस्वीरों को क्लाउड में स्टोर कर सकते हैं.

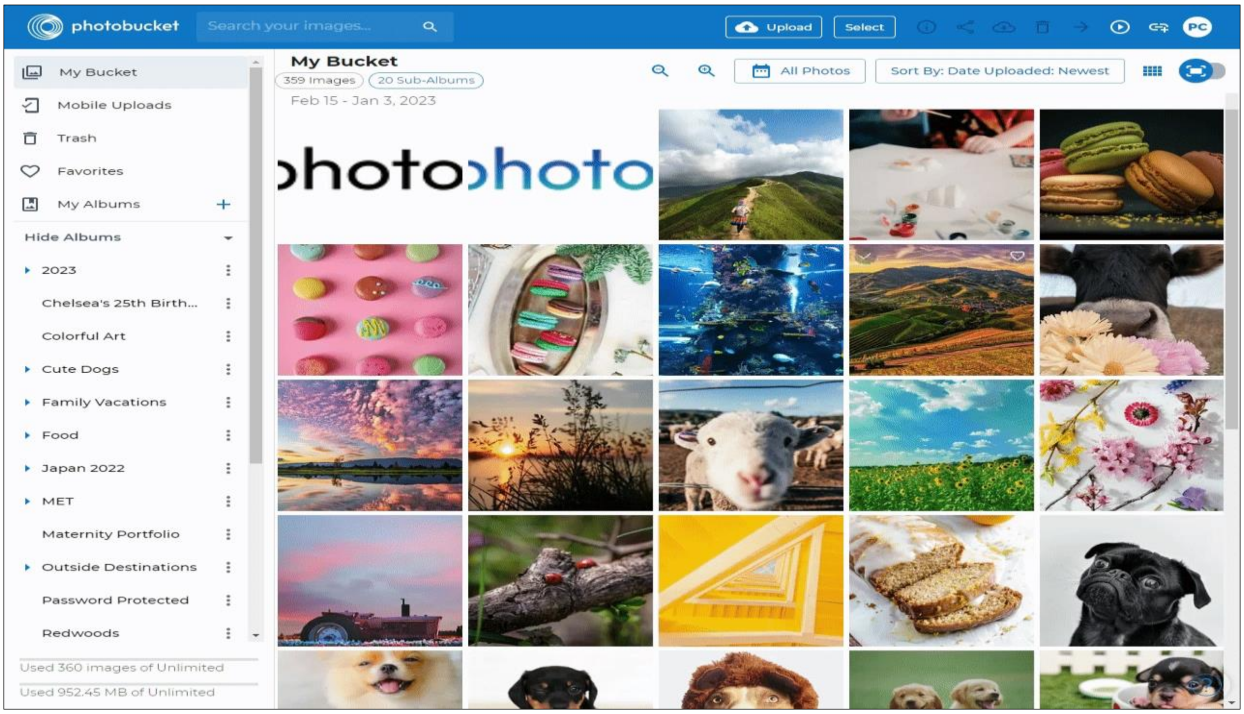

फोटो बकेट (Photobucket) की विशेषताएं-

➢ बड़े साइज की छवियों और वीडियो स्टोर करने के साथ उन्हें होस्ट कर सकते हैं. आप तस्वीरें अपलोड कर उन्हें विभिन्न प्रकार के थर्ड पार्टी प्लेटफ़ॉर्म पर एम्बेड भी कर सकते हैं.

➢ फोटो संपादन के कुछ टूल्स भी हैं, जैसे क्रॉपिंग, वन-टच एडजस्टमेंट (One-Touch Adjustment) फिल्टर, फोकस, ब्रश, टेक्स्ट टाइप करना.

➢ आप सीधे वेबसाइट पर उपलब्ध फोटो प्रिंट ऑर्डर कर सकते हैं.

➢ फोटो बकेट, वेबसाइट के साथ ही आई ओ एस व एंड्राइड ऐप पर भी उपलब्ध है.

➢ फोटो बकेट फाइल्स की गोपनीयता बनाए रखने की सुविधा देता है. आप अपनी तस्वीरों को निजी बना कर तय कर सकते हैं कि उन्हें कौन - कौन देख सकता है.

➢ फोटोबकेट असीमित स्टोरेज देता है.

➢ फोटो/ वीडियो एडिटिंग के बेसिक टूल्स से आसानी से एडिटिंग भी हो सकती है.

➢ उपयोग करने में आसान और कुछ ही मिनटों में आप अपना खाता बना सकते हैं.

➢ स्पीड से फोटो अपलोड कर लिंक जनरेट करना भी आसान है.

नकारात्मक बिंदु –

➢ फोटोबकेट वेबसाइट पर कई बार अपडेट नहीं मिलते.

➢ नि: शुल्क संस्करण में विज्ञापन भी रहता है. समय और स्टोरेज की सीमा भी रहती है.

➢ वेबसाइट प्रोफ़ेशनल पर कई स्कीम उपलब्ध हैं. मूल्य चुका कर इन का उपयोग किया जा सकता है. इसकी जानकारी के लिए वेबसाइट देखें.

ग्लोरिफाइ (Glorify) - हालांकि Glorify मूलरूप से एक फोटो-होस्टिंग प्लेटफार्म नहीं है, लेकिन व्यावसायिक उद्देश्य से फोटोग्राफर यहाँ तस्वीरें अपलोड कर सकते हैं. मार्केटिंग कैंपेन, सोशल मीडिया के लिए विज्ञापन/ सूचना, मेकअप आदि के लिए विजुअल बनाने के उद्देश्य से इस वेबसाइट या मोबाइल ऐप का उपयोग कर सकते हैं. इसे नवोदित के साथ साथ अनुभवी फोटोग्राफर्स के लिए उपयोग करना भी आसान है. ग्लोरिफाई कुछ एडवांस फोटो एडिटिंग टूल भी देता है. फोटो अपलोड और एडिट करने के अलावा उन्हें पीएनजी, जेपीजी, एसवीजी इत्यादि जैसे कई प्रारूपों में सहेज सकते हैं. मार्केटिंग कैंपेन, सोशल मीडिया के लिए विजुअल, मार्कअप आदि के लिए विजुअल बना सकते हैं.

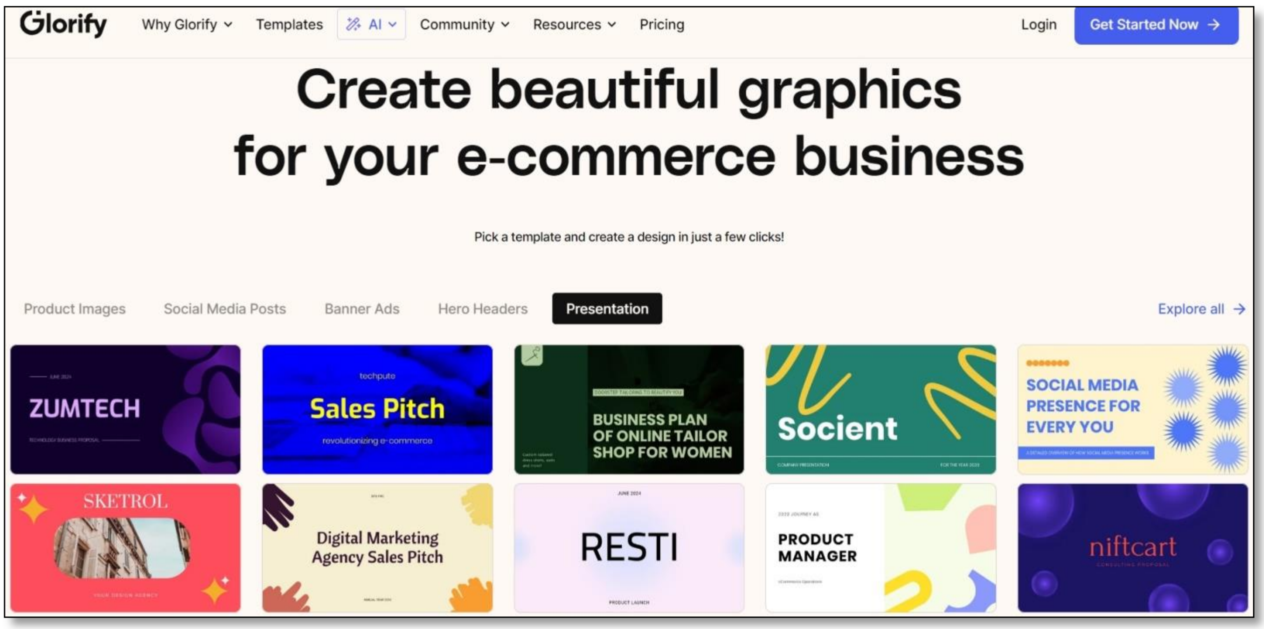

ग्लोरिफाइ वेबसाइट के सकारात्मक फीचर्स:

➢ पूर्व-निर्मित टेम्पलेट गैलरी जहां से छायाकार सैकड़ों टेम्पलेट में से अपनी व्यावसायिक आवश्यकताओं के लिए कोई भी टेम्पलेट चुन सकते हैं.

➢ ब्रांड किट (Brand Kit) और मार्केटिंग ट्रांसफॉर्मेशन टूल सभी ब्रांड को एक ही स्थान पर केंद्रीकृत करते हुए प्लेटफार्म पर संयोजित रहने में आपकी मदद करते हैं.

➢ यह सहज है और उपयोग में आसान प्लेटफॉर्म है.

➢ फोटो-एडिटिंग और मार्केटिंग टूल्स दोनों को होस्ट करता है

नकारात्मक बिंदु –

➢ कई उपभोक्ताओं का कहना है कि यह समय-समय पर फ्रीज़ हो जाता है.

➢ फिलहाल वीडियो संपादन टूल का समर्थन नहीं करता.

1. **इमगुर (Imgur)-** इमेज स्टोर करने के लिए इमगुर (Imgur) सबसे लोकप्रिय और वर्सटाइल प्लेटफॉर्म है. इमगुर ऐप और वेबसाइट पर सभी प्रकार की तस्वीरें, मीम्स और गिफ (GIF)उपलब्ध हैं जिसे आसानी से सांझा भी किया जा सकता है. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जीआईएफ (GIF) सहित कई फॉर्मेट्स में फोटो निःशुल्क अपलोड कर सकतें हैं. Imgur मुख्य रूप से सशुल्क (Paid) खाता धारकों और विज्ञापन से चलता है. यह ऐप / वेबसाइट अपने यूजर को हर तरह की सुविधा दे रही है. इसमें अलग अलग तरह के टूल्स का उपयोग कर गिफ (GIF) या कुछ अन्य प्रकार की तस्वीर बना कर शेयर कर सकते हैं. यह अपने उपयोगकर्ताओं को कई तरह की सुविधाएं जैसे मेमे जनरेटर, प्रो खाते, ट्राफियां और गिफ (GIF) भी प्रदान करता है. इमगुर ऐप / वेबसाइट फोटोग्राफ्स को अपलोड करने के लिए एकदम उपयुक्त है.

2. फ्रीलांस पत्रकार सौरभ कुमार कहते हैं कि इमगुर पर सभी तरह की इमेज उपलब्ध हैं जो प्रेरणादायक, हास्यजनक और शिक्षाप्रद भी है. जब तकनीकी आवश्यकताओं की बात आती है, तो फोटोग्राफर प्रति IP एड्रेस, प्रति घंटे 50 फोटो तक अपलोड कर सकते हैं. GIF का आकार 200MB से अधिक नहीं हो सकता, जबकि चित्र 20 MB से अधिक नहीं हो सकते. चूंकि यह वर्सटाइल प्लेटफॉर्म है इसलिए यह लगभग सभी तरह के इमेज फोर्मट्स जैसे जेपीजी, जेपीईजी, बीएमपी, पीएनजी, पीडीएफ, एक्ससीएफ, टीआईएफएफ इत्यादि जैसे कई प्रारूपों को सपोर्ट करता है.

इमगुर के बारे में अच्छी बात यह है कि यूजर को फोटो अपलोड करने के लिए साइन अप करने की आवश्यकता नहीं है. जब चित्र डाउनलोड करते हैं तो यूजर को वे हॉट लिंक मिलेंगे जिन्हें वे कहीं और सांझा या एम्बेड कर सकते हैं.

इमगुर (Imgur) के सकारात्मक फीचर :

➢ यूजर फोटो एल्बम में फ़ोटो व्यवस्थित कर सकते हैं.

➢ वीडियो को GIFs में कन्वर्ट किया जा सकता है.

➢ मीम्स बनाने की सुविधा है.

➢ कैप्शनिंग, एम्बेडिंग और बेसिक एडिटिंग आदि कर सकते हैं.

➢ अधिकांश सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आदि पर सीधे अपने काम को शेयर कर सकते हैं .

➢ इमगुर(Imgur) एक बेहतरीन इमेज-होस्टिंग साइट है के साथ साथ फोटो और GIF सांझा करने का एक प्लेटफार्म भी है.

➢ ऐप /वेबसाइट नवोदित और प्रोफेशनल यूजर के लिए अनुकूल है.

➢ इमगुर उपयोग करने के लिए स्वतंत्र है, इसमें किसी प्रकार की रजिस्ट्रेशन की अनिवार्यता नहीं है.

➢ निःशुल्क है.

➢ यह वेबसाइट कई प्रकार के इमेज फॉर्मैट्स को सपोर्ट करती है.

नकारात्मक बिंदु :

➢ प्रति घंटे छवियों की सीमित संख्या है.

➢ अपलोड में कभी-कभी समय लगता है.

➢ फोटो कंप्रेशन हमेशा अच्छा नहीं होता.

4. पिविगो (Piwigo) - पीविगो ओपन सोर्स फोटो गैलरी सॉफ्टवेयर है. इसे संगठनों, टीमों और व्यक्तियों के लिए डिज़ाइन किया गया है. फोटोग्राफी क्लाइंट पोर्टल के लिए Piwigo एक अच्छा प्लेटफार्म है. इसका मोबाइल ऐप भी है.

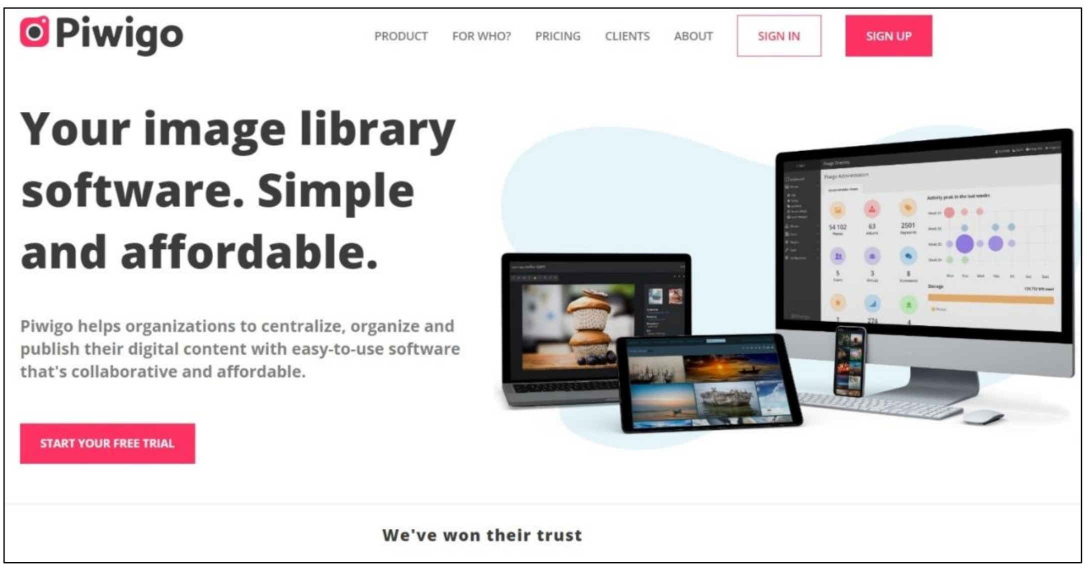

पिविगो (Piwigo) के फीचर :

➢ एक ही फोटो को कई तरीके से सेव किया जा सकता है. उदाहरण के लिए एक RAW फ़ाइल, एक TIFF, एक CMYK प्रोफ़ाइल और एक ज़िप तैयार की जा सकती है.

➢ तस्वीरों को टैग करने का फीचर है.

➢ थीम्स और प्लगइन्स - थीम्स और प्लगइन्स सेक्शन में 350 से अधिक एक्सटेंशन उपलब्ध हैं.

➢ गोपनीयता- अपनी तस्वीरों को निजी बना कर तय कर सकतें हैं कि उन्हें कौन - कौन देख सकता है.

➢ वेबसाइट पर विज़िटर्स टिप्पणी पोस्ट कर सकते हैं, रेटिंग दे सकते हैं, पसंदीदा फोटो को चिह्नित कर सकते हैं और ईमेल या RSS फीड द्वारा गतिविधियों की सूचना प्राप्त कर सकते हैं.

➢ स्वचालित स्लाइड शो की सुविधा उपयोगकर्ताओं के लिए काफी फायदेमंद है.

➢ Google मानचित्र और Open Street Map प्लगइन्स के साथ मानचित्र में फोटो ब्राउज़ करने की क्षमता.

➢ फोटो कॉपीराइट हेतु स्वचालित रूप से सभी फोटो पर वॉटरमार्क लग जाएगा.

➢ पिविगो बहुभाषी है. यह 54 भाषाओं को सपोर्ट करता है.

➢ फोटोग्राफी क्लाइंट पोर्टल के लिए पीविगो एक अच्छा प्लेटफार्म है. इसका मोबाइल ऐप भी है.

पिविगो के नकारात्मक बिंदु :

➢ उपयोगकर्ता केवल 100 तस्वीरें अपलोड कर सकते हैं. इससे अधिक नहीं. और यह जानकारी कहीं भी नहीं दी गई है.

➢ सॉफ्टवेयर का बैक एंड प्रभावी नहीं होता है. कभी-कभी ऐप क्रैश हो जाते हैं और ऑनलाइन होने में थोड़ा समय लेते हैं.

➢ कुछ मूलभूत सुविधाओं का अभाव है.

➢ महंगा हो सकता है.

➢ अन्य तृतीय-पक्ष एप्लिकेशन के साथ एकीकरण के कारण कम सुरक्षित है.

➢ मूल्य निर्धारण - यदि आप एक व्यक्ति या उद्यमी के रूप में साइन अप करते हैं, तो 30-दिन का नि: शुल्क परीक्षण और तीन या चार प्रीमियम प्लान हैं.

➢ इसका परीक्षण संस्करण 14 दिनों के लिए है, जिसके बाद उपयोगकर्ता खरीदारी कर सकते हैं.

5.ड्रॉपबॉक्स - यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जो फोटो,वीडियो और टेक्स्ट फाइल, तीनों को सहेजने और सांझा करने का विकल्प देता है. यही ड्रॉपबॉक्स को अन्य प्लेटफार्म से अलग करता है. ड्रॉपबॉक्स स्वतः ही यूजर द्वारा अपलोड डेटा सिंक और बैकअप करता है. अन्य उल्लेखनीय विशेषताएं हैं:

➢ यूजर को टीम वर्क की सुविधा देता है. टीम का सदस्य किसी भी व्यक्ति के साथ लिंक सांझा कर सकता है. यह व्यक्ति फ़ाइलों को देखने के अलावा संपादित कर सकता है और उन्हें डाउनलोड भी कर सकता है. ड्रॉपबॉक्स के माध्यम से टीम के सदस्य आपस में किसी मीटिंग के एजेंडे से लेकर परियोजना की रूपरेखा तक सब कुछ सांझा करने के लिए सामग्री सहयोग मंच (content collaboration platform) फीचर का उपयोग कर सकते हैं. यूजर अपने प्रोजेक्ट से संबंधी चित्र, वीडियो ही अपलोड नहीं कर सकते हैं बल्कि कोड भी लगा सकते हैं.

➢ फाइल डिलीट हो जाने पर ड्राप-बॉक्स में पुनर्प्राप्ति का फीचर भी है.

➢ ड्रॉपबॉक्स स्लैक और ज़ूम जैसे मैसेजिंग ऐप के साथ एकीकृत टीम के रूप में काम करने के साथ काम करने की सुविधा देता है.

➢ दस्तावेज़ स्कैनर, ई-हस्ताक्षर करने जैसे कई प्रशासनिक फीचर भी उपलब्ध हैं. इन्हीं के कारण ड्रॉपबॉक्स पॉपुलर है.

सकारात्मक फीचर -

➢ एक डेस्कटॉप, वेब और मोबाइल ऐप था.

➢ डेटा बैकअप और फाइल पुनर्प्राप्ति जैसे फीचर ड्रॉपबॉक्स को ख़ास बनाते हैं.

➢ डाटा सुरक्षित रखने के लिए पासवर्ड सुरक्षा जैसी सुविधा है.

नकारात्मक बिंदु -

➢ फ्री प्लान में केवल 2GB स्पेस.

➢ ड्रॉपबॉक्स में एक फ्री प्लान और 6 पेड प्रीमियम प्लान हैं जिसके तहत स्टोरेज खरीद सकते हैं.

सारांश; हम कह सकते हैं कि फोटो लाइब्रेरी का अर्थ है फोटो संग्रह. फोटो पत्रकार दैनिक जीवन में कई तरह के फोटो क्लिक करते हैं लेकिन जितना महत्वपूर्ण अच्छे फोटो लेना है उतना ही महत्वपूर्ण है उनका संकलन ताकि आवश्यकता पड़ते ही बिना समय व्यर्थ किए, फोटो ढूंढ कर इस्तेमाल की जा सके. अत : एक फोटो पत्रकार के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण है कि वह अपना फोटो संग्रह व्यवस्थित करे. फोटो विभिन्न श्रेणी में विभाजित कर के रखे. केवल यही आवश्यक नहीं है कि फोटो कैसे संग्रह किया गया है अपितु यह भी महत्वपूर्ण है कि किस तरह से फोटो संग्रह को व्यवस्थित किया गया है.

34. फोटो प्रदर्शनी और टूर एंड ट्रैवलिंग फोटोग्राफी तथा फोटो प्रतियोगिता

साभार -https://www.photopoly.net/organizing-your-first-gallery-exhibition/

किसी भी प्रकार का आयोजन करना कोई आसान काम नहीं है और फोटो प्रदर्शनी तो और भी कठिन है. इसके लिए अत्यंत सावधानी से और बारीकी से योजना बनानी पड़ती है. कोई भी असावधानी, आसानी से आयोजन को बर्बाद कर सकती है. आपको हर तरह चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह आयोजन कितना बड़ा या छोटा है. फोटोग्राफी प्रदर्शनी आयोजित करना एक शानदार अनुभव होता है.

इस अध्याय में हम फोटोग्राफी प्रदर्शनी आयोजित करने की प्रक्रिया के विभिन्न पड़ावों पर चर्चा करेंगे.

तस्वीरों का संग्रह - पहली जरूरी चीज़ है - बेहतरीन तस्वीरों का संग्रह. आप कोई एकल प्रदर्शनी आयोजित कर सकते हैं या अन्य कलाकारों के साथ मिल कर भी. दोनों ही तरह से आपको तस्वीरों का एक अच्छा संग्रह रखना या प्रबंधित करना होगा. इसके लिए,आपको एक योजना बना कर क्रमानुसार काम करना होगा.

प्रदर्शनी के लिए एक थीम परिभाषित करें - प्रत्येक अच्छी प्रदर्शनी में एक विशिष्ट विषयवस्तु होती है. यह पूरे आयोजन को एकीकृत करती है. इसे अधिक व्यवस्थित, आकर्षक और उत्तम बनाती है. फोटो ध्यान से चुनें. सोचें कि आप अपनी प्रदर्शनी से क्या संदेश देना चाहते हैं. कुछ ऐसा सामने लायें जो नीरस न हो, जिसका व्यापक अर्थ हो, कुछ विशिष्ट हो, ताकि देखने वाले को विचारों का एक गुलदस्ता मिले. ईवेंट को एक सार्थक नाम दें. अच्छा शीर्षक

हमेशा जनता का ध्यान आकर्षित करने में अहम भूमिका निभाता है.

साभार - www.worldphotographersclub.com

अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य चुनें - अपने नवीनतम कार्यों में से सर्वोत्तम को चुनें. यदि आप सोलो प्रदर्शनी की योजना बना रहे हैं, तो आपको कम से कम 15-30 चित्रों की आवश्यकता होगी. प्रत्येक चित्र, प्रदर्शनी की थीम के अनुरूप होना चाहिए. बेहतरीन तस्वीरें तैयार करने में कुछ समय लगाएं.

अन्य कलाकारों को शामिल करें - यदि आप प्रदर्शनी को थोड़ा विविध और रोमांचक बनाना चाहते हैं, तो सहयोग के लिए अन्य कलाकारों से संपर्क बेहतर रहेगा. उन छायाकारों को चुनें जिनकी शैली, प्रदर्शनी की थीम के करीब है. इससे न केवल आपको और दर्शकों को अतिरिक्त आनंद आएगा बल्कि आयोजन स्थल की कॉस्टिंग, लाइसेंसिंग, फ्रेमिंग और पब्लिसिटी जैसे खर्चे भी कम आएंगे. एक सफल सहयोगात्मक प्रयास आपकी कलात्मकता को अच्छी तरह से प्रदर्शित कर सकता है.

प्रदर्शनी का आयोजन - तस्वीरों को ढूंढने और चुनने की प्रक्रिया पूरी करने के बाद अगली चीज़ है प्रदर्शनी का आयोजन. आयोजन बहुत से प्रबंध मांगता है. काम ज़िम्मेदारी से न किया जाये तो पूरा आयोजन एक पल में आपदा के ब्लैक होल में समा सकता है.

कब और कहाँ? - अपने कार्यक्रम के लिए एक तारीख चुनें. कोशिश करें कि किसी सार्वजनिक अवकाश की तारीख न तय करें अन्यथा आपको अपने दर्शक जुटाने के लिए तगड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है. यदि संभव हो तो सप्ताहांत के आसपास की तारीख रखें. इससे संभावित आगंतुकों को देखने के लिए काफी कुछ मिलेगा. आयोजन से 2-3 महीने पहले ही योजना बनाना शुरू कर दें. इस से आपके पास तैयारी में तालमेल के लिए काफी समय होगा.

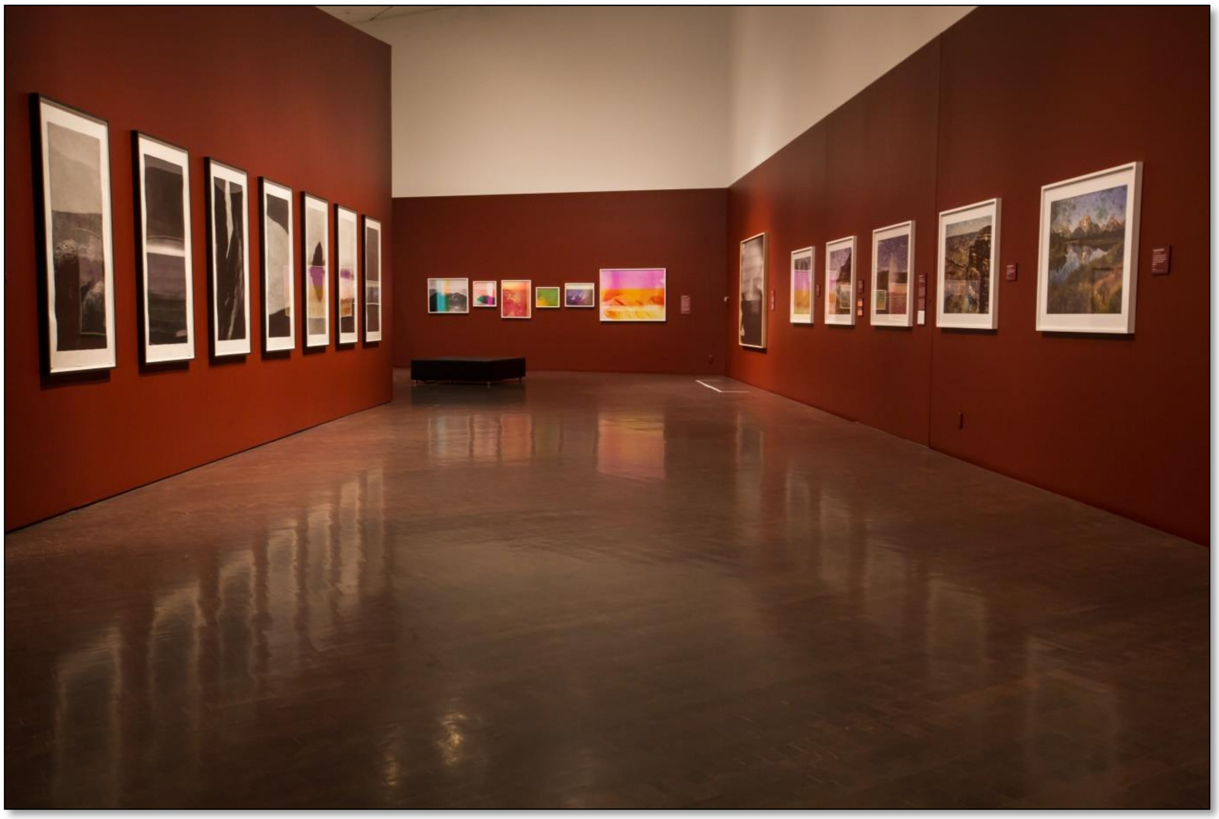

फोटो प्रदर्शनी के आयोजन के लिए सुव्यवस्थित गैलरी साभार - https://ambitiousmares.blogspot.com/

दूसरा अहम मुद्दा है - आयोजन स्थल. प्रदर्शनी के लिए जगह चुनते समय बहुत से लोग सही फैसला नहीं ले पाते. अधिकांश छायाकार फैंसी सजावट के साथ एक पॉश आर्ट गैलरी जैसा कुछ सोचते हैं. हालाँकि यह एक बढ़िया विकल्प है लेकिन यह निश्चित रूप से एकमात्र विकल्प नहीं है. किसी स्थानीय रेस्तरां, कैफे और धार्मिक स्थल जैसी जगह के बारे में भी विचार किया जा सकता है. ऐसे स्थानों पर आप को अधिक संख्या में दर्शक मिलने की सम्भावना रहती है. लोगो के अधिक फुट-फाल वाली जगहों पर भी नज़र डालें. किसी लोकप्रिय जन - संस्था से पूछें कि क्या वे कार्यक्रम की मेजबानी में आप की मदद कर सकते हैं. किसी कार्यक्रम को एक अनौपचारिक सेटिंग में आयोजित करने से आपको एक अच्छी शुरुआत हासिल करने में मदद मिलेगी.

एक मूल्य टैग करें - केवल तस्वीरें दिखाने तक ही सीमित न रहें, उन्हें बेचने का भी प्रयास करें. कलाकृति का प्रदर्शन ही प्रदर्शनी का एकमात्र उद्देश्य नहीं. आपको उन्हें बेचने की कला का ज्ञान भी होना चाहिए. ऐसे लोग हैं जो आयोजन

स्थल से कलाकृतियाँ खरीदने और एकत्र करने में रुचि रखते हैं. ये लोग वास्तविक कला प्रेमी होते हैं. अगर कोई चीज़ उनका ध्यान आकर्षित करती है तो बहुत सारा पैसा खर्च करने को भी तैयार रहते हैं. आपकी कृतियों के ग्राहक, आपकी संभावनाएं हैं. आपके चित्रों की प्रदर्शनी खरीदार को आकर्षित करने के लिए ही है. लेकिन अपने काम की कीमत तय करने से पहले बाज़ार का सर्वेक्षण कर लें. चित्रों का उचित मूल्य निर्धारित करने में यह अभ्यास बड़े काम आएगा.

साभार - https://www.worldphotographersclub.com

अपने काम के अलग-अलग प्रिंट लेने का प्रयास करें. हर कोई मूल प्रिंट खरीदने में सक्षम नहीं होगा. इसीलिए बेहतर है कि आप अपनी कलाकृति के छोटे प्रिंट अपने पास रखें ताकि आप उन्हें किफायती मूल्य पर बेच सकें. अन्य कलाकारों के सहयोग से प्रदर्शनी लगा रहें हैं तो उनके काम के दाम तय करने में भी उनकी सहायता करें.

साभार - http://ghar360.com/blogs

मार्केटिंग - अगली महत्वपूर्ण चीज है - इवेंट का समुचित प्रचार. फ़्लायर्स, ब्रोशर, लीफ-लेट, पोस्टर, पैम्फलेट और अन्य प्रकार के विज्ञापन तैयार करें. आयोजन के बारे में बताएं. तिथि , समय और स्थान का उल्लेख करें. किस या किस-किस छायाकार की तस्वीरें हैं और उनका थीम और फोकस क्या है. कोई ड्रेस कोड और प्रवेश शुल्क है तो उस का उल्लेख करें.

हाई प्रोफाइल आयोजन की सोच रहे हैं तो प्रेस-वार्ता से शुरुआत करें. अच्छे स्थानीय पत्र-पत्रिका के साथ या अच्छे पत्रकारों के साथ इंटरव्यू की व्यवस्था करें. होर्डिंग या बोर्ड लगवाएं. किसी नामचीन गेलरी कैफे, और क्लब जैसे स्थानों पर अपने कार्यक्रम का विज्ञापन करें.

साभार - https://www.worldphotographersclub.com

स्पोंसर जुटाएं. उनके विज्ञापन गैलेरी में लगाएं . कुछ व्यक्तिगत निमंत्रण कार्ड बनवा कर कुछ विशिष्ट लोगों को मेल किये जा सकते हैं. इस सूची में ऐसे नाम शामिल करें जिनकी उपस्थिति आपके कार्यक्रम के ऊंचाई बढ़ा दे.

सोशल मीडिया पर इवेंट की घोषणा आपका सन्देश दूर तक पहुंचाएगी. अपनी सूचना फेसबुक पर डालें. अपने सभी दोस्तों को आमंत्रित करें. अपने मित्रों से अन्य लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहें. प्रदर्शनी की प्रासंगिक सामग्री पोस्ट कर आप सही दर्शक वर्ग तक पहुँच सकते हैं .

टूर एंड ट्रैवलिंग फोटोग्राफी : घूमने के शौकीन फोटो पत्रकार अक्सर देश-विदेश की यात्रा के चित्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के टूर एंड ट्रैवलिंग कालम के लिए उपलब्ध कराते हैं. उन्हें इनकी कीमत भी दी जाती है.

वरिष्ठ फोटो पत्रकार राजीव त्यागी के अनुसार टूर एंड ट्रैवलिंग रोमांच से भरपूर क्षेत्र है. इससे एक सबसे बड़ा फायदा है कि आप स्वयं भ्रमण करते हुए ऐतिहासिक स्मारकों को देख पाते हैं. उनके चित्र प्रकाशित करवा सकते हैं. इससे आप पाठकों को यात्राओं के लिए प्रेरित कर सकते हैं .

पर्यटन पर निकलने से पहले आपको बहुत सी योजनायें बनानी पड़ती हैं. कैमरा किट के साथ, आपको रमणीक स्थल की पूरी जानकारी, आने जाने के साधन, होटल, मौसम, कपड़े और पैसे का इंतजाम करना होता है.

फोटो प्रतियोगिता - विश्व फोटोग्राफी दिवस 19 अगस्त को मनाया जाता है. प्रतिवर्ष होने वाली इस प्रतियोगिता का विजेता पूरी दुनिया के लिए सेलिब्रेटी बन जाता है. देश-विदेश में समय-समय पर फोटो प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है. कभी न कभी किसी न किसी कोने में कोई न कोई कंपीटिशन चलता रहता है. किसी भी प्रतियोगिता में कैसे भाग लें, कैसे हम अवार्ड जीतें, यह तमाम प्रश्न प्रत्येक फोटोग्राफर के दिमाग में होते हैं. किसी भी स्पर्धा में जीत की पहली सीढ़ी होती है कि आप उसमें प्रतिभागी बनें. हार की आशंका के बिना आगे बढ़ें और प्रतियोगिता में शामिल हों. प्रतियोगिता के बारे में पूरी जानकारी लेने, उसके सभी नियम- कानून जानने, विषय से संबंधित विशेष ध्यान देने वाली सभी बातें नोट करने के बाद तस्वीरें चुनें और मुकाबले में आ जाएँ.

प्रतियोगिता के विषय के साथ कनेक्ट करते हुए ली गई अच्छी तस्वीर आपको प्रथम पुरस्कार दिलवा सकती है. सीनियर फोटो जर्नलिस्ट और हिंदुस्तान समाचार पत्र के फोटो पत्रकार सुभाष शर्मा ने अपनी विलक्षण कल्पना के बल पर अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेला सूरजकुंड में पांच बार अवार्ड जीता है. यह स्वयं में एक रिकार्ड है. अमर उजाला के गौरव चौधरी, नवभारत टाईम्स के मुकेश मंडल, नई दुनिया के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट दुष्यंत त्यागी भी अवार्ड जीत चुके हैं. प्रतिवर्ष फरवरी में लगने वाला यह अंतर्राष्ट्रीय मेला भारत के प्रमुख मेलों में से एक है.

अंत में , फोटो प्रदर्शनी आयोजित करने के लिए बेहतरीन तस्वीरों का संग्रह, एक आकर्षक थीम और अन्य कलाकारों के साथ सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है. आयोजन स्थल और प्रचार रणनीति पर भी ध्यान देना अहम है. फोटोग्राफर यात्रा करते हुए ऐतिहासिक और मनोरम स्थलों की तस्वीरें खींचते हैं. इन तस्वीरों को पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया जाता है. फोटोग्राफर को अपनी कला को पहचान दिलाने के लिए फोटो प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहना चाहिए. इस के लिए सही विषय, सही तैयारी और समुचित धैर्य बड़ा जरूरी है. इन गतिविधियों से छायाकार को पुरस्कार और पहचान दोनों मिलते हैं.